

2023

UPTET/CTET
EASY STUDY NOTES

Child Development and Pedagogy

यूथ
कॉम्पिटिशन
जड़भर

UPTET/CTET

MPTET UKTET CGTET JTET BIHAR TET REET
PSTET HTET HPTET ASSAMTET DSSSB UP SUPER TET

(For Class I to V & VI to VII)

ईजी स्टडी नोट्स
मैजिकल सीरीज

6

VOLUME

**बाल विकास
एवं शिक्षण**

अध्यायवार

अभ्यास प्रश्न

एवं व्याख्या सहित हल

**NCERT/SCERT
पर आधारित**



UP TET & CTET

शिक्षक पात्रता परीक्षा

बाल विकास

एवं

शिक्षण विधियाँ

इज़ी स्टडी नोट्स

(कक्षा I से V एवं कक्षा VI से VIII के शिक्षकों हेतु)

संपादन एवं संकलन

CTET & TETs यूथ टाइम्स परीक्षा विशेषज्ञ समिति

लेखन सहयोग

अमन कुमार एम.ए. (नेट), बी.एड.

आंतरिक सज्जा

बालकृष्ण, चरन सिंह

संपादकीय कार्यालय

यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स

12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002

मो. : 9415650134

Email : yctap12@gmail.com

website : www.yctbooks.com

प्रकाशन घोषणा

सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने प्रिंटेक्स इण्डिया प्रयागराज से मुद्रित करवाकर,
यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स, 12, चर्च लेन, प्रयागराज-2 के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है
फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सहयोग एवं सुझाव सादर अपेक्षित है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

मूल्य 250/-

विषय-सूची

■ बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ : नवीन पाठ्यक्रम ----- 4

विषय-वस्तु

(क) बाल विकास

1. बाल विकास का अर्थ, आवश्यकता, क्षेत्र तथा सिद्धान्त, बाल विकास की अवस्थाएँ (शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था) एवं इनके अन्तर्गत होने वाले विकास ----- 5-39

- शारीरिक विकास
- गत्यात्मक विकास
- मानसिक विकास
- बौद्धिक विकास
- संज्ञानात्मक विकास
- संवेगात्मक विकास
- सामाजिक विकास
- भाषा विकास-अभिव्यक्ति क्षमता का विकास
- सृजनात्मकता एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास

2. बाल-विकास के आधार एवं उनको प्रभावित करने वाले कारक ----- 40-46

- वंशानुक्रम
- वातावरण (पारिवारिक, सामाजिक, विद्यालयी, संचार माध्यम)

सीखने का अर्थ तथा सिद्धान्त

3. अधिगम का अर्थ, प्रभावित करने वाले कारक, अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ----- 47-50

4. अधिगम के नियम-थॉर्नडाइक के सीखने के मुख्य नियम एवं अधिगम में उनका महत्व ----- 51-52

5. अधिगम के प्रमुख सिद्धान्त तथा कक्षा शिक्षण में इनकी व्यवहारिक उपयोगिता ----- 53-65

- थॉर्नडाइक का प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धान्त
- पॉवलव का सम्बन्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त
- स्किनर का क्रियाप्रसूत अधिगम सिद्धान्त
- कोहलर का सूझ या अंतर्दृष्टि का सिद्धान्त
- पियाजे का सिद्धान्त
- वाइगोत्सकी का सिद्धान्त
- सीखने का वक्र अर्थ एवं प्रकार
- सीखने में पठार का अर्थ, कारण एवं निराकरण
- सीखने का स्थानान्तरण

6.	शिक्षण एवं शिक्षण विधाएँ-----	66-90
	➤ शिक्षण का अर्थ तथा उद्देश्य ➤ सम्प्रेषण ➤ शिक्षण के सिद्धान्त ➤ शिक्षण के सूत्र ➤ शिक्षण प्रविधियाँ ➤ शिक्षण की नवीन विधाएँ (उपागम) ➤ सूक्ष्म शिक्षण ➤ शिक्षण के आधारभूत कौशल	
	समावेशी शिक्षा-निर्देशन एवं परामर्श	
7.	शैक्षिक समावेशन से अभिप्राय, पहचान, प्रकार, निराकरण यथा; अपवंचित वर्ग, भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ण, लिंग, शारीरिक दक्षता (दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित एवं वाक/अस्थिबाधित), मानसिक दक्षता -----	91-123
	➤ समावेशन के लिए आवश्यक उपकरण, समाग्री, विधियाँ, टी.एल.एम. एवं अभिवृत्तियाँ ➤ समावेशित बच्चों का अधिगम जाँचने हेतु आवश्यक टूल्स एवं तकनीकी ➤ समावेशित बच्चों के लिए विशेष शिक्षण विधियाँ यथा-ब्रेल-लिपि आदि	
8.	समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन एवं परामर्श -----	124-132
	➤ निर्देशन का अर्थ, उद्देश्य, प्रकार एवं आवश्यकता तथा क्षेत्र ➤ परामर्श का अर्थ, उद्देश्य प्रकार एवं आवश्यकता तथा क्षेत्र ■ परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थाएँ ➤ मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद ➤ मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र (मण्डल स्तर पर) ➤ जिला चिकित्सालय ➤ जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षित डायट मेंटर ➤ पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तंत्र ➤ समुदाय एवं विद्यालय की सहयोगी समितियाँ ➤ सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन ■ बाल अधिगम में निर्देशन एवं परामर्श का महत्व	
	(ख) अधिगम और अध्यापन	
9.	बालक किस प्रकार सोचते व सीखते हैं; बालक विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों असफल होते हैं? -----	133-137
10.	अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ; बालकों की अधिगम कार्य-नीतियाँ; सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम, अधिगम के सामाजिक सन्दर्भ-----	138-151
11.	एक समस्या समाधानकर्ता और एक वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में बालक -----	152-153
12.	बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना, अधिगम प्रक्रिया के महत्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की त्रुटियों को समझना -----	154-161
13.	बोध और संवेदनाएँ-----	162-165
14.	प्रेरणा और अधिगम-----	166-172
15.	अधिगम में योगदान देने वाले कारक; निजी एवं पर्यावरणीय -----	173-175
16.	विविध -----	176-179
17.	उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2018 व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र-----	180-183
18.	उत्तर प्रदेश सहायक अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2019 व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र -----	184-188
19.	उत्तर प्रदेश सहायक अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2018 व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र-----	189-192

बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ नवीन पाठ्यक्रम (18-9-2018)

UP TET (I-V) एवं (VI-VIII) नवीन पाठ्यक्रम बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

30 प्रश्न

(क) विषय-वस्तु

बाल विकास—

- बाल विकास का अर्थ, आवश्यकता तथा क्षेत्र, बाल विकास की अवस्थाएँ, शारीरिक विकास, मानसिक विकास, संवेगात्मक विकास, भाषा विकास – अभिव्यक्ति क्षमता का विकास, सृजनात्मकता एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास।
- बाल विकास के आधार एवं उनको प्रभावित करने वाले कारक—वंशानुक्रम, वातावरण। (पारिवारिक, सामाजिक, विद्यालयीय, संचार माध्यम)

सीखने का अर्थ तथा सिद्धान्त—

- अधिगम (सीखने) का अर्थ प्रभावित करने वाले कारक, अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ।
- अधिगम के नियम— थार्नडाइक के सीखने के मुख्य नियम एवं अधिगम में उनका महत्व।
- अधिगम के प्रमुख सिद्धान्त तथा कक्षा शिक्षण में इनकी व्यावहारिक उपयोगिता, थार्नडाइक का प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धान्त, पैवलव का सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त, स्किनर का क्रिया प्रसूत अधिगम सिद्धान्त, कोहलर का सूझ या अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त, प्याजे का सिद्धान्त, व्योगास्की का सिद्धान्त, सीखने का वक्र— अर्थ एवं प्रकार, सीखने में पठार का अर्थ और कारण एवं निराकरण।

शिक्षण एवं शिक्षण विधाएँ—

- शिक्षण का अर्थ तथा उद्देश्य, सम्प्रेषण, शिक्षण के सिद्धान्त, शिक्षण के सूत्र, शिक्षण प्रविधियाँ, शिक्षण की नवीन विधाएँ (उपागम), सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण के आधारभूत कौशल।

समावेशी शिक्षा-निर्देशन एवं परामर्श—

- शैक्षिक समावेशन से अभिप्राय, पहचान, प्रकार, निराकरण यथा अपवर्चित वर्ग, भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ण, लिंग, शारीरिक दक्षता (दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित एवं वाक्/अस्थिबाधित), मानसिक दक्षता।
- समावेशन के लिए आवश्यक उपकरण, सामग्री, विधियाँ, टी.एल.एम. एवं अभिवृत्तियाँ।
- समावेशित बच्चों का अधिगम जॉचने हेतु आवश्यक टूल्स एवं तकनीकी।
- समावेशित बच्चों के लिए विशेष शिक्षण विधियाँ। यथा-ब्रेललिपि आदि।
- समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन एवं परामर्श— अर्थ, उद्देश्य, प्रकार, विधियाँ, आवश्यकता एवं क्षेत्र।
- परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थायें—
 - मनोविज्ञानशाला उ.प्र., इलाहाबाद
 - मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र (मण्डल स्तर पर)
 - जिला चिकित्सालय
 - जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षित डायट मेण्टर
 - पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तन्त्र
 - समुदाय एवं विद्यालय की सहयोगी समितियाँ
 - सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन
- बाल-अधिगम में निर्देशन एवं परामर्श का महत्व

(ख) अधिगम और अध्यापन

- बालक किस प्रकार सोचते और सीखते हैं, बालक विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों असफल होते हैं।
- अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ, बालकों की अधिगम कार्यनीतियाँ, सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम, अधिगम के सामाजिक संदर्भ।

- एक समस्या समाधानकर्ता और एक 'वैज्ञानिक अन्वेषक' के रूप में बालक।
- बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना, अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की त्रुटियों को समझना।
- बोध और संवेदनाएँ।
- प्रेरणा और अधिगम।
- अधिगम में योगदान देने वाले कारक – निजी एवं पर्यावरणीय।

CTET (I-V) एवं (VI-VIII) पाठ्यक्रम बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

I. बाल विकास और अध्यापन

30 प्रश्न

(क) बाल विकास (प्राथमिक विद्यालय का बालक)

15 प्रश्न

- विकास की अवधारणा तथा अधिगम के साथ उसका संबंध
- बालकों के विकास के सिद्धान्त
- आनुवांशिकता और पर्यावरण का प्रभाव
- सामाजीकरण प्रक्रियाएँ : सामाजिक विश्व और बालक (शिक्षक, अभिभावक और मित्रगण)
- पाइगेट, कोलबर्ग और वायगोट्स्की : निर्माण और विवेचित संदर्श
- बाल-केन्द्रित और प्रगामी शिक्षा की अवधारणाएँ
- बौद्धिकता के निर्माण का विवेचित संदर्श
- बहु-आयामी बौद्धिकता
- भाषा और चिंतन
- समाज निर्माण के रूप में लिंग, लिंग भूमिकाएँ, लिंग-पूर्वाग्रह और शैक्षणिक व्यवहार
- शिक्षार्थियों के मध्य वैयक्तिक विभेद, भाषा, जाति, लिंग, समुदाय, धर्म आदि की विविधता पर आधारित विभेदों को समझना
- अधिगम के लिए मूल्यांकन और अधिगम का मूल्यांकन के बीच अंतर, विद्यालय आधारित मूल्यांकन, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन : संदर्श और व्यवहार
- शिक्षार्थियों की तैयारी के स्तर के मूल्यांकन के लिए (कक्षा में शिक्षण और विवेचित चिंतन के लिए तथा शिक्षार्थी की उपलब्धि के लिए उपयुक्त प्रश्न तैयार करना।

(ख) समावेशी शिक्षा की अवधारणा तथा विशेष आवश्यकता वाले बालकों को समझना।

5 प्रश्न

- गैर-लाभप्राप्त और अवसर-वंचित शिक्षार्थियों सहित विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए शिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं को समझना।
- अधिगम संबंधी समस्याएँ, कठिनाई वाले बालकों की आवश्यकताओं को समझना।
- मेधावी, सृजनशील, विशिष्ट प्रतिभावान शिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं को समझना।

(ग) अधिगम और अध्यापन

10 प्रश्न

- बालक किस प्रकार सोचते हैं और सीखते हैं, बालक विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों 'असफल' होते हैं।
- अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ; बालकों की अधिगम कार्यनीतियाँ : सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम; अधिगम के सामाजिक संदर्भ।
- एक समस्या समाधानकर्ता और एक 'वैज्ञानिक अन्वेषक' के रूप में बालक।
- बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना, अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की 'त्रुटियों' को समझना।
- बोध और संवेदनाएँ
- प्रेरणा और अधिगम
- अधिगम में योगदान देने वाले कारक—निजी एवं पर्यावरणीय।

बाल-विकास

1.

**बाल विकास का अर्थ, आवश्यकता, क्षेत्र तथा सिद्धान्त,
बाल विकास की अवस्थाएँ (शैशवावस्था, बाल्यावस्था,
किशोरावस्था) एवं उनके अन्तर्गत होने वाले विकास**

बाल-विकास

मानव विकास का अध्ययन मनोविज्ञान की जिस शाखा के अन्तर्गत किया जाता है, उस शाखा को बाल-मनोविज्ञान या 'बाल-विकास' कहा जाता है।

बाल विकास का अर्थ एवं परिभाषा

बाल विकास के अन्तर्गत बालकों के व्यवहार, स्थितियाँ, समस्याओं तथा उन सभी कारणों का अध्ययन किया जाता है, जिनका प्रभाव बालक के व्यवहार पर पड़ता है।

बाल विकास या बाल मनोविज्ञान की कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

- **जेम्स ड्रेवर के अनुसार**—“बाल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसमें जन्म से परिपक्वावस्था तक विकसित हो रहे मानव का अध्ययन किया जाता है।”
- **क्रो एवं क्रो के अनुसार**—“बाल मनोविज्ञान वह मनोवैज्ञानिक अध्ययन है जो व्यक्ति के विकास का अध्ययन गर्भकाल के प्रारम्भ से किशोरावस्था की प्रारम्भिक अवस्था तक करता है।”
- **आइजेंक के अनुसार**—“बाल मनोविज्ञान का सम्बन्ध बालक में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के विकास से है। गर्भकालीन अवस्था, जन्म, शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और परिपक्वावस्था तक के बालक की मनोवैज्ञानिक विकास प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।”
- **थाम्पसन के अनुसार**—“बाल मनोविज्ञान सभी को एक नयी दिशा में संकेत करता है। यदि उसे उचित रूप में समझा जा सके तथा उसका उचित समय पर उचित ढंग से विकास हो सके तो प्रत्येक बालक एक सफल व्यक्ति बन सकता है।”
- **हरलॉक के अनुसार**—“आज बाल विकास में मुख्यतः बालक के रूप, व्यवहार, रुचियों और लक्षणों में होने वाले उन विशिष्ट परिवर्तनों की खोज पर बल दिया जाता है, जो उसके एक विकासात्मक अवस्थाओं से दूसरी विकासात्मक अवस्थाओं में पदार्पण करते समय होते हैं। बाल-विकास में यह खोज करने

का भी प्रयास किया जाता है कि यह परिवर्तन कब होते हैं, इसके क्या कारण हैं और यह वैयक्तिक हैं या सार्वभौमिक।”

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि बाल विकास मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसमें विकास की विभिन्न अवस्थाओं में मानव के व्यवहार में होने वाले क्रमिक परिवर्तनों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

बाल विकास की आवश्यकता

- बाल-विकास के अध्ययन के द्वारा बालक के जीवन को सुखी और समृद्धिशाली बनाया जा सकता है।
- बाल-विकास के अध्ययन के द्वारा बालकों से सम्बन्धित समस्याओं को समझकर उनका समाधान किया जा सकता है।
- बाल मनोविज्ञान के द्वारा अध्यापक और अभिभावक बच्चे में अधिगम की क्षमता का सही विकास कर सकते हैं।
- बच्चों की समुचित क्षमता का विकास कब और कैसे करना है, बाल मनोविज्ञान की सहायता से ही सम्भव हो सकता है।
- बाल मनोविज्ञान बच्चों के समुचित निर्देशन के लिए व्यवहारिक उपाय बताता है ताकि उनकी क्षमताओं और अभिवृत्तियों को उचित रूप से निर्देशित किया जा सके।

अंत में कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में बाल-मनोविज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। बाल मनोविज्ञान के बिना मनोविज्ञान विषय अधूरा है।

बाल विकास के क्षेत्र

बाल विकास के क्षेत्र में गर्भधारण अवस्था से युवावस्था तक के मानव की सभी व्यवहार सम्बन्धी समस्याएँ सम्मिलित हैं। इस अवस्था के सभी मानव व्यवहार सम्बन्धी समस्याओं के अध्ययन में विकासात्मक दृष्टिकोण मुख्य रूप से अपनाया जाता है। इन अध्ययनों में मुख्य रूप से इस बात पर बल दिया जाता है कि विभिन्न विकासात्मक अवस्थाओं में कौन-कौन से क्रमिक परिवर्तन होते हैं। ये परिवर्तन किन कारणों से कब और क्यों होते हैं, आदि।

बाल विकास के निम्नलिखित क्षेत्र हो सकते हैं—

1. **बालक और वातावरण**—इस क्षेत्र के अन्तर्गत बालक का वातावरण पर तथा वातावरण का बालक के व्यवहार, व्यक्तित्व तथा शारीरिक विकास आदि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।
2. **बालकों के वैयक्तिक विभिन्नताओं का अध्ययन**—इसके अन्तर्गत बालक के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सांवेगिक सामाजिक, भाषायी आदि विभिन्नताओं तथा इससे सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।
3. **बाल व्यवहार और अंतःक्रियाएँ**—इसके अन्तर्गत विकास की विभिन्न अवस्थाओं में बालक के विभिन्न अंतःक्रियाओं और व्यवहारों को समझकर यह जानने का प्रयास किया जाता है कि बालक के पर्यावरणीय समायोजन में कौन-सी अंतःक्रियाएँ बाधक हैं और कौन सहयोगी हैं।
4. **मानसिक प्रक्रिया**—इस क्षेत्र के अन्तर्गत बालक के विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं की विभिन्न अवस्थाओं में गति, स्वरूप तथा विकास आदि का अध्ययन किया जाता है।
5. **बालक-बालिकाओं का मापन**—इसके अन्तर्गत बच्चों के विभिन्न मानसिक और शारीरिक मापन तथा मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।
6. **समायोजन सम्बन्धी समस्याएँ**—इस क्षेत्र के अन्तर्गत बालक के विभिन्न प्रकार की समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।
7. **अभिभावक बालक सम्बन्ध**—इस क्षेत्र के अन्तर्गत अभिभावक बालक सम्बन्ध का विकास, अभिभावक-बालक सम्बन्धों के निर्धारक, पारिवारिक सम्बन्धों में हास आदि समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।
8. **विशिष्ट बालकों का अध्ययन**—इस क्षेत्र के अन्तर्गत पिछड़े बालक, समस्यात्मक बालक, मंद बुद्धि बालक, प्रतिभाशाली बालक आदि विभिन्न योग्यता व क्षमता वाले बालकों की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

विकास के सिद्धान्त

गैरिसन एवं अन्य के अनुसार— जब बालक, विकास की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्रवेश करता है, तब हम उसमें कुछ परिवर्तन देखते हैं। अध्ययनों ने सिद्ध कर दिया है कि ये परिवर्तन निश्चित सिद्धांतों के अनुसार होते हैं। इन्हीं को विकास का सिद्धांत कहा जाता है। इन विकास के सिद्धांतों की संक्षिप्त व्याख्या निम्नलिखित है—

1. **निरंतरता का सिद्धांत**— इस सिद्धांत के अनुसार विकास की प्रक्रिया निरन्तर व अविराम गति से चलती रहती है, जो कभी मंद व कभी तीव्र हो सकती है।
2. **व्यक्तिगतता का सिद्धांत**— इस सिद्धांत के अनुसार भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के विकास की गति एवं दिशा भिन्न-भिन्न होती

है। दूसरे शब्दों में एक ही आयु के दो बालकों या बालिकाओं में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा चारित्रिक आदि विभिन्नताओं का होना विकास की व्यक्तिगतता को इंगित करता है।

3. **परिमार्जितता का सिद्धांत**— इस सिद्धांत के अनुसार विकास की गति तथा दिशा में परिमार्जन सम्भव होता है। दूसरे शब्दों में सही ढंग से किये गये प्रयासों के द्वारा विकास की गति को वांछित दिशा की ओर तथा उसे तीव्र गति से उन्मुख किया जा सकता है।

4. **विकास-क्रम का सिद्धांत**— इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक प्रजाति, चाहे वह पशु हो या मानव, के विकास का एक निश्चित प्रतिक्रम होता है जो उस प्रजाति के समस्त सदस्यों के लिए सामान्य होता है तथा उस प्रजाति के समस्त सदस्य उस प्रतिक्रम का अनुसरण करते हैं। इसे **निश्चित-पूर्व कथनीय सिद्धांत** के नाम से भी जाना जाता है।

5. **मस्तकाधोमुखी विकास का सिद्धांत**— इस सिद्धांत के अनुसार बालक का विकास सिर से पैर की दिशा में होता है। अर्थात् पहले मस्तिष्क फिर धड़ और अंत में पैर में विकास होता है।

6. **एकीकरण का सिद्धांत**— इस सिद्धांत के अनुसार बालक पहले सम्पूर्ण अंग को और फिर अंग के भागों को चलाना सीखता है। उसके बाद वह उन भागों में एकीकरण करना सीखता है।

7. **समान प्रतिमान का सिद्धांत**— इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक प्रजाति चाहे वह पशु हो या मानव अपनी प्रजाति के अनुरूप विकास के प्रतिमान का अनुसरण करता है।

8. **सामान्य से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं का सिद्धांत**— इस सिद्धांत के अनुसार बालक का विकास सामान्य से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं की ओर होता है। वह पहले अपने किसी एक अंग का संचालन करने से पूर्व अपने पूरे शरीर का संचालन करता है और किसी विशेष वस्तु की ओर इशारा करने से पूर्व अपने हाथों को सामान्य रूप से चलाता है।

9. **वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंतःक्रिया का सिद्धांत**— इस सिद्धांत के अनुसार बालक का विकास वंशानुक्रम तथा वातावरण की परस्पर अंतःक्रिया का परिणाम होता है।

10. **चक्राकार प्रगति का सिद्धांत**— इस सिद्धांत के अनुसार विकास रेखीय गति एवं स्थिर दर से न होकर चक्राकार ढंग से होता है। अर्थात् विकास प्रक्रिया के दौरान बीच-बीच में ऐसे अवसर आते हैं जबकि किसी क्षेत्र विशेष में विकास की पूर्व अर्जित स्थिति का समायोजन करने के लिए उस क्षेत्र की विकास प्रक्रिया लगभग विराम की स्थिति में आ जाती है।

बाल विकास की अवस्थाएँ

मनोवैज्ञानिकों ने अपनी सुविधानुसार विकास को विभिन्न अवस्थाओं में बाँटकर उनमें होने वाले परिवर्तनों और विशेषताओं को पहचानकर यह स्पष्ट कर दिया कि, बालक का विकास एक अवस्था से दूसरी अवस्था में अचानक नहीं होता, बल्कि विकास की गति स्वभाविक रूप से क्रमशः होती रहती है। विभिन्न विद्वानों ने बालकों के विकास को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया है—

कोल के अनुसार विकास की अवस्थाएँ-

	अवस्थाएँ	बालक	बालिकाएँ
1.	शैशवावस्था	जन्म से 2 वर्ष तक	-
2.	प्रारम्भिक बाल्यावस्था	2 वर्ष से 5 वर्ष तक	-
3.	मध्य बाल्यावस्था	6 वर्ष से 12 वर्ष	6 वर्ष से 10 वर्ष
4.	पूर्व किशोरावस्था या उत्तर बाल्यावस्था	13 वर्ष से 14 वर्ष	11 वर्ष से 12 वर्ष
5.	प्रारम्भिक किशोरावस्था	15 वर्ष से 16 वर्ष	12 वर्ष से 14 वर्ष
6.	मध्य किशोरावस्था	17 वर्ष से 18 वर्ष	15 से 17 वर्ष
7.	उत्तर-किशोरावस्था	19 वर्ष से 20 वर्ष	18 से 20 वर्ष
8.	प्रारम्भिक प्रौढ़ावस्था	21 वर्ष से 34 वर्ष	-
9.	मध्य प्रौढ़ावस्था	35 वर्ष से 49 वर्ष	-
10.	उत्तर प्रौढ़ावस्था	50 वर्ष से 64 वर्ष	-
11.	प्रारम्भिक वृद्धावस्था	65 वर्ष से 75 वर्ष	-
12.	वृद्धावस्था	75 वर्ष से आगे	-

हरलॉक के अनुसार विकास की अवस्थाएँ-

1.	गर्भकालीन अवस्था	-	गर्भाधान से जन्म तक
2.	शैशवावस्था	-	जन्म से दो सप्ताह या चौदह दिन तक
3.	बचपनावस्था	-	दो सप्ताह के बाद से दो वर्ष तक
4.	पूर्व बाल्यावस्था	-	तीसरे वर्ष से छः वर्ष तक
5.	उत्तर बाल्यावस्था	-	सातवें वर्ष से बारह वर्ष तक
6.	वयः संधि	-	बारह वर्ष से चौदह वर्ष तक
7.	पूर्व किशोरावस्था	-	तेरह वर्ष से सत्तरह वर्ष तक
8.	उत्तर किशोरावस्था	-	अठारह वर्ष से इक्कीस वर्ष तक
9.	प्रौढ़ावस्था	-	इक्कीस वर्ष से चालीस वर्ष तक
10.	मध्यावस्था	-	इक्तालीस वर्ष से साठ वर्ष तक
11.	वृद्धावस्था	-	साठ वर्ष से ऊपर

सामान्य रूप से मानव विकास को पाँच अवस्थाओं में बाँटा जाता है-

1.	गर्भावस्था	-	गर्भाधान से जन्म तक
2.	शैशवावस्था	-	जन्म से 5 वर्ष तक
3.	बाल्यावस्था	-	6 से 12 वर्ष तक
4.	किशोरावस्था	-	13 वर्ष से 18 वर्ष तक
5.	प्रौढ़ावस्था	-	19 वर्ष से अधिक

1. गर्भावस्था की विशेषताएँ-

इस अवस्था की सामान्य अवधि 9 महीने 10 दिन की होती है। इस अवस्था में विकास की गति तीव्र होती है तथा इस अवस्था में अधिकांश विकास शिशु के शरीर में होते हैं। इस अवस्था की तीन उप-अवस्थाएँ हैं-(1) डिम्बावस्था, (2) पिण्डावस्था, (3) भ्रूणावस्था।

2. शैशवावस्था-

शैशवावस्था बालक का निर्माण काल कहा जाता है। यह अवस्था जन्म से पाँच वर्ष तक मानी जाती है। जन्म से 3 वर्ष तक पूर्व शैशवावस्था और 3 से 5 वर्ष की आयु उत्तर शैशवावस्था या पूर्व बाल्यावस्था कहलाती है।

- न्यूमैन के अनुसार-“पाँच वर्ष तक की अवस्था शरीर तथा मस्तिष्क के लिए बड़ी ग्रहणशील होती है।”
- फ्रायड के शब्दों में-“मनुष्य को जो कुछ भी बनना होता है, वह चार-पाँच वर्षों में बन जाता है।”
- क्रो एवं क्रो ने बीसवीं शताब्दी को बालक की शताब्दी कहा है।

शैशवावस्था की मुख्य विशेषताएँ-

1. शारीरिक विकास में तीव्रता
2. मानसिक क्षमताओं में तीव्रता
3. सीखने में तीव्रता
4. दोहराने की प्रवृत्ति
5. जिज्ञासा प्रवृत्ति
6. दूसरों पर निर्भरता
7. आत्म प्रेम की भावना
8. नैतिकता का अभाव
9. मूल प्रवृत्तियों पर आधारित व्यवहार
10. सामाजिक भावना का विकास
11. दूसरे बालकों में रुचि या अरुचि
12. संवेगों का प्रदर्शन
13. अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति
14. कल्पना की सजीवता
15. काम प्रवृत्ति की भावना

शैशवावस्था में शिक्षा-

1. उचित वातावरण की उपलब्धता
2. स्वस्थ पालन-पोषण की व्यवस्था
3. स्नेहपूर्ण व्यवहार
4. जिज्ञासा की संतुष्टि
5. सामाजिक भावना का विकास
6. मानसिक क्रियाओं के लिए उचित अवसर
7. वार्तालाप के अवसर
8. आत्म प्रदर्शन के अवसर
9. अच्छी आदतों का निर्माण
10. वैयक्तिक विभेदों पर ध्यान
11. क्रिया द्वारा सीखने की आदत का निर्माण
12. चित्रों व कहानियों द्वारा शिक्षा
13. खेल द्वारा शिक्षा
14. मूल प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन

3. बाल्यावस्था-

इस अवस्था को व्यक्तित्व निर्माण की अवस्था कहा जाता है क्योंकि इस अवस्था में बालकों में विभिन्न आदतों, व्यवहार, रुचि, इच्छाओं आदि के प्रतिरूपों का निर्माण होता है। इस अवस्था को शिक्षाशास्त्री 'प्रारम्भिक विद्यालय की आयु' तथा कुछ अन्य विद्वान इसे 'स्फूर्ति अवस्था' और 'गंदी अवस्था' भी कहते हैं।

- कोल व ब्रुस के अनुसार—"वास्तव में माता-पिता के लिए बाल विकास की इस अवस्था को समझना कठिन है।"
- रॉस ने बाल्यावस्था को 'मिथ्या-परिपक्वता' का काल बताते हुए कहा है—"शारीरिक और मानसिक स्थिरता बाल्यावस्था की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है।"

बाल्यावस्था की मुख्य विशेषताएँ-

1. शारीरिक तथा मानसिक विकास में स्थिरता
2. मानसिक योग्यताओं में वृद्धि
3. जिज्ञासा की प्रबलता
4. रचनात्मक कार्यों में रुचि
5. वास्तविक जगत से सम्बन्ध
6. आत्मनिर्भरता की भावना
7. सामाजिक तथा नैतिक गुणों का विकास
8. *सामूहिक प्रवृत्ति की प्रबलता
9. बहिर्मुखी व्यक्तित्व का विकास
10. रुचियों में परिवर्तन
11. काम प्रवृत्ति की न्यूनता
12. संग्रह करने की प्रवृत्ति
13. निरुद्देश्य भ्रमण की प्रवृत्ति

बाल्यावस्था में शिक्षा का स्वरूप-

1. शारीरिक विकास पर बल
2. बाल मनोविज्ञान पर आधारित शिक्षा
3. भाषा के ज्ञान पर बल
4. खेल तथा क्रिया द्वारा शिक्षा
5. उपयुक्त विषयों का चुनाव
6. रोचक पाठ्यक्रम
7. जिज्ञासा प्रवृत्ति की संतुष्टि
8. नैतिक शिक्षा
9. सामाजिक गुणों का विकास
10. संचय प्रवृत्ति को प्रोत्साहन
11. सामूहिक प्रवृत्ति की तुष्टि
12. मानसिक विकास पर बल
13. पर्यटन व स्काउटिंग की व्यवस्था
14. संवेगों के प्रदर्शन का अवसर
15. पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था

4. किशोरावस्था -

किशोरावस्था को बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के मध्य का संधि काल कहा जाता है। किशोरावस्था को अंग्रेजी में 'एडोलेसेन्स' (Adolescence) कहते हैं। एडोलेसेन्स शब्द लैटिन शब्द एडोलसियर (Adolescere) से बना है, जिसका अर्थ 'परिपक्वता की ओर बढ़ना' होता है।

- क्रो एवं क्रो के अनुसार—"किशोर ही वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है।"
- जरशील्ड के अनुसार—"किशोरावस्था वह समय है जिसमें विचारशील व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर संक्रमण करता है।"
- स्टेनले हॉल के अनुसार—"किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था है।"
- डी. ए. किर्कपैट्रिक के अनुसार—"इस बात पर कोई मतभेद नहीं हो सकता है कि किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।"
- विग व हण्ट के अनुसार—"किशोरावस्था की विशेषताओं को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने वाला एक शब्द है-परिवर्तन।"
- किशोरावस्था में विकास के सिद्धान्त-किशोरावस्था के सम्बन्ध में दो सिद्धान्त प्रचलित हैं—
 1. आकस्मिक विकास का सिद्धान्त-इस सिद्धान्त के समर्थक स्टेनले हॉल हैं। इन्होंने वर्ष 1904 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'एडोलेसेन्स' में लिखा है कि- "किशोर में जो शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं, वे अकस्मात् होते हैं।"
 2. क्रमिक विकास का सिद्धान्त-इस सिद्धान्त के समर्थकों में किंग, थॉर्नडाइक और हालिंगवर्थ प्रमुख हैं। इनका मानना है कि किशोरावस्था में शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक परिवर्तन निरन्तर और क्रमशः होते हैं।

किशोरावस्था की मुख्य विशेषताएँ-

1. शारीरिक विकास में तीव्रता एवं दृढ़ता
2. मानसिक योग्यताओं का विस्तार
3. स्थिरता व समायोजन का अभाव
4. घनिष्ठ व व्यक्तिगत मित्रता
5. व्यवहार में विभिन्नताएँ
6. स्वतंत्रता व विद्रोह की भावना
7. काम-शक्ति की परिपक्वता
8. रुचियों में परिवर्तन तथा स्थायित्व
9. समूह को महत्व
10. ईश्वर तथा धर्म में विश्वास
11. वीर पूजा की भावना
12. स्वाभिमान की भावना
13. अपराध प्रवृत्ति का विकास
14. समाज सेवा की भावना
15. स्थिति व महत्व की अभिलाषा
16. व्यवसाय की चिंता
17. जीवन दर्शन का निर्माण

किशोरावस्था में शिक्षा का स्वरूप-

1. शारीरिक विकास के लिए शिक्षा
2. मानसिक विकास के लिए शिक्षा
3. संवेगात्मक विकास के लिए शिक्षा
4. वैयक्तिक विभिन्नता के अनुसार शिक्षा
5. सामाजिक सम्बन्धों की शिक्षा
6. यौन शिक्षा
7. किशोर के साथ वयस्क जैसा व्यवहार
8. धार्मिक व नैतिक शिक्षा
9. उपयुक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग
10. बालक व बालिकाओं के पाठ्यक्रम में विभिन्नता
11. किशोरों को व्यक्तिगत व व्यवसायगत निर्देशन और परामर्श

विभिन्न अवस्थाओं में शारीरिक विकास

बालक के विकास का एक महत्वपूर्ण पक्ष उसका शारीरिक विकास है। शारीरिक विकास के अन्तर्गत शरीर रचना, स्नायुमण्डल, मांसपेशीय वृद्धि, गामक तंत्र, अंतःस्त्रावी ग्रंथियाँ आदि प्रमुख रूप से आती हैं। शारीरिक विकास का प्रभाव बालक के व्यवहार तथा विकास के अन्य पक्षों जैसे-सामाजिक, मानसिक, सांवेगिक आदि पर भी पड़ता है इसलिए शैक्षिक दृष्टि से इसको महत्वपूर्ण माना जाता है।

गर्भावस्था में या जन्म-पूर्व शारीरिक विकास-

सामान्यतः जन्म-पूर्व की अवधि 40 सप्ताह या 280 दिन का होता है। निषेचन से जन्म तक के समय को जन्म पूर्व काल या गर्भावस्था का काल कहा जाता है। जन्म-पूर्व काल को तीन खण्डों में विभाजित किया जा सकता है—(1) डिम्बावस्था या बीजावस्था, (2) पिण्डावस्था तथा (3) भ्रूणावस्था।

1. **डिम्बावस्था**—यह अवस्था निषेचन के उपरान्त प्रथम दो सप्ताह तक चलती है।
2. **पिण्डावस्था**—यह अवस्था निषेचन के तीसरे सप्ताह से शुरू होकर आठवें सप्ताह तक चलती रहती है। इस अवस्था में कोषों का समूह एक लघु मानव के रूप में परिवर्तित हो जाता है।
3. **भ्रूणावस्था**—निषेचन के नवें सप्ताह से लेकर बालक के जन्म तक का कालखण्ड भ्रूणावस्था अथवा भ्रूणकाल कहलाती है।

शैशवावस्था में शारीरिक विकास-

शैशवावस्था में विशेषकर जन्म से लेकर तीन वर्ष की आयु होने के दौरान शारीरिक विकास की गति अत्यन्त तीव्र रहती है। वस्तुतः शैशवावस्था के विकास में दो सोपान हो जाते हैं—

- जन्म से तीन वर्ष,
- 3 वर्ष से 5 वर्ष

भार-

जन्म के समय और पूरी शैशवावस्था में बालक का भार बालिका से अधिक होता है। जन्म के समय बालक का भार लगभग 7.15 पौंड या 3.2 किग्रा. और बालिका का भार 7.13 पौंड या 3.0 किग्रा. होता है। पहले 6 माह में शिशु का भार दुगुना और एक वर्ष में तिगुना हो जाता है।

लम्बाई-

जन्म के समय शिशु की औसत लम्बाई 50-51 सेमी. होती है। प्रथम वर्ष के अन्त में 67-73 सेमी., दूसरे वर्ष के अन्त में 77-82 सेमी. तथा 6 वर्ष तक 100-110 सेमी. तक हो जाती है।

सिर व मस्तिष्क-

नवजात शिशु की सिर की लम्बाई उसके शरीर के कुल लम्बाई की एक चौथाई होती है। प्रथम दो वर्षों में सिर की लम्बाई तथा आकार में तीव्र गति से वृद्धि होती है। जन्म के समय मस्तिष्क का भार लगभग 350 ग्राम होता है जो 6 वर्ष की आयु तक 1 किलो 250 ग्राम हो जाता है।

हड्डियाँ-

नवजात शिशु में हड्डियों की संख्या लगभग 270 होती हैं। सम्पूर्ण शैशवावस्था में ये छोटी, कोमल तथा लचीली होती हैं। हड्डियाँ कैल्शियम, फास्फोरस और अन्य खनिज लवणों की सहायता से मजबूत होती हैं। मजबूत होने की इस प्रक्रिया को **अस्थिकरण** अथवा **अस्थि दृढ़ीकरण** कहते हैं।

मांसपेशियाँ-

शिशु की मांसपेशियों का भार उसके शरीर के कुल भाग का 23% होता है। 6 वर्ष की आयु तक मांसपेशियों का भार शरीर के कुल भार का लगभग एक चौथाई अर्थात् 25% हो जाता है। शिशु की भुजाओं का विकास तीव्र गति से होता है।

दाँत-

लगभग छठे या सातवें माह में अस्थायी दूध के दाँत निकलने लगते हैं। चार वर्ष तक लगभग सभी दाँत निकल आते हैं। पाँचवें या छठे वर्ष की आयु से शिशु के स्थायी दाँत निकलने लगते हैं।

अन्य अंग-

नवजात शिशु का सिर शरीर की अपेक्षा बड़ा होता है। जन्म के समय हृदय की धड़कन कभी तेज व कभी धीमी होती है जैसे-जैसे हृदय बड़ा होता है धड़कन में स्थिरता आती जाती है। शिशु के आंतरिक अंगों-पाचन तंत्र, फेफड़ा, स्नायुमण्डल, रक्त संचार अंग, जनन अंग, ग्रंथियों आदि का विकास भी तीव्र गति से होता है।

गामिक नियंत्रण-

जन्म के कुछ समय उपरान्त से ही शिशु अपने स्नायुओं पर नियंत्रण करने का प्रयास प्रारम्भ कर देता है। वह पहले सिर फिर धड़ और अंत में टाँगों पर नियंत्रण करना सीखता है। शिशु एक सप्ताह में मुस्कुराने लगता है, एक माह में सिर ऊपर उठाने लगता है, 4 माह में सहारे के साथ बैठ जाता है, 7 महीने में बिना सहारे के बैठ जाता है, 10 महीने में घुटने के बल चलने लगता है, 14 महीने में खड़ा हो जाता है तथा 15 महीने में चलने लगता है।

बाल्यावस्था में शारीरिक विकास-

बाल्यावस्था के प्रथम तीन वर्षों के दौरान अर्थात् 6 से 9 वर्ष की आयु तक शारीरिक विकास अधिक तीव्र गति से होता है। बाद के तीन वर्षों में शारीरिक विकास की गति धीमी हो जाती है परन्तु इस अवधि में शारीरिक विकास दृढ़ता की ओर उन्मुख होता है। इसलिए 9 से 12 वर्ष की आयु को **परिपाक काल** भी कहा जाता है।

भार-

इस अवस्था में बालक के भार में पर्याप्त वृद्धि होती है। 9 या 10 वर्ष की आयु तक बालकों का भार बालिकाओं से अधिक होता है। इसके बाद बालिकाओं का भार अधिक होना प्रारम्भ हो जाता है।

लम्बाई-

बाल्यावस्था में शरीर की लम्बाई कम बढ़ती है। इन सब वर्षों में लम्बाई 2 या 3 इंच ही बढ़ती है।

हड्डियाँ-

इस अवस्था में हड्डियों की संख्या तथा उनकी दृढ़ता या अस्थिकरण दोनों में वृद्धि होती है। इस अवस्था में हड्डियों की संख्या 270 से बढ़कर लगभग 350 हो जाती है।

दाँत-

बाल्यावस्था के आरम्भ में दूध के दाँत गिरने लगते हैं और उनके स्थान पर स्थायी दाँत निकलने लगते हैं। 16 वर्ष तक लगभग सभी 27-28 दाँत निकल आते हैं।

मांसपेशियाँ-

मांसपेशियों का भार 8 वर्ष तक कुल भार का 27% तथा 12 वर्ष तक 33% हो जाता है। बालिकाओं की मांसपेशियाँ बालकों की अपेक्षा अधिक विकसित होती हैं।

सिर व मस्तिष्क-

बाल्यावस्था के अन्त तक सिर का आकार तथा भार लगभग 95% तक विकसित हो जाता है। बाल्यावस्था के अंत तक मस्तिष्क का आकार तथा भार भी प्रौढ़ मस्तिष्क के आकार तथा भार का लगभग 95% तक विकसित हो जाता है।

अन्य अंग-

बाल्यावस्था में बालक अपने सभी अंगों पर नियंत्रण करने में समर्थ हो जाता है। बारह वर्ष की आयु तक थड़कन की गति लगभग 85 प्रति मिनट हो जाती है।

किशोरावस्था में शारीरिक विकास-

किशोरावस्था में बालक तथा बालिकाओं का विकास तीव्र गति से होता है। बालकों में तीव्रतम वृद्धि का समय 14 वर्ष की आयु तक तथा बालिकाओं में 11 से 18 वर्ष की आयु तक होता है।

आकार एवं भार-

इस अवस्था में लम्बाई तेजी से बढ़ती है। बालक 18 वर्ष की आयु तक तथा बालिकाएँ 16 वर्ष की आयु तक अपनी अधिकतम ऊँचाई प्राप्त कर लेती हैं। इस अवस्था में बालकों का भार बालिकाओं से अधिक होता है।

सिर व मस्तिष्क-

इस अवस्था में सिर व मस्तिष्क का विकास मंद गति से होता है। लगभग 16 वर्ष की आयु तक सिर तथा मस्तिष्क का पूर्ण विकास हो जाता है एवं मस्तिष्क का भार 1200 से 1400 ग्राम के बीच होता है।

हड्डियाँ-

किशोरावस्था में हड्डियों के अस्थिकरण की प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है। इस अवस्था में हड्डियों की संख्या कम होने लगती है।

मांसपेशियाँ-

किशोरावस्था की समाप्ति पर मांसपेशियों का भार शरीर के कुल भार का लगभग 45% तक हो जाता है।

अन्य अंग-

इस अवस्था के अन्त तक सभी ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मेन्द्रियाँ पूर्ण विकसित हो जाती हैं। किशोरावस्था के अन्त तक हृदय की गति 72 प्रति मिनट तक हो जाता है।

शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

1. वंशानुक्रम	7. खेल तथा व्यायाम
2. वातावरण	8. प्रेम तथा सहानुभूति
3. पौष्टिक भोजन	9. रोगों के कारण शरीर में उत्पन्न विकृतियाँ
4. नियमित दिनचर्या	10. दुर्घटना
5. निद्रा व विश्राम	11. भौगोलिक परिस्थितियाँ
6. परिवार की स्थिति	12. गर्भावस्था की असावधानियाँ

गत्यात्मक विकास

गत्यात्मक विकास से तात्पर्य पेशीय संचालन के विकास से है। बालक इसमें अपने मांसपेशियों पर नियंत्रण करना सीखता है।

गत्यात्मक विकास दो रूपों में होता है-

1. स्थूल गत्यात्मक विकास
2. सूक्ष्म गत्यात्मक विकास

शैशवावस्था में स्थूल गत्यात्मक विकास—स्थूल गत्यात्मक विकास से तात्पर्य बड़ी पेशियों पर नियंत्रण से है। ये पेशियाँ घुटनों के बल चलने, खड़े होने, चलने, ऊपर चढ़ने तथा दौड़ने जैसी क्रियाओं में सहायक होती हैं।

शैशवावस्था में सूक्ष्म गत्यात्मक विकास—सूक्ष्म गत्यात्मक विकास से तात्पर्य छोटी पेशियों पर नियंत्रण से है। कप या अन्य वस्तुओं को पकड़ना, पुस्तक के पृष्ठों को पलटना, बटन तथा जिप लगाना, ड्राइंग करना, लिखना आदि में छोटी पेशियों का प्रयोग होता है।

आरम्भिक बाल्यावस्था में स्थूल गत्यात्मक विकास—इस अवस्था में अधिकतर मौलिक गत्यात्मक कौशलों जैसे—दौड़ना, पकड़ना आदि शैशव अवस्था की तुलना में अधिक सटीकता के साथ किया जाता है। पाँच वर्ष की आयु के पश्चात् पेशीय समन्वय में मुख्य रूप से विकास होता है। इस अवस्था में इन गत्यात्मक गतिविधियों को देखा जा सकता है—दौड़ना, उछलना, रस्सी कूदना तथा छल्ला घुमाना, तिपहिया साइकिल चलाना, गेंद फेंकना तथा पकड़ना आदि।

आरम्भिक बाल्यावस्था में सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों का विकास—आरम्भिक बाल्यावस्था के वर्षों में फाड़ने, काटने, चिपकाने, क्ले या आटे के गोले से खेलने, ड्राइंग, मनकों को पिरोने जैसी गतिविधियों से आँखों तथा हाथों के समन्वय तथा मोटर कौशलों को विकसित करने में काफी मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त स्वयं-भोजन करना, कपड़े पहनना, तैयार होना, लिखना, नकल करना आदि इस अवस्था में सूक्ष्म गतिक कौशल के विकास है।

विभिन्न अवस्थाओं में मानसिक विकास

मानसिक विकास से तात्पर्य मानसिक शक्तियों में वृद्धि होने से है। इसके अन्तर्गत अवबोधन, स्मरण, ध्यान, संवेदनशीलता, प्रत्यय-निर्माण, अवलोकन, प्रत्यक्षीकरण, कल्पना, चिंतन, तर्क, निर्णय, बुद्धि, अधिगम क्षमता आदि संज्ञानात्मक शक्तियाँ आती हैं। मानसिक विकास परिपक्वता, अनुभव तथा अधिगम के फलस्वरूप होता है।

शैशवावस्था में मानसिक विकास-

- जन्म के समय शिशु का मस्तिष्क पूर्णतया अविकसित होता है और वह अपने वातावरण को नहीं जानता है। शैशवावस्था में शिशुओं की मानसिक योग्यताओं का विकास अत्यन्त तीव्र गति से होता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार तीन वर्ष की आयु तक शिशु का लगभग पचास प्रतिशत मानसिक विकास हो जाता है।
- जन्म से तीन माह तक शिशु केवल अपने हाँथ पैर हिलाता है। भूख लगने पर रोना, हिचकी लेना, दूध पीना, कष्ट का अनुभव करना, चौकना, चमकदार चीज को देखकर आकर्षित होना या कभी-कभी हँसना आदि क्रियाएँ करता है।
- चौथे से छः माह तक शिशु सब व्यंजनों की ध्वनियाँ करता है। वस्तुओं को पकड़ने का प्रयास करता है। सुनी हुई आवाज का अनुकरण करता है व अपना नाम समझने लगता है।
- सातवें माह से नौवें माह तक वह घूटने के बल चलने और सहारे से खड़ा होने लगता है।
- दसवें माह से 1 वर्ष तक वह बोलने का अनुकरण करता है।
- दूसरे वर्ष से शब्द व वाक्य बोलने लगता है।

■ तीसरे वर्ष में पूछे जाने पर अपना नाम बताने लगता है। छोटी-छोटी कविता या कहानी भी सुनाता है। अपने शरीर के अंग पहचानने लगता है।

■ चौथे वर्ष तक वह 4-5 तक गिनती लिखना व अक्षर लिखना जानने लगता है।

■ पाँचवें वर्ष में शिशु हल्की और भारी वस्तु में अन्तर करने लगता है व विभिन्न रंग पहचानने लगता है। वह अपना नाम लिखने लगता है।

इस प्रकार शैशवावस्था में मानसिक विकास शीघ्रता से होता है। इस अवस्था में बच्चे कल्पना जगत में रहते हैं। वे अधिकतर अनुभव निरीक्षण व अनुभव द्वारा सीखते हैं।

बाल्यावस्था में मानसिक विकास-

- इस अवस्था में बालक के समझने, स्मरण करने, विचार करने, समस्या समाधान करने, तर्क, चिंतन व निर्णय लेने आदि की क्षमता का विकास समुचित मात्रा में हो जाता है।
- वह छोटी-छोटी घटनाओं का वर्णन करने लगता है।
- बच्चे विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का संचय करने व रचनात्मक कार्य में रुचि लेने लगता है।
- बच्चे समूह में रहना व कार्य करना पसन्द करते हैं। साथ ही अनुकरण सहानुभूति व सहयोग आदि की सामान्य प्रवृत्तियों का विकास भी इस अवस्था में हो जाता है।
- बच्चे पढ़ने, लिखने व सीखने में रुचि लेने लगते हैं।
- खेल उनकी दिनचर्या का प्रमुख अंग बन जाता है। वह पहेली बुझाने व समस्यात्मक खेलों में रुचि लेने लगते हैं।
- बच्चे पर्यावरण की वास्तविकताओं को समझने लगते हैं और उनमें आत्मविश्वास विकसित हो जाता है।

किशोरावस्था में मानसिक विकास-

- किशोरावस्था में मानसिक विकास अपनी उच्चतम सीमाओं को छू लेता है।
- किशोर-किशोरी की स्मरण शक्ति में स्थायित्व आने लगता है। उनकी कल्पना, चिंतन, तर्क, विश्लेषण, अमूर्त-चिंतन, समस्या-समाधान जैसी उच्च मानसिक शक्तियों का पूर्ण विकास हो जाता है लेकिन वह उसका उपयोग प्रौढ़ों की तरह करने में समर्थ नहीं होते हैं।
- इस अवस्था में कल्पना की बहुलता होती है, वे कभी-कभी दिवास्वप्न भी देखते हैं।
- किशोरावस्था में शब्द भण्डार अधिक बढ़ जाता है और चिंतन, तर्क व कल्पना शक्ति के साथ इनमें वाकपटुता भी आ जाती है।
- इस अवस्था में इनकी रुचियों में तीव्र विकास होता है। आकर्षक व्यक्तित्व, वेशभूषा, पढ़ाई-लिखाई, पौष्टिक भोजन, भावी रोजगार, कम्प्यूटर, इण्टरनेट साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रति इनकी विशेष रुचि होती है।
- इस अवस्था में बच्चा बाल्यावस्था से प्रौढ़ावस्था की ओर अग्रसित होता है इसलिए किशोर/किशोरियों को नये ढंग से समायोजन करना पड़ता है।

मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक	
1. वंशानुक्रम	6. बालक की शिक्षा
2. परिवार का वातावरण	7. विद्यालय
3. परिवार की सामाजिक, आर्थिक स्थिति	8. अध्यापक
4. शारीरिक स्वास्थ्य	9. समाज
5. माता-पिता की शिक्षा	

बौद्धिक विकास

बुद्धि का अर्थ एवं परिभाषाएँ -

सामान्यतः सीखने, तर्क करने, चिंतन करने, कल्पना करने व अमूर्त चिंतन की योग्यता बुद्धि कहलाती है।

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि की निम्न परिभाषाएँ दी हैं-

- **बोरिंग के अनुसार**-"बुद्धि वही है जो बुद्धि परीक्षण मापता है।"
- **बकिंघम के अनुसार**-"बुद्धि सीखने की योग्यता है।"
- **वुडवर्थ के अनुसार**-"बुद्धि कार्य करने की विधि है।"
- **टरमैन के अनुसार**-"बुद्धि अमूर्त विचारों के बारे में सोचने की योग्यता है।"
- **बिने के अनुसार**-"बुद्धि इन चार शब्दों में निहित है-ज्ञान, आविष्कार, निर्देश और आलोचना।"
- **रायबर्न के अनुसार**-"बुद्धि वह शक्ति है जो हमको समस्याओं का समाधान करने और उद्देश्यों को प्राप्त करने की क्षमता देती है।"
- **थॉर्नडाइक के अनुसार**-"सत्य या तथ्य के दृष्टिकोण से उत्तम प्रतिक्रिया की शक्ति ही बुद्धि है।"
- **स्टर्न के अनुसार**-"बुद्धि एक सामान्य योग्यता है जिसके द्वारा व्यक्ति नई परिस्थितियों में अपने विचारों को जानबूझ कर समायोजित करता है।"
- **गाल्टन के अनुसार**-"बुद्धि पहचानने तथा सीखने की शक्ति है।"

वास्तविक अर्थ में बुद्धि व्यक्ति की जन्मजात शक्ति है और उसकी सब मानसिक योग्यताओं का योग एवं अभिन्न अंग है।

मोटे तौर पर बुद्धि में निम्नलिखित प्रकार की योग्यताएँ आती हैं-

- सीखने की योग्यता
- अमूर्त चिंतन करने की योग्यता
- समस्या का समाधान करने की योग्यता
- अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता
- सम्बन्धों को समझने की योग्यता
- अपने वातावरण से सामंजस्य करने की योग्यता

बुद्धि के प्रकार-

- गैरेट ने तीन प्रकार की बुद्धि का उल्लेख किया है-

1. **मूर्त बुद्धि**-इसे 'गामक बुद्धि' या 'यांत्रिक बुद्धि' भी कहते हैं। इसका सम्बन्ध यंत्रों और मशीनों से होता है।

2. **अमूर्त बुद्धि**-इसका सम्बन्ध पुस्तकीय ज्ञान से होता है।

3. **सामाजिक बुद्धि**-इसका सम्बन्ध व्यक्तिगत और सामाजिक कार्यों से होता है।

■ थॉर्नडाइक ने भी बुद्धि के तीन प्रकार बताएँ हैं-

1. **अमूर्त बुद्धि**-शब्दों, प्रतीकों, समस्या समाधान आदि के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है।
2. **सामाजिक बुद्धि**-इसके द्वारा व्यक्ति समाज में समायोजन करता है।
3. **यांत्रिक बुद्धि**-इसकी सहायता से व्यक्ति यंत्रों तथा भौतिक वस्तुओं का संचालन करता है।

बुद्धि के सिद्धान्त एवं उसके प्रतिपादक

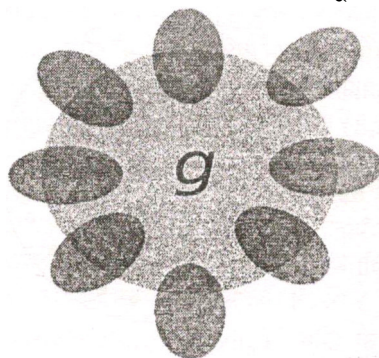
1. एक कारक सिद्धान्त - **बिने, टर्मैन, स्टर्न**
2. द्वि कारक सिद्धान्त - **स्पीयरमैन**
3. बहु कारक सिद्धान्त - **थॉर्नडाइक**
4. समूह कारक सिद्धान्त - **थर्सटन**
5. बुद्धि संरचना सिद्धान्त - **जे. पी. गिलफोर्ड**
6. तरल-ठोस बुद्धि सिद्धान्त - **आर. बी. कैटल**
7. बहु बुद्धि सिद्धान्त - **हॉवर्ड गार्डनर**
8. पदानुक्रमिक सिद्धान्त - **फिलिप बर्नन**
9. त्रितंत्र सिद्धान्त - **स्टेनबर्ग**

1. **एक कारक सिद्धान्त**-यह प्राचीन सिद्धान्त है। **बिने, टर्मैन** तथा **स्टर्न** जैसे मनोवैज्ञानिक इस सिद्धान्त के समर्थकों में प्रमुख हैं।



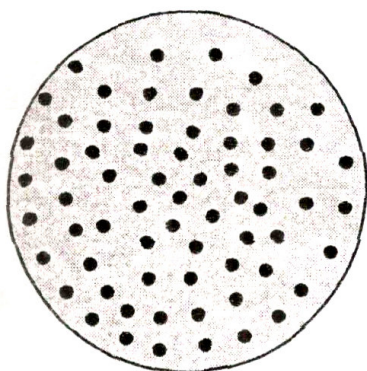
बुद्धि का एक कारक सिद्धान्त

2. **द्वि-कारक सिद्धान्त**-इस सिद्धान्त का प्रतिपादन अंग्रेज मनोवैज्ञानिक **स्पीयरमैन** ने वर्ष 1904 में किया था। इनके अनुसार बुद्धि **दो कारकों**-**सामान्य योग्यता कारक (G - Factor)** तथा **विशिष्ट योग्यता कारक (S - Factor)** से मिलकर बनी होती है। सामान्य योग्यता कारक जन्मजात योग्यता होती है। सभी प्रकार की मानसिक क्रियाओं को करने में इसकी आवश्यकता होती है। विशिष्ट योग्यता कारक अर्जित योग्यता होती है। यह विशिष्ट योग्यताओं का एक समूह होता है।



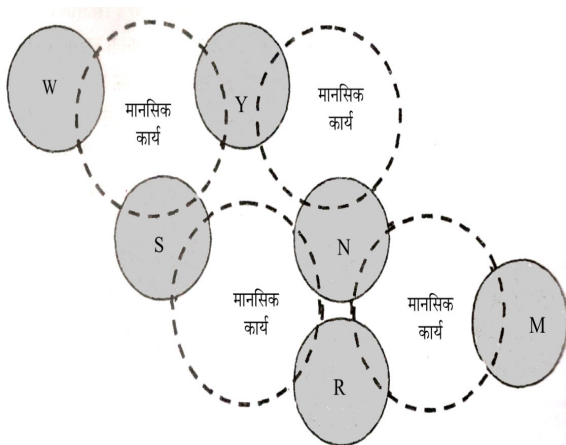
बुद्धि का द्वि-कारक सिद्धान्त

3. **बहु-कारक सिद्धान्त**—इस सिद्धान्त के प्रतिपादक थॉर्नडाइक हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि अनेक स्वतंत्र कारकों से मिलकर बनी है।



बुद्धि का बहु-कारक सिद्धान्त

4. **समूह कारक सिद्धान्त**—थर्स्टन ने अपनी पुस्तक 'Primary Mental Abilities' में बुद्धि के 13 खण्ड बताए हैं जिसमें 9 अधिक महत्वपूर्ण हैं— (1) स्मृति, (2) प्रत्यक्षीकरण की योग्यता, (3) सांख्यिकी की योग्यता, (4) शाब्दिक योग्यता, (5) तार्किक योग्यता, (6) निगमनात्मक योग्यता, (7) आगमनात्मक योग्यता, (8) स्थान सम्बन्धी योग्यता, (9) समस्या-समाधान की योग्यता।

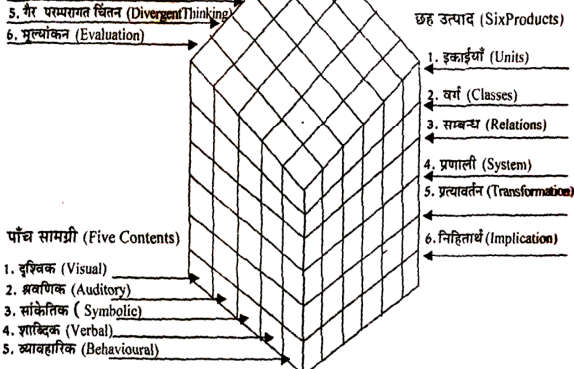


बुद्धि का समूह-कारक सिद्धान्त

5. **बुद्धि संरचना सिद्धान्त**—जे. पी. गिलफोर्ड ने बुद्धि की त्रिविमीय प्रारूप प्रस्तुत किया। इनके अनुसार बुद्धि को तीन विमाओं के परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है—**पाँच सामग्री** (दृशिक, श्रवणिक, सांकेतिक, शाब्दिक, व्यवहारिक), **छः संक्रिया** (संज्ञान, स्मृति अभिलेखन, स्मृति धारण, परम्परागत चिंतन, मूल्यांकन) तथा **छः उत्पाद** (इकाइयाँ, वर्ग, सम्बन्ध, प्रणाली, प्रत्यावर्तन, निहितार्थ)। गिलफोर्ड तथा उनके सहयोगियों ने कहा कि कुल 180 (5 × 6 × 6) भिन्न-भिन्न प्रकार की मानसिक योग्यताएँ हो सकती हैं, जो 180 भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्यों में संलग्न होती हैं।

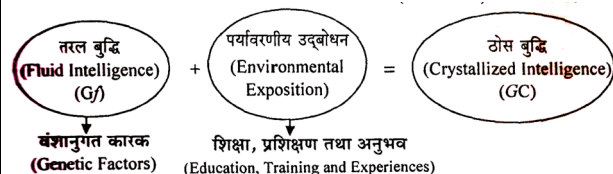
छह संक्रियाएँ (Operations)

1. संज्ञान (Cognition)
2. स्मृति अभिलेखन (Memory Recording)
3. स्मृति धारण (Memory Retention)
4. परम्परागत चिंतन (Convergent Thinking)
5. परम्परागत चिंतन (Divergent Thinking)
6. मूल्यांकन (Evaluation)



बुद्धि की संरचना का नवीनतम निदर्श

6. **तरल-ठोस बुद्धि सिद्धान्त**—इस सिद्धान्त का प्रतिपादन आर. बी. कैटल ने किया। इनके अनुसार बुद्धि के दो महत्वपूर्ण तत्व होते हैं—तरल बुद्धि (GP) तथा ठोस बुद्धि (GC)। तरल बुद्धि वंशानुगत कारकों द्वारा निर्धारित होती है तथा यह तर्क के आधार पर नवीन समस्याओं को हल करने की योग्यता है जबकि ठोस बुद्धि पर्यावरणीय कारकों द्वारा निर्धारित होती है तथा यह शिक्षा, प्रशिक्षण व अनुभव पर आधारित योग्यता है।

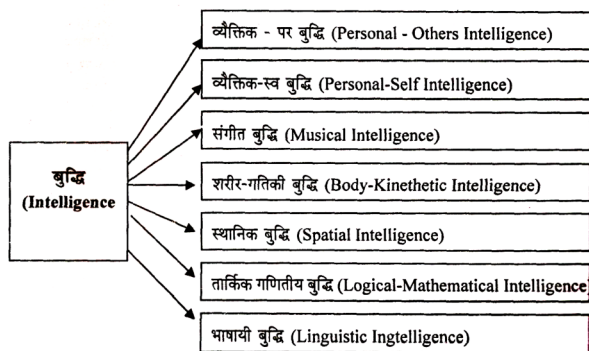


बुद्धि का तरल-ठोस सिद्धान्त

7. **बहुबुद्धि सिद्धान्त**—इस सिद्धान्त का प्रतिपादन हॉवर्ड गार्डनर ने किया था। इनके अनुसार बुद्धि सात प्रकार की होती है—(1) भाषायी बुद्धि, (2) तार्किक गणितीय बुद्धि, (3) स्थानिक बुद्धि, (4) शरीर गतिकी बुद्धि, (5) संगीत बुद्धि, (6) वैयक्तिक आत्म बुद्धि तथा (7) वैयक्तिक-पर बुद्धि। गार्डनर के अनुसार ये सभी सातों प्रकार की बुद्धि यद्यपि परस्पर अंतर्क्रिया करती हैं फिर भी वे मुख्यतः स्वतंत्र रूप से कार्य करती हैं। बाद में इन्होंने इसमें आठवीं बुद्धि के रूप में प्रकृतिवादी बुद्धि को जोड़ा।

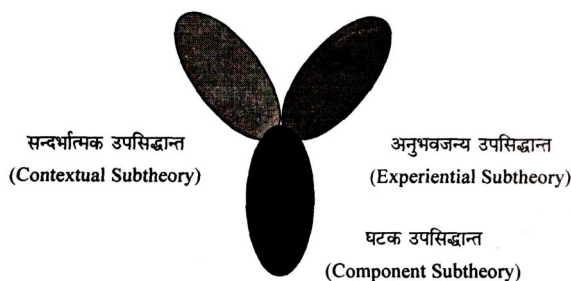
1. **भाषायी बुद्धि**—भाषायी बुद्धि वाले व्यक्ति की अन्तिम अवस्था कवि, पत्रकार, लेखक, शिक्षक, वकील, राजनीतिज्ञ, अनुवादक आदि हो सकती है।
2. **तार्किक गणितीय बुद्धि**—ऐसे बुद्धि वाले व्यक्ति की अन्तिम अवस्था वैज्ञानिक, इंजीनियर, कम्प्यूटर प्रोग्रामर, शोधकर्ता, लेखपाल, गणितज्ञ आदि हो सकती है।
3. **स्थानिक बुद्धि**—इस प्रकार की बुद्धि वाले व्यक्ति की अन्तिम अवस्था शिल्पकार, दृष्टिकलाकार, अन्वेषक, ऑर्किटेक्ट, आंतरिक डिजाइनर्स, मैकेनिक, इंजीनियर्स आदि हो सकती है।
4. **शरीर गतिकी बुद्धि**—ऐसे बुद्धि वाले व्यक्ति डॉक्टर, नर्तक, एथलीट, अभिनेता, अग्निशमन दल के सदस्य, कारीगर आदि कैरियर के रूप में चुन सकते हैं।

5. **संगीत बुद्धि**—संगीत बुद्धि वाले व्यक्ति की अन्तिम अवस्था संगीतकार, गायक, वादक आदि हो सकती है।
6. **वैयक्तिक आत्म बुद्धि**—ऐसे बुद्धि वाले व्यक्ति अनुसंधानकर्ता, दार्शनिक सिद्धान्त प्रणेता के रूप में अपने कैरियर को चुन सकते हैं।
7. **वैयक्तिक पर बुद्धि**—इस प्रकार के बुद्धि वाले व्यक्ति की अन्तिम अवस्था परामर्शदाता, विक्रेता, राजनीतिज्ञ, व्यापारी आदि हो सकती है।



बहु-बुद्धि सिद्धान्त

8. **पदानुक्रमिक सिद्धान्त**—इस सिद्धान्त का प्रतिपादन फिलिप बर्नन ने किया था। इन्होंने मानवीय योग्यताओं की पदानुक्रमिक संरचना प्रस्तुत की एवं कहा कि मानवीय योग्यताएँ एक क्रमिक रूप में व्यवस्थित होती हैं। इस क्रमबद्ध व्यवस्था में क्रमशः सामान्य कारक, मुख्य समूह कारक, लघु समूह कारक तथा विशिष्ट कारक होते हैं।
9. **त्रितन्त्र सिद्धान्त**—इस सिद्धान्त का प्रतिपादन रॉबर्ट स्टैनबर्ग ने किया था। इन्होंने बुद्धि के तीन उपसिद्धान्त बताएँ हैं—(1) संदर्भात्मक उप-सिद्धान्त, (2) अनुभवजन्य उप-सिद्धान्त, (3) घटक उप-सिद्धान्त।



बुद्धि का त्रितन्त्र सिद्धान्त

- (1) संदर्भात्मक उप-सिद्धान्त को प्रसंगात्मक बुद्धि भी कहा जाता है। संदर्भात्मक उप-सिद्धान्त अपने वातावरण के साथ अनुकूलतम् समायोजन करने की योग्यता से सम्बन्धित है।
- (2) अनुभवजन्य उप-सिद्धान्त को अनुभवजन्य बुद्धि भी कहा जाता है। इसका सम्बन्ध अनुभवों से प्राप्त व्यवहारिक ज्ञान से है।
- (3) घटक उप-सिद्धान्त को घटकीय बुद्धि भी कहा जाता है। इसका सम्बन्ध विश्लेषणात्मक तथा आलोचनात्मक ढंग से चिंतन करने की क्षमता से है।

बुद्धि लब्धि (Intelligence Quotient)

- अल्फ्रेड बिने तथा थियोडोर साइमन नामक दो विद्वानों ने वर्ष 1905 में प्रथम बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया जिसे बाद में 1905 का बिने-साइमन बुद्धि परीक्षण कहा गया था।
- इन्होंने तर्क, निर्णय, स्मृति, अंकगणना जैसे विभिन्न मानसिक कार्यों से सम्बन्धित कुल 30 प्रश्नों का चयन किया तथा उन्हें कठिनता के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित किया।
- वर्ष 1908 में इस परीक्षण में संशोधन करके प्रश्नों की संख्या 59 कर दी गयी तथा इन्हें आयुवार (3 वर्ष से 13 वर्ष तक के) वर्गों में बाँटा गया।
- इसी परीक्षण निर्माण के दौरान बिने ने **मानसिक आयु के संप्रत्यय** का प्रतिपादन किया। इनके अनुसार किसी व्यक्ति की मानसिक आयु उस व्यक्ति के मानसिक विकास की अवस्था को बताती है।
- जिस उच्चतम आयु स्तर के सभी प्रश्नों को बालक सही हल करता है, उसे **आधार वर्ष** (Basal Year) कहते हैं।
- जिस आयु स्तर का कोई भी प्रश्न वह हल नहीं कर पाता है उसे उस बालक के लिए **टर्मिनल वर्ष** कहते हैं।
- मानसिक आयु का व्यक्ति की वास्तविक आयु से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।
- वर्ष 1912 में विलियम स्टर्न तथा कुहलमान् ने मानसिक आयु के प्रयोग की परेशानी को देखते हुए, मानसिक आयु व वास्तविक आयु के अनुपात को **बुद्धि लब्धि या (I.Q.)** के रूप में प्रयोग करने का सुझाव दिया। आई. क्यू. जर्मन शब्द 'Intelligenj-Quotient' से बना है।
- परन्तु बुद्धि लब्धि का विकास टरमैन द्वारा वर्ष 1916 में प्रकाशित स्टैनफोर्ड-बिने परीक्षण के बाद ही हो पाया।
- टरमैन ने मानसिक आयु तथा वास्तविक आयु के अनुपात में 100 का गुणा करके बुद्धि लब्धि ज्ञात करने का सूत्र दिया—

$$\text{बुद्धि लब्धि I.Q.} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$$

$$\left(\text{I.Q.} = \frac{\text{M.A.}}{\text{C.A.}} \times 100 \right)$$

जहाँ — M.A. = मानसिक आयु

C.A. = वास्तविक आयु

उदाहरण—यदि किसी बालक की मानसिक आयु 10 वर्ष व वास्तविक आयु 8 वर्ष है तो बुद्धि लब्धि होगी—

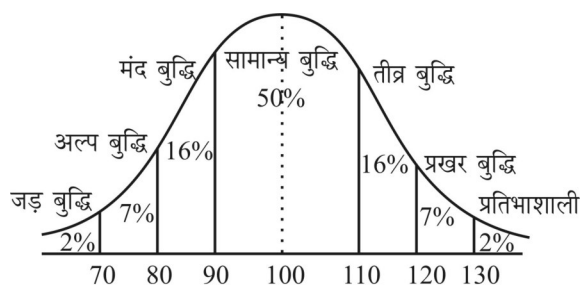
$$\text{I.Q.} = \frac{10}{8} \times 100 = 125$$

अतः बुद्धि लब्धि 125 होगी।

ध्यातव्य है कि बिने तथा साइमन फ्रांस के रहने वाले थे तथा उन्होंने अपने परीक्षण का निर्माण फ्रांस के सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुरूप किया था। इस परीक्षण की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए अमेरिका के स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रो. लेविस एम. टरमैन व उनके सहयोगियों ने अमेरिका के सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुरूप इस परीक्षण में अनुकूलन व परिमार्जन किया तथा इसका नाम 'स्टैनफोर्ड बिने परीक्षण' रखा, जो बहुत प्रसिद्ध हुआ।

- टरमैन ने वर्ष 1916 के स्टैनफोर्ड बिने परीक्षण के साथ बुद्धि लब्धि के वितरण की तालिकाएँ भी तैयार की थीं, जिनमें विभिन्न बुद्धि-लब्धि वर्गों के लिए बालकों व व्यक्तियों की प्रतिशत संख्याएँ भी दी गयी थी। यह तालिका निम्न हैं—

बुद्धि लब्धि	बुद्धि के प्रकार	प्रतिशत
140 से अधिक	प्रतिभाशाली	2%
121-139	प्रखर बुद्धि	7%
111-120	तीव्र बुद्धि	16%
91-110	सामान्य बुद्धि	50%
81-90	मंद बुद्धि	16%
71-80	अल्प बुद्धि (क्षीण बुद्धि)	7%
71 से कम	जड़ बुद्धि (निश्चित क्षीण बुद्धि)	2%



बुद्धि लब्धि वक्र

बुद्धि परीक्षण—विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने समय-समय पर विभिन्न बुद्धि परीक्षण बनाये हैं। इनको मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जाता है—

1. **वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण**—एक समय में एक ही व्यक्ति पर किया जा सकता है। इसका आरम्भ बिने ने किया था।
2. **सामूहिक बुद्धि परीक्षण**—इसमें अनेक व्यक्तियों का परीक्षण किया जाता है। इसका विकास प्रथम विश्वयुद्ध के समय अमेरिका में हुआ।

बुद्धि परीक्षणों में विषय-वस्तु तथा प्रत्युत्तरों के प्रस्तुतीकरण के आधार पर उन्हें दो भागों में बाँटा जा सकता है—

1. शाब्दिक बुद्धि परीक्षण
2. अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण

1. **शाब्दिक बुद्धि परीक्षण**—इसमें भाषा का प्रयोग किया जाता है व अमूर्त बुद्धि की परीक्षा ली जाती है। इस परीक्षा में निम्न प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं—अंकगणित के प्रश्न, व्यवहारिक ज्ञान से सम्बन्धित प्रश्न, निर्देश के अनुसार प्रश्नों के उत्तर, समानार्थी या विलोम शब्द आदि।

2. **अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण**—इसका प्रयोग उन व्यक्तियों पर किया जाता है, जिनको पढ़ना-लिखना नहीं आता है। इसके द्वारा मूर्त बुद्धि का पता लगाया जाता है। इनमें निम्न प्रकार के कार्य दिये जाते हैं—चित्र के बिखरे हुए टुकड़ों को क्रम से लगाकर चित्र पूरा करना, तिकोनी, चौकोर व गोल वस्तुओं को रखकर आकृति को पूरा करना आदि।

कुछ प्रमुख बुद्धि परीक्षणों के नाम

वैयक्तिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण	1. बिने-साइमन बुद्धि परीक्षण 2. स्टैनफोर्ड-बिने बुद्धि परीक्षण
वैयक्तिक अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण	1. पोर्टियस भूल-भुलैया परीक्षण 2. वेश्लर बेल्यूव टेस्ट
सामूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण	1. आर्मी अल्फा टेस्ट 2. सेना सामान्य वर्गीकरण टेस्ट
सामूहिक अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण	1. आर्मी बीटा टेस्ट 2. शिकागो अशाब्दिक टेस्ट

भारत में बुद्धि परीक्षण का इतिहास

- वर्ष 1912 में सी. एच. राइस ने बिने साइमन बुद्धि परीक्षण का भारतीय अनुकूलन किया जिसका नाम 'हिन्दुस्तानी-बिने परीक्षण' रखा।
- वर्ष 1927 में डॉ. जे. मनरो ने हिन्दी, उर्दू एवं अंग्रेजी भाषा में शाब्दिक समूह बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया।
- वर्ष 1954 में मनोविज्ञानशाला इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश द्वारा सामूहिक बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया गया।
- पंजाब विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. एस. जलोटा ने सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण का निर्माण किया।

बुद्धि परीक्षण की उपयोगिता-

विभिन्न आयु वर्ग के लिए निर्मित परीक्षणों के माध्यम से हम बालक की बुद्धि का पता लगाकर उनके अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था कर सकते हैं। बुद्धि परीक्षण की निम्नलिखित उपयोगिता हो सकती है—

- सर्वोत्तम बालक का चुनाव करने में
- पिछड़े बालकों का चुनाव करने में
- अपराधी व समस्यात्मक बालकों का सुधार करने में
- बालकों की क्षमता के अनुसार कार्य करवाने में
- अपव्यय का निवारण करने में
- राष्ट्र को बालकों की बुद्धि का ज्ञान कराने में
- बालकों की भावी सफलता का ज्ञान करने में
- बालकों का वर्गीकरण करने में
- बालकों की विशिष्ट योग्यताओं का ज्ञान करने में

विभिन्न अवस्थाओं में संज्ञानात्मक विकास

पियाजे का सिद्धान्त-

पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास को मुख्य रूप से चार कालों में विभाजित किया है—

1. संवेदी-पेशीय अवस्था
2. प्राक संक्रियात्मक अवस्था
3. मूर्त संक्रिया अवस्था
4. औपचारिक संक्रिया अवस्था

1. संवेदी पेशीय अवस्था-

यह अवस्था जन्म के उपरान्त प्रथम दो वर्षों तक चलती है। इस अवस्था के बच्चे अपनी इन्द्रियों द्वारा प्राथमिक अनुभव प्राप्त करते हैं। इस अवस्था को पियाजे ने छः उप-अवस्थाओं में बाँटा है-

1. **सहज क्रियाओं की अवस्था**-यह अवस्था जन्म से 30 दिन तक होती है। इसमें शिशु केवल सहज क्रिया करता है। इनमें वस्तु को लेकर चूसने की क्रिया सबसे प्रबल होती है।
2. **प्रमुख वृत्तीय अनुक्रियाओं की अवस्था**-एक माह से चार माह तक के बच्चों की सहज क्रियाएँ कुछ सीमा तक उनकी अनुभूतियों के आधार पर परिवर्तित होती हैं, दोहराई जाती हैं और समन्वित होती हैं।
3. **गौण वृत्तीय अनुक्रियाओं की अवस्था**-यह अवस्था चार माह से आठ माह की होती है। इस अवस्था में बच्चे वस्तुओं को स्पर्श करने व इधर-उधर करने की अनुक्रियाएँ करते हैं।
4. **गौड़ स्कीमेटा के समन्वय की अवस्था**-यह अवस्था 8-12 महीने तक चलती है। इस अवस्था में शिशु, उद्देश्य और उसको प्राप्त करने के साधन में अन्तर करने लगते हैं व बड़ों का अनुकरण करने लगते हैं।
5. **तृतीय वृत्तीय अनुक्रियाओं की अवस्था**-यह अवस्था 12-18 महीने की होती है। इसमें बच्चे वस्तुओं के गुणों को प्रयत्न व भूल द्वारा सीखते व जानते हैं।
6. **मानसिक संयोग द्वारा नये साधनों के खोज की अवस्था**-यह 18-24 माह की अवस्था है। इस अवस्था में देखी हुई वस्तु की अनुपस्थिति में भी उसके अस्तित्व को समझने लगते हैं। अर्थात् उसमें वस्तु-स्थायित्व का गुण आ जाता है।

2. प्राक् संक्रियात्मक अवस्था-

* यह अवस्था लगभग 2 वर्ष की अवस्था से प्रारम्भ होकर 7 वर्ष की अवस्था तक चलती है। इस अवस्था को दो भागों में बाँटा जा सकता है-(i) प्राक् संक्रियात्मक काल या पूर्व-प्रत्ययात्मक काल, (ii) अन्तर्दर्शी अवस्था या आन्त-प्रज्ञ काल।

- (i) प्राक् संक्रियात्मक काल 2-4 वर्ष तक होती है। इस अवस्था में बच्चे अपने इधर-उधर की वस्तुओं, प्राणियों व शब्दों में सम्बन्ध स्थापित करने लगते हैं। वे अनुकरण द्वारा सीखने लगते हैं। पियाजे के अनुसार 4 वर्ष तक की अवस्था के बच्चे सभी निर्जीव वस्तुओं को सजीव के रूप में देखते हैं। इनमें अहं-केन्द्रिता की भावना प्रबल होती है। वे मानते हैं कि दुनिया उनके इर्द-गिर्द ही है।
- (ii) अन्तर्दर्शी अवस्था 4-7 वर्ष तक चलती है। इस अवस्था में बालक भाषा सीखने लगता है, चिंतन व तर्क करने लगता है। परन्तु उसके तर्क व चिंतन में कोई क्रमबद्धता नहीं होती है। छः वर्ष की आयु पूरी करते-करते बालकों में मूर्त प्रत्ययों के साथ अमूर्त प्रत्ययों का निर्माण होने लगता है।

3. मूर्त-संक्रिया अवस्था -

पियाजे ने 7 से 11 वर्ष की आयु को मूर्त संक्रिया की अवस्था कहा है। मूर्त संक्रिया अवस्था के दौरान बालक तीन गुणात्मक

मानसिक योग्यताओं में पर्याप्त निपुणता हासिल कर लेता है। ये तीन योग्यताएँ हैं-**विचारों की विलोमीयता, संरक्षण तथा क्रमबद्धता व पूर्ण-अंश संप्रत्ययों का उपयोग।** इस अवस्था की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- (i) बच्चे अधिक व्यवहारिक व यथार्थवादी होते हैं।
- (ii) बच्चों में तर्क एवं समस्या समाधान की क्षमता का विकास होने लगता है।
- (iii) मूर्त समस्याओं का समाधान बच्चे ढूँढ़ने लगते हैं। परन्तु अमूर्त समस्याओं को नहीं समझ पाते हैं।
- (iv) बच्चे वस्तुओं को उनके गुणों के आधार पर क्रमबद्ध व वर्गीकृत करने लगते हैं।
- (v) इस अवस्था में बच्चों के चिंतन में क्रमबद्धता नहीं होती है।
- (vi) इस अवस्था में बच्चों में आत्मकेन्द्रिता की भावना कम होने लगती है।

4. औपचारिक संक्रिया अवस्था -

यह संज्ञानात्मक विकास की अन्तिम अवस्था है, जो लगभग 11 से 15 वर्ष तक चलती है। इस अवस्था की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं-

- (i) उसके चिंतन में क्रमबद्धता आने लगती है।
- (ii) जैसे-जैसे बच्चों की आयु बढ़ती है, उनके अनुभव बढ़ते हैं, वैसे-वैसे उनके समस्या-समाधान की क्षमता बढ़ती है, जिसे पियाजे ने 'सम्प्रत्यय चिंतन' की संज्ञा दी है।
- (iii) पियाजे के अनुसार इस आयु के बच्चे प्रतीकात्मक शब्दों, रूपकों व उपमानों का आशय समझने लगते हैं व अमूर्त प्रत्ययों का भी निर्माण करते हैं।
- (iv) पियाजे के अनुसार प्रत्यय निर्माण की यह क्रिया अनवरत रूप से जीवन भर चलती है, जिसका प्रकार व स्तर उसकी शिक्षा व अनुभवों पर निर्भर करता है।

विभिन्न अवस्थाओं में संवेगात्मक विकास

संवेग का अर्थ एवं परिभाषाएँ-

संवेग को अंग्रेजी में 'इमोशन' (Emotion) कहते हैं। Emotion शब्द अंग्रेजी के दो शब्दों 'E' (अंदर से) तथा मोशन 'Motion' (गति) से मिलकर बना है जिसका शाब्दिक अर्थ आंतरिक भावों को बाहर की ओर गति देने से है। हिन्दी शब्द 'संवेग' का शाब्दिक अर्थ भी वेग से युक्त अर्थात् जब व्यक्ति वेगवान होकर कार्य करता है तो उसे संवेग कहते हैं। कुछ विद्वानों ने संवेग की निम्न परिभाषाएँ दी हैं-

- **बुडवर्थ के अनुसार**-"संवेग व्यक्ति के गति में अथवा आवेश में आने की स्थिति है।"
- **क्रो व क्रो के अनुसार**-"संवेग वह भावात्मक अनुभूति है, जो व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक उत्तेजनापूर्ण अवस्था तथा सामान्यीकृत आंतरिक समायोजन के साथ जुड़ी होती है और जिसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित वाह्य व्यवहार द्वारा होती है।"

संवेगों की विशेषताएँ -

- संवेग विश्व भर के सभी प्राणियों में पाये जाते हैं।
- * संवेगों के उत्पन्न होने पर अस्थायी शारीरिक/दैहिक परिवर्तन होता है।
- * सांवेगिक दशा में व्यक्ति की विचार प्रक्रिया शिथिल या विलुप्त हो जाती है।
- संवेग की अभिव्यक्ति व्यक्तिगत होती है।
- संवेग की प्रकृति अस्थायी होती है।
- संवेग कभी-कभी अन्य परिस्थितियों में स्थानान्तरित हो जाती है।
- संवेगों की उत्पत्ति मूल प्रवृत्तियों से होती है।
- * संवेगों का सम्बन्ध क्रियात्मक/व्यवहारात्मक प्रवृत्तियों से होता है।

संवेगों के प्रकार -

डेकार्ट ने संवेगों को छः प्रकार में वर्गीकृत किया है—(i) प्रशंसा, (ii) प्यार, (iii) घृणा, (iv) इच्छा, (v) हर्ष, (vi) शोक

स्पिनोजा के अनुसार संवेगों के प्रकार—

(i) हर्ष, (ii) शोक, (iii) इच्छा

वाटसन के अनुसार संवेगों के प्रकार—

(i) भय, (ii) क्रोध, (iii) प्रेम

जार्जन्सेन के अनुसार संवेगों के प्रकार—(i) भय, (ii) खुशी, (iii) शोक, (iv) इच्छा, (v) क्रोध, (vi) लज्जा

शैण्ड के अनुसार संवेगों के प्रकार

(i) जिज्ञासा, (ii) घृणा, (iii) विरक्ति, (iv) आश्चर्य, (v) अधीनता, (vi) उत्साह, (vii) कोमलता

जेम्स के अनुसार संवेगों के प्रकार—

जेम्स ने स्थूल संवेगों में दुःख, भय, क्रोध तथा प्रेम को रखा है एवं सूक्ष्म संवेगों में नैतिकता, बौद्धिकता, सौन्दर्यभाव को रखा है।

मैक्डूगल के अनुसार संवेगों के प्रकार

मैक्डूगल ने 14 मूल प्रवृत्तियों के आधार पर 14 प्रकार के संवेग बताए हैं, जिसमें प्रत्येक मूलप्रवृत्ति से सम्बन्धित एक संवेग है।

आयु	संवेग									
जन्म के समय	उत्तेजना									
1 माह	उत्तेजना	पीड़ा	आनन्द							
3 माह	उत्तेजना	पीड़ा	आनन्द	क्रोध						
6 माह	उत्तेजना	पीड़ा	आनन्द	क्रोध	घृणा	भय				
12 माह	उत्तेजना	पीड़ा	आनन्द	क्रोध	घृणा	भय	स्नेह	उल्लास		
18 माह	उत्तेजना	पीड़ा	आनन्द	क्रोध	घृणा	भय	स्नेह	उल्लास	ईर्ष्या	
24 माह	उत्तेजना	पीड़ा	आनन्द	क्रोध	घृणा	भय	स्नेह	उल्लास	ईर्ष्या	खुशी-प्रशन्नता

- शैशवावस्था के अन्तिम चरण में वातावरण संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने लगते हैं।

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास-

संवेगात्मक विकास की दृष्टि से बाल्यावस्था को 'एक अनोखी अवस्था' स्वीकार किया जाता है।

इनको निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

क्रम	मूल प्रवृत्ति	संवेग
1.	पलायन	भय
2.	युयुत्सा या लड़ना	क्रोध
3.	विकर्षण या निवृत्ति	घृणा
4.	संतान कामना	वात्सल्य
5.	प्रार्थना या शरणागति	करुणा
6.	काम प्रवृत्ति	कामुकता
7.	उत्सुकता या जिज्ञासा	आश्चर्य
8.	वितीतता या दैन्य	आत्महीनता
9.	आत्म गौरव	आत्म-अभिमान
10.	सामूहिकता	एकाकीपन
11.	भोजन तलाश	भूख
12.	संग्रहण	अधिकार
13.	रचनाधर्मिता	कृतिभाव
14.	हास या हँसना	आमोद

शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास-

जब व्यक्ति अपने संवेगों जैसे-भय, क्रोध, प्रेम आदि का सही प्रकाशन करना सीख लेता है तो यह माना जाता है कि उसका संवेगात्मक विकास हो गया है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार सभी संवेग जन्मजात नहीं होते हैं वरन् उनका विकास धीरे-धीरे होता है। शैशवावस्था की निम्नलिखित संवेगात्मक विशेषताएँ होती हैं—

- शिशुओं का संवेगात्मक विकास धीरे-धीरे अस्पष्टता से स्पष्टता की ओर बढ़ता है।
- विशिष्ट संवेग मंद गति से स्वभाव के साथ जुड़ता है।
- शारीरिक विकास के साथ-साथ संवेगात्मक विकास में तीव्रता होती है।
- शैशवावस्था के प्रारम्भ में मुख्यतया भय, क्रोध व प्रेम आदि तीन ही संवेगों का विकास होता है।
- शिशु का संवेगात्मक व्यवहार अत्यधिक अस्थिर होता है।
- मनोवैज्ञानिक ब्रिजेज ने विभिन्न संवेगों के उदय होने की औसत आयु की सारणी दी है जो निम्न हैं—

इस अवस्था में संवेगात्मक विकास की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

- इस अवस्था में संवेगों में स्थायित्व आना प्रारम्भ हो जाता है।
- बालक संवेग व समाज के नियमों में समायोजन करने लगता है।
- वह प्रत्येक क्रिया के प्रति प्रेम, ईर्ष्या, घृणा व प्रतिस्पर्धा की भावना प्रकट करने लगता है।

- माता-पिता द्वारा बताये कार्य के प्रति वह हाँ या न कहकर चुप रहता है और बाद में झूठ बोलकर अपने को उपेक्षा से बचाता है।
- इस अवस्था के अन्तिम चरणों में वह संवेगों पर नियंत्रण करना सीख जाता है।

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास-

इस अवस्था में संवेगात्मक व्यवहार में अनेक परिवर्तन आते हैं तथा इस अवस्था में सबसे अधिक संवेगात्मक अस्थिरता पायी जाती है। किशोरावस्था में होने वाले संवेगात्मक विकास की कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

- किशोरावस्था का जीवन अत्यधिक भाव प्रधान होता है। किशोर या किशोरियों में दया, प्रेम, क्रोध, सहानुभूति, सहयोग आदि भाव व प्रवृत्तियाँ अधिक प्रबल हो जाती हैं।
- किशोर या किशोरी के शारीरिक शक्ति की उनके संवेगों पर छाप होती है जैसे-सबल या स्वस्थ किशोर में संवेगात्मक स्थिरता व निर्बल या अस्वस्थ किशोर में संवेगात्मक अस्थिरता पायी जाती है।
- किशोर या किशोरी अपनी आकृति, स्वास्थ्य, सम्मान, धन प्राप्ति, शैक्षिक प्रगति, सामाजिक सफलता आदि के प्रति चिंतित रहते हैं।
- किशोरावस्था में किशोर-किशोरियों में काम-भावना, व्यवहार के केन्द्रित तत्व के रूप में कार्य करती है।
- किशोरावस्था में स्वाभिमान की भावना अत्यन्त प्रबल होती है।
- किशोर व किशोरी एक ही परिस्थिति में विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रकार का व्यवहार करते हैं। जो परिस्थिति एक अवसर पर उन्हें उल्लास से भर देती है, वही परिस्थिति दूसरे अवसर पर उन्हें खिन्न कर देती है।
- किशोर न तो बालक समझा जाता है न प्रौढ़। अतः उसे अपने संवेगात्मक जीवन में वातावरण से अनुकूलन में कठिनाई होती है। यदि वह अपने प्रयास में असफल रहता है तो उसे घोर निराशा होती है।
- किशोरावस्था में स्वतंत्रता की भावना प्रबल होती है।

संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक	
■ वंशानुक्रम	■ परिवार का वातावरण
■ वातावरण	■ अभिभावकों का दृष्टिकोण
■ स्वास्थ्य	■ सामाजिक-आर्थिक स्थिति
■ थकान	■ सामाजिक स्वीकृति
■ मानसिक योग्यता	■ विद्यालय

विभिन्न अवस्थाओं में सामाजिक विकास

सामाजिक विकास का अर्थ एवं परिभाषा

- **फ्रीमैन शॉवेल के अनुसार**—“सामाजिक विकास सीखने की वह प्रक्रिया है, जो समूह के स्तर, परम्पराओं तथा रीति-रिवाजों के अनुकूल अपने आपको ढालने तथा एकता, मेलजोल, और पारस्परिक सहयोग की भावना भरने में सहायक होती है।”

➤ **हरलॉक के अनुसार**—“सामाजिक विकास का अर्थ सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता प्राप्त करना है।”

➤ **सोरेन्सन के अनुसार**—“सामाजिक अभिवृद्धि और विकास का अर्थ है अपनी और दूसरों की उन्नति के लिए योग्यता की वृद्धि।”

अतः इन परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि सामाजिक विकास से तात्पर्य विकास की उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण के साथ अनुकूलन करता है, सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप अपनी आवश्यकताओं व रुचियों पर नियंत्रण करता है, दूसरों के प्रति अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करता है तथा अन्य व्यक्तियों के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करता है।

शैशवावस्था में सामाजिक विकास-

शिशु जन्म से सामाजिक नहीं होता है। जन्म के बाद अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के प्रति प्रतिक्रिया करता है। इस प्रकार सामाजिक प्रक्रिया प्रथम सम्पर्क में प्रारम्भ होकर जीवनपर्यंत चलती है। हम शिशु के सामाजिक विकास को निम्न प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं-

आयु		सामाजिक व्यवहार का रूप
प्रथम माह	-	तीव्र प्रकाश तथा ध्वनि के प्रति प्रतिक्रिया एवं ध्वनियों में अन्तर
द्वितीय माह	-	मानव ध्वनि पहचानना, मुस्कुराकर स्वागत करना
तृतीय माह	-	माता के लिए प्रसन्नता व माता के अभाव में दुःख
चतुर्थ माह	-	परिवार के सदस्यों को पहचानना
पंचम माह	-	प्रसन्नता व क्रोध में प्रतिक्रिया व्यक्त करना
षष्ठम माह	-	परिचितों से प्यार व अन्य लोगों से भयभीत होना
सप्तम माह	-	अनुकरण के द्वारा हाव-भाव सीखना
अष्टम व नवम् माह	-	हाव-भाव के द्वारा विभिन्न संवेगों (प्रसन्नता, क्रोध, भय) का प्रदर्शन करना।
दशम एवं ग्यारहवें माह में	-	अनुचित कार्य को मना करने पर मान जाना।
दूसरे वर्ष में	-	बड़ों के कार्य में सहायता देना, सहयोग, सहानुभूति का विकास
तीसरे वर्ष	-	पास-पड़ोस के अन्य बालकों से सम्पर्क बनाना।
चौथे वर्ष	-	नर्सरी विद्यालय के नये वातावरण के साथ समायोजन।
पाँचवें वर्ष	-	नैतिकता का विकास, सामाजिक परिपक्वता का विकास।

बाल्यावस्था में सामाजिक विकास-

बाल्यावस्था में सामाजिक विकास तीव्र गति से होता है। बाल्यावस्था में होने वाले सामाजिक विकास की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

- इस अवस्था में बालक-बालिकाएं किसी न किसी टोली का सदस्य बन जाते हैं। यह टोली ही उनके विभिन्न खेलों, वस्त्रों को पसन्द तथा अन्य उचित-अनुचित बातों का निर्धारण करते हैं।
- इस अवस्था के बालक-बालिकाओं में उत्तरदायित्व, सहयोग, साहस, सहनशीलता, सद्भावना, आत्मनियंत्रण, न्यायप्रियता आदि गुणों का विकास होने लगता है।
- इस अवस्था में बच्चे मित्र बनाने लगते हैं।
- इस आयु में बच्चे आत्म-निर्भर होने का प्रयास करते हैं। वे घर से बाहर निकलकर अन्य बालकों के साथ समय बिताते हैं, कार्य करते हैं व निर्णय भी लेते हैं। उनमें आत्म-सम्मान की मात्रा अधिक होती है।
- बाल्यावस्था में चारित्रिक व नागरिक गुणों आदि का विकास होता है। वे अपने माता-पिता, अध्यापक आदि के व्यक्तित्व से प्रभावित होते हैं और उसकी विशेषताओं को सीखते हैं।
- इस अवस्था में बच्चों में नेता बनने की भावना दिखाई देती है व सामाजिक प्रशंसा व स्वीकृति प्राप्त करने की प्रवृत्ति होती है।
- प्यार तथा स्नेह से वंचित बालक-बालिका इस आयु में प्रायः उदण्ड हो जाते हैं।

किशोरावस्था में सामाजिक विकास-

किशोरावस्था में सामाजिक विकास का स्वरूप निम्नांकित होता है-

- इस अवस्था में किशोर-किशोरी में आत्मप्रेम की भावना बहुत अधिक होती है। वे अपने वेश-भूषा पर विशेष ध्यान देते हैं तथा स्वयं को आकर्षक बनाने में अधिक समय व्यतीत करते हैं।
- किशोर व किशोरियों में विषम लिंगीय आकर्षण होने लगता है। वे एक दूसरे के साथ समय बिताने के लिए उत्सुक रहते हैं।
- इस आयु में बच्चे अपने समूह के सक्रिय व प्रतिष्ठित सदस्य बन जाते हैं और वे समूह के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं।
- इस आयु में बच्चों में आत्म सम्मान की भावना बहुत अधिक होती है और वे अपने को बच्चा न मानकर वयस्क मानते हैं।
- किशोर व किशोरी में संवेगों की तीव्र अभिव्यक्ति होती है। वे अपनी इच्छाओं को समाज के मापदण्ड के खिलाफ भी पूरा करना चाहते हैं। इसलिए उनके समायोजन में अस्थिरता आ जाती है।
- किशोर व किशोरी के अन्दर सामाजिक चेतना की जागृति ही भावी राष्ट्रीय एकता व मानवीय एकता के लिए प्रारम्भिक प्रयास है।

सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

1. वंशानुक्रम	7. विद्यालय
2. शारीरिक तथा मानसिक विकास	8. अध्यापक
3. संवेगात्मक विकास	9. राजनीतिक दल
4. परिवार	10. धार्मिक संस्थाएँ
5. आर्थिक स्थिति	11. रेडियो व दूरदर्शन जैसे जनसंचार माध्यम
6. समाज	

विभिन्न अवस्थाओं में भाषा विकास-

अभिव्यक्ति क्षमता का विकास

भाषा विकास का अर्थ एवं परिभाषाएँ -

- वेबस्टर के अनुसार-“भाषा भाव या विचार को अभिव्यक्त करने या संचारित करने का मौखिक या अन्यथा कोई साधन है।”
 - स्वीट के अनुसार-“भाषा, ध्वनियों द्वारा मानव के भावों की अभिव्यक्ति है।”
 - हरलॉक के अनुसार-“भाषा में सम्प्रेषण (विचारों का आदान-प्रदान) के वे सभी साधन आते हैं, जिसमें विचारों और भावों को प्रतीकात्मक बना दिया जाता है, जिससे कि अपने विचारों और भावों को दूसरों से अर्थपूर्ण ढंग से कहा जा सके। लिखना, पढ़ना-बोलना, मुखात्मक अभिव्यक्ति, हाव-भाव संकेतों का प्रयोग तथा कलात्मक अभिव्यक्तियाँ आदि भाषा में ही सम्मिलित हैं।”
- इस प्रकार भाषा विकास से तात्पर्य-ऐसी योग्यता से होता है जो बालक की परिपक्वता के अनुपात में उसे अपने भावों तथा विचारों को दूसरों तक पहुँचाने तथा दूसरों के भावों तथा विचारों को ग्रहण करने में सहायक होती है।

भाषा विकास के सोपान-

मनोवैज्ञानिकों ने बालकों के भाषा विकास की प्रक्रिया को दो सोपानों में वर्गीकृत किया है-

1. पूर्व-वाक् भाषा विकास अवस्था
2. पश्च-वाक् भाषा विकास अवस्था

1. पूर्व-वाक् भाषा विकास-

जन्म से 15 महीने तक की अवस्था को पूर्व वाक् भाषा विकास की अवस्था कहा जाता है। इस अवस्था में बालक अपनी आवश्यकताओं, इच्छाओं, परेशानियों आदि को अपने गामक क्रियाओं या अभिव्यक्तात्मक वाचकता आदि के द्वारा अभिव्यक्त करता है। पूर्व-वाक् भाषा अवस्था को निम्न चार प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है-

- A. रूदन-**रूदन नवजात शिशु का सबसे पहला ध्वनीय वाचकता होती है।
- B. बड़बड़ाना-**अर्थपूर्ण प्रतीत होने वाली ध्वनियों को बड़बड़ाना कहा जाता है। प्रथम दो महीनों में बालक रोने के साथ-साथ कुछ अन्य अस्पष्ट ध्वनियाँ करने लगता है, जो आकस्मिक क्रियाओं द्वारा अपने-आप उत्पन्न होती हैं। जब बालक 7-8 महीने का होता है तब वह ये ध्वनियाँ जानबूझकर करता है और ये ध्वनियाँ अर्थ पूर्ण प्रतीत होने लगती हैं जैसे-मामा, दा-दा, नाना आदि। यही ध्वनियाँ बड़बड़ाना कहलाती हैं।
- C. हाव-भाव-**हाव-भाव से तात्पर्य शरीर के अंगों द्वारा की गयी सार्थक क्रियाओं से है। हाव-भाव का प्रयोग बालक तब तक करता है जब तक कि वह शब्दों व वाक्यों के रूप में अपने को अभिव्यक्त करने में सक्षम नहीं हो जाता है।
- D. सांवेगिक अभिव्यक्ति-**शिशु अपने सुखद संवेगों को हँसकर, खिलखिलाकर, अपनी बाँहों को फैलाकर अभिव्यक्त करता है जबकि दुःखद संवेगों को रोकर, सिसककर, सहमकर, अभिव्यक्त करता है।

2. पश्च-वाक् भाषा विकास-

पन्दह माह के बाद की अवस्था को पश्च-वाक् भाषा विकास की अवस्था कहा जाता है। इस अवस्था में बालक अपनी आवश्यकताओं, परेशानियों, इच्छाओं, भावों, विचारों आदि को शब्दों वाक्यों अथवा भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। इस अवस्था को पाँच भागों में विभाजित किया जा सकता है-

- (i) **भाषा अवबोध**-भाषा विकास की महत्वपूर्ण विशेषता भाषा अवबोधन होता है। शिशु प्रारम्भ में दूसरों के भाषा को समझने की योग्यता अपने में विकसित करता है। इसके लिए वह परिजनों के हाव-भाव तथा मुखाकृति अभिव्यक्ति के आधार पर उनके द्वारा बोले जाने वाले शब्दों व वाक्यों को समझने का प्रयास करता है।
- (ii) **शब्दावली निर्माण**-पश्च-वाक् भाषा विकास का दूसरा सोपान बालक द्वारा स्वयं की शब्दावली का निर्माण करना है। साधारणतः एक वर्ष का बालक 10 शब्दों, डेढ़ वर्ष का बालक 30 शब्दों तथा 2 वर्ष का बालक 200-300 शब्दों का प्रयोग करने लगता है। बालक के स्कूल में पहुँचने पर उसका शब्द भण्डार अत्यन्त तेजी से बढ़ता है।
- (iii) **वाक्य संगठन**-लगभग 2 वर्ष का बालक शब्दों की सहायता से वाक्य बनाने का प्रयास करने लगता है। किन्तु ये वाक्य अस्पष्ट तथा भाषा विज्ञान की दृष्टि से अपूर्ण होते हैं। जब बालक 5 साल का हो जाता है तो सभी शब्दों को समझते हुए छोटे-छोटे वाक्यों को सही ढंग से बनाना व बोलना सीख जाता है।

भाषा की प्रगति	
आयु	शब्द
जन्म से आठ माह	0 शब्द
10 माह	1
1 वर्ष	3-10
1 वर्ष 3 माह	19
1 वर्ष 6 माह	22-30
1 वर्ष 9 माह	118
2 वर्ष	200-300
4 वर्ष	1550
5 वर्ष	2072
6 वर्ष	2562

- (iv) **सही उच्चारण**-बालक अपने परिजनों या अन्य व्यक्तियों के अनुकरण द्वारा शब्दों का उच्चारण करना सीखता है। प्रारम्भ में बालक अस्पष्ट तथा अपूर्ण उच्चारण करता है। धीरे-धीरे अशुद्धता को दूर करके शुद्ध उच्चारण सीखता है।
- (v) **भाषा स्वामित्व**-यह पश्च-वाक् भाषा का अन्तिम सोपान होता है। इस सोपान के अन्तर्गत बालक लिखित तथा मौखिक दोनों भाषा पर प्रभावी ढंग से नियंत्रण अर्जित करता है।

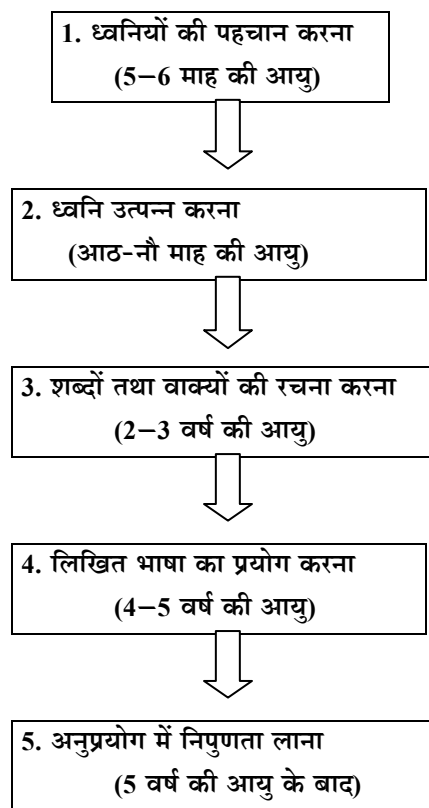
इन्हें भी जानें-

हाइडर नामक मनोवैज्ञानिक ने अध्ययन करके निम्न परिणाम प्राप्त किये-

- बालिकाओं की भाषा का विकास बालकों की अपेक्षा तेजी से होता है।
- अपनी बात को ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता बालिकाओं में अधिक होती है।
- बालकों की अपेक्षा बालिकाओं के वाक्यों में शब्द संख्या अधिक होती है।
- भाषा विकास पर बच्चे के स्वास्थ्य (शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य) बुद्धि व वाणी दोष, सामाजिक, आर्थिक स्तर आदि का प्रभाव पड़ता है।

भाषा विकास का क्रम-

भाषा विकास के पाँच प्रमुख क्रमों को निम्न प्रकार से लिखा जा सकता है-



भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कारक

- | | |
|-------------------|------------------------|
| 1. स्वास्थ्य | 2. बुद्धि |
| 3. यौन भिन्नता | 4. सामाजिक-आर्थिक स्तर |
| 5. परिवार का आकार | 6. जन्मक्रम |
| 7. बहुजन्म | 8. बहु भाषावादी |
| 9. संगी साथी | 10. अभिभावक प्रेरणा |

भाषा विकास का सिद्धान्त

स्कीनर ने भाषा सीखने की प्रक्रिया के स्पष्टीकरण हेतु अनुकरण तथा संशोधन प्रतिमान को प्रस्तुत किया। इस प्रक्रिया के अनुसार बालक वयस्कों के ध्वनियों व शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनते हैं तथा उनका अनुकरण करते हैं। जब वे वयस्कों के शब्दों व वाक्यों का सही ढंग से अनुकरण करने में समर्थ हो जाते हैं, तो वयस्क उनके इस व्यवहार की प्रशंसा करके उसे पुनर्वर्लित करते हैं। इससे बालक भाषा को जल्दी सीख जाता है।

***नोआम चाम्स्की—**

- नोआम चाम्स्की अमेरिकी भाषा वैज्ञानिक है।
- इन्होंने वर्ष 1957 में 'सिंथेटिक स्ट्रक्चर' नामक ग्रंथ लिखा।
- चाम्स्की के अनुसार मनुष्य में भाषा अर्जन की जन्मजात एवं मस्तिष्क की अंतर्निहित क्षमता होती है।
- इनके अनुसार बालक में LAD (Language Acquisition and Device) होती है, जिससे वे भाषा के नियमों को स्वतः ही अपने वातावरण से ग्रहण कर लेते हैं। इसी को इन्होंने आंतरिक व्याकरण कहा है।
- नोआम चाम्स्की ने सार्वभौमिक भाषा का सिद्धांत दिया।

भाषा विज्ञान

स्वनिम—स्वनिम किसी भाषा की ध्वनि-व्यवस्था में पायी जाने वाली लघुतम इकाई है। स्वनिमों का अपना अर्थ नहीं होता किन्तु वे अर्थभेदक होते हैं जैसे—'प' 'क' 'न' 'अ' आदि।

रूपिम—रूपिम भाषा की लघुतम अर्थवान इकाई है। रूपिम की संकल्पना में शब्द, धातु, प्रतिपदिक, प्रत्यय आदि सभी आ जाते हैं। रूपिम की एक मुख्य विशेषता यह होती है कि इसे और अधिक सार्थक खण्डों में विभक्त नहीं किया जा सकता है।

विभिन्न अवस्थाओं में सृजनात्मक विकास

सृजनात्मकता का अर्थ एवं परिभाषाएँ—

- **ड्रेवहल के अनुसार**—“सृजनात्मकता वह मानवीय योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नवीन रचना या विचारों को प्रस्तुत करता है।”
- **क्रो एवं क्रो के अनुसार**—“सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की एक मानसिक प्रक्रिया है।”
- **क्रो और ब्रूस के अनुसार**—“सृजनात्मकता मौलिक उत्पाद के रूप में मानव मस्तिष्क को समझने, व्यक्त करने तथा सराहना करने की योग्यता व क्रिया है।”

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि सृजनात्मकता में संवेदनशीलता, जिज्ञासा, कल्पना, मौलिकता, खोजपरकता, लचीलापन, प्रवाह, विस्तृतता नवीनता आदि गुणों का समावेशन होता है।

सृजनात्मकता के तत्व—

सृजनात्मकता के चार प्रमुख तत्व होते हैं—

- (i) **प्रवाह**—सृजनात्मकता में प्रवाह होता है। प्रवाह से तात्पर्य किसी दी गयी समस्या पर अधिकाधिक विचारों, प्रत्युत्तरों या अनुक्रियाओं को प्रस्तुत करने से होता है।
- (ii) **विविधता**—विविधता से तात्पर्य किसी समस्या पर दिये गये उत्तरों, विकल्पों में विविधता से है। अतः सृजनात्मकता में विविधता के गुण होने चाहिए।
- (iii) **मौलिकता**—सृजनात्मकता में मौलिकता के गुण होते हैं। अर्थात् सृजनात्मकता तब होगी जब नवीन विचारों या वस्तुओं की उत्पत्ति होगी।
- (iv) **विस्तारण**—सृजनात्मकता में विस्तारण का गुण होना चाहिए।

सृजनात्मकता की प्रक्रिया—

ई. पी. टोरेन्स तथा **आर. ई. मायर्स** ने सृजनात्मक प्रक्रिया के निम्न चार सोपान बताये हैं—

- (i) समस्याओं की पहचान
- (ii) उपलब्ध सूचनाओं का संकलन
- (iii) समाधानों को खोजना
- (iv) परिणामों का संचरण

शैशवावस्था में सृजनात्मक विकास—

- शैशवावस्था में शिशु बहुत कल्पनाशील होता है। वह अपनी कल्पना के आधार पर ही नयी वस्तुओं का सृजन करता है जैसे—कागज की नाव बनाना, उड़ने वाला जहाज बनाना, कागज पर तरह-तरह के चित्र बनाना उसमें रंग भरना आदि।
- शैशवावस्था में सृजनात्मक क्षमता का विकास भलीभाँति होना आवश्यक है, क्योंकि इसमें हम बालक की कल्पना शक्ति का प्रयोग करते हैं।
- इस क्षमता का विकास करके हम उनके भावी जीवन का निर्माण करते हैं व शिशु के व्यक्तित्व का उचित विकास करते हैं।

बाल्यावस्था में सृजनात्मक विकास—

- प्रत्येक बच्चे में सृजन की क्षमता जन्मजात होती है, छोटे बच्चों के खेलों में यह सृजनात्मक शक्ति स्पष्ट रूप से झलकती है। रचनात्मक कार्यों द्वारा वह सीखते और आगे बढ़ते हैं। इसके लिए हम बच्चों को कुछ स्वयं करने का अवसर दें, आस-पास की वस्तुओं का ज्ञान वे अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त करें और अनुभव करें। बच्चों की कल्पना निरीक्षण व स्मरण शक्ति के विकास द्वारा ही उनकी सृजनात्मक क्षमता विकसित होगी।
- बच्चों की सृजनात्मक शक्ति का विकास हम कई प्रकार की क्रियाओं द्वारा कर सकते हैं जैसे—खेल, कला, नृत्य, अभिनय और बेकार की वस्तुओं से सामग्री तैयार करना आदि।

किशोरावस्था में सृजनात्मक शक्ति का विकास-

- इस अवस्था के बच्चों में कल्पना की अधिकता होती है, वह सृजनात्मक कार्य करके अपनी कल्पना को यथार्थ का रूप देना चाहता है।
- किशोर-किशोरी में सृजनात्मक शक्ति के विकास के लिए विद्यालय में तरह-तरह की पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना चाहिए। जैसे-वाद-विवाद प्रतियोगिता, साहित्यिक गोष्ठियाँ, नाटक एवं संगीत, नाटकीय खेल, व्यर्थ सामग्री का उपयोग करके कुछ नई वस्तु की रचना आदि।
- सृजनात्मक क्षमता का विकास करके ही उन्हें हम कुशल डॉक्टर, इंजीनियर, साहित्यकार, शिक्षक या समाज का मार्गदर्शक बनने में सहायता कर सकते हैं।

सृजनात्मक बालकों की विशेषताएँ

1. अन्वेषणात्मक तथा जिज्ञासात्मक प्रकृति
2. विचारों तथा अभिव्यक्ति में मौलिकता
3. गैर परम्परागत विचारों में रुचि
4. जोखिम उठाने को तत्पर
5. अभिव्यक्ति में विविधता
6. स्वतंत्र निर्णय क्षमता

7. अभिव्यक्ति में स्व: स्फूर्तता
8. सृजन का गौरव
9. विस्तारण क्षमता
10. अभिव्यक्ति में प्रवाह
11. उच्च आकांक्षा स्तर
12. दूरदृष्टि

सृजनात्मक परीक्षण

मानकीकृत विदेशी परीक्षण-

- (i) मिनीसोटा सृजनात्मक चिंतन परीक्षण
- (ii) गिलफोर्ड का बहु-विधि चिंतन परीक्षण
- (iii) रिमोट एसोशिएशन परीक्षा
- (iv) बलाक एवं कारगन का सृजनात्मक उपकरण
- (v) सृजनात्मक योग्यता का ए.सी. परीक्षण
- (vi) टैरैन्स का सृजनात्मक चिंतन परीक्षण

भारत में मानकीकृत परीक्षण-

- (i) बाकर मेहदी सृजनात्मक चिंतन परीक्षण-हिन्दी एवं अंग्रेजी
- (ii) पासी सृजनात्मक परीक्षण
- (iii) शर्मा बहु-विधि उत्पादन योग्यता परीक्षण
- (iv) सेक्सेना सृजनात्मक परीक्षण

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्न में से किसकी भूमिका पूर्व बाल्यावस्था में बालक के संवेगात्मक विकास हेतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण है?
(a) अध्यापकों की (b) संगी-साथियों की
(c) पड़ोसियों की (d) माता-पिता की
2. पद 'संवेगात्मक क्रान्ति' किस अवस्था से अधिक जुड़ा हुआ है?
(a) शैशवावस्था से (b) बाल्यावस्था से
(c) किशोरावस्था से (d) प्रौढ़ावस्था से
3. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक बच्चे के संवेगात्मक विकास को सबसे कम प्रभावित करने वाला है?
(a) परिवार (b) आर्थिक स्थिति
(c) स्वास्थ्य (d) खेलकूद
4. अधिगमकर्ता में बढ़ते हुए क्रोध को रोकने के लिए अध्यापक को चाहिए—
(a) कि उसके सभी हितों की सुरक्षा करें भले ही वे अनुचित हों।
(b) कि बालक के दिन-प्रतिदिन के मामलों में कोई हस्तक्षेप न करे।
(c) कि वह उसे अनदेखा कर दें
(d) कि बालक को क्रोध करने पर दण्ड दें
5. शिशु के प्रति सहानुभूति एवं प्यार-दुलार से किस संवेग की उत्पत्ति होती है?
(a) क्रोध (b) भय
(c) अनुराग (d) आक्रामकता।
6. निम्न में से कौन-सा व्यवहार भावनात्मक बाधा को प्रदर्शित नहीं करता है?
(a) बाल अपराध (b) कमजोरों को डराने वाला
(c) भगोड़ापन (d) स्वालीनता।
7. स्पीनोजा ने संवेग को कितने प्रकार से बाँटा है?
(a) 2 (b) 3
(c) 4 (d) 5
8. इनमें से कौन सी प्रकृति भावनात्मक विकास से संबद्ध नहीं है?
(a) भावनाओं की उत्पत्ति शारीरिक परिवर्तन के साथ शुरू होती है
(b) भावनाओं का प्रस्फूटन जन्म के साथ होने लगता है
(c) शुरुआत वाह्यकाल के दौरान भावनाओं का प्रचण्ड रूप नजर आता है
(d) भावनाएं शरीरिक विकास से असम्बद्ध होती हैं
9. मैक्डयूगल के अनुसार मूल प्रवृत्ति 'जिज्ञासा' का सम्बन्ध संवेग कौन-सा है?
(a) भय (b) घृणा
(c) आश्चर्य (d) भूख
10. "संवेगात्मक रूप से अभिप्रेरित बच्चों" की मुख्य विशेषता है—
(a) उनका अतिप्रक्रियात्मक स्वभाव

- (b) उनका अंतर्मुखी स्वभाव
(c) अपने विचार प्रकट करने का संतुलित तरीका
(d) उनका विषादग्रस्त व्यवहार
11. परीक्षा में तनाव-निष्पत्ति को प्रभावित करता है। यह तथ्य निम्नलिखित में से किस प्रकार के सम्बन्ध को स्पष्ट करता है?
(a) संज्ञान-भावना (b) तनाव-विलोपन
(c) निष्पत्ति-चिन्ता (d) संज्ञान-प्रतियोगिता
12. जब बच्चे की दादी, उसे उसकी माँ की गोद से लेती है, तो बच्चा रोने लगता है। बच्चा के कारण रोता है।
(a) वियोग दुश्चिन्ता (b) सामाजिक दुश्चिन्ता
(c) संवेगात्मक दुश्चिन्ता (d) अजनबी दुश्चिन्ता
13. खेल के माध्यम से बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण करना सीख जाता है तो यह विकास निम्न में से कौन-सा है?
(a) सामाजिक विकास (b) शारीरिक विकास
(c) संवेगात्मक विकास (d) इनमें से कोई नहीं
14. निम्नलिखित में से कौन-सी परिस्थिति में बच्चे का संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास अच्छे से होगा?
(a) जब बच्चे को महत्वपूर्ण माना जाए, उसकी भावनाओं का सम्मान किया जाए।
(b) बच्चे को अधिक-से-अधिक पढ़ने को कहा जाए।
(c) बच्चे के कक्षा में अच्छे अंक आए।
(d) जब शिक्षक बच्चों को उनके बौद्धिक स्तर के अनुसार पढ़ाए।
15. मूल प्रवृत्तियों को चौदह प्रकार से किसने वर्गीकृत किया है?
(a) ड्रेवर (b) मैकडूगल
(c) थॉर्नडाइक (d) वुडवर्थ
16. व्यापक वफादारी, दया भावना में वृद्धि व मानसिक स्थिति में उतार-चढ़ाव संबंधित है-
(a) शारीरिक विकास की विशेषताएं
(b) संवेगात्मक विकास की विशेषताएं
(c) सामाजिक विकास की विशेषताएं
(d) सांस्कृतिक विकास की विशेषताएं
17. भय संवेग उत्पन्न करने के लिए स्वाभाविक उद्दीपक है-
(a) दर्द
(b) अचानक उत्पन्न होने वाला उद्दीपक
(c) अहंकार युक्त स्थान
(d) तेजी से गिरती हुई वस्तु
18. मनोवैज्ञानिकों के अनुसार निम्नलिखित में से किस विधि द्वारा मूल-प्रवृत्तियों में परिवर्तन लाया जा सकता है?
(a) सहसम्बन्ध (b) मार्गान्तरीकरण
(c) विलयन (d) नवीनीकरण
19. क्रोध व भय प्रकार हैं -
(a) अभिप्रेरणा (b) संवेग
(c) परिकल्पना (d) मूलप्रवृत्ति
20. मैकडूगल के अनुसार प्रत्येक मूल प्रवृत्ति से सम्बद्ध होता है
(a) संज्ञान (b) संवेग
(c) संवेदना (d) चिन्तन
21. 'संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है' यह कथन निम्नांकित में से किसका है?
(a) पियाजे (b) वुडवर्थ
(c) वैलेन्टाइन (d) रॉस
22. संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक हैं
(a) शारीरिक स्वास्थ्य (b) मानसिक योग्यता
(c) थकान (d) ये सभी
23. सृजनशीलता के पोषण के लिए एक अध्यापक को निम्न में से किस विधि की सहायता लेनी चाहिए?
(a) ब्रेन स्टार्मिंग/विचारावेश (b) व्याख्यान विधि
(c) दृश्य-श्रव्य सामग्री (d) इनमें से सभी
24. बच्चे तब सर्वाधिक सृजनशील होते हैं, जब वे किसी गतिविधि में भाग लेते हैं।
(a) शिक्षक की डाँट से बचने के लिये
(b) दूसरों के सामने अच्छा करने के दबाव में आकर
(c) अपनी रुचि से
(d) पुरस्कार के लिए
25. शिक्षक बच्चों को सृजनात्मक विचारों के लिए प्रोत्साहित कर सकता है
(a) उन्हें बहु-विकल्पी प्रश्न देकर
(b) समस्या समाधान आधारित प्रश्न पूछकर
(c) उन्हें उत्तर कंठस्थ करने के लिए कहकर
(d) उनसे प्रत्यास्मरण-आधारित प्रश्न पूछकर
26. 2 से 3 वर्ष की आयु के मध्य एक बच्चे की भाषायी विकास दर (% में) बढ़ता है लगभग.....
(a) 50 से 1000 तक (b) 2 से 10 तक
(c) 20 से 50 तक (d) 50 से 5 तक
27. दूसरे वर्ष में अन्त तक शिशु का शब्द भण्डार हो जाता है-
(a) 100 शब्द (b) 60 शब्द
(c) 50 शब्द (d) 10 शब्द
28. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 दस्तावेज में भाषा के लिए निहित है
(a) एक भाषा (b) द्वि भाषा
(c) तीन भाषा (d) बहु भाषा
29. अनुकरण की प्रक्रिया में सर्वप्रथम शिशु अनुकरण करता है
(a) व्यंजन वर्णों का (b) स्वर वर्णों का
(c) स्वर व व्यंजन वर्णों का (d) शब्दों का।

30. सामान्य बुद्धि बालक प्रायः किस अवस्था में बोलना सीख जाते हैं?
 (a) 11 माह (b) 16 माह
 (c) 34 माह (d) 51 माह।
31. अधिकांश बालक अपनी मातृभाषा सीख लेते हैं
 (a) एक वर्ष की आयु में (b) चार वर्ष की आयु में
 (c) छः वर्ष की आयु में (d) दो वर्ष की आयु में
32. जीवन के शुरुआती अवधि के दौरान यदि किसी भाषा को सीख लिया जाता है तो हर बच्चा
 (a) भाषा पर विदेशियों की तरह प्रवीणता हासिल कर सकता है।
 (b) एकमूल (पैत्रिक) भाषायी/भाषज निवासी की भांति प्रवाह प्राप्त कर सकता है
 (c) धीमा (सुस्त) प्रशिक्षु बन सकता है
 (d) एक वयस्क वक्ता बन सकता है
33. भाषा के विकास के लिए प्रारम्भिक बचपन काल है।
 (a) कम महत्वपूर्ण (b) अमहत्वपूर्ण
 (c) अतिसंवेदनशील (d) निरपेक्ष
34. कक्षा एक में बच्चों की भाषा कौशल का विकास क्रम में होना चाहिए?
 (a) सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना
 (b) लिखना, पढ़ना, सुनना, बोलना
 (c) सुनना, लिखना, बोलना, पढ़ना
 (d) लिखना, बोलना, पढ़ना, सुनना
35. भाषा शिक्षण की प्रथम कक्षा किसे माना जाता है?
 (a) पूर्व प्राथमिक कक्षा को (b) प्लेवे विद्यालय को
 (c) घर को (d) उपरोक्त सभी
36. हिन्दी अक्षरों को बालक किस उम्र में पहचानने लगते हैं?
 (a) 3 वर्ष की आयु में (b) 4 वर्ष की आयु में
 (c) 5 वर्ष की आयु में (d) 6 वर्ष की आयु में
37. एक विद्यार्थी कहता है, उसका दादा आया है। एक शिक्षक होने के नाते आपकी प्रतिक्रिया होनी चाहिए।
 (a) आप अपनी भाषा पर ध्यान दीजिए
 (b) अच्छा, उसके दादाजी आए हैं
 (c) बच्चे, आप सही वाक्य नहीं बोल रहे
 (d) दादा आया है की जगह पर दादाजी आए हैं कहना चाहिए
38. भाषा में अर्थ की सबसे छोटी इकाई है।
 (a) स्वनिम (b) संकेत प्रयोग विज्ञान
 (c) वाक्य (d) रूपिम
39. बच्चों के भाषायी विकास के लिए जरूरी है कि—
 (a) उनको अधिक-से-अधिक अपने विचार व्यक्त करने के अवसर देने चाहिए।
 (b) भाषायी कौशलों के विकास हेतु गतिविधियां आयोजित की जानी चाहिए।
 (c) लिखना, पढ़ना, बोलना तथा सुनने का अभ्यास करना चाहिए।
 (d) उपरोक्त सभी।
40. थ, फ, च ध्वनियाँ हैं
 (a) स्वनिम (b) रूपिम
 (c) लेखीम (d) शब्दिम
41. स्वयं की भावनाओं तथा संवेगों को नियंत्रित करने से सम्बन्धित बुद्धि को क्या कहा जाता है?
 (a) भाषायी बुद्धि (b) अंतः वैयक्तिक बुद्धि
 (c) स्थानिक बुद्धि (d) वैयक्तिक बुद्धि
42. आर. बी. कैटल की तरल बुद्धि तुल्य है
 (a) वंशानुगत कारकों के (b) पर्यावरणीय कारकों के
 (c) बौद्धिक कारकों के (d) सामाजिक कारकों के
43. निम्न में से कौन सृजनात्मकता का एक लक्षण नहीं है?
 (a) लचीलापन (b) मौलिकता
 (c) विस्तारण (d) सततता
44. सृजनात्मक चिन्तन सदैव होता है
 (a) विनाशकारी (b) रचनात्मक
 (c) अभिसारी (d) एकरसता
45. सृजनात्मकता के बारे में क्या गलत है?
 (a) सृजनात्मकता तथा बुद्धि सदैव साथ-साथ चलते हैं
 (b) सृजनात्मकता में लचीलापन होता है
 (c) सृजनात्मकता सार्वभौमिक प्रत्यय है
 (d) सृजनात्मकता में अहम् का समावेश होता है
46. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?
 (a) सृजनशीलता किसी भी कला में मौलिकता होती है।
 (b) सृजनशीलता के लिए चिन्तन आवश्यक नहीं है।
 (c) सृजनशीलता किसी पूरा किये गये काम का एक नया परिणाम होता है।
 (d) सृजनशीलता में समाज या किसी समूह के लिए उपयोगिता होनी चाहिए।
47. अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि से तात्पर्य है
 (a) स्वयं की क्षमताओं एवं कमजोरियों की पहचान करना
 (b) दूसरों को अभिप्रेरित करने का कौशल
 (c) विभिन्न व्यक्तियों को समझने का कौशल
 (d) दूसरों के साथ बातचीत करने का कौशल
48. बुद्धि का एकल घटक या एकल अव्यय सिद्धान्त दिया था?
 (a) थार्नडाइक ने (b) पॉवलव ने
 (c) एल्फ्रेड बिने (d) फ्रीमैन ने
49. निम्नलिखित में सृजनशीलता का प्रमुख तत्व क्या नहीं है?
 (a) मौलिकता (b) अनुशासन
 (c) धाराप्रवाहिता (d) लचीलापन
50. हार्वर्ड गार्डनर द्वारा निम्न में से एक को छोड़कर बाकी सभी बुद्धि के प्रकार बताए गए हैं
 (a) भाषा (b) सृजनात्मकता
 (c) अन्तर्वैयक्तिक कौशल (d) अन्तः वैयक्तिक कौशल
51. बुद्धि के बहुकारक सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं
 (a) मैकडूगल (b) टर्मन
 (c) थॉर्नडाइक (d) बर्ट

52. सृजनात्मकता की पहचान होती है
 (a) पुराने व्यवहार से (b) चित्रकला से
 (c) संगीत से (d) नवीन परिणाम से।
53. निम्नलिखित में से क्या बच्चों के सृजनात्मकता के विकास में सहायक नहीं है?
 (a) खेल (b) भाषण
 (c) कहानी लेखन (d) निर्माण संबंधी क्रियाएँ
54. सृजनशीलता के पोषण हेतु, एक अध्यापक को अपने विद्यार्थियों को रखना चाहिए
 (a) कार्य केन्द्रित (b) लक्ष्य केन्द्रित
 (c) कार्य केन्द्रित एवं लक्ष्य केन्द्रित (d) पुरस्कार प्रेरित
55. वह विचारात्मक प्रक्रिया जिसमें नूतन, वास्तविक तथा उपयोगी अवधारणाओं का प्रस्तुतीकरण निहित हो, कही जाती है
 (a) रचनात्मकता (b) अभिनव
 (c) बुद्धिमत्ता (d) नवविचार
56. बुद्धि का कौन-सा सिद्धान्त सामान्य बुद्धि 'g' और विशिष्ट बुद्धि 's' की उपस्थिति का समर्थन करता है?
 (a) नियम प्रतिकूल सिद्धान्त
 (b) गिलफोर्ड के बुद्धि का सिद्धान्त
 (c) स्पीयरमैन का द्विखण्ड सिद्धान्त
 (d) वर्नोन का पदानुक्रमिक सिद्धान्त
57. कक्षा-अध्यापक ने राघव को अपनी कक्षा में अपने की-बोर्ड पर स्वयं द्वारा तैयार किया गया मधुर संगीत बजाते हुए देखा। कक्षा-अध्यापक ने विचार किया कि राघव में बुद्धि उच्च स्तरीय थी।
 (a) शारीरिक-गतिबोधक (b) संगीतमय
 (c) भाषायी (d) स्थानिक
58. एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों की विभिन्न अधिगम-शैलियों को सन्तुष्ट करने के लिए वैविध्यपूर्ण कार्यों का उपयोग करती है। वह से प्रभावित है
 (a) पियाजे के संज्ञात्मक विकास के सिद्धांत
 (b) कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत
 (c) गार्डनर के बहुबुद्धि सिद्धांत
 (d) वागोत्स्की के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत
59. शारीरिक गतिक बुद्धि रखने वाले बच्चे को अंतिम अवस्था निम्नलिखित में से कौन-सी हो सकती है?
 (a) कवि (b) वाचक
 (c) राजनैतिक नेता (d) शल्य चिकित्सक
60. बहुबुद्धि सिद्धांत निम्नलिखित निहितार्थ देता है सिवाय
 (a) संवेगात्मक बुद्धि, बुद्धि-लब्धि से सम्बन्धित नहीं है
 (b) बुद्धि प्रक्रमण संक्रियाओं का एक विशिष्ट समुच्चय है जिसका उपयोग एक व्यक्ति द्वारा समस्या समाधान के लिए किया जाता है
 (c) विषयों को विभिन्न तरीकों से प्रस्तुत किया जा सकता है
 (d) विविध तरीकों से सीखने का आकलन प्रस्तुत किया जा सकता है

61. हॉवर्ड गार्डनर के बहुबुद्धि सिद्धांत के अनुसार निम्नलिखित का मिलना कीजिए

बुद्धि का प्रकार		अंत व्यवस्था	
(a)	संगीतात्मक	(1)	चिकित्सक
(b)	भाषिक	(2)	कवि
(c)	अंतर्वैयक्तिक	(3)	खिलाड़ी
(d)	स्थानिक	(4)	वायलिन-वादक
		(5)	मूर्तिकार

	A	B	C	D
(a)	2	4	1	5
(b)	5	2	4	1
(c)	4	2	1	5
(d)	4	2	5	3

62. हॉवर्ड गार्डनर का बहुबुद्धि सिद्धांत सुझाता है कि—
 (a) बुद्धि को केवल बुद्धिलब्धि परीक्षा से ही निर्धारित किया जा सकता है।
 (b) शिक्षक को चाहिए कि विषय-वस्तु को वैकल्पिक विधियों से पढ़ाने के लिए बहुविधियों को एक रूपरेखा की तरह ग्रहण करे।
 (c) क्षमता भाग्य है और एक अवधि के भीतर नहीं बदलती।
 (d) हर बच्चे को प्रत्येक विषय आठ भिन्न तरीकों से पढ़ाया जाना चाहिए ताकि सभी बुद्धियाँ विकसित हों।

63. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए

सूची I	सूची II
A. एक तत्व सिद्धान्त	1. गिलफोर्ड
B. बहुतत्व सिद्धान्त	2. ब्रिने
C. समूह तत्व सिद्धान्त	3. थार्नडाइक
D. त्रिआयाम सिद्धान्त	4. थर्स्टन

कूट

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	4	3	2	1	(b)	4	1	2	3
(c)	3	4	2	1	(d)	1	2	3	4

64. गार्डनर के बहु-बुद्धि के सिद्धान्त के अनुसार, वह कारक जो व्यक्ति के 'आत्म-बोध' हेतु सर्वाधिक योगदान देगा, वह हो सकता है —
 (a) संगीतमय (b) आध्यात्मिक
 (c) भाषा-विषयक (d) अन्तःवैयक्तिक
65. इनमें में से कौन-सा त्रितंत्रीय सिद्धान्त में व्यावहारिक बुद्धि का अभिप्राय नहीं है?
 (a) पर्यावरण का पुनर्निर्माण करना
 (b) केवल अपने विषय में व्यावहारिक रूप से विचार करना
 (c) इस प्रकार के पर्यावरण का चयन करना जिसमें आप सफल हो सकते हैं
 (d) पर्यावरण के साथ अनुकूलन करना
66. बुद्धि का तरल मोजेक मॉडल किसने दिया था?
 (a) कैटेल (b) गिल्फोर्ड
 (c) थर्स्टन (d) स्पीयरमैन

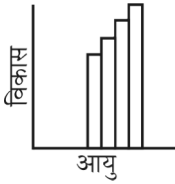
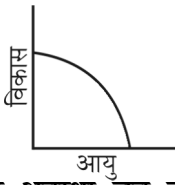
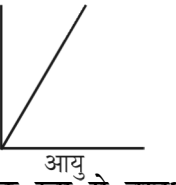
67. स्पीयरमैन (1904) के अनुसार तर्क करने की क्षमता और समस्या समाधान करने की क्षमता कहलाती है
 (a) एस कारक (b) जी कारक
 (c) विशिष्ट बुद्धि (d) सांस्कृतिक बुद्धि
68. संज्ञान किस बुद्धि के सिद्धान्त का हिस्सा है—
 (a) प्रतिदर्श सिद्धान्त
 (b) समूहकारक सिद्धान्त
 (c) गिलफोर्ड का सिद्धान्त
 (d) फ्लूइड तथा क्रिस्टलाइज्ड का सिद्धान्त
69. बुद्धि के द्विकारक सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया?
 (a) थॉर्नडाइक (b) स्पीयरमैन
 (c) वर्नन (d) स्टर्न
70. तार्किक गणितीय बुद्धि से संबंधित है।
 (a) द्वि-कारक सिद्धान्त (b) समूह कारक सिद्धान्त
 (c) पदानुक्रमिक सिद्धान्त (d) बहु बुद्धि सिद्धान्त
71. निम्नलिखित में से कौन-सा एक उदाहरण भाषिक बुद्धि वाले व्यक्ति को दर्शाता है?
 (a) स्वर, राग और सुर के प्रति संवेदनशीलता
 (b) ध्यान देने और दूसरे से अन्तर कर सकने की योग्यता
 (c) तर्क की दीर्घ शृंखलाओं को सम्भाल सकने की योग्यता
 (d) शब्दों के अर्थ, क्रम तथा भाषा के विविध प्रयोगों के प्रति संवेदनशीलता
72. अंतरावैयक्तिक बुद्धि से तात्पर्य है—
 (a) स्वयं की क्षमताओं एवं कमजोरियों की पहचान करना
 (b) दूसरों को अभिप्रेरित करने का कौशल
 (c) विभिन्न व्यक्तियों को समझने का कौशल
 (d) दूसरों के साथ बातचीत करने का कौशल
73. अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से.....का हिस्सा है।
 (a) शारीरिक विकास (b) सामाजिक विकास
 (c) संवेगात्मक विकास (d) बौद्धिक विकास
74. बहुविध बुद्धि सिद्धान्त के अनुसार सभी प्रकार के पशुओं, खनिजों और पेड़-पौधों को पहचानने और वर्गीकृत करने की योग्यता कहलाती है।
 (a) तार्किक-गणितीय बुद्धि (b) प्राकृतिक बुद्धि
 (c) भाषिक बुद्धि (d) स्थानिक बुद्धि
75. निम्नलिखित में से कौन-सी बहुबुद्धि सिद्धान्त की आलोचना है?
 (a) बहुबुद्धि शिक्षार्थियों को अपने रुझान को खोजने में मदद उपलब्ध कराती है।
 (b) यह व्यावहारिक बुद्धि पर आवश्यकता से अधिक बल देती है।
 (c) यह आनुभविक साक्ष्यों को बिल्कुल भी समर्थन नहीं दे सकती।
 (d) बहुबुद्धि केवल 'प्रतिभाएँ' हैं जो पूर्ण रूप में बुद्धि में विद्यमान रहती हैं।
76. ---- के अतिरिक्त बुद्धि के निम्नलिखित पक्षों को स्टेनबर्ग के त्रितंत्र सिद्धान्त से संबोधित किया गया है।
 (a) संदर्भगत (b) अवयवभूत
 (c) सामाजिक (d) आनुभविक
77. हार्वर्ड गार्डनर का बुद्धि का सिद्धान्त ---- पर बल दता है
 (a) शिक्षार्थियों में अनुबंधित कौशलों
 (b) सामान्य बुद्धि
 (c) विद्यालय में आवश्यक समान योग्यताओं
 (d) प्रत्येक व्यक्ति की विलक्षण योग्यताओं
78. निम्नलिखित में से कौन-सा निरीक्षण हॉवर्ड गार्डनर के बहुविध-बुद्धि सिद्धान्त का समर्थन करता है?
 (a) मस्तिष्क के एक भाग में हुई क्षति केवल किसी एक विशिष्ट योग्यता को प्रभावित करती है न कि सम्पूर्ण को
 (b) बुद्धि विश्लेषणात्मक सृजनात्मक एवं व्यवहारात्मक बुद्धियों की अंतःक्रिया है
 (c) विभिन्न बुद्धियाँ अपने स्वरूप में पदानुक्रमात्मक हैं
 (d) अनुदेशन के प्रारूप का निर्माण करते समय अध्यापकों को किसी एक विशिष्ट शैक्षिक नवाचार के सिद्धान्त का अनुपालन करना चाहिए
79. निम्नलिखित में से कौन-सा आलोचनात्मक दृष्टिकोण 'बहु-बुद्धि सिद्धान्त' (Theory of Multiple Intelligences) से सम्बद्ध नहीं है?
 (a) यह शोधाधारित नहीं है।
 (b) विभिन्न बुद्धियाँ भिन्न-भिन्न विद्यार्थियों के लिए विभिन्न पद्धतियों की मांग करती है
 (c) प्रतिभाशाली विद्यार्थी प्रायः एक क्षेत्र में ही अपनी विशिष्टता प्रदर्शित करते हैं।
 (d) इसका कोई अनुभवात्मक आधार नहीं है
80. संवेगात्मक बुद्धि, बहुबुद्धि सिद्धान्त के किस क्षेत्र के साथ सम्बन्धित हो सकती है?
 (a) अंतरा-वैयक्तिक और अंतःवैयक्तिक बुद्धि
 (b) प्राकृतिक बुद्धि
 (c) चाक्षुष-स्थानिक बुद्धि
 (d) अस्तित्वपरक बुद्धि
81. 'बहुबुद्धि के सिद्धान्त' के संदर्भ में एयरफोर्स पायलट बनने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी बुद्धि की आवश्यकता है?
 (a) अंतःवैयक्तिक (b) भाषिक
 (c) गतिक (d) अंतरा-वैयक्तिक
82. बुद्धि की स्पीयरमैन परिभाषा में कारक 'g' है —
 (a) आनुवंशिक बुद्धि (b) उत्पादक बुद्धि
 (c) सामान्य बुद्धि (d) वैश्विक बुद्धि
83. बुद्धि के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सर्वाधिक उपयुक्त है?
 (a) बुद्धि को केवल मानकीकृत बुद्धिलब्धि परीक्षणों के आयोजन के द्वारा विश्वसनीय रूप से निर्धारित किया जा सकता है।
 (b) बुद्धि मूलभूत रूप से स्नायु-तंत्र-संबंधी कार्यप्रणाली है। उदाहरणार्थ- प्रक्रमण की गति, संवेदी-विभेद आदि।
 (c) बुद्धि विद्यालय में अच्छा प्रदर्शन करने की योग्यता है।
 (d) बुद्धि बहु-आयामी है और इसमें कई पहलू निहित हैं।

84. सृजनात्मकता क्या है?
- बुद्धि का एक प्रकार जो उन कौशलों से संबंधित है, जो संचित किए गए ज्ञान और अनुभव पर निर्भर होते हैं।
 - बुद्धि का एक प्रकार जो संसाधन की गति को शामिल करते हुए सूचना-प्रक्रमण कौशलों पर अत्यधिक निर्भर होता है।
 - समस्याओं के मौलिक और अपसारी समाधानों को पहचानने अथवा तैयार करने की योग्यता।
 - सृजनात्मकता 200 से ऊपर की बुद्धिलब्धि से सर्वाधिक बेहतर ढंग से परिभाषित होती है।
85. गार्डनर ने सात अभियोग्यताओं का अधिमान निर्धारित किया, इसमें से कौन-सा नहीं है?
- स्थान सम्बन्धी अभियोग्यता
 - भावनात्मक अभियोग्यता
 - अन्तर्वैयक्तिक अभियोग्यता
 - भाषात्मक अभियोग्यता
86. निम्न में से कौन-सा शिक्षार्थियों में सृजनात्मकता का पोषण करता है?
- अच्छी शिक्षा के व्यावहारिक मूल्यों के लिए विद्यार्थियों का शिक्षण
 - प्रत्येक शिक्षार्थी की अन्तर्जात प्रतिभाओं का पोषण
 - विद्यालयी जीवन के प्रारम्भ से उपलब्धि के लक्ष्यों पर बल देना
 - परीक्षा में अच्छे अंकों के लिए विद्यार्थियों की कोचिंग करना
87. जो बुद्धि सिद्धांत में सम्मिलित मानसिक प्रक्रियाओं (जैसे परा-घटक) और बुद्धि द्वारा लिए जा सकने वाले विधिक रूपों (जैसे सृजनात्मक बुद्धि) की शामिल करता है, वह है
- स्पीयरमैन का जी कारक
 - स्टैनबर्ग का बुद्धिमत्ता का त्रितंत्र
 - बुद्धि का सावेट सिद्धांत
 - थर्स्टन का प्राथमिक मानसिक योग्यताएँ
88. सृजनात्मक मुख्य रूप से से संबंधित है
- मॉडलिंग
 - अनुकरण
 - अभिसारी चिंतन
 - अपसारी (बहुविध) चिंतन
89. बुद्धि के तरल क्रिस्टलीय प्रतिमान के प्रतिपादक कौन थे?
- कैटेल
 - थॉर्नडाइक
 - वर्नन
 - स्किनर
90. निम्न में से कौन-सा बुद्धि का सिद्धान्त नहीं है?
- एक-तत्त्व सिद्धान्त
 - द्वि-तत्त्व सिद्धान्त
 - प्रत्यागमन सिद्धान्त
 - बहुतत्त्व सिद्धान्त
91. यह आवश्यक नहीं है कि उच्च बुद्धि लब्धि वाले बच्चे में भी उच्च होंगे।
- सृजनशीलता
 - अध्ययन
 - विश्लेषण करने
 - अच्छे अंक प्राप्त करने
92. बुद्धि एवं सृजनात्मकता में किस प्रकार का सहसम्बन्ध पाया गया है?
- धनात्मक
 - ऋणात्मक
 - शून्य
 - ये सभी
93. निम्न में से कौन-सी परिस्थिति सृजनात्मकता को बढ़ाने में सहायक होगी?
- सीखने हेतु सीमित अवसर हों।
 - बच्चों को उत्तर याद करने के लिए कहा जाए।
 - समस्या का समाधान बता दिया जाए।
 - जब बच्चों को स्वयं करके सीखने के लिए अधिक-से-अधिक अवसर दिए जाएं।
94. “सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।” यह कथन है
- कोल एवं ब्रूस का
 - ड्रेवहल का
 - डीहान का
 - क्रो एवं क्रो का
95. सृजनात्मक शिक्षार्थी है—
- अभिसारी चिंतक
 - अपसारी चिंतक
 - बहिर्मुखी
 - बहुत परिश्रमी
96. निम्न में कौन सृजनात्मकता से सम्बन्धित नहीं है?
- मौलिकता
 - प्रवाह
 - मितव्ययिता
 - उपयोगिता
97. “सृजनशीलता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक क्रिया है।”
- उपरोक्त कथन किसके द्वारा दिया गया है?
- क्रो एण्ड क्रो
 - जेम्स ड्रेवर
 - रॉस
 - स्किनर
98. निम्न में से कौन अधिगमकर्ता को अधिक स्वतन्त्रता देता है?
- संरचनावाद
 - क्रियाशीलतावाद
 - व्यवहारवाद
 - सृजनशीलतावाद
99. विज्ञान एवं कला प्रदर्शनियाँ, संगीत एवं नृत्य प्रस्तुतियाँ तथा विद्यालय-पत्रिका निकालना, के लिए है।
- शिक्षार्थियों को सृजनात्मक मार्ग उपलब्ध कराने
 - विभिन्न व्यवसायों के लिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने
 - विद्यालय का नाम रोशन करने
 - अभिभावकों को संतुष्ट करने
100. गिलफोर्ड ने ‘अपसारी चिन्तन’ पद का प्रयोग किसके समान अर्थ में किया है?
- बुद्धि
 - सृजनात्मकता
 - बुद्धि एवं सृजनात्मकता
 - इनमें से कोई नहीं।
101. निम्न में से कौन-सी सृजनात्मकता की विशेषता नहीं?
- मौलिकता
 - उत्पादकता
 - अपरिवर्तनशीलता
 - नवीन ज्ञान की खोज
102. बुद्धिलब्धि संबंधी विभिन्नताओं में कौन सम्मिलित नहीं है?
- औसत बुद्धिमान
 - बुद्धिमान
 - कला में रुचि
 - मंदबुद्धि

103. निम्नलिखित में से बौद्धिक वातावरण को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक कौन-सा है?
 (a) विद्यालय का वातावरण (b) परिवार का वातावरण
 (c) पास-पड़ोस का वातावरण (d) सांस्कृतिक वातावरण
104. किस प्रकार के विकास से एकाग्रता तथा सृजनात्मकता का संबंध है?
 (a) सामाजिक विकास (b) नैतिक विकास
 (c) बौद्धिक विकास (d) संवेगात्मक विकास
105. बुद्धि एक तर्कसंगत चिंतन है, बुद्धि की यह परिभाषा दी—
 (a) स्टर्न (b) टर्मेन
 (c) स्पीयमैन (d) बिने
106. 1908 में प्रथम बिनेट-साइमन परीक्षण संशोधन निर्गत हुआ
 (a) 1911 (b) 1912
 (c) 1913 (d) 1914
107. अमेरिका में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान व्यक्ति की बुद्धिमत्ता का परीक्षण..... में शुरू हुआ
 (a) अनुभव (b) समूचे
 (c) संयोजन (d) समूहों
108. “व्यावहारिक बुद्धि का अर्थ है कि बुद्धि संस्कृति का उत्पाद होती है।” यह किसका कथन है?
 (a) स्टेनबर्ग (b) वाइगॉट्स
 (c) सैलोवी (d) मेयर।
109. एक बालक जिसकी बुद्धिलब्धि 105 है उसे वर्गीकृत किया जाएगा :
 (a) श्रेष्ठ बुद्धि (b) सामान्य से अधिक बुद्धि
 (c) सामान्य बुद्धि (d) मन्द बुद्धि
110. निम्न में से कौन कथन बुद्धि के बारे में सत्य नहीं है?
 (a) यह एक व्यक्ति की मानसिक क्षमता है
 (b) यह सामंजस्य/अनुकूलन स्थापित करने में सहायक है
 (c) यह व्यवहार की गुणवत्ता से आँकी जाती है
 (d) यह स्थाई एवं अपरिवर्तनशील विशेषता है।
111. प्रायः बालकों की बुद्धि का मापन किया जाता है
 (a) अ-वाचिक समूह बुद्धि परीक्षणों के द्वारा
 (b) वाचिक समूह बुद्धि परीक्षणों के द्वारा
 (c) अ-वाचिक व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षणों के द्वारा
 (d) वाचिक व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षणों के द्वारा।
112. निम्न में से कौन बुद्धि परीक्षणों के दुरुपयोग का संकेत देता है?
 (a) उन्नति के लिये मापन में सहायक
 (b) बुद्धि लब्धि का लेबल बालकों पर लगा कर अध्यापक अपनी अकुशलता को छिपाते हैं
 (c) बालकों को वर्गीकृत करने में
 (d) अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिये।
113. यदि एक बच्चे की मानसिक आयु 5 वर्ष तथा वास्तविक आयु 4 वर्ष है तो उस बच्चे की IQ होती है
 (a) 125 (b) 80
 (c) 120 (d) 100
114. “बुद्धि पर वंशानुक्रम का प्रभाव होता है।” किसने कहा है?
 (a) गैसल (b) गाल्टन
 (c) टर्मेन (d) डॉ. माथुर।
115. मनुष्य का व्यवहार मुख्यतः किससे प्रेरित होता है?
 (a) कौशल (b) अभिक्षमता
 (c) अभिवृत्ति (d) बुद्धि।
116. एक जुड़वाँ भाइयों में से एक को सामाजिक-आर्थिक रूप से धनाढ्य परिवार द्वारा गोद लिया जाता है और दूसरे को एक निर्धन परिवार द्वारा। एक वर्ष के बाद उनके बुद्धि-लब्धांक के बारे में निम्नलिखित में से क्या अवलोकित होने की सर्वाधिक सम्भावना है?
 (a) धनी सामाजिक-आर्थिक परिवार वाले लड़के की अपेक्षा निर्धन परिवार वाला लड़का अधिक अंक प्राप्त करेगा
 (b) सामाजिक-आर्थिक स्तर बुद्धि लब्धांक को प्रभावित नहीं करता
 (c) निर्धन परिवार वाले लड़के की अपेक्षा धनी सामाजिक-आर्थिक परिवार वाला लड़का अधिक अंक प्राप्त करेगा
 (d) दोनों समान रूप से अंक प्राप्त करेंगे
117. बुद्धि लब्धांक सामान्यतः रूप से शैक्षणिक निष्पादन से सम्बन्धित होती है।
 (a) मध्यम (b) कम-से-कम
 (c) पूर्ण (d) उच्च
118. बुद्धि है—
 (a) सामर्थ्यों का एक समुच्चय
 (b) एक अकेला और जातीय विचार
 (c) दूसरे को अनुकरण करने की योग्यता
 (d) एक विशिष्ट योग्यता
119. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?
 (a) लड़के अधिक बुद्धिमान होते हैं
 (b) लड़कियाँ अधिक बुद्धिमान होती हैं
 (c) बुद्धि का लिंग के साथ संबंध नहीं है
 (d) सामान्यतः लड़के, लड़कियों से अधिक बुद्धिमान होते हैं
120. अधिकांश व्यक्तियों की बुद्धि औसत होती है, बहुत कम लोग प्रतिभा-संपन्न होते हैं और बहुत कम व्यक्ति मंद बुद्धि के होते हैं। यह कथन के प्रतिस्थापित सिद्धांत पर आधारित है।
 (a) बुद्धि और जातीय विभिन्नताओं
 (b) बुद्धि के वितरण
 (c) बुद्धि की वृद्धि
 (d) बुद्धि और लैंगिक विभिन्नताओं
121. एक बालक की मानसिक आयु 12 वर्ष और शारीरिक आयु 10 वर्ष है। उसका बुद्धिलब्धांक होगा—
 (a) 120 (b) 100
 (c) 22 (d) 83
122. बुद्धि लब्धि मापने के जन्मदाता हैं
 (a) स्टर्न (b) बिने
 (c) टर्मेन (d) उपरोक्त में कोई नहीं
123. जड़ बुद्धि वाले बालक का IQ (बुद्धि लब्धि) कितना होता है?
 (a) 111-120 (b) 91-110
 (c) 71-80 (d) 71 से कम

124. 16 वर्षीय बच्चा बुद्धि लब्धि परीक्षण में 75 अंक प्राप्त करता है। उसकी मानसिक आयु वर्ष होगी।
 (a) 15 (b) 12
 (c) 8 (d) 14
125. मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बुद्धि
 (a) सीखने की क्षमता है (b) अमूर्त चिन्तन की योग्यता है
 (c) या तो (a) या (b) (d) (a) और (b)
126. चेंस तथा कार्ड को निम्न में किसमें वर्गीकृत किया जा सकता है?
 (a) लड़ाई वाले खेल (b) बौद्धिक खेल
 (c) प्रायोगिक खेल (d) गतिमान खेल
127. बुद्धिलब्धि के सम्बन्ध में क्या सत्य है?
 (a) बौद्धिक आयु में व्युत्क्रमी सम्बन्धित
 (b) कालानुक्रमिक आयु से प्रत्यक्षतः सम्बन्धित
 (c) कालानुक्रमिक आयु से व्युत्क्रमी सम्बन्धित
 (d) बौद्धिक तथा कालानुक्रमिक आयु दोनों से प्रत्यक्षतः सम्बन्धित
128. बिने-साइमन परीक्षण द्वारा मापन किया जाता है
 (a) सामान्य बुद्धि का (b) विशिष्ट बुद्धि का
 (c) अभिवृद्धि का (d) अभिक्षमता का
129. मानसिक आयु के प्रत्यय का सर्वप्रथम प्रयोग किया
 (a) थॉर्नडाइक (b) गिल्फर्ड
 (c) स्पीयरमैन (d) बिने-साइमन
130. औसत बुद्धि वाले बालकों की बुद्धि लब्धि (I.Q.) के बीच होगी।
 (a) 50-59 (b) 70-89
 (c) 90-109 (d) 110-129
131. आठ वर्ष के सुधीर की मानसिक आयु दस वर्ष है। उसकी बुद्धिलब्धि कितनी है?
 (a) 80 (b) 100
 (c) 110 (d) 125
132. टर्मन के अनुसार 90-100 बुद्धिलब्धि का बालक माना जाता है-
 (a) मन्द बुद्धि
 (b) सामान्य बुद्धि
 (c) श्रेष्ठ बुद्धि
 (d) क्षीण बुद्धि
133. बुद्धि लब्धि की गणना का सही सूत्र निम्न में से कौन-सा है?
 (a) $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$
 (b) $\frac{\text{वास्तविक आयु}}{\text{मानसिक आयु}}$
 (c) $\frac{\text{वास्तविक आयु}}{\text{मानसिक आयु}} \times 100$
 (d) $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु} \times 100}$
134. पाँच वर्ष के मोहन की मानसिक आयु आठ वर्ष है। उसकी बुद्धि लब्धि कितनी है?
 (a) 150 (b) 160
 (c) 140 (d) 135
135. 12 वर्ष से 16 वर्ष के बच्चों के लिए हिन्दी में डॉ. एस. जलोटा ने कौन-सा परीक्षण प्रतिपादित किया है?
 (a) अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण
 (b) साधारण मानसिक योग्यता परीक्षण
 (c) आर्मी अल्फा परीक्षण
 (d) चित्रांकन परीक्षण
136. 'स्टैनफोर्ड-बिने परीक्षण' मापन करता है
 (a) व्यक्तित्व का (b) पढ़ने की दक्षता का
 (c) बुद्धि का (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
137. बुद्धिलब्धि अवधारणा के प्रथम प्रतिपादक कौन है?
 (a) जे.पी. गिलफोर्ड (b) अलफ्रेड बिने
 (c) जे.एस. ब्रूनर (d) विलियम स्टर्न
138. मानव बुद्धि एवं विकास की समझ शिक्षक को--- के योग्य बनाती है।
 (a) निष्पक्ष रूप से अपने शिक्षण-अभ्यास
 (b) शिक्षण के समय शिक्षार्थियों के संवेगों पर नियंत्रण बनाए रखने
 (c) विविध शिक्षार्थियों के शिक्षण के बारे में स्पष्टता
 (d) शिक्षार्थियों को यह बनाने कि वे अपने जीवन में कैसे सुधार कर सकते, हैं।
139. किसने सबसे पहले बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया?
 (a) एल्फ्रेड बिने (b) चार्ल्स एडवर्ड स्पीयरमैन
 (c) रॉबर्टे स्टर्नबर्ग (d) डेविड वैश्लर
140. बुद्धि-लब्धांक के आधार पर विभिन्न समूहों में विद्यार्थियों का वर्गीकरण उनकी स्व-गरिमा को है और उनके शैक्षणिक निष्पादन को है।
 (a) घटाता; घटाता (b) घटाता; प्रभावित नहीं करता
 (c) बढ़ाता; घटाता (d) बढ़ाता; बढ़ाता
141. जीन पियाजे की संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाओं के अनुसार जिसे पूर्व-प्रत्ययात्मक काल के रूप में जाना जाता है, निम्न में से किससे सम्बन्धित है?
 (a) इन्द्रिय गति अवस्था से
 (b) मूर्त संक्रिया अवस्था से
 (c) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था से
 (d) औपचारिक-संक्रिया अवस्था से
142. पियाजे के संज्ञानात्मक सिद्धान्त की अवस्थाओं का क्रम निम्न है-
 (a) संवेदनात्मक गामक काल- मूर्त संक्रियात्मक काल- पूर्वसंक्रियात्मक काल- औपचारिक संक्रियात्मक काल
 (b) संवेदनात्मक गामक काल- पूर्व-संक्रियात्मक काल- मूर्त संक्रियात्मक काल- औपचारिक संक्रियात्मक काल
 (c) पूर्वसंक्रियात्मक काल- संवेदनात्मक गामक काल- मूर्त संक्रियात्मक काल- औपचारिक संक्रियात्मक काल
 (d) पूर्वसंक्रियात्मक काल- संवेदनात्मक गामक काल- औपचारिक संक्रियात्मक काल- मूर्त संक्रियात्मक काल

143. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त के अनुसार समाविष्टीकरण से तात्पर्य है
- पूर्ववर्ती विद्यमान बौद्धिक संरचनाओं तथा वातावरणीय माँग का मिलान
 - चिन्तन के नये तरीकों का समावेश तथा पूर्ववर्ती विद्यमान बौद्धिक संरचनाओं में सुधार करते हुए व्यवहार करना
 - पूर्व ज्ञान तथा नवीन ज्ञान के बीच साम्यावस्था होना
 - प्रत्यक्षात्मक व संज्ञानात्मक सूचनाओं को सार्थक पैटर्न में व्यवस्थित करना
144. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त की मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था निम्न योग्यता द्वारा लक्षित नहीं होती है
- विचारों की विलोमीयता
 - मानसिक द्वन्द्व
 - संरक्षण
 - क्रमबद्धता व पूर्ण-अंश प्रत्ययों का प्रयोग
145. वस्तुओं को क्रम से लगाने की क्षमता बालक में विकसित होती है जब वह
- इन्द्रियगति अवस्था में हो
 - पूर्व क्रिया अवस्था में हो
 - मूर्त क्रिया अवस्था में हो
 - औपचारिक क्रिया अवस्था में हो
146. “घटना और वस्तुओं के बारे में एक बच्चा तार्किक रूप से सोच सकता है” पियाजे के चरणों के सम्बन्ध में सही कथन है
- सेन्सरी तन्त्रिका तन्त्र (Sensory Motor)
 - प्रारम्भिक संचालन प्रक्रिया (Pre Operational)
 - मूर्त संचालन प्रक्रिया (Concrete Operational)
 - औपचारिक संचालन प्रक्रिया (Formal Operation)
147. निम्न सिद्धान्तों में से कौन बच्चे के बौद्धिक विकास के 4 चरणों (संवेदी-चालक, पूर्व परिचालन, सुदृढ़ परिचालन एवं औपचारिक परिचालन) को चिह्नित करता है?
- एरिक्सन का मनो-सामाजिक विकास का सिद्धान्त
 - फ्रयड का मानसिक-यौन विकास का सिद्धान्त
 - जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त
 - कोलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धान्त
148. समायोजन से तात्पर्य स्वयं का विभिन्न परिस्थितियों में अनुकूलन करना है ताकि सन्तुष्ट किया जा सके
- दूसरों को
 - प्रेरकों को
 - उद्देश्यों को
 - आवश्यकताओं को।
149. पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाओं को बाँटा गया है
- चार भागों में
 - तीन भागों में
 - दो भागों में
 - पाँच भागों में।
150. जीन पियाजे द्वारा परिभाषित चरण जिसमें ज्ञानात्मक विकास की शुरुआत शिशु द्वारा अपनी संवेदना (विवेक) एवं गतिविधियों का इस्तेमाल दुनिया को समझने के साथ होती है, कहलाता है?
- संवेदी मोटर अवस्था
 - संचालन पूर्व अवस्था
 - साकार (मूर्त) अवस्था
 - इनमें कोई नहीं।
151. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त के अनुसार संवेदी-क्रियात्मक अवस्था होती है
- जन्म से 2 वर्ष
 - 2 से 7 वर्ष
 - 7 से 11 वर्ष
 - 11 से 16 वर्ष
152. एक बच्ची को उसके पिता चहलकदमी करा रहे थे। बच्ची जानती थी कि चिड़िया जैसी चीजें होती हैं परन्तु उसने कभी पतंग को नहीं देखा था। पतंग को देखकर उसने कहा ‘चिड़िया को तो देखो’ उसके पिता ने कहा ‘यह एक पतंग है’। यह उदाहरण दिखाता है।
- सम्मिलन
 - समायोजन
 - संरक्षण
 - वस्तु का प्रदर्शन
153. जीन पियाजे के अनुसार, प्रारूप (स्कीमा) निर्माण वर्तमान योजनाओं के अनुरूप बनाने हेतु नवीन जानकारी में संशोधन और नवीन जानकारी के आधार पर पुरानी योजनाओं में संशोधन के परिणाम के रूप में घटित होता है। इन दो प्रक्रियाओं को जाना जाता है—
- समावेशन और अनुकूलन के रूप में
 - साम्यीकरण और संशोधन के रूप में
 - समावेशन और समायोजन के रूप में
 - समायोजन और अनुकूलन के रूप में
154. पियाजे की औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था, बालक की किस आयु अवधि तक मानी जाती है?
- 0-2 वर्ष
 - 2-7 वर्ष
 - 7-11 वर्ष
 - 11-15 वर्ष
155. वह कौन-सा स्थान है जहाँ बच्चे के ‘संज्ञानात्मक’ विकास को सबसे बेहतर तरीके से परिभाषित किया जा सकता है?
- खेल का मैदान
 - विद्यालय एवं कक्षा पर्यावरण
 - सभागार
 - घर
156. जीन पियाजे के अनुसार अनुकूलन..... द्वारा होता है।
- आत्मसात्करण
 - व्यवस्थापन
 - अनुभव
 - आत्मसात्करण तथा व्यवस्थापन
157. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के चरणों के अनुसार, इन्द्रिय-गामक (संवेदी-प्रेरक) अवस्था किसके साथ सम्बन्धित है?
- सामाजिक मुद्दों से सरोकार
 - अनुकरण, स्मृति और मानसिक निरूपण
 - तार्किक रूप से समस्या-समाधान की योग्यता
 - विकल्पों के निर्वचन और विश्लेषण करने की योग्यता
158. मध्य बाल्यावस्था में भाषा के बजाय अधिक है।
- समाजीकृत, अहंकेन्द्रित
 - जीववादी, समाजीकृत
 - परिपक्व, अपरिपक्व
 - अहंकेन्द्रित, समाजीकृत

159. पियाजे के सिद्धांत में आयतन, लंबाई मात्रा इत्यादि का संरक्षण किस अवस्था में होता है?
 (a) स्थूल प्रक्रिया (b) औपचारिक प्रक्रिया
 (c) पूर्व प्रक्रिया (d) संवेदी-पेशीय प्रक्रिया
160. पियाजे मुख्य रूप से किसके अध्ययन के लिए जाने जाते हैं?
 (a) भाषा विकास (b) यौन विकास
 (c) संज्ञानात्मक विकास (d) सामाजिक विकास
161. पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की द्वितीय अवस्था है?
 (a) ज्ञानेन्द्रिय अवस्था
 (b) औपचारिक संक्रियता की अवस्था
 (c) पूर्व-संक्रिया की अवस्था
 (d) मूर्त संक्रिया की अवस्था
162. मानव के ज्ञानात्मक (मानसिक) विकास की मूर्त संक्रिया अवस्था में सामान्यतः किस आयु काल को शामिल किया जाता है?
 (a) लगभग दो से सात वर्ष तक
 (b) जन्म से दो वर्ष तक
 (c) लगभग सात से ग्यारह वर्ष तक
 (d) लगभग बारह से पंद्रह वर्ष तक
163. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त में अमूर्त तर्क एवं परिपक्व नैतिक चिंतन किस अवस्था की विशेषताएँ हैं?
 (a) संवेदनात्मक-गामक अवस्था
 (b) पूर्व संक्रियावस्था
 (c) औपचारिक संक्रियावस्था
 (d) मूर्त संक्रिया अवस्था
164. जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित कथनों में से सही कथन कौन-सा है?
 (a) बच्चों के सांस्कृतिक आधार के अनुसार इन चरणों का क्रम बदला जा सकता है।
 (b) पियाजे का तर्क है कि संज्ञानात्मक विकास, चरणों में आगे बढ़ने की अपेक्षा निरंतर होता है।
 (c) पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के पाँच स्पष्ट चरण प्रस्तावित किए हैं।
 (d) किसी चरण को छोड़ा नहीं जा सकता क्योंकि ये चरण स्थिर हैं।
165. निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही मिलान वाला जोड़ा है ?
 (a) मूर्त संक्रियात्मक बच्चा - संधारण एवं वर्गीकरण करने योग्य
 (b) औपचारिक संक्रियात्मक बच्चा - अनुकरण प्रारंभ, कल्पनापरक खेल
 (c) शैशवावस्था - तर्क का अनुप्रयोग और अनुमान लगाने में सक्षम
 (d) पूर्वसंक्रियात्मक बच्चा - निगमनात्मक विचार
166. नवीन जानकारी को शामिल करने के लिए वर्तमान स्कीमा (अवधारणा) में बदलाव की प्रक्रिया कहलाती है—
 (a) अनुकूलन (b) आत्मसात्करण
 (c) समायोजन (d) अहंकेन्द्रिता
167. पियाजे के अनुसार 2 से 7 वर्ष के बीच का एक बच्चा संज्ञानात्मक विकास की अवस्था में है—
 (a) पूर्व संक्रियात्मक (b) औपचारिक संक्रियात्मक
 (c) मूर्त संक्रियात्मक (d) संवेदी-गतिक
168. पूर्व-संक्रियात्मक काल में आने वाली संज्ञानात्मक योग्यता है
 (a) अमूर्त चिंतन की योग्यता
 (b) अभिकल्पनात्मक निष्कर्ष चिंतन
 (c) लक्ष्य-उद्दिष्ट व्यवहार की योग्यता
 (d) दूसरे के दृष्टिकोण को समझने की योग्यता
169. छिपी हुई वस्तुएँ ढूँढ़ निकालना इस बात का संकेत है कि शिशु निम्नलिखित में से किस संज्ञानात्मक कार्य में दक्षता प्राप्त करने लगा है?
 (a) साभिप्राय व्यवहार (b) वस्तु-स्थायित्व
 (c) समस्या-समाधान (d) प्रयोग करना
170. पियाजे के विकासात्मक सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य - में निम्नलिखित में से कौन-सा आरेख विकास को समुचित रूप से स्पष्ट करता है।
 (a)  (b) 
 (c)  (d) 
171. वह अवस्था जब बच्चा तार्किक रूप से वस्तुओं व घटनाओं के विषय में चिंतन प्रारंभ करता है, है
 (a) औपचारिक-संक्रियात्मक अवस्था
 (b) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था
 (c) मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था
 (d) संवेदी-प्रेरक अवस्था
172. पियाजे के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास के किस चरण पर बच्चा 'वस्तु स्थायित्व' को प्रदर्शित करता है?
 (a) मूर्त संक्रियात्मक चरण
 (b) औपचारिक संक्रियात्मक चरण
 (c) संवेदी प्रेरक चरण
 (d) पूर्व-संक्रियात्मक चरण
173. पियाजे के अधिगम के संज्ञानात्मक सिद्धान्त के अनुसार, वह प्रक्रिया जिसके द्वारा संज्ञानात्मक संरचना को संशोधित किया जाता है, कहलाती है।
 (a) प्रत्यक्षण (b) समायोजन
 (c) समावेशन (d) स्कीमा

174. पियाजे के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सी अवस्था में बच्चा अमूर्त संकल्पनाओं के विषय में तार्किक चिंतन करना आरंभ करता है?
- (a) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (12 वर्ष एवं ऊपर)
(b) संवेदी प्रेरक अवस्था (जन्म से 02 वर्ष)
(c) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (02 - 07 वर्ष)
(d) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (07 - 11 वर्ष)
175. उत्तर बाल्यावस्था में बालक भौतिक वस्तुओं के किस आवश्यक तत्व में परिवर्तन समझने लगते हैं?
- (a) द्रव्यमान (b) द्रव्यमान और संख्या
(c) संख्या (d) द्रव्यमान, संख्या और क्षेत्र।
176. बालकों की सोच अमूर्तता की अपेक्षा मूर्त अनुभवों एवं प्रत्ययों से होती है। यह अवस्था है
- (a) 7 से 12 वर्ष तक (b) 12 से वयस्क तक
(c) 2 से 7 वर्ष तक (d) जन्म से 2 वर्ष तक।
177. संज्ञानात्मक विकास के चार चरणों - संवेदी पेशीय, पूर्व संक्रियात्मक, स्थूल संक्रियात्मक और औपचारिक संक्रियात्मक, की पहचान की गई है।
- (a) हिलगार्ड द्वारा (b) स्टॉट द्वारा
(c) हरलॉक द्वारा (d) पियाजे द्वारा
178. निम्न में से किसको विद्यालय में सामाजीकरण की विशिष्ट अवस्था माना जाता है?
- (a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
(c) प्रौढ़ावस्था (d) किशोरावस्था
179. निम्नलिखित में से कौन-सा किसी बच्चे के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाला व्यक्तिगत कारक नहीं है?
- (a) मित्र मंडली (b) स्वास्थ्य
(c) संवेग (d) बुद्धि
180. खेलकूद के जरिए बच्चों में किस प्रकार का विकास संभव है?
- (a) परस्पर सम्मान की भावना (b) सहयोग एवं सामंजस्य
(c) सामाजिक गुण (d) इनमें सभी
181. 'समाजमिति तकनीक' का प्रयोग किया जाता है—
- (a) आर्थिक स्तर की जाँच में (b) समाज के सर्वेक्षण में
(c) समाजीकरण की जाँच में (d) उपरोक्त सभी
182. निम्नलिखित में से कौन-सी संस्था सामाजिक परम्पराओं के हस्तांतरण में सबसे अधिक योगदान करती है?
- (a) परिवार (b) विद्यालय
(c) पड़ोस (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
183. बच्चों के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक हैं
- (a) आर्थिक तत्व (b) सामाजिक परिवेशजन्य तत्व
(c) शारीरिक तत्व (d) वंशानुगत तत्व
184. निम्न में से किसका मिलान सही है?
- (a) शारीरिक विकास-वातावरण
(b) संज्ञानात्मक विकास-परिपक्वता
(c) सामाजिक विकास-वातावरण
(d) संवेगात्मक विकास-परिपक्वता
185. बच्चों के सामाजिक विकास में..... का विशेष महत्त्व है।
- (a) खेल (b) बाल साहित्य
(c) दिनचर्या (d) संचार माध्यम
186. निम्नलिखित में से कौन प्रारम्भिक बाल्यावस्था अवधि के दौरान उन भूमिकाओं एवं व्यवहारों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं जो एक समूह में स्वीकार्य हैं?
- (a) भाई-बहन एवं अध्यापक (b) अध्यापक एवं साथी
(c) साथी एवं माता-पिता (d) माता-पिता एवं भाई-बहन
187. बच्चे का सामाजिक विकास वास्तव में प्रारम्भ होता है
- (a) विद्यालय पूर्व अवस्था में (b) शैशवावस्था में
(c) पूर्व बाल्यावस्था में (d) उत्तर बाल्यावस्था में
188. सबसे अधिक गहन और जटिल समाजीकरण होता है—
- (a) पूर्व बाल्यावस्था के दौरान (b) प्रौढ़ावस्था के दौरान
(c) व्यक्ति के पूरे जीवन में (d) किशोरावस्था के दौरान
189. एक बालक पहले पूरे हाथ को, फिर उँगलियों को तथा फिर हाथ और उँगलियों को एक साथ चलाना सीखता है यह उदाहरण वृद्धि और विकास के किस सिद्धांत को दर्शाता है?
- (a) निरंतरता का सिद्धांत
(b) एकीकरण का सिद्धांत
(c) सामान्य से विशेष का सिद्धांत
(d) वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धांत
190. विशेष अवधि के दौरान, विकास प्रगति करता है लेकिन इस अवधि में समायोजन के लिये विराम करता है। यह विकास के निम्नलिखित किस नियम को अनुसरित करता है?
- (a) समन्वय का सिद्धान्त
(b) निरन्तरता का सिद्धान्त
(c) चक्राकार प्रगति का सिद्धान्त
(d) समान-प्रतिमान का सिद्धान्त
191. मस्तकाधोमुखी एवं निकट से दूर का क्रम किस क्रिया का अंग है?
- (a) चेतना (b) विकास
(c) विवृद्धि (d) संशोधन।
192. बालक के शारीरिक व क्रियात्मक विकास की दिशा होती है:
- (a) सिर से पैर तथा शरीर के बाहर से मध्य की ओर
(b) सिर से पैर तथा शरीर के मध्य से बाहर की ओर
(c) पैर से सिर तथा शरीर के बाहर से मध्य की ओर
(d) पैर से सिर तथा शरीर के मध्य से बाहर की ओर

193. बच्चे के विकास के शिरस्थ सिद्धान्त के अनुसार निम्न में से सत्य कथन है

- (a) विकास सिर से पैर की ओर होता है
- (b) विकास पैर से सिर की ओर होता है
- (c) विकास मध्यभाग से परिधि की ओर होता है
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

194. नरेश और मुकेश की आयु समान है। उनके सामाजिक एवं मानसिक विकास में काफी अन्तर है। यह विकास के निम्न सिद्धान्त के कारण होता है

- (a) परिमार्जितता का सिद्धान्त
- (b) निश्चित तथा पूर्वकथनीय प्रतिरूप का सिद्धान्त
- (c) व्यक्तिगतता का सिद्धान्त
- (d) समान-प्रतिमान का सिद्धान्त

195. मानव जाति में विकास होता है

- (a) किशोरावस्था के अन्त तक
- (b) बाल्यावस्था के अन्त तक
- (c) प्रौढ़ावस्था के प्रारम्भ तक
- (d) जीवनपर्यन्त

196. निम्न में से विकास का कौन-सा सिद्धान्त गलत है?

- (a) विकास में वैयक्तित्व विभिन्नता होती है
- (b) विकास, संयोगों का परिणाम है
- (c) यह एक सतत प्रक्रिया है
- (d) यह पूर्वकथनीय है

197. प्रत्येक अधिगमकर्ता अद्वितीय होता है अर्थात्

- (a) कोई भी दो अधिगमकर्ता उनकी योग्यताओं, रुचियों तथा कौशलों में समान नहीं होते
- (b) अधिगमकर्ताओं में कोई भी उभयनिष्ठ गुण नहीं होते, न ही वे उभयनिष्ठ लक्ष्यों को बाँटते हैं
- (c) सभी अधिगमकर्ताओं के लिये एक उभयनिष्ठ पाठ्यक्रमा संभव नहीं है
- (d) एक विषमांगी कक्षा में सभी अधिगमकर्ताओं की क्षमता को विकसित करना असम्भव है

198. सीफैलोकौडल प्रवृत्ति के सिद्धान्त के अनुसार शारीरिक विकास होता है

- (a) सिर से पाँव की ओर
- (b) निकटवर्ती से लेकर दूरवर्ती (दूरस्थ) अंगों तक
- (c) पाँव से सिर की ओर
- (d) दूरस्थ अंग से निकटवर्ती अंगों तक

199. निम्न में से कौन सा विकास का सिद्धान्त नहीं है?

- (a) अनुकूलित प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त
- (b) निरन्तर विकास का सिद्धान्त
- (c) परस्पर सम्बन्ध का सिद्धान्त
- (d) समान प्रतिमान का सिद्धान्त

200. विकास एक प्रक्रिया है—

- (a) खंडित
- (b) निरन्तर
- (c) पूर्ण
- (d) अपूर्ण

201. एक अध्यापक/अध्यापिका ने पाया कि एक विद्यार्थी वर्ग बनाने में कठिनाई अनुभव कर रहा है। उसने अनुमान लगाया कि वह हीरे का चित्र बनाने में भी

कठिनाई अनुभव करेगा। उसने निम्न में से किस सिद्धान्त पर आधारित होकर यह अनुमान लगाया?

- (a) विकास निरन्तीय होता रहता है।
- (b) अलग-अलग लोगों के लिए विकास की प्रक्रिया भी अलग-अलग होती है।
- (c) विकास एक व्यवस्थित क्रम में होने की प्रवृत्ति से सम्बद्ध है।
- (d) विकास की प्रक्रिया एक उत्परिवर्तनीय प्रक्रिया है।

202. इनमें से कौन-सा विकास का एक सिद्धान्त नहीं है?

- (a) विकास संशोधनयोग्य होता है
- (b) विकास केवल संस्कृति से शासित और निर्धारित होता है
- (c) विकास जीवनपर्यंत होता है
- (d) विकास वंशानुक्रम और पर्यावरण दोनों से प्रभावित होता है

203. विकास से की ओर बढ़ता है

- (a) जटिल, कठिन
- (b) विशिष्ट सामान्य
- (c) साधारण, आसान
- (d) सामान्य, विशिष्ट

204. विकास शुरू होता है

- (a) उत्तर-बाल्यावस्था से
- (b) प्रसवपूर्व अवस्था से
- (c) शैशवावस्था से
- (d) पूर्व-बाल्यावस्था से

205. निम्न में से कौन-सा विकास का सिद्धान्त नहीं है?

- (a) विकास लम्बवत न होकर वर्तुलाकार
- (b) विकास क्रमबद्ध होता है
- (c) विकास निरन्तर होता है
- (d) विकास मशीनी प्रक्रिया है

206. “विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है।” यह विचार किससे सम्बन्धित है?

- (a) अन्तः सम्बन्ध का सिद्धान्त
- (b) निरन्तरता का सिद्धान्त
- (c) एकीकरण का सिद्धान्त
- (d) अन्तःक्रिया का सिद्धान्त

207. संकल्पनाओं की व्यवस्थित प्रस्तुति विकास के निम्नलिखित किन सिद्धान्तों के साथ संबंधित हो सकती है?

- (a) विकास विषमजातीयता से स्वायत्तता की ओर अग्रसर होता है
- (b) विद्यार्थी भिन्न दरों पर विकसित होते हैं
- (c) विकास सापेक्ष रूप से क्रमिक होता है
- (d) विकास के परिणाम स्वरूप वृद्धि होती है

208. विकास की गति एक व्यक्ति से दूसरे में भिन्न होती है, किन्तु यह एक नमूने को अनुगमन करती है।

- (a) एड़ी-से-चोटी
- (b) अव्यवस्थित
- (c) अप्रत्याशित
- (d) क्रमबद्ध और व्यवस्थित

209. निम्नलिखित में से कौनसा विकास का सिद्धान्त है?

- (a) यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया नहीं है
- (b) विकास की सभी प्रक्रियाएँ अंतःसम्बन्धित नहीं हैं
- (c) सभी की विकास-दर समान नहीं होती है
- (d) विकास हमेशा रेखीय होता है

210. निम्नलिखित में से कौन-सा बाल विकास का एक सिद्धान्त नहीं है?

- (a) सभी विकास एक क्रम का पालन करते हैं
- (b) विकास के सभी क्षेत्र महत्वपूर्ण हैं
- (c) सभी विकास परिपक्वता तथा अनुभव की अंतः क्रिया का परिणाम होते हैं
- (d) सभी विकास तथा अधिगम एक समान गति से आगे बढ़ते हैं।

211. विकास से की ओर बढ़ता है—

- (a) सामान्य → विशिष्ट (b) जटिल → कठिन
- (c) विशिष्ट → सामान्य (d) साधारण → आसान

212. विकास के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन नहीं है?

- (a) विकासात्मक परिवर्तन एक सीधी रेखा में आगे जाते हैं
- (b) विकास जन्म से किशोरावस्था तक आगे की ओर बढ़ता है और फिर पीछे की ओर
- (c) विकास भिन्न व्यक्तियों में भिन्न गति से होता है
- (d) विकास जन्म से किशोरावस्था तक बहुत तीव्र गति से होता है और उसके बाद रुक जाता है

213. निम्नलिखित विकास के सिद्धान्तों का उनके सही वर्णन से मिलान कीजिए—

सिद्धान्त	वर्णन
A. समीप-दूराभिमुख दिशा	(i) विभिन्न बच्चे भिन्न-भिन्न दर से बढ़ते हैं
B. शिरःपदाभिमुख दिशा	(ii) सिर से पैर का क्रम
C. अंतर्वैयक्तिक भिन्नताएँ	(iii) किसी अकेले बच्चे में विकास की दर विकास के एक क्षेत्र की अपेक्षा दूसरी में भिन्न हो सकती है
D. अंतरावैयक्तिक भिन्नताएँ	(iv) शरीर के केन्द्र से बाहर की ओर
	(v) सरल से जटिल की ओर वृद्धि
(a) A B C D	(b) A B C D
iv ii i iii	v ii i iii
(c) A B C D	(d) A B C D
ii iv i iii	ii iv iii i

214. विकास के सिद्धान्तों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?

- (a) विकास एक परिमाणात्मक प्रक्रिया है जिसका ठीक-ठाक मापन हो सकता है।
- (b) विकास परिपक्वता और अधिगम पर आधारित होता है।
- (c) विकास वंशानुगतता और वातावरण के बीच सतत अन्योन्यक्रिया से होता है।
- (d) प्रत्येक बच्चा विकास के चरणों से गुजरता है फिर भी बच्चों में वैयक्तिक भिन्नताएँ बहुत होती हैं।

215. विकास का शिरःपदाभिमुख दिशा सिद्धान्त व्याख्या करता है कि विकास इस प्रकार आगे बढ़ता है—

- (a) सामान्य से विशिष्ट कार्यों की ओर
- (b) भिन्न से एकीकृत कार्यों की ओर
- (c) सिर से पैर की ओर
- (d) ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर

216. वैयक्तिक शिक्षार्थी एक-दूसरे से में भिन्न होते हैं।

- (a) विकास-क्रम (b) विकास की सामान्य क्षमता
- (c) बुद्धि एवं विकास के सिद्धान्तों (d) विकास की दर

217. पूर्व-विद्यालय में पहली बार आया बच्चा मुक्त रूप से चिल्लाता है। दो वर्ष पश्चात् वही बच्चा जब प्रारंभिक विद्यालय में पहली बार जाता है, तो अपना तनाव चिल्लाकर व्यक्त नहीं करता अपितु उसके कन्धे व गर्दन की पेशियाँ तन जाती हैं उसके इस व्यावहारिक परिवर्तन का क्या सैद्धान्तिक आधार हो सकता है?

- (a) विकास क्रमिक प्रकार से होता है
- (b) विकास निरन्तरीय होता रहता है
- (c) अलग-अलग लोगों में विकास भी भिन्न रूप से होता है
- (d) विभेद व एकीकरण विकास के लक्षण हैं

218. एक बच्चा अपनी मातृभाषा सीख रहा है व दूसरा बच्चा वही भाषा द्वितीय भाषा के रूप में सीख रहा है। दोनों निम्नलिखित में से कौन-सी समान प्रकार की त्रुटि कर सकते हैं।

- (a) अधिकाधिक सामान्यीकरण (b) सरलीकरण
- (c) विकासात्मक (d) अत्यधिक संशुद्धता

219. मानव विकास कुछ विशेष सिद्धान्तों पर आधारित है। निम्नलिखित में से कौन-सा मानव विकास का सिद्धान्त नहीं है?

- (a) सामान्य से विशिष्ट (b) प्रतिवर्ती
- (c) निरन्तरता (d) अनुक्रमिकता

220. प्रत्येक शिक्षार्थी स्वयं में विशिष्ट है। इसका अर्थ है कि —

- (a) सभी शिक्षार्थियों के लिए एक समान पाठ्यचर्या संभव नहीं है
- (b) एक विषमरूपी कक्षा में शिक्षार्थियों की क्षमताओं को विकसित करना असंभव है
- (c) कोई भी दो शिक्षार्थी अपनी योग्यताओं, रुचियों और प्रतिभाओं में एकसमान नहीं होते
- (d) शिक्षार्थियों में न तो कोई समान विशेषताएँ होती हैं और न ही उसके लक्ष्य समान होते हैं

221. सीमा हर पाठ को बहुत जल्दी सीख लेती है जबकि लीना उसे सीखने में ज्यादा समय लेती है। यह विकास के सिद्धान्त को दर्शाता है।

- (a) वैयक्तिक भिन्नता (b) अन्तःसंबंध
- (c) निरन्तरता (d) सामान्य से विशिष्ट की ओर

222. बच्चे के विकास के सिद्धान्तों को समझना शिक्षक की सहायता करता है—

- (a) शिक्षार्थियों की भिन्न अधिगम शैलियों को प्रभावी रूप से संबोधित करने में
- (b) शिक्षार्थी के सामाजिक स्तर को पहचानने में
- (c) शिक्षार्थी की आर्थिक पृष्ठभूमि को पहचानने में
- (d) शिक्षार्थियों को क्यों पढ़ाना चाहिए—यह औचित्य स्थापित करने में

223. बाल विकास की परिभाषा का अध्ययन क्षेत्र है जो
 (a) मानवीय सामर्थ्यों में परिवर्तन का परीक्षण करता है
 (b) जीवन अवधि के दौरान व्यवहार की व्याख्या ढूँढ़ेगा
 (c) बच्चों की वयस्क तथा वरिष्ठ नागरिकों के साथ तुलना करेगा
 (d) किसी बच्चे के संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा दूसरे सामर्थ्यों के क्रमिक विकास के लिए उत्तरदायी होगा
224. सहपाठियों का दबाव जब सबसे अधिक प्रभाव डालता है, वह है—
 (a) प्रारंभिक बाल्यावस्था (b) मध्य बाल्यावस्था
 (c) प्रारंभिक किशोरावस्था (d) उत्तर किशोरावस्था
225. निम्नलिखित में से किशोरावस्था के संदर्भ में कौन-सा कथन सही नहीं है?
 (a) कई नवीन आंतरिक तथा बाह्य परिवर्तन दिखाई देते हैं।
 (b) यह आयु अत्यधिक संवेगात्मक होती है।
 (c) बुद्धि अपनी चरम सीमा तक पहुँचने का प्रयास करती है।
 (d) आत्म-चेतना कम हो जाती है।
226. स्टेनले हाल के अनुसार अधिक तनाव और तूफान की अवस्था है—
 (a) प्रौढ़ावस्था (b) बाल्यावस्था
 (c) किशोरावस्था (d) शैशवकाल
227. निम्नलिखित में से किसका विकास किशोरावस्था में नहीं होता?
 (a) अहम् केन्द्रिकता (b) अभिरुचियाँ
 (c) तर्क शक्ति (d) प्रेक्षण की योग्यता
228. सामान्यतया लड़के और लड़कियों में शारीरिक विकास की निम्नलिखित विशेषता प्रेक्षित की जाती है—
 (a) समान आयु में दोनों में समान विकास होता है।
 (b) लड़के शारीरिक विकास में दो वर्ष आगे होते हैं।
 (c) लड़कियाँ शारीरिक विकास में दो-तीन वर्ष आगे होती हैं।
 (d) लड़कियाँ लड़कों से पाँच वर्ष पीछे होती हैं।
229. निम्नलिखित में से कौन-सी एक बालक की मनोगत्यात्मक गतिविधि नहीं होती?
 (a) खेलना (b) गेंद फेंकना
 (c) लिखना (d) सोचना
230. निम्नलिखित में से कौन-सा बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालने वाला कारक नहीं है?
 (a) परिवार में गरीबी (b) कक्षा में नींद आना
 (c) स्नेह का आभाव (d) पारिवारिक क्लेश
231. एक बालक की संज्ञानात्मक शक्तियाँ जैसे कल्पना-शक्ति, बुद्धि, निर्णय लेने की क्षमता, आदि का संबंध है बालक के—
 (a) शारीरिक विकास से (b) सामाजिक विकास से
 (c) सर्वांगीण विकास से (d) मानसिक विकास से
232. बाल विकास के किस चरण में विपरीत लिंग की ओर अधिकतम आकर्षण दिखता है?
 (a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
 (c) किशोरावस्था (d) व्यस्क अवस्था
233. मानव विकास की वह अवस्था जिसे 'सुनहरी अवस्था' कहा जाता है, वह है—
 (a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
 (c) किशोरावस्था (d) प्रौढ़ावस्था
234. निम्नलिखित में से कौन आरम्भिक बचपन की विशिष्टता नहीं है?
 (a) प्री-गैंग अवस्था (b) अनुकरणशील अवस्था
 (c) पूछताछ वाली अवस्था (d) खेलने की उम्र
235. निम्नलिखित में से कौन-सी अवधि किसी की विकासशील अवस्था में सामान्यतः संघर्ष की अवधि कहलाती है?
 (a) शैशव अवस्था (b) बाल्यावस्था
 (c) किशोर अवस्था (d) व्यस्क अवस्था
236. विकास की कौन-सी अवस्था 'तनाव एवं तूफान की अवस्था' कही जाती है?
 (a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
 (c) किशोरावस्था (d) प्रौढ़ावस्था
237. निम्नलिखित में से कौन मानव विकास का सही क्रम है?
 (a) शैशवावस्था, किशोरावस्था, बाल्यावस्था, प्रौढ़ावस्था
 (b) शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था
 (c) बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था, शैशवावस्था
 (d) बाल्यावस्था, शैशवावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था
238. किस अवस्था में शारीरिक वृद्धि तीव्र होती है
 (a) आरम्भिक बाल्यावस्था (b) शैशव अवस्था
 (c) किशोरावस्था (d) शिक्षा काल
239. 6-11 वर्ष आयु वर्ग के छात्रों की आवश्यकता है
 (a) कक्षा-कक्ष में प्रजातांत्रिक वातावरण की
 (b) सीखने में स्वायत्तता की
 (c) क्रिया आधारित, अन्तर्क्रियात्मक अधिगम की
 (d) उपरोक्त सभी
240. एक बच्चा ईर्ष्या का प्रदर्शन करता है
 (a) 6 माह की आयु में (b) 12 माह की आयु में
 (c) 18 माह की आयु में (d) 24 माह की आयु में
241. 6-11 वर्ष आयु वर्ग के बालकों की विशिष्टताएँ निम्नलिखित हैं
 (a) बालक स्वाभाविक एवं सक्रिय अधिगमकर्ता होते हैं
 (b) सीखने के लिए शिक्षकों पर निर्भर होते हैं
 (c) बालक, शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करते हैं
 (d) बालक सीखने में रुचि नहीं रखते हैं
242. 6 या 7 वर्ष का बालक दूसरों के विचारों को स्वीकार करने के योग्य नहीं होता
 (a) क्योंकि वह बहुत छोटा होता है
 (b) क्योंकि वह अहम् केन्द्रित होता है
 (c) क्योंकि वह बुद्धिमान नहीं होता है
 (d) क्योंकि वह कल्पनाशील होता है
243. विकास का एक अधिनियम है कि विकास प्रतिमान के विभिन्न काल में खुशी भिन्न-भिन्न होती है। इस अधिनियम के अनुसार

- (a) जीवन का प्रथम वर्ष सबसे अधिक खुशी का काल होता है।
 (b) वय सन्धि काल एवं जीवन का प्रथम वर्ष भी जीवन का सबसे अधिक खुशी का काल होता है
 (c) वय सन्धि काल जीवन का सबसे अधिक दुःखी काल होता है।
 (d) जीवन का प्रथम वर्ष सबसे अधिक खुशी का एवं वयः सन्धि काल सबसे अधिक दुःखी काल होता है।
- 244. निम्न में से कौन-सा कथन विकास के सम्बन्ध में सही नहीं है?**
 (a) विकास प्रतिमानों की कुछ निश्चित विशेषताओं की भविष्यवाणी की जा सकती है
 (b) विकास का उद्देश्य वंशानुगत सम्भाव्य क्षमता का विकास करना है
 (c) विकास के विभिन्न क्षेत्रों में सम्भाव्य खतरे नहीं होते हैं
 (d) प्रारम्भिक विकास बाद के विकास से अधिक महत्वपूर्ण है।
- 245. दल या गैंग का सदस्य होने से समाजीकरण उत्तर बाल्यावस्था में बेहतर होता है। निम्न में से कौन-सा कथन इस विचार के विपरीत है?**
 (a) वयस्कों पर निर्भर न होकर सीखता है
 (b) जिम्मेदारियों को निभाना सीखता है
 (c) अपने समूह के प्रति वफादार होना सीखता है
 (d) छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करते हुये, अपने गैंग के सदस्यों से लड़ाई मोल लेता है।
- 246. वयः सन्धि काल में निम्न में से कौन बाह्य अभिव्यक्ति नहीं है?**
 (a) प्रभुता/सत्ता के विपरीत विरोध
 (b) अशान्ति
 (c) आत्मनिर्भरता के प्रति आग्रही
 (d) सक्रिय खेलों के स्थान पर बैठे रह कर खेलना अधिक पसंद।
- 247. निम्न में से कौन-सा कथन मिडिल स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के विकास से सहमति नहीं रखता?**
 (a) सामाजिक व्यवहार उत्तरोत्तर समवयस्क समूह के आदर्शों से प्रभावित होता है
 (b) इस अवस्था में अधिकांश बालक तीव्र गति से वृद्धि प्राप्त नहीं करते हैं
 (c) बौद्धिक एवं सामाजिक व्यवहार पर स्व-प्रभावितता का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है
 (d) अधिकांश विद्यार्थी विशेष रूप से स्वकेन्द्रित हो जाते हैं।
- 248. बिग व हंट के अनुसार.....की विशेषताओं को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने वाला एक शब्द है “परिवर्तन”। परिवर्तन शारीरिक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक होता है।**
 (a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
 (c) किशोरावस्था (d) प्रौढ़ावस्था
- 249. ‘खिलौनों की आयु’ कहा जाता है**
 (a) पूर्व बाल्यावस्था को (b) उत्तर बाल्यावस्था को
 (c) शैशवावस्था को (d) इनमें से सभी।
- 250. निम्न में से कौन-सी पूर्व बाल्यावस्था की विशेषता नहीं है?**
 (a) दल/समूह में रहने की अवस्था
 (b) अनुकरण करने की अवस्था
 (c) प्रश्न करने की अवस्था
 (d) खेलने की अवस्था।
- 251. विकास का अर्थ है**
 (a) परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला
 (b) अभिप्रेरणा के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला
 (c) अभिप्रेरणा एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर शृंखला
 (d) परिपक्वता एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की शृंखला।
- 252. विकास के सन्दर्भ में निम्न में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है?**
 (a) विकास की प्रत्येक अवस्था के अपने खतरे हैं
 (b) विकास उकसाने/बढ़ावा देने से नहीं होता है
 (c) विकास सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है
 (d) विकास की प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताएँ होती हैं।
- 253. बालक की प्रथम पाठशाला है**
 (a) परिवार (b) समाज
 (c) गाँव (d) विद्यालय।
- 254. बालक का सामाजिक विकास प्रभावित होता है**
 (a) सामाजिक-आर्थिक स्तर से (b) विद्यालय से
 (c) परिवार से (d) इनमें से सभी से।
- 255. गर्भस्थ शिशु में संवेदनशीलता का विकास प्रारंभ होता है**
 (a) सिर से (b) पैर से
 (c) हाथ से (d) सम्पूर्ण शरीर से।
- 256. जन्मोत्तर (जन्म के बाद की) विकास की दूसरी प्रमुख अवस्था है**
 (a) गर्भावस्था (b) शैशवावस्था
 (c) किशोरावस्था (d) बाल्यावस्था।
- 257. वीर पूजा की भावना जाग्रत होती है**
 (a) किशोरावस्था में (b) बाल्यावस्था में
 (c) प्रौढ़ावस्था में (d) इनमें से कोई नहीं।
- 258. शैशवावस्था मानव विकास की प्रमुख अवस्था है**
 (a) प्रथम (b) द्वितीय
 (c) तृतीय (d) चतुर्थ।
- 259. शरीर के आकार में वृद्धि होती है क्योंकि—**
 (a) शारीरिक और गत्यात्मक विकास
 (b) संवेगात्मक विकास
 (c) संज्ञानात्मक विकास
 (d) नैतिक विकास
- 260. मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक हैं—**
 (a) वंशानुक्रम
 (b) परिवार का वातावरण
 (c) परिवार की सामाजिक स्थिति
 (d) उपरोक्त समस्त

261. एक 13 वर्षीय बालक बात-बात में अपने बड़ों से झगड़ा करने लगता है और हमेशा स्वयं को सही साबित करने की कोशिश करता है। वह विकास की किस अवस्था में है?
- (a) प्रारम्भिक बाल्यावस्था (b) किशोरावस्था
(c) युवावस्था (d) बाल्यावस्था
262. शैशवावस्था होती है-
- (a) पाँच वर्ष तक (b) बारह वर्ष तक
(c) 21 वर्ष तक (d) इनमें से कोई भी नहीं
263. नवजात शिशु का भार होता है
- (a) 6 पाउण्ड (b) 7 पाउण्ड
(c) 8 पाउण्ड (d) 9 पाउण्ड
264. एक शिशु का सामाजिक विकास निर्भर होती है?
- (a) उसकी अन्य लोगों के साथ अन्तः क्रिया पर
(b) शिशु को मिलने वाले प्यार तथा अपनत्व पर
(c) उसके द्वारा दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता पर
(d) उपरोक्त सभी पर
265. शर्म तथा गर्व जैसी भावना का विकास किस अवस्था में होता है?
- (a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
(c) किशोरावस्था (d) वृद्धावस्था
266. शैशवावस्था की मुख्य विशेषता क्या नहीं है?
- (a) सीखने की प्रक्रिया में तीव्रता (b) जिज्ञासा की प्रवृत्ति
(c) अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति (d) चिन्तन प्रक्रिया
267. बाल्यावस्था अवस्था होती है-
- (a) पाँच वर्ष तक (b) बारह वर्ष तक
(c) इक्कीस वर्ष तक (d) कोई भी नहीं
268. मानवों/मनुष्यों में विकास की सबसे तीव्र गति होती है?
- (a) बाल अवस्था में (b) किशोरावस्था में
(c) शैशव काल में (d) यौवन अवस्था में
269. गर्भ धारण से शिशु के जन्म की अवधि को कहते हैं?
- (a) किशोरावस्था (b) शैशव (शिशु) अवस्था
(c) प्रसव पूर्व काल (d) वयस्कता
270. बालक का प्रारम्भिक विकास मुख्यतः किस पर निर्भर है?
- (a) माता-पिता (b) वातावरण (परिवेश)
(c) विद्यालय का वातावरण (d) समाज
271. गर्भ में बालक को विकसित होने में कितने दिन लगते हैं?
- (a) 150 (b) 280
(c) 390 (d) 640
272. निम्नलिखित में से किस अवस्था में बच्चे अपने समवयस्क समूह के सक्रिय सदस्य हो जाते हैं?
- (a) किशोरावस्था (b) प्रौढ़ावस्था
(c) पूर्व बाल्यावस्था (d) बाल्यावस्था
273. निम्नलिखित में से कौन-सा सूक्ष्म गतिक कौशल का उदाहरण है?
- (a) चढ़ना (b) फुदकना
(c) दौड़ना (d) लिखना
274. मनोविज्ञान के अनुसार बाल-विकास की कौन-सी अवस्था सबसे जटिल व कठिन है?
- (a) शैशवावस्था (b) किशोरावस्था
(c) बाल्यावस्था (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
275. मानव विकास क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है जो है
- (a) शारीरिक, आध्यात्मिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक
(b) शारीरिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक और सामाजिक
(c) संवेगात्मक, संज्ञानात्मक, आध्यात्मिक और सामाजिक-मनोवैज्ञानिक
(d) मनोवैज्ञानिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक और शारीरिक
276. किशोरों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सर्वाधिक उचित है?
- (a) चिंतन का मूर्त क्रियाओं में प्रदर्शित होना
(b) बुद्धि लब्धांक में अकस्मात् वृद्धि
(c) संवेगात्मक प्रोत्थान की घटना बढ़ जाती है
(d) पढ़ाई के प्रति लापरवाह रवैया
277. उच्च प्राथमिक स्तर पर-
- (a) शैक्षिक एवं करियर निर्देशन की आवश्यकता है।
(b) शैक्षिक, करियर एवं वैयक्तिक निर्देशन की आवश्यकता है।
(c) केवल करियर निर्देशन की आवश्यकता है।
(d) केवल शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता है।
278. किशोर का अनुभव कर सकते हैं
- (a) बचपन में किए गए अपराधों के प्रति डर के भाव
(b) आत्मसिद्धि के भाव
(c) जीवन के बारे में परितृप्ति
(d) दुश्चिन्ता और स्वयं से सरोकार
279. 14 वर्षीय देविका अपने-आप से पृथक् स्वनियंत्रित व्यक्ति की भावना को विकसित करने का प्रयास कर रही है। वह विकसित कर रही है
- (a) नियमों के प्रति घृणा
(b) स्वायत्तता
(c) किशोरावस्थात्मक अक्खड़पन
(d) परिपक्वता
280. शैशवकाल की अवधि है
- (a) जन्म से 2 वर्ष तक (b) जन्म से 3 वर्ष तक
(c) 2 से 3 वर्ष तक (d) जन्म से 1 वर्ष तक
281. श्रीमती कुमार का पहला बच्चा 10 महीने में चलने लगा। उनका दूसरा बच्चा अब 12 महीने का है और अभी भी नहीं चल रहा है। वह दुःखी या चिन्तित नहीं है, क्योंकि
- (a) उनके पति ने कहा है कि जब तक वे 14 महीने के नहीं हुए थे, उन्होंने चलना शुरू नहीं किया था
(b) वह जानती है कि वह जितना अधिक इंतजार करेगी उतना ही अधिक उसके पैर चलने के लिये मजबूत होंगे
(c) एक पड़ोसी का लड़का भी 18 महीने का है और वह भी नहीं चल रहा है
(d) वह जानती है कि चलने के विकास के लिये वह अभी सामान्य समयबद्ध के अन्दर है

282. बाल्यकाल होता है—

- (a) जन्म से लेकर 3 वर्ष की आयु तक
- (b) तीसरे वर्ष से लेकर 6 वर्ष की आयु तक
- (c) छठे वर्ष से लेकर 12 वर्ष की आयु तक
- (d) दूसरे वर्ष से लेकर 10 या 12 वर्ष की आयु तक

283. 'बच्चे के उचित विकास को सुनिश्चित करने के लिए उसका स्वस्थ शारीरिक विकास एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।' यह कथन —

- (a) सही है, क्योंकि विकास-क्रम में शारीरिक विकास सबसे पहले स्थान पर आता है
- (b) सही है, क्योंकि शारीरिक विकास, विकास के अन्य पक्षों के साथ अंतःसम्बन्धित है
- (c) गलत है, क्योंकि शारीरिक विकास, विकास के अन्य पक्षों को किसी भी प्रकार से प्रभावित नहीं करता
- (d) गलत हो सकता है, क्योंकि विकास नितांत व्यक्तिगत मामला है

284. निम्नलिखित में से कौन-सा आयु समूह परवर्ती बाल्यावस्था श्रेणी के अन्तर्गत आता है?

- (a) 11 से 18 वर्ष
- (b) 18 से 24 वर्ष
- (c) जन्म से 6 वर्ष
- (d) 9 से 12 वर्ष

285. निम्नलिखित में से कौन-सा बच्चों के संवेगात्मक विकास के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?

- (a) कक्षा-कक्ष का प्रजातांत्रिक परिवेश
- (b) अध्यापकों की कोई भी सहभागिता नहीं क्योंकि यह माता-पिता का कार्य है
- (c) कक्षा-कक्ष का नियंत्रित परिवेश
- (d) कक्षा-कक्ष का अधिकारवादी परिवेश

286. एक प्रसामान्य 12 वर्ष की आयु के बच्चे में सबसे अधिक होना सम्भव है

- (a) कुल प्ररेक समन्वय में कठिनाई
- (b) वयस्कों को खुश करने के बारे में दुश्चिन्ता की अनुभूति
- (c) अब और यहाँ में उसकी रुचियों को सीमित करना
- (d) समकक्षी के अनुमोदन के लिए बेचैनी

287. विकास के किस काल को 'अत्यधिक दबाव और तनाव का काल' कहा गया है?

- (a) किशोरावस्था
- (b) प्रौढ़ावस्था
- (c) मध्यावस्था
- (d) वृद्धावस्था

288. शैशवावस्था में बच्चों के क्रिया-कलाप.....होते हैं।

- (a) मूलप्रवृत्त्यात्मक
- (b) संरक्षित
- (c) संज्ञानात्मक
- (d) संवेगात्मक

289. स्व-केन्द्रित अवस्था होती है बालक के

- (a) जन्म से 2 वर्ष तक
- (b) 3 से 6 वर्ष तक
- (c) 7 वर्ष से किशोरावस्था तक
- (d) किशोरावस्था में

290. माँ-बाप के साये से बाहर निकल अपने साथी बालकों की संगत को पसन्द करना सम्बन्धित है

- (a) किशोरावस्था से
- (b) पूर्व किशोरावस्था से
- (c) उत्तर बाल्यावस्था से
- (d) शैशवावस्था से

291. मानसिक परिपक्वता की ऊँचाइयों को छूने के लिए प्रयत्नरत रहना सम्बन्धित है

- (a) किशोरावस्था से
- (b) प्रौढ़ावस्था से
- (c) पूर्व बाल्यावस्था से
- (d) उत्तर बाल्यावस्था से

292. पूर्वाग्रही किशोर/किशोरी अपनी.....के प्रति कठोर होंगे।

- (a) समस्या
- (b) जीवनशैली
- (c) सम्प्रत्यय
- (d) वास्तविकता

293. बाल्यावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषता क्या है?

- (a) पर निर्भरता
- (b) सामूहिकता की भावना
- (c) धार्मिकता
- (d) अनुकरणात्मक प्रवृत्ति का अभाव

294. किशोरावस्था में संवेगों की तीव्रता किस प्रकार प्रकट होती है?

- (a) प्रतिकूल पारिवारिक सम्बन्ध
- (b) व्यवसाय की समस्या
- (c) नई परिस्थिति के साथ समायोजन
- (d) उपरोक्त सभी

295. 'सामाजिक प्रत्याशाओं के अनुरूप व्यवहार की योग्यता का अधिगम सामाजिक विकास कहा जाता है।' उक्त कथन है

- (a) हरलॉक का
- (b) टी पी नन का
- (c) मैक्डूगल का
- (d) रॉस का

296. बाल विकास में

- (a) प्रक्रिया पर बल है
- (b) वातावरण और अनुभव की भूमिका पर बल है
- (c) गर्भावस्था से किशोरावस्था तक का अध्ययन होता है
- (d) उपरोक्त सभी पर

297. बाल विकास का अध्ययन क्षेत्र है—

- (a) बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन
- (b) वातावरण का बाल विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन
- (c) वैयक्तिक विभिन्नताओं का अध्ययन
- (d) उपरोक्त सभी

298. शारीरिक वृद्धि और विकास को कहते हैं

- (a) तत्परता
- (b) अभिवृद्धि
- (c) गतिशीलता
- (d) आनुवंशिकता

299. विकास की किस अवस्था में बुद्धि का अधिकतम विकास होता है?

- (a) बाल्यावस्था
- (b) शैशवावस्था
- (c) किशोरावस्था
- (d) प्रौढ़ावस्था

300. व्यवहारवादीने कहा है, "मुझे नवजात शिशु दे दो। मैं उसे डॉक्टर, वकील, चोर या जो चाहूँ बना सकता हूँ।"

- (a) फ्रीमैन
- (b) न्यूमैन
- (c) वाटसन
- (d) होलजिंगर

301. हॉल का सिद्धांत निम्न में किसकी व्याख्या करता है—

- (a) बुद्धि की प्रकृति
- (b) अधिगम में अभिप्रेरण की भूमिका
- (c) मूल्यों का विकास
- (d) किशोरावस्था का विकास

302. शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाला कारक कौन-सा है?
 (a) वंशानुक्रम (b) वातावरण
 (c) खेल तथा व्यायाम (d) उपरोक्त सभी
303. 'विद्रोह की भावना' की प्रवृत्ति निम्न में से किस अवस्था से सम्बन्धित है?
 (a) बाल्यावस्था (b) शैशवावस्था
 (c) पूर्व किशोरावस्था (d) मध्य किशोरावस्था
304. निम्न में कौन-सा शारीरिक विकास का एक प्रमुख नियम है?
 (a) मानसिक विकास से भिन्नता का नियम
 (b) अनियमित विकास का नियम
 (c) द्रुतगामी विकास का नियम
 (d) कल्पना और संवेगात्मक विकास से सम्बन्ध का नियम
305. किशोरावस्था तूफान और संघर्ष का काल है। यह कथन किसका है?
 (a) हरलॉक (b) स्टेनले हॉल
- (c) गैसेल (d) वुडवर्थ
306. 'किशोरावस्था वह काल है जिसकी विशेषताएं हैं, लिंगी, सामाजिक, व्यावसायिक, आदर्श संबंधित समायोजन और माता-पिता पर निर्भरता से मुक्ति प्रदान करने की चेष्टा।' ये कथन किसका है?
 (a) कूहलन (b) स्टेनले हाल
 (c) बिग एवं हण्ट (d) कोह्लबर्ग
307. मध्य-बचपन अवधि है
 (a) 2 वर्ष से 6 वर्ष (b) 6 वर्ष से 11 वर्ष
 (c) 10 वर्ष के बाद (d) जन्म से 2 वर्ष
308. किशोरावस्था में बच्चे किस प्रकार की समस्या का सामना करते हैं?
 (a) शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन से समायोजन करना
 (b) अपने साथियों से समायोजन करना
 (c) अपने माता-पिता से समायोजन करना
 (d) पढ़ाई संबंधी समायोजन करना

उत्तरमाला

1. (d)	32. (b)	63. (*)	94. (d)	125. (d)	156. (d)	187. (d)	218. (c)	249. (a)	280. (a)
2. (c)	33. (c)	64. (d)	95. (b)	126. (b)	157. (b)	188. (d)	219. (b)	250. (a)	281. (d)
3. (b)	34. (a)	65. (b)	96. (c)	127. (c)	158. (a)	189. (b)	220. (c)	251. (d)	282. (c)
4. (b)	35. (c)	66. (a)	97. (a)	128. (b)	159. (a)	190. (c)	221. (a)	252. (b)	283. (b)
5. (c)	36. (c)	67. (b)	98. (d)	129. (d)	160. (c)	191. (b)	222. (a)	253. (a)	284. (d)
6. (c)	37. (b)	68. (c)	99. (a)	130. (c)	161. (c)	192. (b)	223. (d)	254. (d)	285. (a)
7. (b)	38. (d)	69. (b)	100. (b)	131. (d)	162. (c)	193. (a)	224. (d)	255. (a)	286. (d)
8. (d)	39. (d)	70. (d)	101. (c)	132. (b)	163. (c)	194. (c)	225. (d)	256. (b)	287. (a)
9. (c)	40. (a)	71. (d)	102. (c)	133. (a)	164. (d)	195. (d)	226. (c)	257. (a)	288. (a)
10. (a)	41. (b)	72. (c)	103. (a)	134. (b)	165. (a)	196. (b)	227. (a)	258. (a)	289. (b)
11. (a)	42. (a)	73. (d)	104. (c)	135. (b)	166. (c)	197. (a)	228. (c)	259. (a)	290. (b)
12. (a)	43. (d)	74. (b)	105. (c)	136. (c)	167. (a)	198. (a)	229. (d)	260. (d)	291. (a)
13. (c)	44. (b)	75. (d)	106. (a)	137. (d)	168. (c)	199. (a)	230. (b)	261. (b)	292. (a)
14. (a)	45. (d)	76. (c)	107. (d)	138. (c)	169. (c)	200. (b)	231. (d)	262. (a)	293. (b)
15. (b)	46. (b)	77. (d)	108. (a)	139. (a)	170. (a)	201. (c)	232. (c)	263. (b)	294. (d)
16. (b)	47. (c)	78. (a)	109. (c)	140. (b)	171. (c)	202. (b)	233. (b)	264. (d)	295. (a)
17. (a)	48. (c)	79. (c)	110. (d)	141. (c)	172. (c)	203. (d)	234. (d)	265. (b)	296. (c)
18. (b)	49. (b)	80. (a)	111. (a)	142. (b)	173. (b)	204. (b)	235. (c)	266. (d)	297. (d)
19. (b)	50. (b)	81. (c)	112. (b)	143. (b)	174. (a)	205. (d)	236. (c)	267. (b)	298. (b)
20. (b)	51. (c)	82. (c)	113. (a)	144. (b)	175. (d)	206. (b)	237. (b)	268. (b)	299. (c)
21. (b)	52. (d)	83. (d)	114. (c)	145. (c)	176. (a)	207. (c)	238. (b)	269. (c)	300. (c)
22. (d)	53. (b)	84. (c)	115. (d)	146. (c)	177. (d)	208. (d)	239. (d)	270. (a)	301. (d)
23. (a)	54. (b)	85. (b)	116. (b)	147. (c)	178. (b)	209. (c)	240. (b)	271. (b)	302. (d)
24. (c)	55. (a)	86. (b)	117. (d)	148. (d)	179. (a)	210. (d)	241. (d)	272. (a)	303. (c)
25. (b)	56. (c)	87. (b)	118. (a)	149. (a)	180. (d)	211. (a)	242. (b)	273. (d)	304. (b)
26. (b)	57. (b)	88. (d)	119. (c)	150. (a)	181. (c)	212. (b)	243. (d)	274. (b)	305. (b)
27. (a)	58. (c)	89. (a)	120. (b)	151. (a)	182. (a)	213. (a)	244. (c)	275. (b)	306. (a)
28. (c)	59. (d)	90. (c)	121. (a)	152. (a)	183. (a)	214. (a)	245. (d)	276. (c)	307. (b)
29. (d)	60. (b)	91. (a)	122. (c)	153. (c)	184. (c)	215. (c)	246. (d)	277. (b)	308. (a)
30. (c)	61. (c)	92. (a)	123. (d)	154. (d)	185. (a)	216. (d)	247. (b)	278. (d)	
31. (c)	62. (b)	93. (d)	124. (b)	155. (b)	186. (d)	217. (d)	248. (c)	279. (b)	

2.

बाल विकास के आधार एवं उनको प्रभावित करने वाले कारक

बाल-विकास की प्रकृति

प्राणी के गर्भ में आने से लेकर पूर्ण प्रौढ़ता प्राप्त होने की स्थिति तक बाल विकास है। बालक का विकास अनेक कारकों द्वारा होता है। जिनमें दो प्रमुख कारक हैं—जैविक एवं सामाजिक। जैविक विकास का दायित्व माता-पिता पर होता है और सामाजिक विकास का वातावरण पर। जन्म से सम्बन्धित विकास को जैविक या वंशानुक्रम तथा समाज से सम्बन्धित विकास को वातावरण कहते हैं। इसे प्रकृति (Nature) तथा पोषण (Nurture) भी कहा जाता है। **वुडवर्थ** का कथन है कि एक पौधे का वंशक्रम उसके बीज में निहित है और उसके पोषण का दायित्व उसके वातावरण पर है।

वंशानुक्रम

वंशानुक्रम का अर्थ व परिभाषाएँ-

पूर्वजों के द्वारा हस्तान्तरित किये गये गुणों के मिश्रित समूह को ही वंशानुक्रम कहा जाता है। अतः वंशानुक्रम जन्मजात गुणों का योगफल है। विद्वानों द्वारा दी गयी विभिन्न परिभाषाएँ निम्न हैं—

- **वुडवर्थ के अनुसार**—“वंशानुक्रम में वे सभी बातें समाहित रहती हैं जो जीवन का प्रारम्भ करते समय, जन्म के समय नहीं वरन् जन्म से लगभग नौ माह पूर्व गर्भाधान के समय व्यक्ति में उपस्थित थी।”
- **बी. एन. झा के अनुसार**—“वंशानुक्रम, व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का पूर्ण योग है।”
- **जेम्स ड्रेवर के अनुसार**—“शारीरिक तथा मानसिक विशेषताओं का माता-पिता से संतानों को हस्तान्तरण होना वंशानुक्रम है।”
- **रूथ बैनेडिक्ट के अनुसार**—“वंशानुक्रम माता-पिता से संतान को प्राप्त होने वाले गुणों का नाम है।”
- **जे. ए. थाम्पसन के अनुसार**—“वंशानुक्रम, क्रमबद्ध पीढ़ियों के बीच उत्पत्ति सम्बन्धी, सम्बन्ध के लिए सुविधाजनक शब्द है।”

वंशानुक्रम की प्रक्रिया-

मानव शरीर कोषों (Cells) का योग होता है। शरीर का आरम्भ केवल एक कोष से होता है, जिसे संयुक्त कोष (Zygote) कहते हैं। यह कोष 2, 4, 8, 16, 32 और इसी क्रम में आगे बढ़ता है। संयुक्त कोष दो उत्पादक कोषों का योग होता है। इनमें से एक कोष पिता का होता है, जिसे पितृकोष (Sperm) और दूसरा माता का होता है, जिसे मातृकोष (Ovum) कहते हैं। उत्पादक कोष भी संयुक्त कोष के समान संख्या में बढ़ते हैं।

पुरुष और स्त्री के प्रत्येक कोष में 23-23 गुणसूत्र होते हैं। इस प्रकार संयुक्त कोष में गुणसूत्रों के 23 जोड़े होते हैं। गुणसूत्रों के सम्बन्ध में मन ने लिखा है—“हमारी सब असंख्य परम्परागत विशेषताएँ इन 46 गुणसूत्रों में निहित रहती हैं। ये विशेषताएँ गुणसूत्रों में विद्यमान पिट्रैक (Genes) में होती हैं।”

संयुक्त कोष (Zygote)—ये गाढ़े एवं तरल पदार्थ साइटोप्लाज्म का बना होता है। साइटोप्लाज्म के अन्दर एक नाभिक होता है, जिसके भीतर गुणसूत्र (क्रोमोसोम्स) होते हैं।

गुणसूत्र—प्रत्येक कोशिकाओं के नाभिक में डोरों के समान रचना पायी जाती है, जिनको क्रोमोसोम्स या गुणसूत्र कहा जाता है। ये गुणसूत्र सदैव जोड़ों में पाये जाते हैं। एक संयुक्त कोष में गुणसूत्रों के 23 जोड़े होते हैं, जिनमें आधे पिता द्वारा प्राप्त होते हैं और आधे माता द्वारा। प्रत्येक गुणसूत्र में छोटे-छोटे तत्व होते हैं, जिनको ‘जीन्स’ कहते हैं।

पिट्रैक या जीन्स—एक गुणसूत्र के अन्दर वंशानुक्रम के अनेक निश्चयात्मक तत्व पाये जाते हैं, जिनको पिट्रैक (Gene) कहा जाता है। जैसा कि एनास्टासी ने लिखा है—“**पिट्रैक वंशानुक्रम की विशेषताओं का वाहक है, जो किसी न किसी रूप में सदैव हस्तान्तरित होता है।**”

वंशानुक्रम के नियम और सिद्धान्त-

1. **बीजकोष की निरन्तरता का नियम**—इस नियम के अनुसार बालक को जन्म देने वाला बीजकोष कभी नष्ट नहीं होता है। इस नियम के प्रतिपादक बीजमैन का कथन है—“बीजकोष का कार्य केवल उत्पादक कोषों का निर्माण करना है, जो बीजकोष बालक को अपने माता-पिता से मिलता है, उसे वह अगली पीढ़ी को हस्तान्तरित कर देता है। इस प्रकार बीजकोष पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है।” किन्तु इस सिद्धान्त की आलोचना बी.एन. झा ने यह कहते हुए की है कि — “इस सिद्धान्त के अनुसार माता-पिता, बालक के जन्मदाता न होकर केवल बीजकोष के संरक्षक हैं, जिसे वे अपनी सन्तान को देते हैं। बीजमैन का यह सिद्धान्त न तो वंशानुक्रम की सम्पूर्ण प्रक्रिया की व्याख्या करता है और न संतोषजनक ही है।”
2. **समानता का नियम**—इस नियम के अनुसार जैसे माता-पिता होते हैं वैसी ही उनकी सन्तान होती है। सोरेन्सन ने लिखा है—“बुद्धिमान माता-पिता के बच्चे बुद्धिमान, साधारण माता-पिता के बच्चे साधारण होते हैं। इसी प्रकार शारीरिक रचना की दृष्टि से भी समान होते हैं।”
3. **विभिन्नता का नियम**—इस नियम के अनुसार बालक अपने माता-पिता के बिल्कुल समान न होकर कुछ भिन्न होते हैं। इस नियम के प्रतिपादकों में डार्विन व लैमार्क प्रमुख हैं।

4. **प्रत्यागमन का नियम**—इस नियम के अनुसार बालक में अपने माता-पिता के विपरीत गुण पाये जाते हैं। इस नियम के संदर्भ में विद्वानों ने निम्न धारणाएँ प्रस्तुत की हैं—

- यदि वंश सूत्रों का मिश्रण सही ढंग से नहीं हो पाता है तो विपरीत विशेषताओं वाले बालक विकसित होते हैं।
- जागृत और सुषुप्त दो प्रकार के गुण वंश को निश्चित करते हैं। विपरीत विशेषताएँ सुषुप्त गुणों का परिणाम होती हैं।

5. **अर्जित गुणों के संक्रमण का नियम**—लैमार्क ने इस नियम का समर्थन करते हुए लिखा है—“व्यक्तियों द्वारा अपने जीवन में जो अर्जित किया जाता है, वह उनके द्वारा उत्पन्न किये जाने वाले व्यक्तियों को संक्रमित करता है।”

6. **मैंडल का नियम**—इस नियम के अनुसार वर्णसंकर प्राणी या वस्तुएँ अपने मौलिक या सामान्य रूप की ओर अग्रसर होती हैं। इस नियम को चेकोस्लोवाकिया के मेण्डल नामक पादरी ने प्रतिपादित किया था। मैंडल ने मटर और चूहों पर किये गये प्रयोगों के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए—

- मैंडल का नियम प्रत्यागमन को स्पष्ट करता है।
- बालक में माता-पिता की ओर से एक-एक गुणसूत्र आता है।
- गुणसूत्र की अभिव्यक्ति संयोग पर निर्भर करती है।
- एक ही प्रकार के गुणसूत्र अपने ही प्रकार की अभिव्यक्ति करते हैं।
- जागृत गुणसूत्र अभिव्यक्ति करता है, सुषुप्त नहीं।
- कालान्तर में यह अनुपात 1:2, 2:4, 1:2, 1:2 हो जाता है।

वंशानुक्रम विशेषक-

वंशानुगत विशेषकों या विशेषताओं को निम्न चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

1. **संरचनात्मक विशेषक**—इसके अन्तर्गत शारीरिक संरचना से सम्बन्धित विशेषक आते हैं जैसे—शरीर अथवा अंगों की माप व आकृति, बालों का रंग, बालों की आकृति, बालों का विन्यास, नेत्रों का रंग, त्वचा का रंग व दशा, दाँत के डेनटीन व एनेमल, बौनापन, युक्तांगुलिता, लघुअंगुलिता आदि।
2. **क्रियात्मक विशेषक**—इसके अन्तर्गत व्यक्ति के शरीर की क्रिया प्रणालियों से सम्बन्धित लक्षण आते हैं। स्वास्थ्य, शारीरिक शक्ति, दीर्घायु, प्रजनन क्षमता रुधिर वर्ग तथा रोगों के प्रति संवेदनशीलता आदि क्रियात्मक विशेषक हैं।
3. **मानसिक विशेषक**—इसके अन्तर्गत मानसिक योग्यताओं तथा व्यक्तित्व से सम्बन्धित लक्षण आते हैं। जैसे—बुद्धि, साहित्यिक प्रकृति, गणितीय क्षमता, वैज्ञानिक, संज्ञानात्मक योग्यताएँ, स्वामिभक्ति, स्वाभिमान आदि।
4. **असाधारण विशेषक**—इसके अन्तर्गत असाधारण लक्षणों अथवा रोगों को रखा जाता है जैसे—बहुअंगुलिता, गंजापन, वर्णान्धता, अधिरक्तस्राव, रंजकहीनता, मिरगी, हँसियाकार-

रुधिराणु एनीमिया, फीनाइलकीटोनूरिया, एल्कैटोनूरिया आदि असाधारण रोगों के उदाहरण हैं।

बाल विकास पर वंशानुक्रम का प्रभाव-

वंशानुक्रम निम्नलिखित प्रकार से बाल-विकास को प्रभावित करता है—

1. **तंत्रिका तंत्र की बनावट**—तंत्रिका तंत्र में प्राणी की वृद्धि, सीखना, आदतें, विचार और आकांक्षाएँ आदि केन्द्रित रहते हैं। तंत्रिका तंत्र बालक में वंशानुक्रम से ही प्राप्त होता है। इससे ही ज्ञानेन्द्रियाँ, पेशियाँ तथा ग्रंथियाँ आदि प्रभावित होती हैं।
2. **बुद्धि पर प्रभाव**—बुद्धि को जन्मजात माना जाता है। बालक की बुद्धि वंशानुक्रम से ही निश्चित होती है।
3. **मूल-प्रवृत्तियों पर प्रभाव**—मूल प्रवृत्ति बालक के व्यवहार को शक्ति प्रदान करती है। ये मूल प्रवृत्तियाँ वंशानुक्रम से प्रभावित होती हैं।
4. **स्वभाव पर प्रभाव**—बालक का स्वभाव उनके माता-पिता के स्वभाव के अनुकूल होता है। शैलडन ने मानव स्वभाव को तीन भागों में विभाजित किया है—
 - (i) **विसेरोटोनिया**—इस स्वभाव के व्यक्ति समाजप्रिय, आरामपसन्द, हँसमुख और स्वादिष्ट भोजन में रुचि रखने वाले होते हैं।
 - (ii) **सोमेटोटोनिया**—इस प्रकार के स्वभाव के व्यक्ति महत्वाकांक्षी, क्रोधी, निर्दयी, सम्मानप्रिय और दृढ़प्रतिज्ञा आदि विशेषताओं वाले होते हैं।
 - (iii) **सेरेब्रोटोनिया**—इस स्वभाव के व्यक्ति चिंतनशील, एकान्तप्रिय, नियंत्रण पसन्द एवं विचारशील होते हैं।
5. **शारीरिक गठन पर प्रभाव**—बालक का शारीरिक गठन एवं शरीर की बनावट उसके वंशानुक्रम पर निर्भर करती है। केशमर ने शारीरिक गठन के आधार पर सम्पूर्ण मानव जाति को तीन भागों में विभाजित किया है—
 - (i) **पिकनिक**—इस प्रकार का व्यक्ति शरीर से मोटा, कद में छोटा, गोल-मटोल और अधिक चर्बीयुक्त होता है। उसका सीना चौड़ा लेकिन दबा हुआ तथा पेट निकला हुआ होता है।
 - (ii) **एथलेटिक**—इस प्रकार का व्यक्ति शारीरिक क्षमताओं के आधार से युक्त होता है जैसे—सिपाही, खिलाड़ी
 - (iii) **एस्थेनिक**—इस प्रकार का व्यक्ति दुबला-पतला और शक्तिहीन शरीर का होता है तथा यह संकोची स्वभाव का होता है।
6. **व्यवसायिक योग्यता पर प्रभाव**—बालकों में माता-पिता की व्यवसायिक कुशलता भी हस्तान्तरित होती है।
7. **सामाजिक स्थिति पर प्रभाव**—जो लोग वंश से अच्छा चरित्र, गुण या सामाजिक स्थिति सम्बन्धी विशेषताओं को लेकर उत्पन्न होते हैं, वे ही सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। **विनसिप** के अनुसार—“गुणवान एवं प्रतिष्ठित माता-पिता की संतान ही प्रतिष्ठा प्राप्त करती है।”

वातावरण

(पारिवारिक, सामाजिक, विद्यालयी, संचार माध्यम)

वातावरण का अर्थ एवं परिभाषा-

वातावरण को पर्यावरण भी कहा जाता है। पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है-‘परि’+‘आवरण’। परि का अर्थ है चारों ओर एवं आवरण का अर्थ है-‘ढकने वाला’ इस प्रकार पर्यावरण या वातावरण वह वस्तु है जो चारों ओर से ढके हुए हैं। अतः हम कह सकते हैं कि व्यक्ति के चारों ओर जो कुछ है, वह उसका वातावरण है। इसमें वे सभी तत्व सम्मिलित हैं, जो मानव के जीवन व व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

- **बुडवर्थ के अनुसार**—“वातावरण में सब बाह्य तत्व आ जाते हैं जिन्होंने व्यक्ति को जीवन आरम्भ करने के समय प्रभावित किया है।”
- **रॉस के अनुसार**—“वातावरण वह बाहरी शक्ति है, जो हमें प्रभावित करती है।”
- **एनास्टासी के अनुसार**—“वातावरण वह प्रत्येक वस्तु है, जो व्यक्ति के जीन्स के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु को प्रभावित करती है।”
- **जिस्बर्ट के अनुसार**—“वातावरण वह हर वस्तु है, जो किसी अन्य वस्तु को घेरे हुए है और उस पर सीधे अपना प्रभाव डालती है।”

बाल-विकास पर वातावरण का प्रभाव-

बालक के व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू पर भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

1. **मानसिक विकास पर प्रभाव**—गोर्डन का मत है कि उचित सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण न मिलने पर मानसिक विकास की गति धीमी हो जाती है।
2. **शारीरिक अंतर पर प्रभाव**—फ्रेंच बोन्स का मत है कि विभिन्न प्रजातियों के शारीरिक अंतर का कारण वंशानुक्रम न होकर वातावरण है।
3. **व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव**—कूले का मत है कि व्यक्तित्व के निर्माण में वंशानुक्रम की अपेक्षा वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ता है।
4. **शिक्षा पर प्रभाव**—बालक की शिक्षा, बुद्धि, मानसिक प्रक्रिया आदि सुन्दर वातावरण पर निर्भर करती है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में बालकों का सही विकास उपयुक्त शैक्षिक वातावरण पर ही निर्भर करता है।
5. **सामाजिक गुणों पर प्रभाव**—बालक का समाजीकरण उसके सामाजिक विकास पर निर्भर होता है। समाज का वातावरण उसे सामाजिक गुण एवं विशेषताओं को धारण करने के लिए उन्मुख करते हैं। न्यूमैन, फ्री मैन एवं होलिंगजर ने इस पर विशेष अध्ययन किया है।

6. **बालक पर बहुमुखी प्रभाव**—वातावरण बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि पक्षों को प्रभावित करता है। बालक का सर्वांगीण विकास तभी सम्भव है जब उसे अच्छे वातावरण में रखा जाये।

बालक के विकास को प्रभावित करने वाले वातावरणीय कारक-

बालक के विकास को प्रमुख रूप से आनुवांशिकता तथा वातावरण प्रभावित करते हैं। इसी प्रकार कुछ विभिन्न कारक और भी हैं, जो बालक के विकास में या तो बाधा पहुँचाते हैं या विकास को अग्रसर करते हैं-

1. बालकों के लालन-पालन या संरक्षण की दशाएँ-

बालक के विकास पर उसके लालन-पालन तथा माता-पिता की आर्थिक स्थितियाँ प्रभाव डालती हैं।

- **रूसों के अनुसार**—“बालक की शिक्षा में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है। परिवार ही बालक को सर्वोत्तम शिक्षा दे सकता है। यह एक ऐसी संस्था है जो मूल रूप से प्राकृतिक है।”
- **फ्रॉबेल के अनुसार**—“माताएँ आदर्श अध्यापिकाएँ हैं और घर द्वारा दी जाने वाली अनौपचारिक शिक्षा ही सबसे अधिक प्रभावशाली और स्वाभाविक है।”
- **माण्टेसरी के अनुसार**—“सीखने का प्रथम स्थान माँ की गोद है। बालक की सभी मूल प्रवृत्तियों का शोधन धीरे-धीरे परिवार के सदस्यों द्वारा ही होता रहता है।”
- परिवार बालक के सामाजीकरण का आधार है। बालक स्वयं सामाजिक जीवन की क्रियाओं तथा सामाजिक गुणों को यहीं से सीखता है।
- बालक को व्यवहारिक जीवन की शिक्षा परिवार से ही मिलती है। इस प्रकार बालक के लालन-पालन में परिवार का योगदान सराहनीय है।

2. सामाजिक वातावरण एवं उसका प्रभाव-

सामाजिक वातावरण का बालक के व्यवहार क्रियाकलाप, विचार आदि पर प्रभाव पड़ता है। वैसे वातावरण का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है, किन्तु हम इसे दो भागों में बाँट सकते हैं-

- (i) **आंतरिक वातावरण**—आंतरिक वातावरण जन्म से पूर्व ही अपना प्रभाव डालना प्रारम्भ कर देता है। गर्भावस्था बालक के विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण समय है।
- (ii) **बाह्य वातावरण**—बालक के बाह्य वातावरण के अन्तर्गत जाति, समाज राष्ट्र तथा उसकी संस्कृति को लिया जा सकता है। इस प्रकार के वातावरण की परिस्थितियाँ प्रत्येक देश में प्रत्येक काल में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती रहती है। परिवार में यह कार्य माता-पिता अपने बालकों को पूर्ववत् चले आये रीति-रिवाज, भाषा, संस्कृति, साहित्य जातीय

जीवन दर्शन आदि का पाठ व्यवहार द्वारा सीखाते हैं, जबकि विद्यालय बालकों में राष्ट्रीयता एवं मूल्यों का विकास आदि के भाव विकसित करती है।

3. विद्यालय की आंतरिक स्थितियों का प्रभाव—

बालक के विकास को प्रभावित करने वाले विद्यालयी कारक निम्नलिखित हैं—

- **विद्यालय का वातावरण**—शिक्षकों का व्यवहार बालकों के प्रति सरल, सौम्य एवं स्नेहमयी होना चाहिए जिससे बालक को घर की याद न आये। विद्यालय का भवन साफ, स्वच्छ तथा सुविधाओं से युक्त होना चाहिए। एक शिक्षक पर 20-25 तक बालकों की संख्या होनी चाहिए। एक अच्छे विद्यालय में पठन-पाठन की सामग्री, बालकों के खेलने के सुन्दर खिलौने, बाग बगीचे आदि भौतिक संसाधन होने चाहिए जिससे बालक विद्यालय के प्रति आकर्षित हो सकें।
- **समय विभाजन चक्र**—विद्यालय में बड़े छात्रों की अपेक्षा छोटे आयु वर्ग के छात्रों के समय विभाजन चक्र में अधिक अन्तर रहता है। छोटे बच्चों की पाठशाला 9.30 से 12.30 तक ही संचालित करना चाहिए। इस अवधि में भोजन, विश्राम, स्वास्थ्य निरीक्षण तथा प्रार्थना आदि के लिए समय नियत किया जाना चाहिए।
- **शिशु क्रीड़ा केन्द्र**—शिशु क्रीड़ा केन्द्र बालकों को प्रथमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार करते हैं जिससे बालक विद्यालय के वातावरण से परिचित हो जाते हैं। ये केन्द्र बालकों के शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास में सहायक होते हैं। ये केन्द्र बालकों में स्वस्थ आदतों का निर्माण कर खेल-खेल में आत्म निर्भरता, कलात्मकता तथा सृजनात्मकता जैसे गुणों का विकास करते हैं।

4. संचार माध्यमों का प्रभाव—

जब एक व्यक्ति या अनेक व्यक्तियों के द्वारा सूचनाओं के आदान-प्रदान का कार्य व्यापक स्तर पर होता है तब यह प्रक्रिया 'जन-संचार' कहलाती है। संचार एवं जन-संचार में मुख्य अन्तर यह है कि जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान करता है तो वह संचार कहलाता है जबकि

जब वही व्यक्ति रेडियो, टेलीविजन या अन्य माध्यम से अपनी बात असंख्य लोगों तक पहुँचाता है तो इसे जन-संचार कहते हैं।

जन-संचार के माध्यम—इसके अन्तर्गत रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, समाचार-पत्र और विज्ञापन आदि को शामिल किया जाता है।

कक्षा में जन-संचार माध्यमों की उपयोगिता—कक्षीय परिस्थितियों में अधिकतम शिक्षण अधिगम की प्रभावशाली परिस्थितियाँ उत्पन्न करने के लिए शिक्षा तकनीकी के जन-संचार माध्यमों का प्रयोग एक उत्तम साधन है। हमारे देश के विद्यालयों में कुछ नवीन विधियों जैसे—फिल्म, फिल्म-पट्टिकाएँ, प्रोजेक्टर, रेडियो आदि का प्रयोग किया जाने लगा है।

- (i) **रेडियो का प्रभाव**—रेडियो संचार माध्यमों के अन्तर्गत एक प्रभावशाली श्रव्य साधन है। रेडियो पर शैक्षिक पाठों के प्रसारण से दूर-दराज के बालकों को अत्यधिक लाभ पहुँचाता है।
- (ii) **दूरदर्शन का प्रभाव**—यह एक प्रभावशाली श्रव्य-दृश्य संचार माध्यम है। शैक्षिक दूरदर्शन, छात्रों को प्रेरित करने में, उनकी सृजनात्मक क्षमता को बढ़ाने में तथा उच्च स्तरीय शिक्षण प्रदान करने में सहायता प्रदान करता है।
- (iii) **कम्प्यूटर का प्रभाव**—इसके द्वारा जन शिक्षा, स्वास्थ्य, राष्ट्रीय एकता की शिक्षा आदि को सफलतापूर्वक प्रदान किया जा रहा है। कम्प्यूटर के माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन सम्भव हो पाया है।

इन्हें भी जानें—

वंशानुक्रम व वातावरण का सम्बन्ध

- **लैण्डिस के अनुसार**—“वंशक्रम हमें विकसित होने की क्षमताएँ प्रदान करता है। इन क्षमताओं के विकसित होने के अवसर हमें वातावरण से मिलते हैं। वंशक्रम हमें कार्यशील पूँजी देता है और परिस्थिति हमें इसको निवेश करने के अवसर प्रदान करती है।”
- **बुडवर्थ तथा मारेक्विस के अनुसार**—“व्यक्ति वंशक्रम तथा वातावरण का योग नहीं, गुणनफल है।”

इस प्रकार मानव विकास में इन दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

- | | |
|---|--|
| <p>1. बच्चे के समाजीकरण में परिवार भूमिका निभाता है।</p> <p>(a) कम महत्वपूर्ण (b) रोमांचकारी</p> <p>(c) मुख्य (d) गौण</p> <p>2. बालक-बालिकाओं के सामाजिक विकास का आधारभूत अभिकरण कहा जाता है—</p> <p>(a) विद्यालय (b) माता-पिता एवं परिवार</p> <p>(c) समुदाय (d) जनसंचार माध्यम</p> | <p>3. परिवार एक साधन है</p> <p>(a) अनौपचारिक शिक्षा का</p> <p>(b) औपचारिक शिक्षा का</p> <p>(c) गैर-औपचारिक शिक्षा का</p> <p>(d) दूरस्थ शिक्षा का</p> <p>4. “जन-संचार माध्यम समाजीकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनता जा रहा है।” नीचे दिए गए कथनों में से कौन-सा सबसे उपयुक्त कथन है?</p> |
|---|--|

- (a) संचार माध्यम पदार्थों के विज्ञापन और विक्रय के लिए एक अच्छा माध्यम है।
 (b) समाजीकरण केवल माता-पिता और परिवार के द्वारा किया जाता है
 (c) जन-संचार माध्यमों की पहुँच बढ़ रही है और जन-संचार माध्यम अभिवृत्तियों, मूल्यों और विश्वासों को प्रभावित करता है।
 (d) बच्चे संचार माध्यमों के साथ प्रत्यक्ष रूप से अंतःक्रिया नहीं कर सकते हैं।
5. **आनुवंशिकता को एकसामाजिक संरचना माना जाता है।**
 (a) प्राथमिक (b) द्वितीयक
 (c) गतिक (d) स्थायिक
6. **मानव जाति में वे कौन-से वैयक्तिक निर्धारक तत्व होते हैं, जो मानव जाति की विविधता को बताते हैं?**
 (a) पर्यावरण का अन्तर
 (b) आनुवंशिकता का अन्तर
 (c) आनुवंशिकता व पर्यावरण की अन्तर्क्रिया
 (d) उपरोक्त में से कोई नहीं
7. **माता-पिता से वंशजों में स्थानान्तरित होने वाले लक्षणों को कहा जाता है**
 (a) पर्यावरण (b) जीन
 (c) आनुवंशिकता (d) होम्योस्टैसिस
8. **विद्यार्थी का विकास निर्भर करता है—**
 (a) वंशानुक्रम पर
 (b) वातावरण पर
 (c) वंशानुक्रम एवं वातावरण पर
 (d) उपरोक्त में से कोई भी नहीं
9. **मनुष्य में वैयक्तिक विभिन्नता के निर्धारक किससे संबंधित होते हैं?**
 (a) वातावरण के साथ अंतर्क्रिया
 (b) वंशानुक्रम में विभिन्नता
 (c) वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनों में विभिन्नता
 (d) वंशानुक्रम व वातावरण में अंतर्क्रिया
10. **लिंग का निर्धारण होता है**
 (a) माता द्वारा (b) पिता द्वारा
 (c) माता-पिता द्वारा (d) इनमें से कोई नहीं
11. **सामान्यतः यह देखा जाता है कि बच्चा थोड़े बहुत मायनों में अपने माँ-बाप से भिन्न होता है। इसे किसके आनुवंशिकीय नियम के जरिए विश्लेषित किया जा सकता है?**
 (a) समानता
 (b) विभेद
 (c) अवनति
 (d) कीटाणु के जननद्रव्य सिद्धान्त द्वारा
12. **निम्नलिखित में से कौन-सा मुख्य रूप से आनुवंशिकता संबंधी कारण है?**
 (a) आँखों का रंग
 (b) सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी
 (c) समकक्ष व्यक्तियों के समूह के प्रति अभिवृत्ति
 (d) चिंतन पैटर्न
13. **विकास पर आनुवंशिकता के प्रभाव की सीमा का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से किसके द्वारा होता है?**
 (a) आनुवंशिकता निर्धारित करती है कि कोई कितना विकसित होगा।
 (b) आनुवंशिकता निर्धारित करती है कि किसी को कितना विकसित किया जा सकता है।
 (c) (a) और (b) दोनों
 (d) या तो (a) या (b)
14. **मानव व्यक्तित्व परिणाम है—**
 (a) केवल आनुवंशिकता का
 (b) पालन-पोषण और शिक्षा का
 (c) आनुवंशिकता और वातावरण की अंतःक्रिया का
 (d) केवल शीघ्र सीखते हैं
15. **एक 6 वर्ष की लड़की खेलकूद में असाधारण योग्यता का प्रदर्शन करती है। उसके माता-पिता दोनों ही खिलाड़ी हैं, उसे नित्य प्रशिक्षण देते हैं। बहुत संभव है कि उसकी क्षमताएं निम्नलिखित दोनों के बीच परस्पर प्रतिक्रिया का परिणाम होंगी।**
 (a) वृद्धि और विकास
 (b) स्वास्थ्य और परिक्षण
 (c) अनुशासन और पौष्टिकता
 (d) आनुवंशिकता और पर्यावरण
16. **बच्चों के व्यवहार को समझने के लिए विद्यार्थियों के घर के वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान है तथा इसे प्राप्त सूचना को प्रभावशाली शिक्षाशास्त्र के निर्माण से जोड़ा जा सकता है। यह तथ्य अधिगम के किस सिद्धांत से सम्बद्ध है?**
 (a) रचनावादी (b) सामाजिक-रचनावादी
 (c) व्यवहारवादी (d) पारिस्थितिक
17. **“किसी व्यक्ति को आकार देने में वातावरण के घटकों की कोई भूमिका नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की वृद्धि उसकी आनुवंशिक संरचना से निर्धारित होती है।” यह कथन**
 (a) ठीक है, क्योंकि बहुत-से शोध यह सिद्ध करते हैं कि आनुवंशिक पदार्थ की व्यक्ति के विकास की भविष्यवाणी करता है
 (b) ठीक है, क्योंकि वातावरण के घटक किसी व्यक्ति की वृद्धि और विकास में कम योगदान करते हैं

- (c) ठीक नहीं है, क्योंकि बहुत-से शोध यह सिद्ध करते हैं कि विकास में वातावरण का बड़ा प्रभाव पड़ सकता है
- (d) ठीक है, क्योंकि किसी व्यक्ति की आनुवांशिक संरचना बहुत प्रबल होती है
18. यदि गुणसूत्रों का मिलान हो तो लड़के का जन्म होता है—
- (a) YY (b) XY
(c) XX (d) BY
19. मुख्यता आनुवंशिकी द्वारा निर्धारित विकास प्रक्रिया है—
- (a) अधिगम (b) परिपक्वता
(c) सामाजीकरण (d) इनमें से कोई नहीं
20. बच्चे के विकास में आनुवंशिकता और वातावरण की भूमिका के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा सत्य है?
- (a) आनुवंशिकता और वातावरण दोनों एक बच्चे के विकास में 50.50% योगदान रखते हैं
(b) समवयस्कों और पित्रेक (genes) का सापेक्ष योगदान योगात्मक नहीं होता
(c) अनुवांशिकता और वातावरण एकसाथ परिचालित नहीं होते
(d) सहम रुझान वातावरण से सम्बन्धित है जबकि वास्तविक विकास के लिए अनुवांशिकता जरूरी है
21. इनमें से किनका नाम 'सुजननशास्त्र के पिता' से जुड़ा हुआ है?
- (a) क्रो एवं क्रो (b) गाल्टन
(c) रॉस (d) वुडवर्थ
22. आनुवंशिकता का गठन है।
- (a) वातावरण (b) मानसिक
(c) आनुवांशिक (d) मनोवैज्ञानिक
23. 'प्रकृति-पोषण' विवाद में 'प्रकृति' से क्या अभिप्राय है?
- (a) जैविकीय विशिष्टताएँ या वंशानुक्रम सूचनाएँ
(b) एक व्यक्ति की मूल वृत्ति
(c) भौतिक और सामाजिक संसार की जटिल शक्तियाँ
(d) हमारे आस-पास का वातावरण
24. 'प्रकृति-पालन-पोषण' वाद-विवाद के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा आपको उपयुक्त प्रतीत होता है?
- (a) एक बच्चों एक खाली स्लेट के समान होता है जिसका चरित्र परिवेश के द्वारा किसी भी आकार में ढाला जा सकता है
- (b) बच्चे आनुवांशिक रूप से उस तरफ प्रवृत्त होते हैं जिस तरफ होना चाहिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वे किस प्रकार के परिवेश में पल-बढ़ रहे हैं
- (c) एक बच्चे के व्यवहार का निर्धारण करने में परिवेशीय प्रभावों का बहुत कम महत्व होता है, वह प्राथमिक रूप में आनुवंशिक रूप से निर्धारित होता है
- (d) वंशानुक्रम तथा परिवेश अभिनन रूप से एक-दूसरे से गुंथे हुए हैं और दोनों विकास को प्रभावित करते हैं
25. इस पर अत्यधिक वाद-विवाद होता है कि क्या लड़कों एवं लड़कियों में योग्यताओं का विशिष्ट समूह उनके आनुवंशिक घटकों के कारण होता है। इस संदर्भ में निम्नलिखित में से आप सबसे अधिक किससे सहमत हैं?
- (a) लड़कियों को सेवाभाव के लिए सामाजिक रूप से तैयार किया जाता है जबकि लड़कों को रोने जैसा संवेग प्रदर्शित करने के लिए हतोत्साहित किया जाता है।
(b) यौवनारम्भ के बाद लड़के और लड़कियाँ एक साथ नहीं खेल सकते हैं क्योंकि उनकी अभिरुचियाँ पूर्णतया विपरीत होती हैं।
(c) सभी लड़कियों में कला-विषयों के लिए अंतर्निहित प्रतिभा होती है जबकि लड़के आक्रामक खेलों में बेहतर प्रदर्शन के लिए आनुवांशिक रूप से तैयार होते हैं।
(d) लड़के सेवाभाव वाले नहीं हो सकते हैं क्योंकि वे जन्म से इस प्रकार के होते हैं।
26. व्यक्तियों में एक-दूसरे से भिन्नता क्यों होती है ?
- (a) वातावरण के प्रभाव के कारण
(b) जन्मजात विशेषताओं के कारण
(c) वंशानुक्रम और वातावरण के बीच अन्योन्यक्रिया के कारण
(d) प्रत्येक व्यक्ति को उसके माता-पिता से जीनों का भिन्न समुच्चय प्राप्त होने के कारण
27. _____ तथा _____ की विशिष्ट अन्योन्यक्रिया का परिणाम विकास के विविध मार्गों और निष्कर्षों के रूप में हो सकता है।
- (a) खोज; पोषण (b) चुनौतियाँ; सीमाएँ
(c) वंशानुक्रम; पर्यावरण (d) स्थिरता; परिवर्तन
28. मनुष्य की बुद्धि आगे की पीढ़ियों में संक्रमित होती है।..... का कार्य इस जन्मजात योग्यता के विकास के लिए उपयुक्त परिस्थितियों का निर्माण करना है।
- (a) क्षेत्र (b) मौसम
(c) वातावरण (d) जलवायु
29. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?
- (a) "वंशानुक्रम माता-पिता से सन्तान में गुणों का संचरण है"

- (b) “विकास प्राणी और उसके पर्यावरण की अन्तर्क्रिया का परिणाम है”
- (c) “वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का शोधन है”
- (d) “माता-पिता की शारीरिक और मानसिक विशेषताओं का सन्तानों में संचरित होना वंशानुक्रम है”
30.जन्मजात वैयक्तिक गुणों का योगफल है।
- (a) समानता (b) निरन्तरता
- (c) वंशानुक्रम (d) युयुत्सा
31. के अनुसार ‘बालक का विकास आनुवंशिकता तथा वातावरण का गुणनफल है।’
- (a) वुडवर्थ (b) गैरेट
- (c) हालैण्ड (d) थॉर्नडाइक
32. क्या बच्चे इसलिए भाषा अर्जित करते हैं, क्योंकि उनमें आनुवंशिक रूप से ऐसा करने की पूर्वप्रवृत्ति होती है या उनके माता-पिता प्रारंभिक अवस्था से ही उन्हें गहन रूप से सिखाते हैं? यह प्रश्न आवश्यक रूप से दर्शाता है:
- (a) क्या विकास एक सतत प्रक्रिया है या एक असतत प्रक्रिया?
- (b) भाषा के विकास पर संज्ञान का प्रभाव।
- (c) प्रकृति और पोषण पर बहस
- (d) बहु-कारक योग्यता के रूप में विकास पर चर्चा।
33. सामान्य पुरुष में XY गुणसूत्र होते हैं जबकि सामान्य महिला में..... होते हैं।
- (a) XX गुणसूत्र (b) XYY गुणसूत्र
- (c) XXX गुणसूत्र (d) X गुणसूत्र
34. निम्नलिखित में से कौन सा एक सही क्रम है?
- (a) अण्डाणु-शुक्राणु, ब्लास्टोसिस्ट, युग्मनज
- (b) ब्लास्टोसिस्ट, अण्डाणु-शुक्राणु, युग्मनज
- (c) ब्लास्टोसिस्ट, युग्मनज, अण्डाणु-शुक्राणु
- (d) अण्डाणु-शुक्राणु, युग्मनज, ब्लास्टोसिस्ट
35. आनुवंशिकता को सामाजिक संरचना माना जाता है।
- (a) गत्यात्मकता (b) स्थिर
- (c) प्राथमिक (d) गौण
36. प्रकृति-पोषण विवाद निम्नलिखित में से किससे सम्बन्धित है?
- (a) व्यवहार एवं वातावरण
- (b) वातावरण एवं जीव-विज्ञान
- (c) वातावरण एवं पालन-पोषण
- (d) आनुवांशिकी एवं वातावरण
37. क्या बुद्धिमान माता-पिता (अभिभावक) के बच्चे (सन्तानें) सदैव पढ़ाई में तेज होते हैं?
- (a) हाँ
- (b) नहीं
- (c) मनोविज्ञान इस संबंध में कोई उत्तर नहीं दे सकता
- (d) यह ईश्वर पर निर्भर है
38. निर्धन परिवारों के बच्चे जो छोटे आकार के परिवार से संबद्ध हैं उनको विकास के बेहतर वातावरण पाने के मौके होते हैं क्योंकि उन्हें बड़े परिवारों के निर्धन बच्चों की अपेक्षा.....
- (a) साफ-सफाई से जुड़ी कम समस्याओं का सामना करना पड़ता है
- (b) उनके अभिभावक ज्यादा प्रसन्नचित रहते हैं
- (c) उन्हें शांतिमय परिस्थिति मिलती है
- (d) उन्हें बेहतर परिस्थितियाँ प्राप्त होती हैं।
39. निम्नलिखित में से..... के अतिरिक्त सभी वातावरणीय कारक विकास को आकर देते हैं।
- (a) पौष्टिकता की गुणवत्ता (b) संस्कृति
- (c) शिक्षा की गुणवत्ता (d) शारीरिक गठन
40. निम्न में से कौन सा कथन बच्चे के विकास में परिवेश की भूमिका का समर्थन करता है?
- (a) पिछली कुछ दशाब्दियों में बुद्धि लब्धांक परीक्षा में शिक्षार्थियों के औसत प्रदर्शन में लगातार वृद्धि हुई है।
- (b) एक समान जुड़वां बच्चे जिनका लालन-पालन भिन्न घरों में हुआ है, उनकी बुद्धिलब्धि 0.75 के समान उच्च है।
- (c) शारीरिक रूप से स्वस्थ बच्चे अक्सर नैतिक रूप से अच्छे पाए जाते हैं।
- (d) कुछ शिक्षार्थी सूचनाओं का जल्दी प्रक्रमण करते हैं जबकि उसी कक्षा के अन्य विद्यार्थी ऐसा नहीं कर पाते।

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|--------|--------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (c) | 5. (d) | 9. (d) | 13. (b) | 17. (c) | 21. (b) | 25. (c) | 29. (c) | 33. (a) | 37. (b) |
| 2. (b) | 6. (c) | 10. (b) | 14. (c) | 18. (b) | 22. (c) | 26. (c) | 30. (c) | 34. (d) | 38. (d) |
| 3. (a) | 7. (c) | 11. (b) | 15. (d) | 19. (b) | 23. (a) | 27. (c) | 31. (a) | 35. (b) | 39. (d) |
| 4. (c) | 8. (c) | 12. (a) | 16. (d) | 20. (b) | 24. (d) | 28. (c) | 32. (c) | 36. (d) | 40. (a) |

सीखने का अर्थ तथा सिद्धान्त

3.

अधिगम का अर्थ, प्रभावित करने वाले कारक, अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ

अधिगम का अर्थ एवं परिभाषाएँ

- वुडवर्थ के अनुसार—“नवीन ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया अधिगम की प्रक्रिया है।”
- स्कीनर के अनुसार—सीखना, व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की एक प्रक्रिया है।”
- क्रो व क्रो के अनुसार—“सीखना आदतों, ज्ञान और अभिवृत्तियों का अर्जन है।”
- गेट्स व अन्य के अनुसार—“सीखना अनुभव व प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन है।”
- क्रोनबैक के अनुसार—“अधिगम की अभिव्यक्ति अनुभव के परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन के रूप में होती है।”
- गिलफोर्ड के अनुसार—“व्यवहार के कारण व्यवहार में आया कोई भी परिवर्तन अधिगम है।”

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सीखना या अधिगम क्रिया द्वारा व्यवहार में परिवर्तन है, व्यवहार में हुआ यह परिवर्तन कुछ समय तक बना रहता है, यह परिवर्तन व्यक्ति के पूर्व अनुभवों पर आधारित होता है।

अधिगम की विशेषताएँ-

योकम तथा सिम्पसन ने अधिगम की निम्नलिखित विशेषताओं की चर्चा की है-

- (i) अधिगम विकास है।
- (ii) अधिगम समायोजन है।
- (iii) अधिगम सोद्देश्य है।
- (iv) अधिगम क्रियाशील है।
- (v) अधिगम व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों है।
- (vi) अधिगम अनुभवों का संगठन है।
- (vii) अधिगम विवेकपूर्ण व सृजनशील है।
- (viii) अधिगम वातावरण के परिणामस्वरूप होता है।
- (ix) अधिगम व्यक्ति के आचरण को प्रभावित करता है।

मैककाव ने अधिगम की निम्न विशेषताएँ बतायी हैं-

- (i) अधिगम व्यवहार में सतत परिवर्तन है जो जीवन पर्यन्त चलता है।
- (ii) अधिगम सार्वभौमिक व सर्वांगीण है।
- (iii) अधिगम में व्यक्ति सम्पूर्ण रूप से (शारीरिक एवं मानसिक रूप से) सम्मिलित रहता है।

(iv) अधिगम अधिकांशतः व्यवहार के संगठन में परिवर्तन होता है।

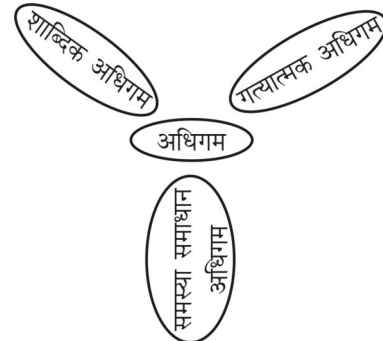
(v) अधिगम विकासात्मक होता है।

(vi) अधिगम तैयारी व अभिप्रेरणा पर निर्भर करता है।

अधिगम के प्रकार-

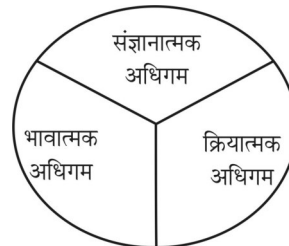
➤ अधिगम किये जाने वाले कार्य की प्रकृति के आधार पर अधिगम को तीन प्रकारों में बाँटा जा सकता है-

- (i) शाब्दिक अधिगम
- (ii) गत्यात्मक अधिगम
- (iii) समस्या समाधान अधिगम



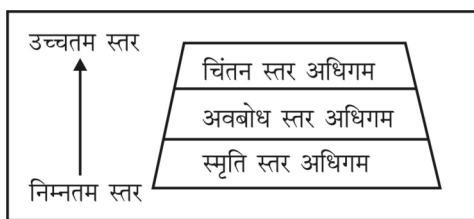
➤ शैक्षिक उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में अधिगम को तीन पक्षों में विभक्त किया जा सकता है-

- (i) संज्ञानात्मक अधिगम
- (ii) भावात्मक अधिगम
- (iii) चेष्टात्मक अधिगम या क्रियात्मक अधिगम



➤ शिक्षण के स्तर के आधार पर अधिगम के तीन प्रकार हैं-

- (i) स्मृति स्तर अधिगम
- (ii) अवबोध स्तर अधिगम
- (iii) चिंतन स्तर अधिगम



- आ. एन. गैने ने अधिगम की प्रकृति को समझने के लिए अधिगम को आठ भागों में विभक्त किया जो कि सोपान की क्रम में व्यवस्थित हैं—



1. **संकेत अधिगम**—इसे क्लासिकल अनुबंधन भी कहा जाता है। इस प्रकार का अधिगम पावलव द्वारा प्रतिपादित क्लासिकल अनुबंधन सिद्धान्त के अनुरूप होता है। इस प्रकार का सीखना यांत्रिक होता है इसलिए गैने ने इसे सबसे नीचे रखा है।
2. **उद्दीपक अनुक्रिया अधिगम**—इसे क्रियाप्रसूत अनुबंधन भी कहा जाता है। इस प्रकार का सीखना स्कीनर के सिद्धान्त 'क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त' पर आधारित है।
3. **श्रृंखला अधिगम**—इसे क्रमिक अधिगम भी कहते हैं। इस प्रकार के अधिगम में अधिगम सामग्री क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित रहती है तथा प्राणी एक-एक करके क्रम से अधिगम सामग्री को सीखता है। वर्णमाला, गिनती पहाड़ा, ऐतिहासिक विवेचन आदि इसके सरल उदाहरण हैं।
4. **शाब्दिक अधिगम**—इस प्रकार के अधिगम से तात्पर्य शब्दों, वाक्यों, वार्तालाप, साहित्य, लेखन सम्बन्धी अधिगम से है, जो शाब्दिक व्यवहार में परिवर्तन लाने से सम्बन्धित रहता है।
5. **बहु-विभेद अधिगम**—इसके अन्तर्गत प्राणी विभिन्न समान वस्तुओं में विभेद करना सीखता है।
6. **सम्प्रत्यय अधिगम**—इस प्रकार के अधिगम से तात्पर्य पूर्व अनुभवों, प्रशिक्षण अथवा संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के आधार पर सम्प्रत्ययों का निर्माण करने से होता है।
7. **सिद्धान्त अधिगम**—सिद्धान्त अधिगम से तात्पर्य सिद्धान्तों को समझने से है।
8. **समस्या-समाधान अधिगम**—समस्या समाधान अधिगम के अन्तर्गत प्राणी अपनी समस्याओं का स्वयं समाधान करना सीखता है।

अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

अधिगम को निम्नलिखित कारक प्रभावित करते हैं—

1. **बालक का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य**—शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ तथा मानसिक रूप से स्वस्थ बालक सीखने में रुचि लेते हैं जिससे वे शीघ्रता से सीख जाते हैं। इसके विपरीत कमजोर, बीमार तथा मानसिक अस्वस्थता वाले बच्चे सीखने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।
2. **परिपक्वता**—शारीरिक व मानसिक रूप से परिपक्व होने पर सीखने की गति बढ़ जाती है, जिससे सीखने का स्तर भी बढ़ जाता है।
3. **सीखने की इच्छा**—जिस बात को सीखने की प्रबल इच्छा होती है व्यक्ति उस बात को जल्दी सीख जाता है जबकि इच्छा न होने पर वह नहीं सीख पाता है।
4. **प्रेरणा**—सीखने के लिए बच्चों को प्रेरित करना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए समय-समय पर प्रशंसा, प्रोत्साहन तथा प्रतियोगिता के आधार पर सीखने को प्रोत्साहित करना चाहिए।
5. **विषय सामग्री का स्वरूप**—छात्रों के रुचि, बुद्धि, अभिक्षमता के अनुरूप विषय-वस्तु होने पर वे जल्दी सीख जाते हैं जबकि कठिन, नीरस तथा अर्थहीन विषय सामग्री होने पर बच्चे नहीं सीख पाते हैं।
6. **वातावरण**—भौतिक व सामाजिक दोनों ही वातावरण अधिगम को प्रभावित करते हैं। शुद्ध वायु, उचित प्रकाश, शांत वातावरण एवं मौसम की अनुकूलता के बीच बच्चे जल्दी सीख जाते हैं।
7. **शारीरिक एवं मानसिक थकान**—शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए समय सारिणी का बड़ा महत्व है। कठिन विषय थोड़े समय में ही छात्रों को थका देते हैं। इसलिए समय-सारिणी में कठिन विषयों को पहले व सरल विषयों को बाद में स्थान दिया जाता है। कालांशों के बीच विश्रान्तिकाल का भी ध्यान रखना चाहिए, इससे थकान का प्रभाव कम हो जाता है।

■ इसके अतिरिक्त बुद्धि, रुचि, अभिक्षमता, जीवन का लक्ष्य, विषय का ज्ञान, व्यवहार, पूर्व अधिगम, व्यक्तित्व, शिक्षण विधि, बाल केन्द्रित शिक्षा, अनुशासन, पाठ्यवस्तु का संगठन एवं उसका जीवन से सम्बन्ध जैसे कारक भी अधिगम को प्रभावित करते हैं।

अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ

अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ निम्नलिखित हैं—

1. **करके सीखना**—बच्चे जिस कार्य को स्वयं करते हैं उसे वे जल्दी सीख जाते हैं। इसलिए आधुनिक बाल केन्द्रित शिक्षा प्रणाली इसी पर आधारित है।
2. **अनुकरण द्वारा सीखना**—विद्यालय में बच्चे, की जाने वाली क्रियाओं का अनुकरण करके सीखते हैं। इस विधि में शिक्षक छात्र के लिए आदर्श स्वरूप होता है। **हैगार्ट के अनुकरण द्वारा सीखने का सिद्धान्त** से भी यह स्पष्ट हो जाता है कि बच्चे अनुकरण द्वारा सीखते हैं।
3. **निरीक्षण करके सीखना**—बच्चे जिस वस्तु का निरीक्षण करते हैं उसके बारे में वे जल्दी और स्थायी रूप से सीख जाते हैं। इसका कारण है कि निरीक्षण करते समय वे उस वस्तु को छूते हैं, या प्रयोग करते हैं या आपस में उसके बारे में चर्चा करते हैं, इस प्रकार वे अपने एक से अधिक इन्द्रियों का प्रयोग करते हैं।

4. **परीक्षण करके सीखना**—इसके अन्तर्गत छात्र अपनी आवश्यकता के अनुरूप सामग्री का परीक्षण करते हैं तथा ज्ञान प्राप्त करते हैं। इस विधि को विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान एवं नैतिक शिक्षा आदि में प्रयोग किया जा सकता है।

5. **सामूहिक विधियों द्वारा सीखना**—इस सम्बन्ध में कोलसैनिक का मत है कि बालक को प्रेरणा प्रदान करने, उसे शैक्षिक लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता देने, उनके मानसिक स्वास्थ्य को उत्तम बनाने, उसके व्यवहार में सुधार करने और उसमें आत्मनिर्भरता तथा सहयोग की भावनाओं का विकास करने के लिए सामूहिक विधियाँ अधिक प्रभावशाली होती हैं। मुख्य सामूहिक विधियाँ निम्नलिखित हैं—

(i) **सम्मेलन व विचारगोष्ठी विधि**—इस विधि में किसी विशेष विषय पर छात्र/छात्राओं द्वारा विचार-विमर्श, वाद-विवाद एक निश्चित समय में करना होता है। इसमें ऐसे प्रकरण पर विचार किया जाता है जिसमें सभी सदस्यों की रुचि होती है। इसके द्वारा सामाजिक एवं भावात्मक गुणों के विकास के साथ-साथ दूसरों के विरोधी विचारों का सम्मान एवं सहनशीलता की भावना विकसित की जाती है।

(ii) **प्रोजेक्ट विधि**—इसमें प्रत्येक छात्र अपनी व्यक्तिगत रुचि, ज्ञान और क्षमता के अनुसार स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं, जिससे सीखना सरल हो जाता है। सामूहिक रूप से कार्य करने के कारण उनमें स्पर्धा, सहयोग और सहानुभूति का भी विकास होता है।

(iii) **समूह अधिगम**—इसके अन्तर्गत सीखने वालों को विभिन्न समूह में बाँट दिया जाता है। सीखने वालों को अपने साथियों के साथ खुले मन से विषय-वस्तु पर आधारित अपने विचारों एवं भावों को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को अपनी समस्याओं का स्वयं निराकरण करने के लिए

प्रोत्साहित करना तथा उन्हें समाधान निकालने के लिए अवसर प्रदान करना होता है।

■ अच्छे शिक्षक के गुण—

- गतिविधियों के निर्माण की क्षमता
- स्पष्ट निर्देश
- बच्चे की मानसिक क्षमता पहचानना
- निरन्तर सीखने वाला
- विषय-वस्तु का पर्याप्त ज्ञान
- झिझक न होना
- पूर्व ज्ञान से जोड़ने का कौशल
- शिक्षण पूर्व योजना
- वक्ता के साथ श्रोता
- भयमुक्त कक्षा
- पूर्वाग्रह मुक्त
- पक्षपात रहित व्यवहार

इसके अतिरिक्त वाचन विधि, प्रयास एवं त्रुटि विधि, पूर्ण विधि, अंश विधि, अंतराल विधि, सतत् विधि अधिगम की अन्य विधियाँ हैं।

■ ध्यान देने योग्य बातें—अधिगम विधियाँ कैसी हों—

- किसी भी विषय का शिक्षण बच्चों के पूर्व ज्ञान एवं अर्जित क्षमताओं पर निर्भर करता है।
- सीखने की विधियाँ ऐसी हों, जो बच्चों को सीखने में आत्मनिर्भर बनाये
- बच्चे स्वतंत्र रूप से सीखने के लिए प्रेरित हो।
- वे सीखने में आनन्द अनुभव करें।
- उनमें आपस में सहयोग की भावना विकसित हो।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन सा अधिगम का क्षेत्र नहीं है?

- (a) संज्ञानात्मक
- (b) भावात्मक
- (c) क्रियात्मक
- (d) आध्यात्मिक

2. बालकों में अधिगम

- (a) ज्ञान को रटने से होता है
- (b) पाठ्यपुस्तक को पढ़ने से होता है
- (c) शिक्षक द्वारा ज्ञान के स्थानान्तरण द्वारा होता है
- (d) क्रिया करके होता है

3. अधिगम एक प्रविधि है

- (a) तथ्यों को याद करने की
- (b) पाठ्यपुस्तक में दिये गये विषय को याद करने की
- (c) अनुभव द्वारा अर्थ निर्माण करने की
- (d) परीक्षा की तैयारी की

4. बालक विविध प्रकार से सीखते हैं

- (a) शिक्षक के भाषण द्वारा
- (b) प्रयोग द्वारा, विवेचन द्वारा, प्रश्न पूछकर, क्रिया करके तथा चिन्तन करके
- (c) शिक्षक द्वारा निर्देशित, नियंत्रित पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षण द्वारा
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

5. सीखने की परिघटना में निम्नलिखित में से कौन आवश्यक घटक नहीं है?

- (a) अधिगमकर्ता
- (b) आंतरिक अवस्था
- (c) प्रेरक
- (d) शिक्षक

6. निम्न में से कौन-सा उदाहरण अधिगम को प्रदर्शित करता है?

- (a) हाथ जोड़ कर अध्यापक का अभिवादन करना
- (b) स्वादिष्ट भोजन देख कर मुँह में लार का आना
- (c) चलना, भागना एवं फेंकना तीन से पाँच वर्ष की अवस्था में
- (d) इनमें से सभी।

7. “हम करके सीखते हैं।” किसने कहा?
 (a) डॉ. मेस (b) योकम
 (c) सिम्पसन (d) कोलेसनिक।
8. निम्न आर्थिक स्तर का प्रभाव निम्न में से किस पर नहीं पड़ता है?
 (a) आत्मसम्मान पर (b) सीखने की क्षमता पर
 (c) उच्च संस्थान में प्रवेश पर (d) जीवन-यापन पर
9. ‘सीखना व्यवहार में उत्तरोत्तर सामन्जस्य की प्रक्रिया है।’ यह कथन है
 (a) क्रो व क्रो (b) पियाजे
 (c) स्किनर (d) कोह्लर
10. संकेत अधिगम के अन्तर्गत निम्नलिखित सीखा जाता है
 (a) मनोविज्ञान (b) पारम्परिक अनुकूलन
 (c) वातावरण (d) मनोदैहिक
11. व्यावहारिक क्षमताओं में वह सापेक्ष स्थायी परिवर्तन जो कि प्रचलित अभ्यास का परिणाम होता है उसे क्या कहते हैं -
 (a) अधिगम (b) अभिप्रेरणा
 (c) अभिवृत्ति (d) अभिक्षमता
12. गेट्स के अनुसार, “अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन ही..... है।”
 (a) अभिप्रेरण (b) समायोजन
 (c) सीखना (d) चिन्तन
13. सीखने का सर्वाधिक उपयुक्त अर्थ है
 (a) कौशल अर्जन
 (b) ज्ञानार्जन
 (c) व्यवहार में परिमार्जन
 (d) वैयक्तिक समायोजन
14. सीखना है
 (a) व्यवहार में परिवर्तन
 (b) अनुभव तथा अभ्यास का परिणाम
 (c) व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन
 (d) ये सभी
15. अधिगम क्षमता निम्नलिखित में से किससे प्रभावित नहीं होती?
 (a) आनुवंशिकता (b) वातावरण
 (c) प्रशिक्षण/शिक्षण (d) राष्ट्रीयता
16. व्यवहार में होने वाले स्थायी परिवर्तन, जो अभ्यास के कारण होते हैं, को कहा जाता है
 (a) सीखना (b) सोचना
 (c) क्रिया करना (d) कल्पना करना
17. गैंगे निम्न में किससे सम्बन्धित है?
 (a) अधिगम का श्रेणीक्रम
 (b) अधिगम के सिद्धांत
 (c) अधिगम का मूल्यांकन
 (d) अधिगम का प्रबन्धन
18. निम्नलिखित में से किस कथन को ‘सीखने’ के लक्षण के रूप में नहीं माना जा सकता?
 (a) व्यवहार का अध्ययन सीखना है
 (b) अन-अधिगम (लहर्तहर्तु) भी सीखने का एक हिस्सा है
 (c) सीखना एक प्रक्रिया है जो व्यवहार में मध्यस्थता करती है।
 (d) सीखना कुछ ऐसी चीज है जो कुछ अनुभवों के परिणामस्वरूप घटित होती है
19. बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में माता-पिता को ---- भूमिका निभानी चाहिए।
 (a) अग्रोन्मुखी (b) सहानुभूतिपूर्ण
 (c) तटस्थ (d) नकारात्मक
20. सीखने की विशेषताएँ हैं—
 (a) सार्वभौतिकता
 (b) निरंतरता
 (c) (a) और (b) दोनों
 (d) इनमें से कोई नहीं
21. “नवीन ज्ञान तथा नवीन प्रतिक्रियाओं का अर्जन करने की प्रक्रिया अधिगम प्रक्रिया है।” यह कथन है
 (a) थार्नडाइक का
 (b) वुडवर्थ का
 (c) गैंगे का
 (d) पाठ्यक्रम को
22. निम्नलिखित में से कौन-सा सीखने का क्षेत्र है?
 (a) व्यावसायिक (b) आनुभविक
 (c) भावात्मक (d) आध्यात्मिक
23. अभ्यास या अनुभव द्वारा व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है—
 (a) चिन्तन (b) प्रत्यक्षीकरण
 (c) अधिगम (d) सृजन

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | | | |
|--------|--------|--------|--------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (d) | 3. (c) | 5. (d) | 7. (c) | 9. (c) | 11. (a) | 13. (c) | 15. (d) | 17. (a) | 19. (a) | 21. (b) | 23. (c) |
| 2. (d) | 4. (b) | 6. (c) | 8. (b) | 10. (b) | 12. (c) | 14. (d) | 16. (a) | 18. (a) | 20. (c) | 22. (c) | |

4.

अधिगम के नियम—थॉर्नडाइक के सीखने के मुख्य नियम एवं अधिगम में उनका महत्व

थॉर्नडाइक के अधिगम सम्बन्धी नियम

ई. एल. थॉर्नडाइक ने सीखने के कुछ नियम बताए हैं जिनके प्रयोग से अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया को और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है। उन्होंने अधिगम के तीन मुख्य नियम एवं पाँच गौण नियम प्रतिपादित किये हैं—

सीखने के मुख्य नियम—

- (i) तत्परता का नियम
- (ii) अभ्यास का नियम
- (iii) प्रभाव का नियम
- (i) **तत्परता का नियम**—जब हम किसी कार्य को सीखने के लिए तैयार या तत्पर होते हैं तो हमें उस कार्य को सीखने में आनन्द आता है और हम शीघ्र सीख लेते हैं। इसके विपरीत सीखने के लिए तैयार नहीं होने की स्थिति में हमें सीखने की क्रिया से असंतोष मिलता है और प्रायः खीझ या तनाव उत्पन्न होता है।
- (ii) **अभ्यास का नियम** — हिलगोर्ड तथा बोअर ने इस नियम को परिभाषित करते हुए कहा है कि—“अभ्यास का नियम यह बताता है कि अभ्यास करने से उद्दीपक तथा अनुक्रिया का सम्बन्ध मजबूत होता है। उपयोग तथा अभ्यास रोक देने से सम्बन्ध कमजोर पड़ जाता है या पाठ्य वस्तु विस्मृति हो जाती है।” अर्थात् अभ्यास व्यक्ति को कुशल बनाता है।
अभ्यास के दो उप-नियम भी हैं—
(A) **उपयोग का नियम**—यह नियम इस बात पर बल देता है कि मनुष्य जिस कार्य को बार-बार दोहराता है, उसे शीघ्र सीख जाता है।
(B) **अनुपयोग का नियम**—जब हम किसी पाठ या विषय को दोहराना बंद कर देते हैं तो उसे हम धीरे-धीरे भूलते चले जाते हैं। इसे ही अनुपयोग का नियम कहा जाता है।
- (iii) **प्रभाव का नियम**—थॉर्नडाइक के अनुसार जिस कार्य से संतोष होता है उससे उद्दीपन-अनुक्रिया सम्बन्ध दृढ़ होता है और जिस कार्य से असंतोष होता है उससे यह सम्बन्ध कमजोर होता है। अर्थात् व्यक्ति जिस कार्य का परिणाम सुखद होता है उस कार्य को दोहराते हैं और जिस कार्य का परिणाम दुःखद होता है उस कार्य को नहीं दोहराते हैं।

सीखने के सहायक या गौड़ नियम—

- (i) मनोवृत्ति का नियम
- (ii) बहु-अनुक्रिया का नियम
- (iii) आंशिक क्रिया का नियम

(iv) अनुरूपता का नियम

(v) सम्बन्धित परिवर्तन या साहचर्य स्थानान्तरण का नियम

- (i) **मनोवृत्ति का नियम**—जिस कार्य के प्रति हमारी जैसी अभिवृत्ति या मनोवृत्ति रहती है उसी अनुपात में हम उसको सीखते हैं। अनुकूल मनोवृत्ति होने पर बालक शीघ्र सीखता है तथा प्रतिकूल मनोवृत्ति होने पर बालक के सीखने में बाधाएँ आती हैं।
- (ii) **बहु-अनुक्रिया का नियम**—इस नियम के अनुसार व्यक्ति किसी समस्या के प्रति बहुत सी अनुक्रियाएँ करता है, किन्तु सभी अनुक्रियाएँ समस्या समाधान में सहायक नहीं होती हैं। हम उन्हीं अनुक्रियाओं का चयन करते हैं जो लक्ष्य प्राप्ति में सहायक होती हैं।
- (iii) **आंशिक क्रिया का नियम**—थॉर्नडाइक का मानना है कि यदि बच्चों के सामने किसी समस्या को छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर प्रस्तुत किया जाये और एक-एक भाग का समाधान किया जाये तो बच्चे पूरी समस्या को शीघ्रता एवं सुगमता से समझकर सम्पूर्ण कार्य को पूरा कर सकते हैं।
- (iv) **अनुरूपता का नियम**—जब व्यक्ति के सामने कोई नयी समस्या आती है तो वह अपने पूर्व के अनुभवों एवं प्रयत्नों को स्मरण करता है और उनसे तुलना करता है ताकि उसके अनुसार क्रिया कर समस्या का समाधान खोज सके।
- (v) **सम्बन्धित परिवर्तन का नियम**—* इस नियम को साहचर्य रूपान्तरण/साहचर्य परिवर्तन का नियम भी कहते हैं। इसके अनुसार कोई भी अनुक्रिया जिसे करने की क्षमता व्यक्ति में होती है, उसे एक नये उद्दीपन के द्वारा भी उत्पन्न की जा सकती है। इसमें क्रिया का स्वरूप वही रहता है पर परिस्थिति में परिवर्तन हो जाता है।

सीखने के नियमों का शैक्षिक महत्व—

अधिगम प्रक्रिया में सीखने के नियमों का विशेष महत्व है। सीखने की तत्परता, सतत अभ्यास, संतोषप्रद परिणाम से इच्छित फल की प्राप्ति होती है।

सीखने के नियमों का शैक्षिक महत्व निम्न हैं—

1. **उद्देश्यों की स्पष्टता**—शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान का उद्देश्य निश्चित, स्पष्ट एवं जीवनोपयोगी होना चाहिए। बालक सुख देने वाले कार्यों को दुःख देने वाले कार्यों की अपेक्षा शीघ्र सीख लेते हैं। इसलिए उद्देश्य स्पष्ट होना आवश्यक है।
2. **उपयुक्त ज्ञान एवं क्रिया का चयन**—बच्चे की शारीरिक एवं मानसिक क्षमता का मूल्यांकन करने के बाद ही सिखाने वाले को उपयुक्त ज्ञान एवं क्रिया और विधि का चुनाव करना चाहिए। इससे उसे ज्ञान के स्थानान्तरण एवं अभ्यास में सरलता होती है।

3. **अभ्यास जागृत करना**—शिक्षक को विषय अथवा पाठ बार-बार दोहराकर अभ्यास कराना चाहिए और छात्रों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए।
4. **तत्परता जागृत करना**—शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों को सिखाने से पहले तैयार कर ले, ताकि वे ज्ञान को ठीक तरीके से ग्रहण कर सकें।
5. **स्वक्रिया पर बल**—
अधिगमकर्ता को स्वयं हाथों से कार्य को करके सीखना चाहिए। इससे उसका अनुभव मजबूत एवं स्थायी होता है। इससे स्व-निर्भरता का भी विकास होता है।
6. **अनुभव स्थानान्तरण**—शिक्षक को चाहिए कि वे छात्रों को अधिक से अधिक अनुभव एकत्रित करने का अवसर दें। इसके पश्चात् वे छात्रों को अनुभवों की नवीन समस्या या कार्य के सीखने में उपयोगिता बताएं।
7. **प्रेरकों का प्रयोग**—शिक्षक को चाहिए कि वे पठन-पाठन के बीच समय-समय पर पुरस्कार, प्रोत्साहन, प्रशंसा का प्रयोग करते रहें ताकि बच्चे उत्साहपूर्वक सीखने के लिए प्रेरित हो सकें।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जब बालक सीखने के लिए तैयार होता है, तब वह जल्दी व प्रभावशाली तरीके से सीखता है यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है—
(a) थॉर्नडाइक द्वारा (b) स्किनर द्वारा
(c) पावलोव द्वारा (d) कुर्ट लेविन द्वारा
2. थॉर्नडाइक का कौन-सा नियम सीखने में पुरस्कार और दंड के महत्व का बताता है?
(a) तत्परता का नियम (b) प्रभाव का नियम
(c) अभ्यास का नियम (d) उपरोक्त सभी
3. जब अध्यापक एक छात्र को सफलता का अहसास कराता है तो वह उपयोग कर रहा होता है
(a) तत्परता के नियम का (b) अभ्यास के नियम का
(c) प्रभाव के नियम का (d) मानसिक तत्परता के नियम का
4. निम्न में से कौन-सा सीखने के नियम में सम्मिलित नहीं है?
(a) अभ्यास (b) तत्परता
(c) खेल (d) प्रभाव।
5. कौन-सा सीखने का मुख्य नियम नहीं है?
(a) तत्परता का नियम (b) अभ्यास का नियम
(c) आंशिक क्रिया का नियम (d) प्रभाव का नियम
6. थॉर्नडाइक के सीखने के सिद्धांत के प्रमुख नियम हैं—
(a) तत्परता का नियम (b) अभ्यास का नियम
(c) प्रभाव का नियम (d) उपरोक्त सभी
7. अधिगम में ने प्रभाव का नियम दिया था।
(a) पावलोव (b) स्किनर
(c) वाटसन (d) थॉर्नडाइक
8. सीखने के नियम दिए हैं
(a) पावलोव ने (b) स्किनर ने
(c) थॉर्नडाइक ने (d) कोहलर ने
9. सीखने का प्राथमिक मूलभूत नियम सम्बन्धित है
(a) अभ्यास कार्य से (b) परिणाम की अपेक्षा से
(c) प्रशंसा से (d) तत्परता से
10. साहचर्य के नियम हैं
(a) समानता का नियम (b) वैषम्य का नियम
(c) समीपता का नियम (d) ये सभी
11. “एक बच्चा अतीत की समान परिस्थिति में की गई अनुक्रियाओं के आधार पर नई स्थिति के प्रति अनुक्रिया करता है।” यह किससे सम्बन्धित है?
(a) सीखने का ‘प्रभाव-नियम’
(b) सीखने की प्रक्रिया का ‘अभिवृत्ति-नियम’
(c) सीखने का ‘तत्परता-नियम’
(d) सीखने का सादृश्यता-नियम
12. निम्नलिखित में से कौन सा सीखने का नियम नहीं है—
(a) तत्परता का नियम (b) तनाव का नियम
(c) प्रभाव का नियम (d) अभ्यास का नियम
13. “एक बच्चा अतीत की समान परिस्थिति में की गई अनुक्रियाओं के आधार पर नई स्थिति के प्रति अनुक्रिया करता है।” यह किससे सम्बन्धित है?
(a) सीखने का ‘सादृश्यता-नियम’
(b) सीखने का ‘प्रभाव-नियम’
(c) सीखने की प्रक्रिया का ‘अभिवृत्ति-नियम’
(d) सीखने का ‘तत्परता-नियम’
14. निम्न में से कौन-सा सीखने के मुख्य नियमों में शामिल नहीं है?
(a) तत्परता का नियम (b) अभ्यास का नियम
(c) बहु-अनुक्रिया का नियम (d) प्रभाव का नियम
15. अभ्यास के अधिगम पर प्रभाव के एक प्रयोग में अधिगम होगा—
(a) स्वतंत्र चर (b) परतंत्र चर
(c) अन्य चर (d) स्थिर चर
16. ‘सीखने की तत्परता’----- की ओर संकेत करती है।
(a) थॉर्नडाइक का तत्परता का नियम
(b) शिक्षार्थियों का सामान्य योग्यता स्तर
(c) सीखने के सातत्यक में शिक्षार्थियों का वर्तमान संज्ञानात्मक स्तर
(d) सीखने के कार्य की प्रकृति को संतुष्ट करने

उत्तरमाला

- | | | | | | | | |
|--------|--------|--------|--------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (a) | 3. (c) | 5. (c) | 7. (d) | 9. (d) | 11. (d) | 13. (a) | 15. (b) |
| 2. (b) | 4. (c) | 6. (d) | 8. (c) | 10. (d) | 12. (b) | 14. (c) | 16. (c) |

5.

अधिगम के प्रमुख सिद्धान्त व कक्षा शिक्षण में इनकी व्यवहारिक उपयोगिता

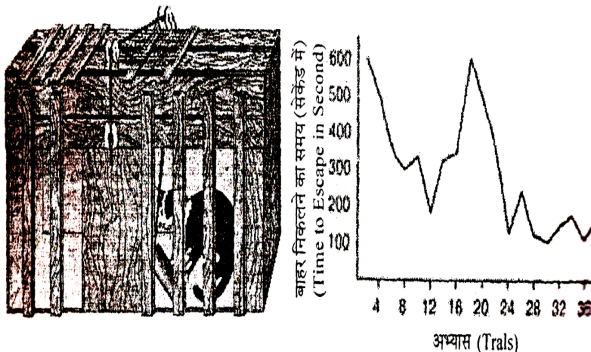
हिलगार्ड ने अपनी पुस्तक में 10 से भी अधिक सीखने के सिद्धान्तों का वर्णन किया है, जिसमें से कुछ प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—

थॉर्नडाइक का सीखने का सिद्धान्त

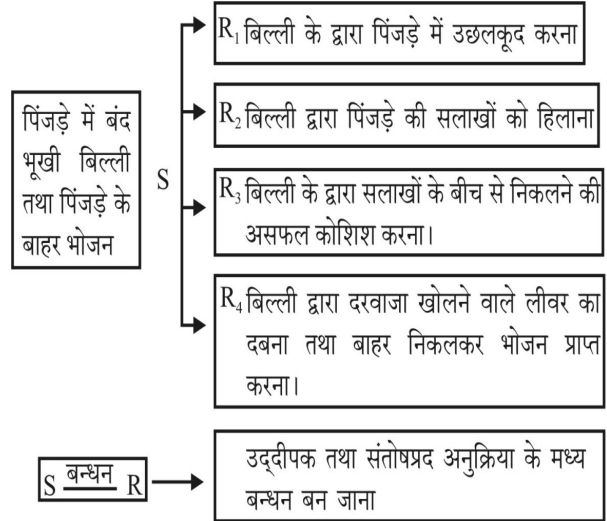
इस सिद्धान्त को *‘प्रयत्न व भूल का सिद्धान्त’ या ‘प्रयास व त्रुटि का सिद्धान्त’ या उद्दीपक-अनुक्रिया सिद्धान्त, सम्बन्धवाद या बन्धन सिद्धान्त भी कहा जाता है। इ.एल. थॉर्नडाइक ने प्रयत्न व भूल के इस सिद्धान्त के बारे में बताते हुए कहा कि, जब व्यक्ति कोई कार्य सीखता है तब उसके सामने एक विशेष स्थिति या उद्दीपक (Stimulus) होता है, जो उसे विशेष प्रकार की प्रतिक्रिया करने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार एक विशिष्ट उद्दीपक का एक विशिष्ट अनुक्रिया (Response) से सम्बन्ध स्थापित हो जाता है तो उसे उद्दीपक-अनुक्रिया सम्बन्ध कहते हैं। यह उद्दीपक-अनुक्रिया सम्बन्ध अधिगमकर्ता द्वारा किये गये प्रतिक्रिया के परिणामों पर निर्भर करता है।

थॉर्नडाइक का प्रयोग—

थॉर्नडाइक अमेरिका के एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक थे। इन्होंने बिल्ली, चूहे, मुर्गी आदि पशु-पक्षियों पर प्रयोग करके यह निष्कर्ष निकाला कि पशु-पक्षी व बच्चे प्रयत्न व भूल द्वारा सीखते हैं। अपने एक प्रयोग में इन्होंने एक भूखी बिल्ली को पिंजड़े में बंद कर दिया और पिंजड़े के बाहर भोज्य सामग्री रख दी। बिल्ली के लिए भोजन उद्दीपक था। उद्दीपक के कारण उसमें प्रतिक्रिया आरम्भ हुई। बिल्ली ने बाहर निकलकर भोजन प्राप्त करने के लिए कई प्रयत्न किये और पिंजड़े के चारों ओर घूमकर कई पंजे मारे और प्रयत्न करते-करते उस लिवर को दबा दिया, जिससे पिंजड़े का दरवाजा खुलता था। दोबारा फिर बंद करने पर बाहर उसे आने के लिए पहले से कम समय में ही सफलता मिल गयी। तीसरे और चौथे प्रयास में और भी कम प्रयत्नों में सफलता मिल गयी और एक परिस्थिति आई, जब एक बार में ही वह दरवाजा खोलकर बाहर आने लगी।



थॉर्नडाइक के प्रयोग का रेखाचित्रात्मक निरूपण



थॉर्नडाइक ने बिल्ली के द्वारा सीखने की इस प्रक्रिया का विश्लेषण किया तथा सीखने के लिए दो बातों को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना—(i) बिल्ली भूखी होनी चाहिए अर्थात् सीखने के लिए अभिप्रेरणा का होना आवश्यक है तथा (ii) बिल्ली की भूख को संतुष्ट करने के लिए भोजन का होना जरूरी है जो पुनर्बलन का कार्य कर सके। दूसरे शब्दों में सीखने के लिए पुनर्बलन केन्द्रीय तत्व है तथा अनुक्रिया का संतोषजनक परिणाम ही उद्दीपक-अनुक्रिया बन्धन को सुदृढ़ कर सकता है।

थॉर्नडाइक के प्रयोग के आधार पर कहा जा सकता है कि बिल्ली द्वारा पिंजरा खोलना सीखने की प्रक्रिया में निम्न सोपान आते हैं—

- चालक (Drive)**— इस प्रयोग में भूख ने चालक का कार्य किया जिसे पिंजरे के बाहर रखे भोजन ने अधिक सक्रिय किया।
- लक्ष्य**— पिंजरे से बाहर आकर भोजन प्राप्त करना ही बिल्ली का लक्ष्य था।
- अवरोध**— पिंजरे में बंद करके रखना ही बिल्ली के लक्ष्य की प्राप्ति में अवरोध था।
- अनियमित क्रियाएँ**— पिंजरा खोलने का तरीका जाने बिना बिल्ली ने अनियमित क्रियाएँ करके बाहर आने का प्रयास किया।
- संयोगवश सफलता**— लगातार किये गये तरह-तरह के प्रयासों के दौरान संयोगवश बिल्ली पिंजरे का दरवाजा खोलने में सफल हो गयी।
- सही अनुक्रिया का चयन**— धीरे-धीरे बिल्ली ने खटके को दबाने के सही ढंग को पहचान लिया।

(vii) **दृढ़ीकरण**— अंत में बिल्ली ने गलत अनुक्रियाओं का त्याग करते हुए खटके को दबाकर खोलने के ढंग को सीख लिया एवं केवल सही अनुक्रिया को सुदृढ़ किया।

इसी प्रकार **मैक्डगल** ने भी कई प्रयोग किये और इन्होंने भी यही निष्कर्ष निकाला कि पशु या मनुष्य जितनी बार प्रयत्न करता है, उतनी ही उसकी भूलें कम होती जाती हैं और वह सफल क्रिया करना सीख लेता है।

प्रयास व त्रुटि के सिद्धान्त का शिक्षा में महत्व-

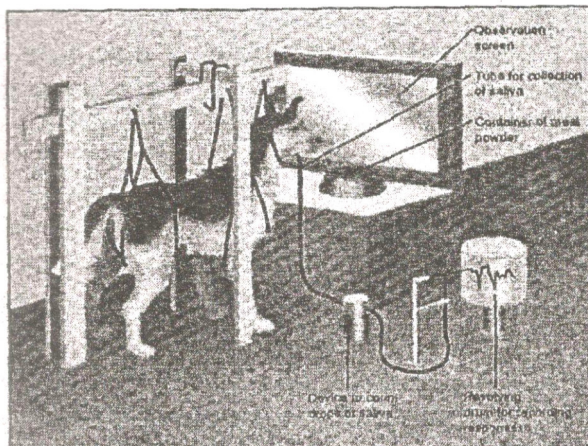
- इस विधि से अनुभव से लाभ उठाने की क्षमता का विकास होता है।
- भाषा में शुद्ध उच्चारण बालक इस विधि से सीख सकता है।
- यह सिद्धान्त करके सीखने पर बल देता है, जो कि आधुनिक समय में बहुत उपयोगी है।
- यह सिद्धान्त बड़े व मंद बुद्धि बालकों के लिए बहुत उपयोगी है।
- इस विधि से सीखने सिखाने की क्रिया सरल हो जाती है।
- इस सिद्धान्त से परिश्रम व धैर्य के गुणों का विकास होता है।
- साइकिल चलाना गणित के प्रश्न हल करना, कलाकृतियाँ बनाना आदि सभी में इस सिद्धान्त का विशेष महत्व है।

प्रयास व त्रुटि सिद्धान्त के मुख्य बिन्दु

- अधिगम में प्रयास व त्रुटि समाहित रहती है।
- अधिगम सम्बन्धों या बन्धनों के बनने का परिणाम है।
- अधिगम सूझ या अंतर्दृष्टि से नहीं होता है।
- अधिगम संज्ञान पर आधारित न होकर प्रत्यक्ष होता है।
- अधिगम में पुनर्बलन केन्द्रिय तत्व है।

पॉवलव का सम्बद्ध प्रतिक्रिया सिद्धान्त

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन इवान पी. पॉवलन ने किया था। इस सिद्धान्त को 'क्लासिकल अनुबंधन सिद्धान्त', अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धान्त या अनुबंधित अनुक्रिया सिद्धान्त भी कहते हैं। इन्होंने सबसे पहले उद्दीपन और अनुक्रिया के सम्बन्ध को अनुबंध द्वारा व्यक्त किया।



पावलव के प्रयोग का रेखाचित्रीय निरूपण

पॉवलव का प्रयोग-

पॉवलव रूस के शरीरशास्त्री थे। इन्होंने अपना प्रयोग कुत्ते पर किया। कुत्ते को एक निश्चित समय पर भोजन दिया जाता था, जिसे देखते ही उसके मुँह से लार टपकने लगता था। कुछ दिनों बाद भोजन देने से पहले घण्टी बजायी जाने लगी। इन्होंने स्वभाविक उद्दीपक (भोजन) को कृत्रिम उद्दीपक (घण्टी की आवाज) के साथ जोड़ दिया, जिसके फलस्वरूप कुत्ता घंटी बजते ही लार टपकाने लगता था। कुछ दिनों बाद उन्होंने घंटी तो बजायी किन्तु भोजन नहीं दिया इसके बावजूद कुत्ते ने लार टपकायी। इस प्रकार कृत्रिम उद्दीपक (घंटी की आवाज) और स्वभाविक अनुक्रिया (लार) के मध्य सम्बन्ध स्थापित हो गया, जिसे उन्होंने सम्बद्ध प्रतिक्रिया कहा।

स्वभाविक उद्दीपक (UCS) (भोजन)	-	स्वभाविक अनुक्रिया (UCR) (लार)
कृत्रिम उद्दीपक + स्वभाविक उद्दीपक (घंटी की आवाज) + (भोजन)	-	स्वभाविक अनुक्रिया (लार)
कृत्रिम उद्दीपक (घंटी की आवाज) या अनुबंधित उद्दीपक (C.S.)	-	स्वभाविक अनुक्रिया (लार) या अनुबंधित अनुक्रिया (C.R.)

UCS	→	Unconditioned Stimulus
UCR	→	Unconditioned Response
CS	→	Conditioned Stimulus
CR	→	Conditioned Response

सम्बन्ध प्रतिक्रिया सिद्धान्त का शिक्षा में महत्व-

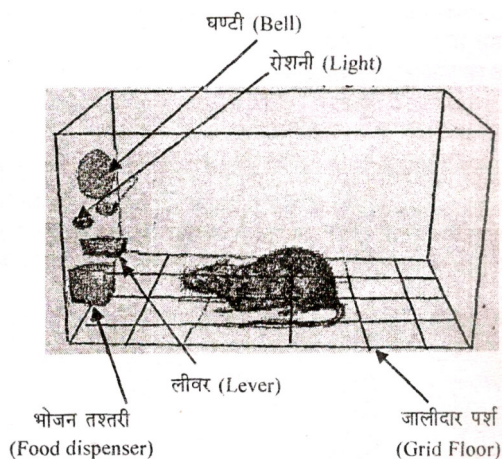
- इससे अच्छे आचरण व अनुशासन की भावना का विकास किया जा सकता है।
- यह सीखने की स्वभाविक विधि है।
- इसकी सहायता से बुरी आदतों और भय सम्बन्धी रोगों का उपचार कर सकते हैं।
- अनुकूल कार्य करवाने में इस सिद्धान्त का प्रयोग करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, *इस सिद्धान्त का प्रयोग करके व्यवहार को अनुकूलित किया जा सकता है।
- यह सिद्धान्त बालकों के सामाजीकरण करने व वातावरण से सामंजस्य स्थापित करवाने में सहायक है।
- यह सिद्धान्त उन विषयों की शिक्षा में उपयोगी है, जिनमें चिंतन की आवश्यकता नहीं होती है, जैसे सुलेख, अक्षर विन्यास आदि।

अनुबंधित अनुक्रिया के अंग

- उत्तेजना
- विलोपन
- स्वतः पुनर्लाभ
- उद्दीपक सामान्यीकरण
- उद्दीपक विभेदन
- वाह्य अवरोध
- कालिक क्रम
- द्वितीय कोटि अनुबंधन
- पुनर्बलन

स्किनर का क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त

- सीखने के क्रिया प्रसूत अनुबंध सिद्धान्त के प्रवर्तक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक बी. एफ. स्किनर थे। स्किनर ने अधिगम के क्षेत्र में अनेक प्रयोग करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि व्यवहार की पुनरावृत्ति तथा परिमार्जन उसके परिणामों के द्वारा निर्देशित होता है। व्यक्ति व्यवहार का संचालन करता है, जबकि इसको बनाये रखना इसे प्राप्त परिणामों पर निर्भर करता है। स्किनर के द्वारा इस प्रकार के व्यवहार को क्रियाप्रसूत व्यवहार एवं इस प्रकार के व्यवहार को सीखने की प्रक्रिया को क्रियाप्रसूत अनुबंधन के नाम से सम्बोधित किया गया। प्रयोज्य की अनुक्रियाओं का पुनर्बलन के लिए अनुबंधन का एक निमित्त (Instrumental) होने के कारण ***इस सिद्धान्त को नैमित्तिक या यांत्रिक या साधनात्मक अनुबंधन सिद्धान्त (Instrumental Conditioning Theory) के नाम से भी संबोधित किया जाता है।**



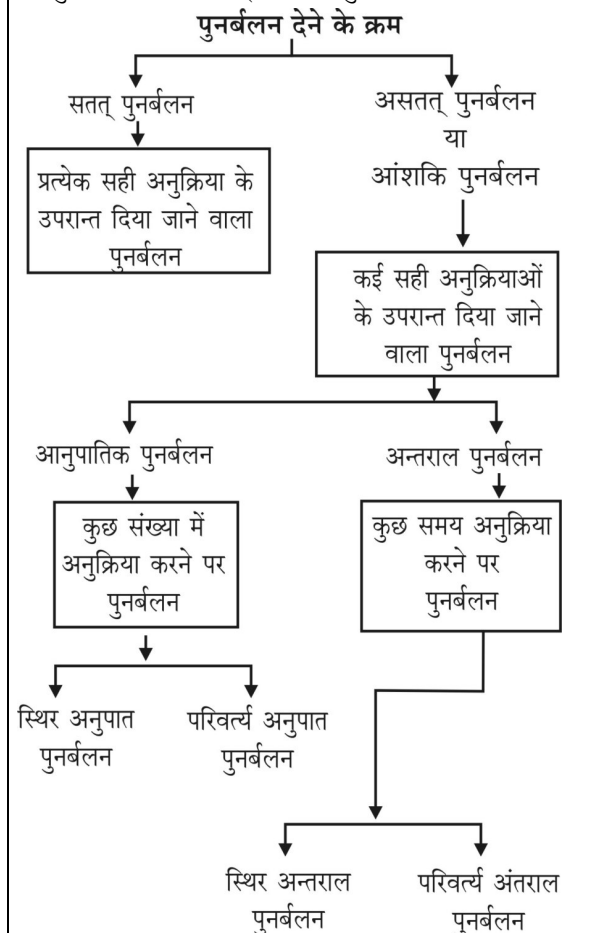
स्किनर बाक्स

स्किनर का प्रयोग-

- स्किनर ने 'स्किनर बाक्स' में एक भूखे चूहे को बंद कर दिया। कुछ देर उछलने-कूदने के बाद चूहे के पैर से लीवर दब गया जिससे घंटी की आवाज के साथ भोजन तश्तरी में भोजन का टुकड़ा गिर गया। भोजन देखकर चूहा उसे खा लेता है। इस प्रकार के कुछ प्रयासों के बाद चूहा लीवर दबाकर तश्तरी में भोजन गिराना सीख लेता है।
- इसी प्रकार इन्होंने कबूतर पर भी कई प्रयोग किया और निष्कर्ष निकाला कि अनुक्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं—(i) प्रतिवादित व्यवहार या अनुक्रिया, (ii) क्रिया प्रसूत व्यवहार या अनुक्रिया।
- प्रतिवादित व्यवहार को उद्दीपन प्रसूत व्यवहार भी कहते हैं तथा इस प्रकार के अनुक्रिया ज्ञात उद्दीपकों के नियंत्रण में रहते हैं तथा इनकी प्रकृति अनैच्छिक होती है जैसे—प्रकाश पड़ने पर आँखों का झपकना, भोजन देखकर मुँह में लार आना, पिन चुभने पर दर्द होना आदि।

- क्रिया प्रसूत व्यवहार उद्दीपकों के नियंत्रण में नहीं रहती है। वस्तुतः क्रियाप्रसूत व्यवहार का कारण महत्वपूर्ण नहीं होता है वरन् प्राणी के व्यवहार का परिणाम महत्वपूर्ण होता है।

पुनर्बलन—पुनर्बलन से तात्पर्य किसी अपेक्षित अनुक्रिया के प्रतिफल के रूप में किसी ऐसे सुखकारी उद्दीपक की प्रस्तुति है जो प्राणी को अपेक्षित अनुक्रिया बार-बार करने के लिए प्रेरित करता है। पुनर्बलन देने वाले उद्दीपक को पुनर्बलक कहते हैं।



पुनर्बलक—पुनर्बलक वह उद्दीपक है जिसकी प्रस्तुति अथवा विलगता से अनुक्रिया के दोहराये जाने की प्रायिकता बढ़ जाती है।

धनात्मक पुनर्बलक—धनात्मक पुनर्बलक की प्रस्तुति में अनुक्रिया के दोहराये जाने की प्रायिकता बढ़ जाती है जैसे—भोजन, पानी, प्रशंसा आदि।

ऋणात्मक पुनर्बलक—ऋणात्मक पुनर्बलक के हटाये जाने पर अनुक्रिया के दोहराये जाने की प्रायिकता बढ़ जाती है जैसे—तेज शोर, विद्युताघात, निन्दा आदि।

➤ स्किनर के क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त में पुनर्बलन का विशेष महत्व है।

➤ स्किनर ने 'दण्ड' को पुनर्बलक की श्रेणी में नहीं माना है।

क्रिया प्रसूत अनुबंधन का शिक्षा में महत्व-

- इसका प्रयोग बालकों के शब्द भण्डार में वृद्धि के लिए किया जाता है।

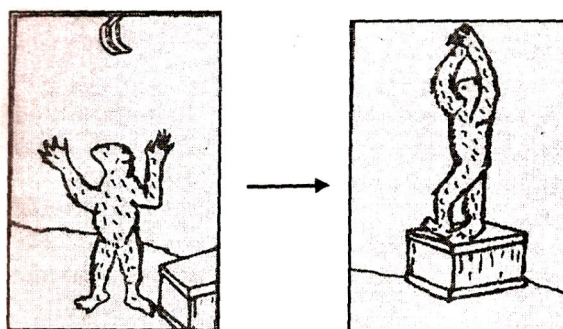
- यह सिद्धान्त जटिल व्यवहार वाले तथा मानसिक रोगियों को वांछित व्यवहार के सीखने में विशेष रूप से सहायक होता है।
- यह सिद्धान्त अच्छे कार्य अथवा अर्जित सफलता अथवा वांछनीय व्यवहार के लिए तत्काल पुनर्बलन पर बल देता है।
- इस सिद्धान्त के द्वारा माता-पिता व अध्यापकों के द्वारा बालकों में अच्छी आदतों का निर्माण किया जा सकता है।
- अभिक्रमित अधिगम का प्रतिपादन तथा शिक्षण मशीन का विकास इस सिद्धान्त के व्यावहारिक उपयोग का ही परिणाम है।
- यह सिद्धान्त किये गये कार्य के परिणाम की जानकारी यथाशीघ्र देने पर बल देता है।
- गणित में पहाड़े, भाषा में वर्तनी, विलोम, मुहावरे आदि याद करते समय इस सिद्धान्त का प्रयोग किया जा सकता है।

अधिगम के सिद्धान्त एवं प्रतिपादक		
1. उद्दीपक-अनुक्रिया सिद्धान्त	—	इ. एल. थॉर्नडाइक
2. क्लासिकल अनुबंधन सिद्धान्त	—	इवान पी0 पॉव्लव
3. क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त	—	बी0 एफ0 स्किनर
4. सीखने का प्रबलन सिद्धान्त	—	क्लॉर्क एल0 हल
5. समीपता अनुबंधन सिद्धान्त	—	एडविन रे गुथरी
6. अंतर्दृष्टि अधिगम सिद्धान्त	—	वोल्फगैंग कोहलर
7. चिन्ह अधिगम सिद्धान्त	—	एडवर्ड चैस टालमैन
8. अधिगम का क्षेत्र सिद्धान्त	—	कुर्ट लेविन
9. सामाजिक अधिगम सिद्धान्त	—	अल्बर्ट बण्डूरा
10. मानवतावादी अधिगम सिद्धान्त	—	अब्राहम मैस्लो
11. सूचना प्रक्रिया अधिगम सिद्धान्त	—	कार्ल रोजर्स
12. संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धान्त	—	जीरोम ब्रुनर
13. आधुनिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त	—	डेविड आसूबेल
14. अनुकरण अधिगम सिद्धान्त	—	मिलर डोलाड
15. निर्माणिक अधिगम सिद्धान्त	—	सिमोर पेपर्ट

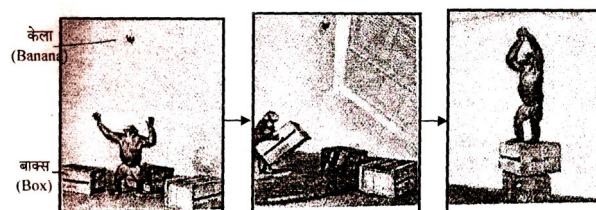
कोहलर का सूझ या आंतर्दृष्टि का सिद्धान्त

सीखने के इस सिद्धान्त को गेस्टाल्ट सिद्धान्त या समग्र सिद्धान्त के नाम से भी जाना जाता है। इस सिद्धान्त के प्रतिपादकों में जर्मनी के चार प्रमुख मनोवैज्ञानिक— मैक्स वर्दाइमर, वोल्फगैंग कोहलर, कुर्ट कोफ्का तथा कुर्ट लेविन प्रमुख थे। इस सिद्धान्त के अनुसार सीखने का केन्द्रिय बिन्दु सूझ होता है। सूझ द्वारा सीखने से तात्पर्य परिस्थिति को पूर्णतया समझकर सीखना है। यह सूझ प्रायः अचानक (अकस्मात्) तथा स्वतः स्फूर्त ढंग से आती है इसके लिए अभ्यास की आवश्यकता नहीं होती है।

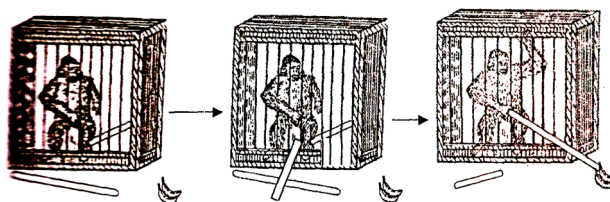
गुड के अनुसार—“सूझ वास्तविक स्थिति का आकस्मिक और तत्कालिक ज्ञान है।



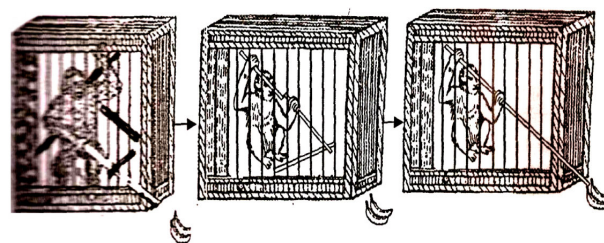
प्रयोग नं.-1



प्रयोग नं.-2



प्रयोग नं.-3



प्रयोग नं.-4

कोहलर का प्रयोग—

कोहलर ने सुल्तान नामक चिंपांजी पर अपना प्रयोग किया। पहले प्रयोग में कोहलर ने सुल्तान को एक पिंजरे में बंद कर दिया जिसकी छत पर केला लटका था और कमरे में एक बॉक्स रखा था। कुछ देर उछल-कूद करने के बाद वह बॉक्स पर चढ़कर केला प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार कई अन्य प्रयोग करके कोहलर ने यह निष्कर्ष निकाला कि समस्या के आने पर व्यक्ति को अपनी मानसिक शक्ति द्वारा पूर्ण परिस्थिति का बोध हो जाता है और सूझ द्वारा अचानक उसका हल निकल आता है।

सूझ की विशेषताएँ-

- *सीखने की प्रकृति संज्ञानात्मक होती है।
- सूझ अचानक पैदा होती है।
- सीखने की प्रकृति लगभग स्थायी होती है।
- सूझ के लिए समस्यात्मक परिस्थिति का होना अनिवार्य है।
- सीखने की प्रक्रिया यंत्रवत नहीं होती है।
- सीखने की प्रक्रिया में सूझ स्वतः स्फूर्त होती है।
- सूझ प्राणी के लक्ष्य और समाधान के बीच एक स्पष्ट सम्बन्ध की सूचक होती है।
- सूझ में समस्या का समाधान स्वतः मानसिक चिंतन करने से मिल जाता है।

सूझ या अंतर्दृष्टि का शिक्षा में महत्व-

- यह सिद्धान्त रचनात्मक कार्यों के लिए उपयोगी है।
- इस सिद्धान्त से तर्क, कल्पना व चिंतन शक्ति का विकास होता है।
- विज्ञान, गणित जैसे विषयों के शिक्षण में यह बहुत उपयोगी है।
- साहित्य, संगीत कला आदि की शिक्षा के लिए बहुत उपयोगी है।
- यह सिद्धान्त बालकों को स्वयं खोज करके ज्ञान अर्जित करने के लिए प्रेरित करता है।
- विद्यालय में बालक के समस्या समाधान पर आधारित अधिकांश सीखने में यह विधि उपयोगी है।

पियाजे का सिद्धान्त

स्विस मनोवैज्ञानिक पियाजे के अनुसार, जैसे-जैसे बच्चे की आयु बढ़ती है, उसका कार्य क्षेत्र बढ़ता जाता है। वैसे-वैसे उसकी बुद्धि का विकास भी होता जाता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि पहले बच्चा सरल प्रत्ययों के माध्यम से सीखता है। परन्तु जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है। कठिन से कठिनतम प्रत्ययों को ग्रहण करने लगता है। इसके लिए उपयुक्त वातावरण की आवश्यकता होती है।

इन्होंने कहा, सीखना कोई यांत्रिक क्रिया नहीं है बल्कि एक बौद्धिक प्रक्रिया है, एक सम्प्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया है। और यह सम्प्रत्यय निर्माण बालक की आयु के अनुसार होता है।

पियाजे ने अपने सिद्धान्त में निम्नलिखित पदों पर बल दिया-

1. **संगठन (Organization)**-संगठन से तात्पर्य प्राप्त नवीन सूचनाओं को बौद्धिक संरचनाओं में व्यवस्थित करने से होता है।
2. **संज्ञानात्मक या बौद्धिक संरचना (Cognitive Structure)**-बच्चे के मानसिक संगठन या क्षमताओं को बौद्धिक संरचना कहते हैं।
3. **अनुकूलन (Adaptation)** - अनुकूलन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने पूर्व ज्ञान तथा नवीन अनुभवों के मध्य संतुलन स्थापित करता है।
4. **आत्मसात्करण (Assimilation)** - आत्मसात्करण से तात्पर्य नवीन अनुभवों को पूर्ववर्ती विद्यमान बौद्धिक संरचनाओं में यथावत् व्यवस्थित करने से है।

5. **समाविष्टीकरण (Accommodation)** - समाविष्टीकरण से तात्पर्य नवीन अनुभवों की दृष्टि से पूर्ववर्ती बौद्धिक संरचनाओं में सुधार करने, विस्तार करने या परिवर्तन करने से है।
6. **साम्यधारण (Equilibration)** - साम्यधारण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक आत्मसात्करण तथा समायोजन की प्रक्रियाओं के बीच एक संतुलन कायम करता है।
7. **मानसिक क्रिया (Mental Operation)**-जब व्यक्ति किसी कार्य को करने के लिए चिंतन करता है तो उसे मानसिक क्रिया कहते हैं।
8. **स्कीमा (Schema)** - स्कीमा एक प्रकार का सूचनाओं या अनुभवों का ढाँचा होता है। व्यक्ति किसी वस्तु या विचार के प्रति इसी ढाँचे के अनुसार प्रतिक्रिया करता है।
9. **स्कीम्स (Schemes)** - किसी काम को करने के लिए हमारे पास विभिन्न प्रकार के तथ्य होते हैं, उसे स्कीम्स कहते हैं।
10. **संरक्षण (Conservation)**- किसी वस्तु के रूप-रंग में परिवर्तन को उस वस्तु के तत्व में परिवर्तन से अलग करने की क्षमता को संरक्षण कहते हैं। यह मूर्त संक्रियात्मक अवस्था की मुख्य विशेषता है।
11. **पलटावी या विचारों की विलोमीयता (Reversibility)**-पलटावी से तात्पर्य मानसिक क्रम के प्रारम्भिक बिन्दु पर पुनः लौट पाने की समर्थता से है। यह मूर्त संक्रियात्मक अवस्था की विशेषता है।
12. **विकेन्द्रीकरण (Decentering)**-किसी वस्तु की एक ही विशेषता के बारे में न सोचकर उसके अलग-अलग पहलुओं के बारे में सोचना विकेन्द्रीकरण कहलाता है। यह औपचारिक संक्रिया अवस्था की मुख्य विशेषता है।

पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास की चार अवस्थाएँ बतायी-

- (i) संवेदी पेशीय अवस्था
- (ii) प्राक् संक्रियात्मक अवस्था
- (iii) मूर्त संक्रिया की अवस्था
- (iv) औपचारिक संक्रिया की अवस्था

नोट-इन सभी का वर्णन 'विभिन्न अवस्थाओं में संज्ञानात्मक विकास' में दिया गया है।

पियाजे के सीखने के सिद्धान्त की विशेषताएँ-

- सीखना एक क्रमिक एवं आरोही प्रक्रिया है।
- पियाजे के अनुसार बच्चों में चिंतन एवं खोज करने की शक्ति उसकी जैविक परिपक्वता, अनुभव एवं इन दोनों के अंतर्क्रिया पर निर्भर करता है।
- बालक के अमूर्त चिंतन पर उसकी शिक्षा का प्रभाव पड़ता है। निम्न स्तर पर अमूर्त चिंतन कम व उच्च शिक्षा स्तर पर अधिक होता है।
- पियाजे के अनुसार सीखने का पर्यावरण और क्रिया मूल आवश्यकताएँ हैं।

पियाजे के सिद्धान्त का शिक्षा में उपयोग-

- यह सिद्धान्त बालकों द्वारा स्वक्रिया पर बल देता है।
- सीखने में प्रगति न करने वालों को दण्ड नहीं देना चाहिए।

- इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षक को खेल व अनुकरण द्वारा सिखाना चाहिए।
- इस सिद्धान्त के अनुसार विभिन्न आयु वर्ग के लिए विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम का निर्माण करना चाहिए।

वाइगोत्सकी का सिद्धान्त

वाइगोत्सकी ने संज्ञानात्मक विकास में सामाजिक अंतर्क्रिया पर अधिक बल दिया और कहा कि समुदाय का सीखने में बहुत महत्व है। इनके अनुसार सामाजिक अधिगम की प्रक्रिया विकास के पहले ही आरम्भ हो जाती है।

- वाइगोत्सकी के अनुसार बालक जिस आयु में भी कोई संज्ञानात्मक कौशल सीखता है, उसका अधिगम इस बात पर निर्भर करता है कि उसकी संस्कृति में वह कौशल कितना स्वीकार्य है। उनके मतानुसार संज्ञानात्मक विकास एक अंतर्व्यक्तिक सामाजिक परिस्थिति में सम्पन्न होता है।
- **सम्भावित विकास का क्षेत्र (ZPD)**—बालक द्वारा बिना सहायता के किये जाने वाले कार्य और कुशल व्यक्ति की सहायता से किये जाने वाले कार्य के मध्य के अन्तर को सम्भावित विकास का क्षेत्र (Zone of Proximal Development) कहा गया।
- **ढाँचा निर्माण (Scaffolding)**—ढाँचा निर्माण विकास के सम्भावित क्षेत्रों से सम्बन्धित प्रत्यय है। वाइगोत्सकी के अनुसार संवाद ढाँचा निर्माण का महत्वपूर्ण औजार है। बच्चों के पास अव्यवस्थित तथा असंगठित सम्प्रत्यय होते हैं जबकि कुशल व्यक्ति के पास संगठित तथा व्यवस्थित सम्प्रत्यय होते हैं। इन दोनों के मध्य संवाद के परिणामस्वरूप बच्चे के विचार भी क्रमबद्ध तथा संगठित हो जाते हैं, यही ढाँचा निर्माण कहलाता है।
- **भाषा और विचार**—वाइगोत्सकी के अनुसार बच्चे भाषा का प्रयोग न केवल सामाजिक सम्प्रेषण अपितु स्व-निर्देशित तरीके से कार्य करने के लिए, अपने व्यवहार हेतु योजना बनाने, निर्देश देने व मूल्यांकन करने में भी करते हैं। इसे निज भाषा या आंतरिक भाषा कहा जाता है।

वाइगोत्सकी के सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएँ-

- संस्कृति संज्ञानात्मक विकास को दिशा देती है।
- संज्ञानात्मक विकास में सामाजिक कारक का बहुत महत्व है।
- सीखने में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है।
- ज्ञान सामाजिक सन्दर्भ में होता है।
- बच्चे ज्ञान का सृजन करते हैं।
- संज्ञानात्मक विकास में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है।

वाइगोत्सकी के सिद्धान्त का शिक्षा में महत्व-

- निजी भाषा के विकास के लिए उपयुक्त वातावरण व सहयोग उपलब्ध कराना चाहिए।
- संवाद और चर्चा का उपयोग करते हुए बालक को समस्या समाधान के लिए मौखिक संकेतों और संरचनाओं का उपयोग करते हुए मदद प्रदान करना चाहिए।
- पारस्परिक शिक्षण को बढ़ावा देना चाहिए।
- सहयोगी अधिगम के लिए छात्रों को प्रेरित करना चाहिए।

सीखने के वक्र

सीखने के वक्र का अर्थ एवं परिभाषा-

सीखने की मात्रा तथा समय अथवा अभ्यास के परस्पर सम्बन्ध को चित्रांकित करने पर जो वक्र रेखा प्राप्त होती है उसे अधिगम वक्र रेखा कहा जाता है। दूसरे शब्दों में सीखने का वक्र सीखने में होने वाली उन्नति या अवनति को व्यक्त करता है। अधिगम वक्र से समय के साथ सीखने में होने वाली सफलता का ज्ञान होता है।

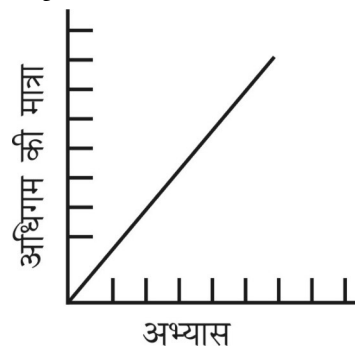
➤ **गेट्स व अन्य के अनुसार—**“सीखने के वक्र अभ्यास द्वारा सीखने की मात्रा, गति और उन्नति की सीमा का ग्राफ पर प्रदर्शन करते हैं।”

सीखने के वक्र के प्रकार-

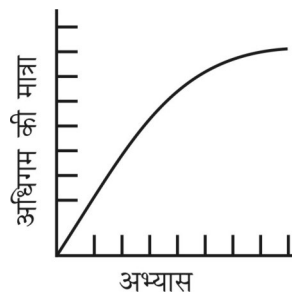
अधिगम वक्र मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं—

- (i) सरल रेखीय वक्र (Straight line Curve)
- (ii) उन्नतोदर वक्र (Convex Curve)
- (iii) नतोदर वक्र (Concave Curve)
- (iv) मिश्रित वक्र (Combination type Curve)

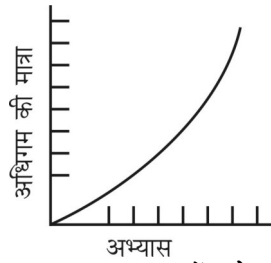
(i) **सरल रेखीय वक्र**—इसे समान निष्पादन वक्र अथवा रेखीय त्वरण वक्र भी कहते हैं। जब समय के साथ-साथ अधिगम की मात्रा में समान रूप से वृद्धि होती है तब सरल रेखीय वक्र प्राप्त होता है।



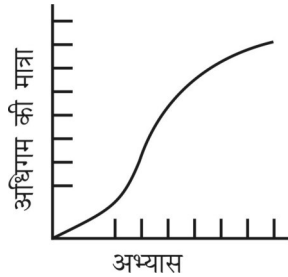
(ii) **उन्नतोदर वक्र**—इस वक्र में समय अथवा प्रयासों के साथ अधिगम की मात्रा धीरे-धीरे कम होने लगती है तथा अन्त में वक्र एक क्षैतिज रेखा अथवा पठार के रूप में हो जाता है, जो इंगित करता है कि अब अभ्यास करने पर भी सीखने की मात्रा में कोई उन्नति करना सम्भव नहीं है। इसे नकारात्मक गति वक्र भी कहा जाता है।



(iii) **नतोदर वक्र**—नतोदर वक्र में समय अथवा प्रयासों के साथ अधिगम की मात्रा में अधिक वृद्धि हो जाती है। इसे सकारात्मक गति वक्र भी कहा जाता है।



(iv) **मिश्रित प्रकार का वक्र**—वास्तव में नतोदर तथा उन्नतोदर वक्र का मिला-जुला रूप मिश्रित प्रकार का वक्र में होता है। इसे S प्रकार का वक्र भी कहते हैं।

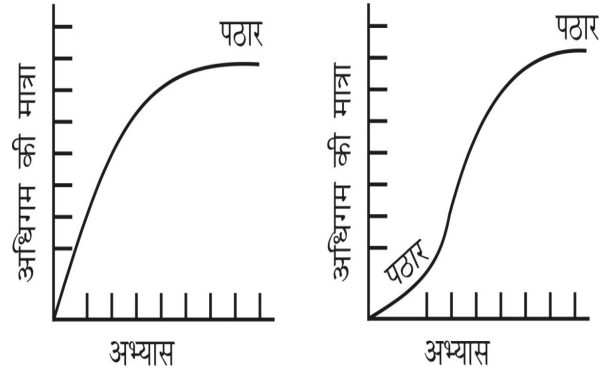


सीखने के वक्र की विशेषताएँ-

1. **सीखने में उन्नति**—सीखने के वक्र को हम मोटे तौर पर तीन अवस्थाओं में बाँट सकते हैं—प्रारम्भिक, मध्य व अन्तिम। सीखने की गति समान नहीं होती, अन्तिम अवस्था की तुलना में प्रारम्भिक अवस्था में उन्नति बहुत तीव्र होती है।
2. **प्रारम्भिक अवस्था**—प्रारम्भिक अवस्था में सीखने की गति में तीव्रता होती है, परन्तु यह सार्वभौम विशेषता नहीं है।
3. **मध्य अवस्था**—जैसे-जैसे व्यक्ति अभ्यास करता जाता है, वैसे-वैसे वे सीखने में उन्नति करता जाता है। परन्तु उन्नति का रूप स्थायी नहीं होता, कभी-कभी उन्नति तीव्र होती है कभी कम।
4. **अन्तिम अवस्था**—जैसे-जैसे सीखने की अन्तिम अवस्था आती है वैसे-वैसे सीखने की गति धीमी पड़ जाती है और एक अवस्था ऐसी आती है, जब व्यक्ति सीखने की सीमा पर पहुँच जाता है।
5. सीखने की गति अनेक बातों पर निर्भर करती है जैसे सीखने वाले की रुचि, प्रेरणा, जिज्ञासा, उत्साह, कार्य की सरलता या जटिलता आदि।
6. सीखने के वक्र में चार भाग होते हैं—प्रारम्भिक स्फुरण, मध्य स्फुरण, पठार, तथा अन्तिम स्फुरण एवं शारीरिक सीमा।

सीखने में पठार

अधिगम वक्रों में कभी कभी देखा जाता है कि अधिगम वक्र का कुछ भाग अत्यन्त कम उन्नति को प्रदर्शित करता है। नगण्य उन्नति को प्रदर्शित करने वाले इस प्रकार के भाग अधिगम के पठार कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में सीखने के दौरान जब कुछ प्रयासों के बाद अधिगम की मात्रा स्थिर हो जाती है, चाहे अभ्यास कितना भी बढ़ाया जाय तो इसे ही सीखने में पठार कहते हैं। इसका चित्र इस प्रकार होगा—



सीखने में पठार के कारण-

- प्रेरणा का अभाव
- रुचि में कमी
- शारीरिक सीमा
- सीखने की अनुचित विधियाँ
- कार्य की गहनता
- पुरानी आदतों व नयी सीखी आदतों में संघर्ष
- प्राप्त ज्ञान को स्थायी बनाने के लिए
- अन्य कारण जैसे—थकान, निराशा, उदासीनता, जिज्ञासा व उत्साह में कमी, अस्वस्थता, वातावरणीय व्यवधान व पारिवारिक कठिनाइयाँ आदि।

पठार को दूर करने के उपाय

शिक्षक को पठार को दूर करने के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिए—

- सीखने वाले को प्रेरणा देना।
- नवीन प्रणालियों का प्रयोग।
- कार्य के बीच-बीच में विश्राम देना।
- सीखने की उचित विधियों का प्रयोग।
- बच्चों के व्यक्तिगत भेदों पर ध्यान देकर उनकी क्षमता के अनुसार सीखने की सुविधा प्रदान करना।
- बच्चों का उत्साहवर्द्धन करना।
- उपयुक्त वातावरण का निर्माण करना।

सीखने का स्थानान्तरण

अधिगम स्थानान्तरण का अर्थ एवं परिभाषाएँ-

जब कोई एक सीखा हुआ कार्य दूसरे सीखने के कार्य को प्रभावित करता है, तो उसे सीखने का स्थानान्तरण कहते हैं।

- **बी. जे. अण्डरबुड के अनुसार**—“वर्तमान क्रियाओं पर पूर्व अनुभवों का प्रभाव ही अधिगम स्थानान्तरण है।”
- **क्रो एवं क्रो के अनुसार**—“जब शिक्षण के एक क्षेत्र में प्राप्त विचार, अनुभव के कार्य की आदत, ज्ञान निपुणता को दूसरी परिस्थिति में प्रयोग किया जाता है, तो वह शिक्षण का स्थानान्तरण कहलाता है।”

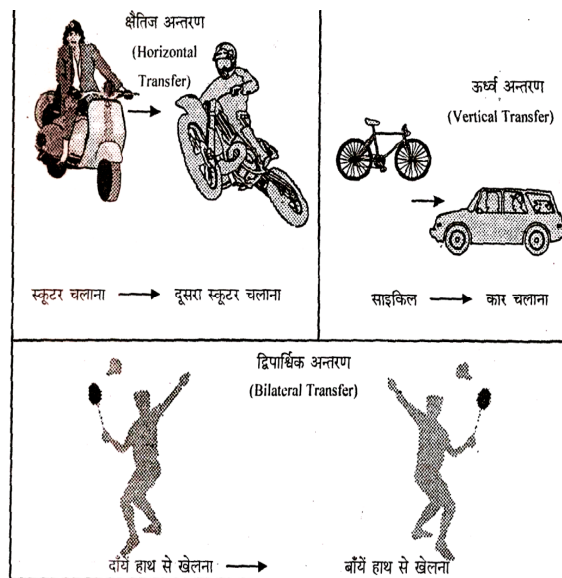
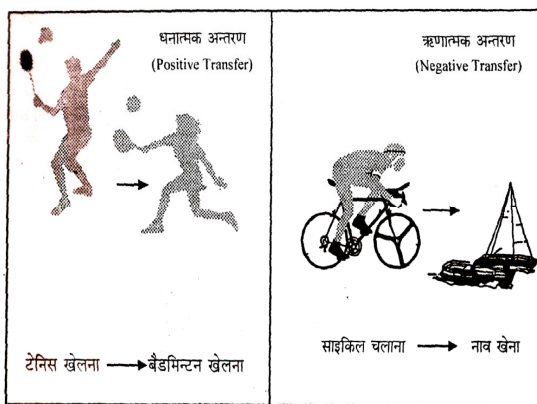
- ई. आर. हिलगोर्ड के अनुसार—“अधिगम स्थानान्तरण में एक क्रिया का प्रभाव दूसरी क्रिया पर पड़ता है।”

अधिगम स्थानान्तरण के प्रकार-

अधिगम स्थानान्तरण मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं-

- सकारात्मक या धनात्मक स्थानान्तरण**—जब पूर्व ज्ञान, अनुभव या प्रशिक्षण नये प्रकार के कार्य को सीखने में सहायता देता है तो उसे सकारात्मक स्थानान्तरण कहते हैं जैसे—स्कूटर चलाने वाले व्यक्ति को मोटरबाइक चलाने में कोई कठिनाई नहीं होती है।
- नकारात्मक या ऋणात्मक स्थानान्तरण**—जब पूर्व ज्ञान, अनुभव या प्रशिक्षण नये प्रकार के कार्य को सीखने में कठिनाई उत्पन्न करते हैं, तो उसे नकारात्मक स्थानान्तरण कहते हैं जैसे—साइकिल के मेकेनिक को स्कूटर ठीक करने में कठिनाई होती है।
- शून्य स्थानान्तरण**—जब किसी कार्य को करने की योग्यता अथवा ज्ञान का अन्य कार्यों को करने की योग्यता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है तब उसे शून्य स्थानान्तरण कहते हैं। स्पष्ट है कि शून्य स्थानान्तरण में पूर्ववर्ती ज्ञान का किसी अन्य परिस्थिति में कोई स्थानान्तरण या उपयोग नहीं होता है। इसके अलावा सीखने के स्थानान्तरण को अन्य तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

- क्षैतिज स्थानान्तरण
 - उर्ध्व स्थानान्तरण
 - द्विपार्श्विक स्थानान्तरण
- क्षैतिज स्थानान्तरण**—जब किसी परिस्थिति में अर्जित ज्ञान, अनुभव अथवा प्रशिक्षण का प्रयोग व्यक्ति उसी प्रकार की लगभग समान परिस्थिति में करता है तो इसे सीखने का क्षैतिज स्थानान्तरण कहते हैं जैसे गणित के जोड़-व-घटाना के प्रश्नों को हल करने के ज्ञान का उपयोग उसी प्रकार के अन्य प्रश्नों को हल करने में करना।
 - उर्ध्व स्थानान्तरण**—जब किसी परिस्थिति में अर्जित ज्ञान, अनुभव अथवा प्रशिक्षण का उपयोग प्राणी के द्वारा उच्च स्तरीय परिस्थितियों के अध्ययन में किया जाता है तब इसे सीखने का उर्ध्व स्थानान्तरण कहते हैं जैसे बाइक चलाने के अनुभव का प्रयोग कार चलाने में करना।
 - द्विपार्श्विक स्थानान्तरण**—जब मानव शरीर के एक भाग को दिये गये प्रशिक्षण का स्थानान्तरण दूसरे भाग में होता है तो इसे द्विपार्श्विक स्थानान्तरण कहते हैं जैसे दाँये हाथ से लिखने की योग्यता का लाभ बाँये हाथ से लिखने में करना।



अधिगम स्थानान्तरण के सिद्धान्त-

- मानसिक शक्तियों का सिद्धान्त**—इस सिद्धान्त के अनुसार मन की शक्तियों (तर्क, ध्यान, स्मृति, कल्पना आदि) को शिक्षण के द्वारा विकसित किया जा सकता है। इस विकास का प्रभाव बिना किसी प्रयास के आगे सभी कार्यों पर पड़ता है।
- समान तत्वों का सिद्धान्त**—इस सिद्धान्त के प्रतिपादक थॉर्नडाइक हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार, एक कार्य का दूसरे कार्य पर कितना स्थानान्तरण होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि दोनों कार्यों में साहचर्यात्मक तत्वों की कितनी समानता है। जितनी अधिक समानता होगी, उतना ही अधिक वे एक-दूसरे के अध्ययन में सहायक होंगे।
- सामान्यीकरण का सिद्धान्त**—इस सिद्धान्त के अनुसार यदि एक व्यक्ति अपने किसी कार्य, ज्ञान या अनुभव से कोई सामान्य नियम निकाल लेता है, तो वह दूसरी परिस्थिति में भी उसी नियम का प्रयोग कर सकता है। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन सी. एच. जुड के द्वारा किया गया था।
- सामान्य से विशिष्ट तत्वों का सिद्धान्त**—इस सिद्धान्त के प्रतिपादक स्पीयरमैन हैं। इनके अनुसार बुद्धि मुख्यतः दो प्रकार की होती है—सामान्य एवं विशिष्ट स्थानान्तरण केवल सामान्य योग्यता का होता है। विशिष्ट योग्यता का स्थानान्तरण नहीं होता है।

अधिगम में स्थानान्तरण का महत्व-

- अधिगम स्थानान्तरण के द्वारा किसी कार्य का अभ्यास करने से प्राप्त होने वाले प्रशिक्षण का दूसरी परिस्थितियों में प्रयोग किया जा सकता है।
- दो विषयों में समानता होने पर स्थानान्तरण अत्यधिक होता है।
- स्थानान्तरण से मानसिक शक्तियों का विकास होता है, जिसका प्रयोग हम अन्य कार्यों में करते हैं।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन पुनर्बलन का एक प्रकार नहीं है?
 - (a) सकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन
 - (b) शारीरिक दण्ड (नकारात्मक पुनर्बलन)
 - (c) नकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन
 - (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
2. राजू खरगोश से डरता था। शुरू में खरगोश को राजू से काफी दूर रखा गया। आने वाले दिनों में हर रोज खरगोश और राजू के बीच की दूरी कम कर दी गई। अन्त में राजू की गोद में खरगोश को रखा गया और राजू खरगोश से खेलने लगा। यह प्रयोग उदाहरण है
 - (a) प्रयत्न एवं त्रुटि सिद्धान्त का
 - (b) शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त का
 - (c) क्रिया प्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त का
 - (d) इनमें से सभी।
3. बालक के व्यक्तित्व को किस प्रकार का अधिगम अधिक प्रभावित करता है?
 - (a) प्रयत्न एवं त्रुटि अधिगम
 - (b) अनुकरण अधिगम
 - (c) अन्तर्दृष्टिपूर्ण अधिगम
 - (d) अनुदेशनात्मक अधिगम
4. क्लासिकल स्थिति का प्रतिपादक कौन था?
 - (a) स्किनर
 - (b) पावलोव
 - (c) वॉटसन
 - (d) थॉर्नडाइक
5. निम्नलिखित में से कौन-सा सिद्धान्त यह दर्शाता है कि अपेक्षित व्यवहार के सन्निकट सकारात्मक प्रतिक्रिया तथा पुनर्बलन के फलस्वरूप व्यवहारात्मक विकास किया जा सकता है?
 - (a) शास्त्रीय अनुबन्धन
 - (b) वाद्य अनुबन्धन
 - (c) ऑपरेन्ट अनुबन्धन
 - (d) सामाजिक अनुबन्धन
6. 'प्रयास व त्रुटि' में सबसे महत्वपूर्ण क्या है?
 - (a) अभ्यास
 - (b) प्रेरणा
 - (c) लक्ष्य
 - (d) वाद-विवाद
7. बुरी आदतों को सुधारा जा सकता है
 - (a) डाँट डपट कर
 - (b) दोषारोपण द्वारा
 - (c) अनुबन्धन द्वारा
 - (d) ये सभी
8. पाँच वर्ष का राजू अपनी खिड़की के बाहर तूफान को देखता है। बिजली चमकती है और कड़कने की आवाज आती है। राजू शोर सुन कर उछलता है। बार-बार यह घटना होती है। फिर कुछ देर शान्ति के पश्चात् बिजली कड़कती है। राजू बिजली की गर्जना सुनकर उछलता है। राजू का उछलना सीखने के किस सिद्धान्त का उदाहरण है?
 - (a) शास्त्रीय अनुबन्धन
 - (b) क्रियाप्रसूत अनुबन्धन
 - (c) प्रयत्न एवं भूल
 - (d) इनमें से कोई नहीं।
9. सकारात्मक दण्ड का निम्न में से कौन-सा उदाहरण है?
 - (a) मित्रों के द्वारा उपहास
 - (b) मित्रों के साथ समय बरबाद करना
 - (c) मीनमेख निकालना बंद करना
 - (d) इनमें से सभी।
10. एक कॉलेज जाने वाली लड़की ने फर्श पर कोट फेंकने की आदत डाल ली है। लड़की की माँ ने उससे कहा कि कमरे से बाहर जाओ और कोट को खूँटी पर टाँगो। लड़की अगली बार घर में प्रवेश करती है, कोट को हाथ पर रख कर अलमारी की तरफ जा कर कोट को खूँटी पर टाँग देती है। यह उदाहरण है
 - (a) शृंखलागत अधिगम का
 - (b) उद्दीपन-अनुक्रिया अधिगम का
 - (c) प्रत्यय अधिगम का
 - (d) इनमें से सभी।
11. थॉर्नडाइक का सिद्धान्त इनमें से किस वर्ग के तहत सूचीबद्ध किया जाता है?
 - (a) व्यवहारिकता का सिद्धान्त
 - (b) ज्ञानात्मक सिद्धान्त
 - (c) मनोविश्लेषण सिद्धान्त
 - (d) इनमें कोई नहीं
12. सीखने का 'क्लासिकल कण्डीशनिंग' सिद्धान्त प्रतिपादित किया था
 - (a) स्किनर
 - (b) पावलोव
 - (c) थॉर्नडाइक
 - (d) कोह्लबर्ग
13. एक प्रकार का अधिगम जो परिणामों पर निर्भर है—
 - (a) क्रियाप्रसूत अनुबन्धन
 - (b) प्राचीन अनुबन्धन
 - (c) प्रक्रिया उपक्रम अनुबन्धन
 - (d) अवरोध
14. कोहलर ने विकसित किया है—
 - (a) एस.आर. बोण्ड सिद्धान्त
 - (b) अंतर्दृष्टि सिद्धान्त
 - (c) फील्ड सिद्धान्त
 - (d) अनुबन्धन सिद्धान्त
15. अनुबन्धित सहज क्रिया संबंधित है—
 - (a) स्कीनर
 - (b) कोहलर
 - (c) पैवलाव
 - (d) थॉर्नडाइक
16. निम्न में से कौन 'गेस्टाल्ट मनोविज्ञान' से संबंधित नहीं है?
 - (a) कर्ट लेविन
 - (b) आई.पी. पैवलाव
 - (c) वोल्फगैंग कोहलर
 - (d) ये सभी
17. निम्न में से कौन-सा मत अन्तर्दृष्टि द्वारा सीखने की व्याख्या करता है?
 - (a) मनोविश्लेषणवाद
 - (b) व्यवहारवाद
 - (c) सम्बन्धवाद
 - (d) गेस्टाल्टवाद

18. अनुबन्धन की प्रक्रिया में प्रथम सोपान निम्नांकित में से कौन-सा है?
 (a) उत्तेजना (b) आवृत्ति
 (c) सामान्यीकरण (d) इनमें से कोई नहीं
19. वाइगोत्स्की के अनुसार, बच्चे सीखते हैं
 (a) जब पुनर्बलन प्रदान किया जाता है
 (b) परिपक्व होने से
 (c) अनुकरण से
 (d) वयस्कों और समवयस्कों के साथ परस्पर क्रिया से
20. जब बच्चे एक अवधारणा को सीखते हैं और उसका प्रयोग करते हैं, तो अभ्यास उनके द्वारा की जाने वाली त्रुटियों को कम करने में मदद करता है। यह विचार.....के द्वारा दिया गया।
 (a) जीन पियाजे (b) जे.बी. वॉटसन
 (c) लेव वाइगोत्स्की (d) ई.एल. थॉर्नडाइक
21. वाइगोत्स्की के सिद्धांत का निहितार्थ है
 (a) प्रत्येक विद्यार्थी को व्यक्तिगत रूप से दत्त कार्य देना।
 (b) प्रारंभिक व्याख्या के बाद कठिन सवालों को हल करने में बच्चे की सहायता न करना।
 (c) बच्चे उन बच्चों की संगति में श्रेष्ठतम रूप से सीख सकते हैं जिनका बुद्धि-लब्धांक से कम होता है।
 (d) सहयोगात्मक समस्या समाधान।
22. 'सीखने के अंतःदृष्टि सिद्धांत' को किसने बढ़ावा दिया?
 (a) पैवलॉव (b) जीन पियाजे
 (c) वाइगोत्स्की (d) 'गेस्टाल्ट' सिद्धांतवादी
23. सीखने के सिद्धान्तों के संदर्भ में 'स्कैफोल्डिंग'.....की ओर संकेत करता है।
 (a) सीखने में वयस्कों द्वारा अस्थायी सहयोग
 (b) विद्यार्थियों द्वारा की गई गलतियों के कारणों का पता लगाना
 (c) अनुरूपित शिक्षण
 (d) पूर्व अधिगम की पुनरावृत्ति
24. सम्बद्ध प्रतिक्रिया सिद्धांत में पावलॉव ने प्रयोग किया -
 (a) बिल्ली पर (b) कुत्ते पर
 (c) बन्दर पर (d) चूहे पर
25. 'सीखने के अंतर्दृष्टि सिद्धांत' को किसने बढ़ावा दिया?
 (a) 'गेस्टाल्ट' सिद्धांतवादी (b) पावलॉव
 (c) जीन पियाजे (d) वायगोट्स्की
26. सूझ द्वारा सीखने के सिद्धांत का प्रतिपादन किया -
 (a) थॉर्नडाइक (b) कोहलर
 (c) पावलॉव (d) वुडवथ
27. क्रियाप्रसूत अनुकूलन सिद्धान्त का प्रतिपादन ----- ने किया था -
 (a) पावलॉव (b) स्किनर
 (c) थॉर्नडाइक (d) कोहलर
28. क्रियाप्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त का प्रतिपादन किया
 (a) हल ने (b) थॉर्नडाइक ने
 (c) हेगार्टी ने (d) स्किनर ने
29. कोहलर निम्न में से किससे सम्बन्धित हैं?
 (a) अभिप्रेरणा का सिद्धान्त (b) विकास का सिद्धान्त
 (c) व्यक्तित्व का सिद्धान्त (d) अधिगम का सिद्धान्त
30. सीखने में प्रयास व भूल के सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया?
 (a) कोहलर (b) पैवलव
 (c) थॉर्नडाइक (d) गेस्टाल्ट
31. निम्न में से कौन-सा युग्म सही नहीं है?
 (a) सीखने का उद्दीपक-अनुक्रिया सिद्धान्त-थॉर्नडाइक
 (b) सीखने का क्रियाप्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त-बी. एफ. स्किनर
 (c) सीखने का क्लासिकल सिद्धान्त-पैवलव
 (d) सीखने का समग्र सिद्धान्त-हल
32. सूझ या अन्तर्दृष्टि के सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया है?
 (a) थॉर्नडाइक (b) गेस्टालवादी मनोवैज्ञानिक
 (c) हेगार्टी (d) स्किनर
33. अधिगम स्थानान्तरण की योग्यता को बढ़ाने के लिए अध्यापक को नहीं करना चाहिए
 (a) स्व-क्रिया को प्रोत्साहित करना
 (b) रटने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना
 (c) सूझ द्वारा सीखने का विकास करना
 (d) सामान्यीकरण पर बल देना
34. शब्द IDENTICAL ELEMENTS (समान तत्व) निम्न से गहन सम्बन्ध रखता है
 (a) समान परीक्षा प्रश्न (b) सहयोगियों से ईर्ष्या
 (c) अधिगम स्थानान्तरण (d) समूह निर्देशन
35. एक क्रिकेट खिलाड़ी अपनी गेंदबाजी के कौशल को विकसित कर लेता है, पर यह उसके बल्लेबाजी के कौशल को प्रभावित नहीं करता। इसे कहते हैं
 (a) विधेयात्मक प्रशिक्षण अन्तरण
 (b) निषेधात्मक प्रशिक्षण अन्तरण
 (c) शून्य प्रशिक्षण अन्तरण
 (d) इनमें से कोई नहीं।
36. निम्न में कौन शेष से भिन्न है?
 (a) अधिगम के लिए अधिगम का सिद्धान्त
 (b) समान अवयवों का सिद्धान्त
 (c) ड्राइव रिडक्शन सिद्धान्त
 (d) सामान्यीकरण का सिद्धान्त
37. निम्न में से कौन-सा अधिगम के पठार का कारण नहीं है?
 (a) प्रेरणा की सीमा (b) विद्यालय का असहयोग
 (c) शारीरिक सीमा (d) ज्ञान की सीमा
38. ध्यान आकर्षित होने में की प्रमुख भूमिका होती है।
 (a) उद्दीपन की तीव्रता (b) उद्दीपन की उपादेयता
 (c) उद्दीपन की विश्वसनीयता (d) उद्दीपन की सक्रियता

39. यदि पूर्व ज्ञान व अनुभव नये प्रकार के सीखने में सहायता करते हैं, तो उसे कहते हैं-
- (a) नकारात्मक प्रशिक्षण स्थानान्तरण
 - (b) सकारात्मक प्रशिक्षण स्थानान्तरण
 - (c) प्रशिक्षण स्थानान्तरण
 - (d) सीखना
40. जब मानव शरीर के एक भाग को दिए गए प्रशिक्षण का अन्तरण दूसरे भाग में हो जाता है तो इसे कहते हैं -
- (a) ऊर्ध्व अन्तरण
 - (b) क्षैतिज अन्तरण
 - (c) द्विपार्श्विक अन्तरण
 - (d) उपरोक्त में से कोई नही
41. अधिगम वक्र में पठार बनता है
- (a) परिपक्वता के कारण
 - (b) अभिप्रेरणा के कारण
 - (c) थकान के कारण
 - (d) अभिरुचि के कारण
42. अधिगम स्थानान्तरण के द्वि-तत्त्व सिद्धांत के प्रवर्तक थे।
- (a) थॉर्नडाइक
 - (b) स्पीयरमैन
 - (c) जड
 - (d) गिलफोर्ड
43. सीखे हुए ज्ञान, कौशल या विषय का अन्य परिस्थितियों में उपयोग करने को कहते हैं
- (a) प्रेरणा
 - (b) सीखने का स्थानान्तरण
 - (c) भग्नाशा
 - (d) चिन्ता
44. जिस वक्र रेखा में प्रारम्भ में सीखने की गति तीव्र होती है और बाद में यह क्रमशः मन्द होती जाती है, उसे कहते हैं
- (a) उन्नतोदर वक्र (Convex Curve)
 - (b) नतोदर वक्र (Concave Curve)
 - (c) मिश्रित वक्र रेखा (Combination Curve Line)
 - (d) वक्र रेखा नहीं होती है
45. 'सीखने के पठार' के निराकरण के लिए क्या नहीं करना चाहिए?
- (a) सीखने वाले को प्रेरित और प्रोत्साहित करना चाहिए
 - (b) सीखने की अच्छी विधि का प्रयोग करना चाहिए
 - (c) उसे दण्डित करना चाहिए
 - (d) इनके कारणों का अध्ययन करना चाहिए
46. सीखने के वक्र
- (a) सीखने की प्रगति के सूचक है
 - (b) सीखने की मौलिकता के सूचक है
 - (c) सीखने के गत्यात्मक स्वरूप के सूचक है
 - (d) सीखने की रचनात्मकता के सूचक हैं
47. किसी शिक्षक को यदि यह लगता है कि उसका एक विद्यार्थी जो पहले विषय-वस्तु को भली प्रकार सीख रहा था। उसमें स्थिरता आ गई है। शिक्षक को इसे
- (a) सीखने की प्रक्रिया की स्वाभाविक स्थिति मानना चाहिए
 - (b) विषय को स्पष्टता से पढ़ाना चाहिए
 - (c) विद्यार्थी को प्रेरित करना चाहिए
 - (d) उपचारात्मक शिक्षण करना चाहिए
48. आंशिक पुनर्बलन
- (a) सतत् पुनर्बलन की अपेक्षा कम प्रभावी होता है
 - (b) वास्तविक कक्षा-कक्ष में अनप्रयुक्त नहीं किया जा सकता
 - (c) पशुओं को प्रशिक्षित करने में सर्वाधिक कार्य करता है
 - (d) सतत पुनर्बलन की अपेक्षा अधिक प्रभावी होता है
49. जब पूर्व का अधिगम नई स्थितियों के सीखने को बिल्कुल प्रभावित नहीं करता, तो यह कहलाता है।
- (a) अधिगम का शून्य स्थानान्तरण
 - (b) अधिगम का निरपेक्ष स्थानान्तरण
 - (c) अधिगम का सकारात्मक स्थानान्तरण
 - (d) अधिगम का नकारात्मक स्थानान्तरण
50. सीखने की वह अवधि, जब सीखने की प्रक्रिया में कोई उन्नति नहीं होती, कहलाती है
- (a) सीखने का वक्र
 - (b) सीखने का पठार
 - (c) स्मृति
 - (d) अवधान
51. अध्यापिका ने ध्यान दिया कि पुष्पा अपने-आप किसी एक समस्या का समाधान नहीं कर सकती है। फिर भी वह एक वयस्क या साथी के मार्गदर्शन की उपस्थिति में ऐसा करती है। इस मार्गदर्शन को कहते हैं।
- (a) पार्श्वकरण
 - (b) पूर्व-क्रियात्मक चिन्तन
 - (c) समीपस्थ विकास का क्षेत्र
 - (d) सहारा देना
52. प्राथमिक कक्षा के बालकों के लिए शिक्षण की उपयुक्त विधि है
- (a) प्रयास व भूल विधि
 - (b) अनुकरण विधि
 - (c) व्याख्यान विधि
 - (d) खेल विधि
53. एक बालक, जो साइकिल चलाना जानता है, मोटरबाइक चलाना सीख रहा है। यह उदाहरण होगा
- (a) क्षैतिज अधिगम अन्तरण का
 - (b) ऊर्ध्व अधिगम अन्तरण का
 - (c) द्विपार्श्विक अधिगम अन्तरण का
 - (d) कोई भी अधिगम अन्तरण नहीं
54. सीखने की प्रक्रिया में 'सीखने का स्थानान्तरण' हो सकता है
- (a) सकारात्मक
 - (b) नकारात्मक
 - (c) शून्य
 - (d) ये सभी
55. अधिगम वक्र में पठार दर्शाता है-
- (a) विलोप
 - (b) पुनर्बलन
 - (c) स्वतः पुनःप्राप्ति
 - (d) शून्य अथवा नगण्य सुधार
56. जब शिक्षार्थियों को समूह में किसी समस्या पर चर्चा का अवसर दिया जाता है, तब उनके सीखने का वक्र
- (a) बेहतर होता है
 - (b) स्थिर रहता है
 - (c) अवनत होता है
 - (d) समान रहता है
57. "विचार न केवल भाषा को निर्धारित करते हैं बल्कि आगे भी बढ़ाते हैं।" यह विचार द्वारा रखा गया।
- (a) वाइगोत्स्की
 - (b) पॉव्लॉव
 - (c) जीन पियाजे
 - (d) कोह्लबर्ग
58. भाषा
- (a) हमारी विचार-प्रक्रिया को पूरी तरह से नियंत्रित करती है
 - (b) हमारी विचार-प्रक्रिया को प्रभावित करती है
 - (c) हमारी विचार-प्रक्रिया का निर्धारण नहीं कर सकती
 - (d) विचार-प्रक्रिया को प्रभावित नहीं करती

59. किस व्यवहारवादी का मानना है कि अन्य व्यवहारों की भाँति भाषा भी क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन द्वारा सीखी जाती है?
- (a) वाटसन (b) स्किनर
(c) गुथरी (d) थॉर्नडाइक
60. वायगोत्स्की के अनुसार बच्चे स्वयं से क्यों बोलते हैं?
- (a) बच्चे अपने प्रति वयस्कों का ध्यान आकर्षित करने के लिए बोलते हैं।
(b) बच्चे स्वभाव से बहुत बातूनी होते हैं।
(c) बच्चे अहंकेंद्रित होते हैं।
(d) बच्चे अपने कार्य को दिशा देने के लिए बोलते हैं।
61. 'जोन ऑफ प्रॉक्सिमल डेवलपमेन्ट (ZPD) का प्रत्यय दिया गया-
- (a) बन्दुरा द्वारा (b) पियाजे द्वारा
(c) स्किनर द्वारा (d) वाइगोत्स्की द्वारा
62. मनोवैज्ञानिक वाइगोत्स्की कहाँ के थे?
- (a) जापान (b) रूस
(c) फ्रांस (d) चीन।
63. तर्क, जिज्ञासा तथा निरीक्षण शक्ति का विकास होता है-
- (a) 6 वर्ष की आयु में (b) 8 वर्ष की आयु में
(c) 11 वर्ष की आयु में (d) 15 वर्ष की आयु में
64. सीखने के सिद्धांतों के संदर्भ में स्कैफोल्डिंग को ओर संकेत करता है।
- (a) विद्यार्थियों द्वारा की गई गलतियों के कारणों का पता लगाना
(b) अनुरूपित शिक्षण
(c) पूर्व अधिगम की पुनरावृत्ति
(d) सीखने में वयस्कों द्वारा अस्थायी सहयोग
65. एक शिक्षिका दो एकसमान गिलासों को प्रदर्शित करती हैं जो जूस की समान मात्रा से भरे हुए हैं। वह उन्हें दो भिन्न गिलासों में खाली करती है जिसमें से एक लम्बा है और दूसरा चौड़ा है। वह बच्चों को उस गिलास की पहचान करने के लिए कहती है जिसमें जूस ज्यादा है। बच्चे प्रत्युत्तर देते हैं कि लंबे गिलास में जूस ज्यादा है। शिक्षिका के बच्चों को कठिनाई है।
- (a) समायोजन (b) अहमकेंद्रिता
(c) विकेंद्रीकरण (d) पलटावी
66. 'मानसिक संरचनाएँ जो चिन्तन के निर्माण प्रखण्ड हैं' इसके लिए पियाजे ने किस शब्द/पद का प्रयोग किया है?
- (a) जीन (b) परिपक्वन प्रखण्ड
(c) स्कीमा (अवधारणाएँ) (d) विकास का क्षेत्र
67. सीता ने हाथ से दाल और चावल खाना सीख लिया है। जब उसे दाल और चावल दिए जाते हैं तो वह दाल-चावल मिलाकर खाने लगती है। उसने चीजों को करने के लिए अपने स्कीमा में दाल और चावल खाने कर लिया है।
- (a) अंगीकार (b) समायोजित
(c) अनुकूलित (d) समुचित
68. पियाजे के अनुसार अहंकेंद्रित क्या है?
- (a) वातावरण ज्ञान का केन्द्र
(b) बालक विश्व का केन्द्र है और हर चीज उसके इर्द-गिर्द घूमती है
(c) संवेदी गामक अवस्था
(d) इनमें से कोई नहीं
69. लेव वाइगोत्स्की के अनुसार-
- (a) बच्चे भाषा अर्जन की एक युक्ति से कोई भाषा सीखते हैं
(b) वयस्कों और साथियों से अन्योन्यक्रिया करने का भाषा के विकास में कोई प्रभाव नहीं पड़ता
(c) भाषिक विकास मानव चिंतन के स्वभाव को बदल देता है
(d) भाषिक विकास में संस्कृति की भूमिका बहुत कम होती है
70. जीन पियाजे के द्वारा प्रस्तुत 'संरक्षण' के प्रत्यय से तात्पर्य है कि-
- (a) दूसरों के परिदृश्य को ध्यान में रखना एक महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक क्षमता है
(b) वन्यजीवन और वनों का संरक्षण बहुत महत्वपूर्ण है
(c) कुछ भौतिक गुणधर्म वही रहते हैं चाहे बाहरी आकृतियाँ बदल जाएँ
(d) परिकल्पना पर विधिवत् परीक्षण से सही निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है
71. वाइगोत्स्की की संस्तुति के अनुसार, बच्चों की 'व्यक्तिगत वाक्' की संकल्पना
- (a) स्पष्ट करती है कि बच्चे अहंकेंद्रित होते हैं
(b) प्रदर्शित करती है कि बच्चे बुद्धि होते हैं इसलिए उन्हें प्रौढ़ों के निर्देशन की आवश्यकता होती है
(c) प्रदर्शित करती है कि बच्चे अपने-आप से प्यार करते हैं
(d) स्पष्ट करती है कि बच्चे अपने ही कार्यों के निर्देशन के लिए भाषा का उपयोग करते हैं।
72. वाइगोत्स्की के सिद्धान्त में, विकास के निम्नलिखित में से कौन-से पहलू की उपेक्षा होती है?
- (a) सांस्कृतिक (b) जैविक
(c) भाषायी (d) सामाजिक
73. एक वर्ष तक के शिशु जब आँख, कान व हाथों से "सोचते" हैं, तो निम्नलिखित में से कौन-सा स्तर शामिल होता है?
- (a) पूर्व-संक्रियात्मक स्तर (b) इंद्रियजनित गामक स्तर
(c) अमूर्त संक्रियात्मक स्तर (d) मूर्त संक्रियात्मक स्तर
74. पियाजे के सिद्धान्त के अनुसार, बच्चे निम्न में से किसके द्वारा सीखते हैं?
- (a) सही प्रकार से ध्यान लगाकर जानकारी को याद करना
(b) समाज के आर्थिक योग्य सदस्यों के द्वारा उपलब्ध कराए गए सहारे के आधार पर
(c) अनुकूलन की प्रक्रियाएँ
(d) उपयुक्त पुरस्कार दिए जाने पर अपने व्यवहार में परिवर्तित करना
75. वाइगोत्स्की तथा पियाजे के परिप्रेक्ष्यों में एक प्रमुख विभिन्नता है -
- (a) व्यवहारवादी सिद्धान्तों की उनकी आलोचना।

- (b) बच्चों को एक पालन-पोषण का परिवेश उपलब्ध कराने की भूमिका।
 (c) भाषा एवं चिंतन के बारे में उनके दृष्टिकोण।
 (d) ज्ञान के सक्रिय निर्माताओं के रूप में बच्चों की संकल्पना
- 76. वाइगोत्सकी के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त के अनुसार –**
 (a) संस्कृति और भाषा संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं
 (b) बच्चे अलग क्षेत्र में चिंतन करते हैं और वे पूर्ण परिप्रेक्ष्य नहीं लेते
 (c) यदि निम्न आयु पर अमूर्त सामग्री को प्रस्तुत किया जाए तो बच्चे अमूर्त तरीके से चिंतन करते हैं
 (d) स्व-निर्देशित वाक् सहयोग का निम्नतम स्तर है
- 77. बच्चों के बौद्धिक विकास की चार विशिष्ट अवस्थाओं की पहचान की गई**
 (a) एरिकसन द्वारा (b) स्किनर द्वारा
 (c) पियाजे द्वारा (d) कोह्लबर्ग द्वारा
- 78. पियाजे के अनुसार विकास की पहली अवस्था (जन्म से लगभग 2 वर्ष आयु) के दौरान बच्चा सबसे बेहतर सीखता है।**
 (a) अमूर्त तरीके से चिंतन द्वारा
 (b) भाषा के नए अर्जित ज्ञान के अनुप्रयोग द्वारा
 (c) इंद्रियों के प्रयोग द्वारा
 (d) निष्क्रिय (neutral) शब्दों को समझने के द्वारा
- 79. वाइगोत्सकी के अनुसार, समीपस्थ विकास का क्षेत्र है –**
 (a) अध्यापिका के द्वारा दिए गए सहयोग की सीमा निर्धारित करना।
 (b) बच्चे के द्वारा स्वतंत्र रूप से किए जा सकने वाले तथा सहायता के साथ करने वाले कार्य के बीच अंतर।
 (c) बच्चे को अपना सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए उपलब्ध कराए गए सहयोग की मात्रा एवं प्रकृति।
 (d) बच्ची अपने आप क्या कर सकती है जिसका आकलन नहीं किया जा सकता है।
- 80. कोई 5 साल की लड़की एक टी-शर्ट को तह करते हुए अपने आप से बात करती है। लड़की द्वारा प्रदर्शित व्यवहार के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?**
 (a) जीन पियाजे और लेव वाइगोत्सकी इसकी व्याख्या बच्चे के विचारों की अहंकेंद्रित प्रकृति के रूप में करेंगे।
 (b) जीन पियाजे इसे अहंकेंद्रित भाषा कहेगा और लेव वाइगोत्सकी इसकी व्याख्या बच्चे के द्वारा निजी भाषा से अपनी क्रियाओं को नियमित करने के प्रयासों के रूप में करेगा।
 (c) जीन पियाजे इसकी व्याख्या सामाजिक अन्योन्यक्रिया के रूप में करेगा और लेव वाइगोत्सकी इसे खोजबीन मानेगा।
 (d) जीन पियाजे और लेव वाइगोत्सकी इसकी व्याख्या बच्चे के द्वारा अपनी माँ के अनुकरण के रूप में करेंगे।
- 81. पियाजे के अनुसार, बच्चों का चिंतन वयस्कों से में भिन्न होता है बजाय.....के।**
 (a) मात्रा; प्रकार (b) आकार; मूर्तपरकता
 (c) प्रकार; मात्रा (d) आकार; किस्म
- 82. जब वयस्क सहयोग से सामंजस्य कर लेते हैं, तो वे बच्चे के वर्तमान स्तर के प्रदर्शन को संभावित क्षमता के स्तर के प्रदर्शन की तरफ प्रगति क्रम को सुगम बनाते हैं, इसे कहा जाता है–**
 (a) समीपस्थ विकास (b) सहयोग देना
 (c) सहभागी अधिगम (d) सहयोगात्मक अधिगम
- 83. सहयोगी अधिगम में अधिक उम्र के प्रवीण विद्यार्थी, छोटे और कम निपुण विद्यार्थियों की मदद करते हैं। इससे**
 (a) गहन प्रतियोगिता होती है
 (b) उच्च नैतिक विकास होता है
 (c) समूहों में द्वंद्व होता है
 (d) उच्च उपलब्धि और आत्म-सम्मान होता है
- 84. अल्प वयस्क बच्चों के अधिगम में अभिभावकों की भूमिका होनी चाहिए–**
 (a) निषेधात्मक (b) अग्र सक्रिय
 (c) संवेदनात्मक (d) उदासीन

उत्तरमाला

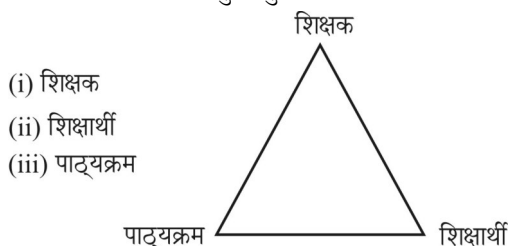
1. (d)	10. (b)	19. (d)	28. (d)	37. (b)	46. (a)	55. (c)	64. (d)	73. (b)	82. (a)
2. (b)	11. (a)	20. (d)	29. (d)	38. (a)	47. (a)	56. (a)	65. (d)	74. (c)	83. (d)
3. (b)	12. (b)	21. (d)	30. (c)	39. (b)	48. (d)	57. (c)	66. (c)	75. (c)	84. (b)
4. (b)	13. (a)	22. (d)	31. (d)	40. (c)	49. (a)	58. (b)	67. (c)	76. (a)	
5. (c)	14. (b)	23. (a)	32. (b)	41. (c)	50. (b)	59. (b)	68. (b)	77. (c)	
6. (c)	15. (c)	24. (b)	33. (b)	42. (b)	51. (d)	60. (d)	69. (c)	78. (c)	
7. (c)	16. (d)	25. (a)	34. (c)	43. (b)	52. (d)	61. (d)	70. (c)	79. (b)	
8. (a)	17. (d)	26. (b)	35. (c)	44. (a)	53. (b)	62. (b)	71. (d)	80. (b)	
9. (a)	18. (a)	27. (b)	36. (c)	45. (c)	54. (d)	63. (c)	72. (b)	81. (c)	

शिक्षण का अर्थ तथा उद्देश्य

शिक्षण का अर्थ—

शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक सामाजिक परिवेश में पारस्परिक सहभागिता से अपने छात्रों तक अपने ज्ञान, कौशल, व्यवहार व दक्षताओं को पहुँचाने का कार्य करता है।

- शिक्षण एक त्रिध्रुवीय, गत्यात्मक, अंतःक्रियात्मक व सोद्देश्य प्रक्रिया है जिसके तीन प्रमुख ध्रुव हैं—



उपरोक्त तीनों ध्रुवों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने की प्रक्रिया ही शिक्षण है। तीनों पक्षों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने का कार्य शिक्षक अपने शिक्षण के माध्यम से करता है।

शिक्षण का व्यापक अर्थ—

व्यापक अर्थ में 'शिक्षण' मनुष्य के जीवन में निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत सभी व्यक्ति, वस्तुएँ, वातावरण, साधन, माध्यम व घटनाएँ व्यक्ति को जन्म से मृत्यु तक कुछ न कुछ सिखाती रहती हैं। परिवार, विद्यालय, समाज, वातावरण, उद्योग, सिनेमा, राजनीति, कला व साहित्य आदि प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति को कुछ न कुछ शिक्षण प्रदान करते हैं। इस प्रकार के शिक्षण में औपचारिक व अनौपचारिक दोनों प्रकार के साधनों से व्यक्ति जीवन भर सीखता रहता है।

शिक्षण का संकुचित अर्थ—

निश्चित उद्देश्यों को लेकर निश्चित समय में निश्चित स्थान पर, निश्चित व अनुभवी व्यक्तियों द्वारा दी जाने वाली प्रक्रिया ही शिक्षण है।

शिक्षण की परिभाषाएँ—

- **बर्टन के अनुसार**—“शिक्षण सीखने के लिए प्रेरणा, पथ प्रदर्शन, पथ निर्देशन और प्रोत्साहन है।”
- **डॉ. माथुर के अनुसार**—“शिक्षण का अर्थ शिक्षार्थी को ऐसे अवसर प्रदान करना है, जिनसे शिक्षार्थी अपनी अवस्था एवं प्रकृति के अनुरूप समस्याओं को हल करने की क्षमता प्राप्त कर सके। वह स्वयं योजना बना सके, शैक्षिक सामग्री इकट्ठी कर

उसे सुसंगठित रूप में प्रयोग कर सके तथा लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

- **योकम व सिम्पसन के अनुसार**—“शिक्षण वह साधन है जिसके द्वारा समूह के अनुभवी सदस्य अपरिपक्व व छोटे सदस्य को जीवन में अनुकूलन करने में पथ प्रदर्शन करते हैं।”
- **जेम्स एम. थाइन के अनुसार**—“समस्त शिक्षण का अर्थ सीखने में वृद्धि करना है।”

शिक्षण का स्वरूप—

- जॉन ड्यूवी तथा रायबर्न के अनुसार शिक्षण एक त्रिमुखी प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक अंतःप्रक्रिया है 'फ्लैण्डर के अनुसार'
- शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है।
- शिक्षण-सम्बन्ध स्थापित करना है।
- शिक्षण एक तार्किक प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक कौशलपूर्ण प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक सामाजिक एवं व्यवसायिक प्रक्रिया है।
- शिक्षण औपचारिक तथा अनौपचारिक प्रक्रिया है।

उत्तम शिक्षण की विशेषताएँ—

योकम व सिम्पसन ने अच्छे शिक्षण की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं—

- अच्छे शिक्षण में वांछित सूचनाएँ प्रदान की जाती हैं।
- यह आदेशात्मक न होकर निर्देशात्मक व जनतंत्रीय आदर्शों पर आधारित होता है।
- इसमें सीखने वाला स्वयं सीखने के लिए प्रेरित होता है।
- उत्तम शिक्षण में छात्रों की वैयक्तिक भिन्नताओं को ध्यान में रखा जाता है।
- यह प्रेरणात्मक व सृजनात्मक होता है।
- इसमें छात्रों की कठिनाइयों को पहचानकर दूर करने का प्रयास किया जाता है।
- इसमें छात्र सदैव क्रियाशील रहते हैं।

शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य

शिक्षण उद्देश्यों को दो भागों में बाँटा जा सकता है—

- (i) व्यापक उद्देश्य, (ii) विशिष्ट उद्देश्य

(i) व्यापक उद्देश्य—

शिक्षण का मूल उद्देश्य छात्रों का व्यवहार परिवर्तन होता है।

- शिक्षण का उद्देश्य शिक्षार्थियों को जीवनोपयोगी ज्ञान प्रदान करके उनके व्यक्तित्व, क्षमताओं, योग्यताओं व कुशलताओं का अधिकतम विकास करना है।
- शिक्षार्थियों को सीखने के लिए प्रोत्साहित करना, जिससे वे पढ़ने व अन्य कार्यों में रुचि ले सकें।
- छात्रों में आत्मविश्वास की भावना जागृत करना।
- छात्रों में नैतिक व सामाजिक मूल्यों के विकास के साथ-साथ नेतृत्व क्षमता का विकास करना।
- छात्रों को स्वास्थ्य, स्वच्छता व अपने परिवेश के प्रति जागरूक बनाना।
- छात्र-छात्राओं को सक्रिय रखना व उसमें रचनात्मक दृष्टिकोण का विकास करना।
- छात्रों की कठिनाइयों को दूर करना व अशुद्धियों का निवारण करना। छात्रों के मूल प्रवृत्तियों को सही दिशा देना।
- छात्रों को अपने वातावरण से समायोजन करना सिखाना ताकि वह समाज व लोकतांत्रिक राष्ट्र के जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

(ii) विशिष्ट उद्देश्य-

वर्ष 1956 में बेंजामिन एस. ब्लूम ने शिक्षण उद्देश्यों को तीन भागों में विभक्त किया-

- ज्ञानात्मक उद्देश्य
 - भावात्मक उद्देश्य
 - मनोगत्यात्मक उद्देश्य
- (i) **ज्ञानात्मक क्षेत्र के उद्देश्य**-ब्लूम के अनुसार ज्ञानात्मक क्षेत्र में वे उद्देश्य होते हैं जो ज्ञान के पुनःस्मरण या पहचान तथा बौद्धिक योग्यताओं व कौशलों के विकास से सम्बन्धित होते हैं। इसको ब्लूम ने पुनः छः स्तरों में विभाजित किया है- (i) ज्ञान, (ii) बोध, (iii) अनुप्रयोग, (iv) विश्लेषण, (v) संश्लेषण, (vi) मूल्यांकन
- (ii) **भावात्मक क्षेत्र के उद्देश्य**-इस क्षेत्र के अन्तर्गत वे उद्देश्य आते हैं जिनका सम्बन्ध भावों, दृष्टिकोणों, मूल्यों, संवेगों, मनोवृत्ति, रुचियों आदि से होता है। इनका वर्गीकरण वर्ष 1964 में **क्राथवॉल**, **ब्लूम** तथा **मसीआ** ने प्रस्तुत किया था। क्राथवेल तथा उनके सहयोगियों ने इसे पुनः पाँच स्तरों में विभाजित किया है-(i) आग्रहण, (ii) प्रतिक्रिया, (iii) अनुमूल्यन, (iv) संगठन, (v) स्वाभावीकरण
- (iii) **मनोगत्यात्मक क्षेत्र के उद्देश्य**-मनोगत्यात्मक क्षेत्र से सम्बन्धित शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण सिम्पसन ने वर्ष 1966 में किया था। मनोगत्यात्मक क्षेत्र में उन उद्देश्यों को सम्मिलित किया जाता है जो शारीरिक तथा क्रियात्मक कौशलों से सम्बन्धित होते हैं। इसको पुनः पाँच स्तरों में विभाजित किया जा सकता है-(i) प्रत्यक्षीकरण, (ii) मनोस्थिति, (iii) निर्देशित प्रतिक्रिया, (iv) कार्य कौशल, (v) जटिल बाह्य व्यवहार।
- कालान्तर में आर0 एच0 देवे ने मनोगत्यात्मक क्षेत्र के उद्देश्यों को अन्य पाँच भागों में विभाजित किया-(i) अनुकरण, (ii) क्रिया, (iii) परिमार्जिता, (iv) समन्वयन, (v) स्वाभावीकरण

शिक्षण में प्रयुक्त प्रमुख क्रियाकलाप-

- विषय व पाठ्यवस्तु आधारित गतिविधियों को करना।
- छोटे व बड़े समूहों में कार्य कराना जिससे बच्चे स्वयं कार्य करते हुए सीख व समझ सकें।
- ऐसे प्रोजेक्ट कार्य कराना जिन्हें बच्चे स्वयं व साथियों के सहयोग से कर सकें।
- विविध प्रकार के अभ्यास कार्य कराना व उनकी जाँच करना।
- शैक्षिक व मनोरंजनात्मक खेल खिलवाना।
- वर्णन, व्याख्यान व कथन करना।
- स्वाध्याय व विचार-विमर्श के अवसर प्रदान करना।
- प्रेरणा व आवश्यक सुझाव प्रदान करना।
- चर्चा-परिचर्चा करवाना।
- सहायक सामग्री का समुचित प्रयोग करना।
- प्रश्नोत्तर व प्राप्त उत्तरों को सभी बच्चों के सामने स्पष्ट करना।
- मूल्यांकन करना

ध्यान दें-

- शिक्षण तभी सार्थक व प्रभावी होगा जब छात्र सीखे गये विषय व ज्ञान के आधार पर अपने व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों व परिस्थितियों में उसका समुचित उपयोग कर सकें।

सम्प्रेषण

सम्प्रेषण का अर्थ एवं परिभाषाएँ-

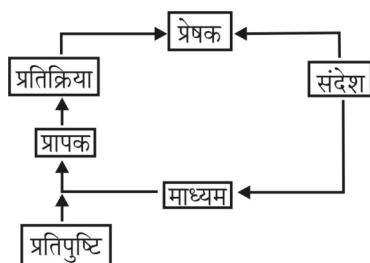
- **सम्प्रेषण** को अंग्रेजी में 'Communication' कहते हैं। कम्यूनिकेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'कम्यूनी' (Commune) शब्द से हुआ है, जिसका शाब्दिक अर्थ विचारों, भावनाओं, सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है।
- इसी प्रकार सम्प्रेषण शब्द 'सम' और 'प्रेषण' दो शब्दों से मिलकर बना है। सम का अर्थ है-भली प्रकार और प्रेषण का अर्थ है भेजना। अर्थात् संदेश व सूचनाओं को भली प्रकार प्रेषित करना, जिससे सामने वाला उस संदेश को यथावत भली प्रकार ग्रहण कर सके।
- **पॉललीगन्स के अनुसार**-"सम्प्रेषण वह क्रिया है, जिसके द्वारा दो या अधिक लोग, विचारों, तथ्यों, भावनाओं एवं प्रभावों आदि का इस प्रकार विनियमन करते हैं कि संचार प्राप्त करने वाला व्यक्ति संदेश के अर्थ, उद्देश्य तथा उपयोग को भलीभाँति समझ लेता है।"

इस प्रकार सम्प्रेषण या संचार एक प्रक्रिया है, जो कि दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य घटित होती है तथा इसके माध्यम से अभिवृत्तियों, इच्छाओं, आदर्शों एवं सूचनाओं इत्यादि का आदान-प्रदान होता है।

प्रभावी सम्प्रेषण के लिए प्रमुख बिन्दु

- संदेश की स्पष्टता तथा भाषा की सरलता एवं शुद्धता
- संदेश को सावधानीपूर्वक समझना
- संदेश में विश्वसनीयता
- सम्प्रेषण प्रक्रिया की सरलता
- सम्प्रेषण में समयबद्धता
- सम्प्रेषण विधा में लचीलापन
- पश्चपोषण की व्यवस्था

सम्प्रेषण के घटक या कारक



1. **प्रेषक** (Sender or Communicator)–प्रेषक वह होता है जो सूचना, विचार या भावनाओं को प्रेषित करता है। सरल शब्दों में कह सकते हैं कि संदेश भेजने वाले को प्रेषक कहा जाता है। शिक्षा व्यवस्था में मुख्य प्रेषक शिक्षक होता है। अतः शिक्षक को अपना संदेश भली-भाँति प्रेषित करने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए–

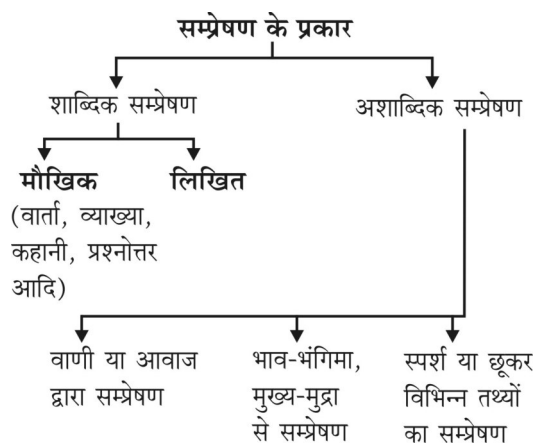
- छात्रों का बौद्धिक स्तर
- विषय-वस्तु का चयन
- पाठ्ययोजना का निर्माण
- उद्देश्य की जानकारी
- उचित शिक्षण विधि एवं सहायक सामग्री का प्रयोग
- वैयक्तिक भिन्नताओं का ध्यान
- बालक का मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य
- समवाय विषयों के सह-सम्बन्ध पर आधारित शिक्षण सम्प्रेषण
- अभिप्रेरणा
- निष्पक्ष भाव

2. **संदेश** (Message)–शिक्षण में संदेश से आशय पाठ्य वस्तु से है। प्रेषक, प्रापक को जो कुछ भी सिखाना चाहता है, इस कार्य हेतु अपना जो अनुभव व ज्ञान वह शिक्षण के माध्यम से प्रेषित करता है उसे संदेश कहते हैं। यहाँ प्रेषक, शिक्षक तथा प्रापक, शिक्षार्थी होता है।
3. **माध्यम** (Media)–माध्यम प्रेषक और प्रापक के बीच मेल कराता है। माध्यम के द्वारा ही प्रेषक अपने संदेशों को प्रापक तक पहुँचाता है। वर्तमान समय में भाषा एवं भाव-भंगिमा के अतिरिक्त अनेक प्रकार के माध्यम प्रचलित हैं जैसे-रेडियो, टेलीविजन, ओवर हेड प्रोजेक्टर, टेलीफोन, कम्प्यूटर आदि के माध्यम से प्रेषक अपने संदेशों को प्रापक तक पहुँचा सकता है।

4. **प्रापक या ग्राही** (Achiever)–संदेश को प्राप्त करने वाला ही प्रापक कहलाता है। प्रेषक जिस रूप में संदेश को भेज रहा है प्रापक उसी रूप में संदेश को ग्रहण कर रहा है या नहीं इसकी जानकारी प्रेषक को अवश्य होनी चाहिए। इसके लिए प्रापक सूचना या संदेश प्राप्त करता है और समझता है फिर प्रतिपुष्टि देता है।

5. **प्रतिपुष्टि** (Feed Back)–प्रापक जब प्रेषक द्वारा भेजे गये संदेश को समझ लेता है तो प्रेषक को प्रतिपुष्टि प्रदान करता है। प्रतिपुष्टि एक प्रकार का पुनर्बलन होता है, जो प्रेषक के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होता है।

सम्प्रेषण के प्रकार-



वैयक्तिक सम्प्रेषण-

जब शिक्षक प्रत्येक बालक को अलग-अलग शिक्षण देता है तो इसे वैयक्तिक सम्प्रेषण कहा जाता है।

- **ए. जी. मेलबिन के अनुसार**–“विचारों का आदान-प्रदान अथवा व्यक्तिगत वार्तालाप द्वारा बालकों को अध्ययन में सहायता, आदेश तथा निर्देश प्रदान करने के लिए शिक्षक का प्रत्येक बालक से पृथक-पृथक साक्षात्कार करना व्यक्तिगत सम्प्रेषण है।”

वैयक्तिक सम्प्रेषण के उद्देश्य-

- छात्रों की रुचियों, अभिरुचियों, आवश्यकताओं तथा मानसिक योग्यताओं के अनुसार शिक्षण देना।
- बालकों की विशिष्ट योग्यताओं और व्यक्तित्व का विकास करना।

वैयक्तिक सम्प्रेषण के गुण-

- इस विधि में बालक स्वयं करना सीखता है।
- यह विधि प्रखर बुद्धि, मंद बुद्धि दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी है
- शिक्षक बालक पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दे सकता है।

वैयक्तिक सम्प्रेषण के दोष-

- यह विधि व्ययपूर्ण है
- इस विधि द्वारा बालक में सामाजिकता के गुण विकसित नहीं किये जा सकते।
- यह विधि बालक के दृष्टिकोण को संकुचित करती है।

सामूहिक सम्प्रेषण-

सामूहिक सम्प्रेषण का अर्थ कक्षा शिक्षण है। इस विधि में एक कक्षा के सभी छात्रों के लिए सामूहिक शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है।

सामूहिक सम्प्रेषण के गुण

- यह विधि सरल तथा सस्ती है।
- यह विधि छात्रों को व्यवहारकुशल बनाती है।
- यह विधि नेतृत्व के गुणों का विकास करती है।
- यह विधि छात्रों में सामाजिक एवं नैतिक गुणों का विकास करती है।

सामूहिक सम्प्रेषण के दोष-

- इस विधि को बालकेन्द्रित नहीं माना जाता है।
- इस विधि में बालक और छात्र के मध्य सम्पर्क नहीं बन पाता है।
- इस विधि में वैयक्तिक भिन्नता उपेक्षित होती है।

प्रभावी सम्प्रेषण के तरीके-

- शिक्षण के उद्देश्य स्पष्ट तथा विशिष्ट होने चाहिए।
- कक्षा का वातावरण सरल, सौहार्द, स्नेह तथा सहानुभूति युक्त होना चाहिए।
- सम्प्रेषण प्रेरणाप्रद होना चाहिए।
- सम्प्रेषण बाल केन्द्रित होना चाहिए।
- सम्प्रेषण सुनियोजित होना चाहिए।
- कक्षा का वातावरण प्रजातांत्रिक होना चाहिए।
- विषय-वस्तु में क्रमबद्धता होनी चाहिए।
- विषय-वस्तु का पूर्व ज्ञान से सम्बन्ध होना चाहिए।
- शिक्षण उपचारात्मक होना चाहिए।
- सम्प्रेषण माध्यमों या शिक्षण सहायक सामग्री का समुचित प्रयोग होना चाहिए।

शिक्षण के सिद्धान्त

1. **क्रियाशीलता का सिद्धान्त**—इस सिद्धान्त के अनुसार सीखने के लिए शिक्षक तथा विद्यार्थी का क्रियाशील होना आवश्यक होता है। यह बाल मनोविज्ञान का आधारभूत सिद्धान्त है। इसमें सीखने वाले का पूरी अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रहना परम आवश्यक है।

➤ **फ्राबेल के अनुसार**—“बालक कार्य करके ही सीखते हैं और क्रिया द्वारा सीखना स्थायी सीखना है।”

➤ माण्टेसरी, किण्डरगार्टन, डाल्टन ऐसी ही कुछ पद्धतियाँ हैं, जो क्रियाशीलता पर जोर देती हैं। महात्मा गाँधी द्वारा चलायी गयी बेसिक योजना तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में करके सीखना, को मूलभूत सिद्धान्त के रूप में मान्यता दी गयी है।

➤ स्वयं कार्य करने से पाठ या कार्य जल्दी सीख जाते हैं, आत्मविश्वास बढ़ता है तथा व्यवहार परिमार्जन होता है।

2. **प्रेरणा का सिद्धान्त**—प्रेरणा बालक की वह आंतरिक शक्ति है जो उसमें ऐसी क्रियाशीलता उत्पन्न करती है, जो उद्देश्य प्राप्ति तक चलती रहती है। प्रेरित हो जाने पर बालक स्वयं क्रियाशील हो जाता है, वह अपने कार्य में रुचि लेने लगता है। अतः शिक्षक को ऐसे अधिगम परिस्थितियों का निर्माण करना चाहिए जिसमें छात्र स्वयं प्रेरित हो सकें।

3. **रुचि का सिद्धान्त**—छात्र को जिस कार्य में रुचि होती है उसे वह पूरे मन से करता है। इसलिए शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए पाठ्यवस्तु में छात्र की रुचि जागृत करना आवश्यक होता है।

पिसेण्ट के अनुसार—“जब तक छात्रों में सक्रिय रुचि नहीं होगी तब तक शिक्षण का सर्वोत्तम कार्य नहीं होगा।

4. **निश्चित उद्देश्य का सिद्धान्त**—प्रत्येक कार्य का कोई उद्देश्य होता है अतः प्रत्येक पाठ का भी निश्चित उद्देश्य होना चाहिए। उद्देश्य का पूर्व और पूर्ण ज्ञान ही, उसके शिक्षण को स्पष्ट रोचक तथा प्रभावशाली बनाता है।

5. **नियोजन का सिद्धान्त**—अच्छे शिक्षण का आधार नियोजन है। अतः किसी भी पाठ को पढ़ाने से पहले शिक्षक को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि उसे क्या पढ़ाना है, किस विधि को अपनाना है तथा किस सहायक सामग्री का उपयोग करना है आदि। इसके साथ ही नियोजन परिवर्तनशील व लचीली होनी चाहिए।

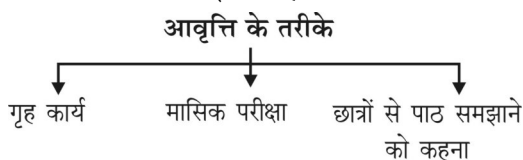
6. **चयन का सिद्धान्त**—शिक्षक किसी बात से सम्बन्धित सम्पूर्ण ज्ञान को छात्रों को 40-50 मिनट की अवधि में नहीं प्रदान कर सकता है। अतः उसके लिए विद्यार्थियों की आवश्यकता तथा विषय-वस्तु की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए पाठ्य-वस्तु का चयन करना चाहिए। रायबर्न ने लिखा है—“शिक्षक के अच्छे चयन की योग्यता पर उसके कार्य की सफलता निर्भर करती है।”

7. **वैयक्तिक विभिन्नता का सिद्धान्त**—बाल-मनोविज्ञान के अनुसार प्रत्येक विद्यार्थी विशिष्ट होते हैं तथा उनकी विशिष्ट योग्यता व क्षमता होती है। अतः शिक्षक के द्वारा अपने शिक्षण कार्य को आयोजित करते समय विद्यार्थियों की वैयक्तिक भिन्नताओं को ध्यान में रखना चाहिए, जिससे सभी विद्यार्थियों की अधिगम आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाये।

8. **लोकतांत्रिक व्यवहार का सिद्धान्त**—शिक्षक को छात्रों का पथ-प्रदर्शक और मित्र होना चाहिए। उसे उनको प्रश्न पूछने, अपने विचारों को व्यक्त करने और अपने संदेहों का निवारण करने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता देनी चाहिए।

9. **जीवन से सम्बन्ध स्थापित करने का सिद्धान्त**—विषय-वस्तु को जीवन की वास्तविकता से जोड़कर शिक्षण करने पर विद्यार्थी विषय-वस्तु की सार्थकता समझकर उसके अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस करने लगते हैं। इसलिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा-2005 में शिक्षा को जीवन से जोड़ने की बात पर जोर दिया गया है।

10. **आवृत्ति का सिद्धान्त**—अर्जित ज्ञान को स्थायी बनाने के लिए उसे दोहराना चाहिए। पाठ्य वस्तु की बातों को दोहराने से छात्र उसे भली प्रकार से समझ जाते हैं।



11. **निर्माण व मनोरंजन का सिद्धान्त**—शिक्षण में इस बात का ध्यान देना चाहिए कि जो भी पाठ पढ़ाना हो उसको कक्षा में सीखने वालों की सृजनात्मक क्रियाओं द्वारा विकसित करते हुए पढ़ाया जाये। साथ ही शिक्षण कार्य को इस ढंग से सम्पन्न किया जाये कि शिक्षार्थीगण शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में स्वाभाविक आनन्द व लगाव का अनुभव करें।

12. **विभाजन का सिद्धान्त**—इसे लघु सोपानों का सिद्धान्त भी कहते हैं। शिक्षक को चाहिए कि पाठ्यवस्तु को विभाजित करके सरल से कठिन की ओर अग्रसर हो ताकि तारतम्यता बनी रहे और सम्प्रेषण व्यवहारिक बना रहे।

13. **पुनर्बलन का सिद्धान्त**—इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षण कार्य को करने के उपरान्त शिक्षक को विद्यार्थियों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध व कौशल आदि को बार-बार पुनर्बलित अवश्य करना चाहिए।

शिक्षण के सूत्र

शिक्षण सूत्र का अर्थ एवं परिभाषा-

शिक्षण सूत्र वे मार्ग होते हैं जिस पर चलकर शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया सुगम, रुचिकर, प्रभावशाली व वैज्ञानिक बन जाती है। ये सूत्र बाल प्रकृति पर आधारित हैं।

➤ **रेमण्ट के अनुसार**—“शिक्षण सूत्र पथ प्रदर्शन करते हैं जिसमें सिद्धान्त, सिद्धान्त से व्यवहार में सहायता के लिए अपेक्षा की जाती है।”

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि शिक्षकों द्वारा अध्ययन-अध्यापन को प्रभावशाली बनाने के लिए एवं छात्रों को अध्ययन के प्रति जागरूक तथा क्रियाशील बनाने हेतु जो तकनीकें एवं विधियाँ प्रयोग में लायी जाती हैं, वह शिक्षण सूत्र कहलाती हैं।

हरबर्ट स्पेन्सर तथा कामेनियस ने शिक्षण सूत्रों को खोजने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। कुछ शिक्षण सूत्र निम्नलिखित हैं—

1. **सरल से कठिन की ओर**—इस सूत्र के अनुसार छात्रों को पहले सरल व फिर कठिन बातों की जानकारी दी जाये, जिससे पाठ व विषय में उनकी रुचि व ध्यान लगा रहे। यह क्रम बाल विकास के अनुकूल व मनोवैज्ञानिक है।

2. **ज्ञात से अज्ञात की ओर**—शिक्षक को पहले वे बातें बतानी चाहिए जिन्हें छात्र जानता है फिर उस विषय-वस्तु पर आना चाहिए जिन्हें वह नहीं जानता है क्योंकि सर्वथा नवीन तथ्य बच्चे के लिए कठिन होते हैं। अतः नवीन ज्ञान पूर्व ज्ञान पर आधारित होना चाहिए।

3. **स्थूल से सूक्ष्म की ओर**—इसे मूर्त से अमूर्त की ओर शिक्षण सूत्र भी कहा जाता है। शिक्षकों को छोटे बच्चों को पढ़ाते समय प्रारम्भ में केवल मूर्त या स्थूल वस्तुओं का ही प्रयोग करना चाहिए और उनकी सहायता से सूक्ष्म बातों को बताना चाहिए।

4. **पूर्ण से अंश की ओर**—इस सूत्र का आधार गेस्टाल्टवाद है। गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बालक सर्वप्रथम किसी वस्तु को पूर्ण रूप से ही देखता है, जानता है व समझता है, फिर उसके विभिन्न अंगों को देखता है। अतः शिक्षक को चाहिए कि विषय-वस्तु का पूर्ण रूप प्रस्तुत करने के बाद ही उसके खण्डों को प्रस्तुत करे। जैसे-किसी वृक्ष के अध्ययन में सर्वप्रथम सम्पूर्ण वृक्ष को फिर उसके बाद टहनियों, पत्तियों आदि की चर्चा करनी चाहिए।

5. **अनिश्चित से निश्चित की ओर**—इस शिक्षण सूत्र के अनुसार शिक्षक को शिक्षण करते समय विद्यार्थियों के अनिश्चित विचारों, सूचनाओं, समझ या सम्बन्धों आदि को निश्चितता प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए।

6. **प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर**—इस शिक्षण सूत्र के अनुसार छात्रों को सबसे पहले उसके द्वारा देखी गयी वस्तुओं के बारे में बताना चाहिए। तत्पश्चात् उन वस्तुओं के बारे में चिन्हें वह देख नहीं सकता है। क्योंकि देखी गयी वस्तुओं का ज्ञान वे आसानी से ग्रहण कर लेते हैं।

7. **विशिष्ट से सामान्य की ओर**—शिक्षण का यह सूत्र आगमन विधि पर आधारित है। इसमें शिक्षक छात्रों के सामने कुछ विशिष्ट उदाहरण रखता है और छात्र उसकी परीक्षा करके उनसे सम्बन्धित सामान्य नियम निकालते हैं। इस सूत्र को ‘दृष्टांत से सिद्धान्त की ओर’ भी कहते हैं।

8. **विश्लेषण से संश्लेषण की ओर**—इस सूत्र के अनुसार किसी घटना या तथ्य की जानकारी पहले समग्र रूप से कराकर फिर उसके विविध भागों की व्याख्या व विश्लेषण द्वारा स्पष्ट किया जाना चाहिए तत्पश्चात् उन भागों या खण्डों को आपस में जोड़कर पूरी जानकारी कराकर निष्कर्ष तक पहुँचना चाहिए।

9. **मनोवैज्ञानिक क्रम से तर्कसंगत की ओर**—बालक की शिक्षा उसकी रुचियों, रुझानों, क्षमताओं व जिज्ञासाओं के अनुसार प्रदान करनी चाहिए और जैसे-जैसे उसके ज्ञान का विकास होता जाये, उसे विषय का तार्किक व क्रमबद्ध ज्ञान प्रदान किया जाये।

10. **अनुभव से युक्तियुक्त की ओर**—बालक को प्रत्येक बात का ज्ञान पहले अनुभव के द्वारा प्रदान करना चाहिए और फिर उसे तर्कपूर्ण बनाना चाहिए क्योंकि बालक का प्रारम्भिक ज्ञान अनुभव प्रदत्त ही होता है।

11. **प्रकृति का अनुसरण**—शिक्षक को बालक की प्रकृति का सदैव ध्यान रखना चाहिए। बालक को जो भी शिक्षा दी जाय, उसके शारीरिक और मानसिक विकास के अनुरूप होनी चाहिए। ऐसा न करने से बालक के स्वभाविक विकास में बाधा पड़ सकती है।

अच्छे शिक्षण की विशेषताएँ

- अच्छा शिक्षण सुनियोजित होता है।
- अच्छा शिक्षण तैयारी का साधन होता है।
- अच्छे शिक्षण के लिए विषय-वस्तु पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए।
- शिक्षक व छात्रों के मध्य सहानुभूतिपूर्ण सम्बन्ध।
- मानवीय विकास का पर्याप्त ज्ञान।
- मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का उपयोग
- कक्षा-कक्ष सहयोगी एवं प्रजातांत्रिक
- अच्छा शिक्षण प्रेरणादायक होता है।
- शिक्षण क्रियाशील, गतिशील तथा संघर्षपूर्ण होना चाहिए।

शिक्षण प्रविधियाँ

- **थिंग के अनुसार**—“शिक्षक शिक्षण प्रविधियों द्वारा अपने छात्रों को कार्य करने के योग्य बनाता है और स्वयं यह दर्शाने में लगा रहता है कि इस कार्य को कैसे किया जायेगा साथ ही इस बात के लिए सतर्क रहता है कि वे इसे करें।”

अर्थात् विशिष्ट प्रकार के शिक्षण सम्बन्धी क्रिया-कलापों को शिक्षण युक्तियाँ या शिक्षण प्रविधियाँ कहते हैं।

1. प्रश्नोत्तर प्रविधि—

शिक्षण कार्य की शुरुआत प्रश्न विधि से किया जाये तो शिक्षक अपनी समस्त शिक्षण योजना को नियोजित स्वरूप दे सकता है। इस विधि के जन्मदाता सुकरात माने जाते हैं। इन्होंने इसके तीन सोपान बताए हैं—

- निरीक्षण
- अनुभव
- परीक्षण

प्रश्न प्रविधि के प्रमुख प्रयोजन निम्न हैं—

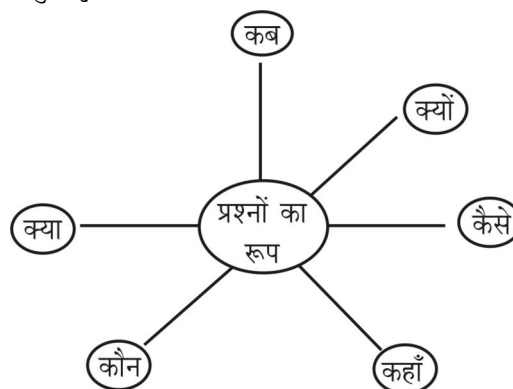
- जिज्ञासा उत्पन्न करना।
- पाठ विस्तार करना।
- समस्या समाधान की क्षमता का विकास करना।
- नवीन ज्ञान का पूर्व ज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करना।
- कक्षा अनुशासन बनाना।
- शिक्षण का मूल्यांकन करना।

- **पॉर्कर के अनुसार**—“प्रश्न आदत कौशल के स्तर से ऊपर उठकर समस्त क्रियाओं की कुंजी है।”

प्रश्नों के प्रकार—

- | | |
|----------------------|----------------------|
| 1. प्रस्तावना प्रश्न | 2. विचारात्मक प्रश्न |
| 3. बोध प्रश्न | 4. विकासात्मक प्रश्न |

- | | |
|-----------------------|---------------------|
| 5. समस्या प्रश्न | 6. तुलनात्मक प्रश्न |
| 7. पुनरावृत्ति प्रश्न | |



प्रश्न से सम्बन्धित प्रमुख बातें—

- प्रश्न सरल तथा स्पष्ट हो।
- प्रश्न पाठ्यवस्तु से सम्बद्ध हो।
- प्रश्न सम्पूर्ण कक्षा से किये जायें।
- प्रश्न पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए पाठ का विस्तार करने वाले हों।

उत्तर देते समय निम्नलिखित तथ्यों का पालन होना चाहिए—

- उत्तर देते समय छात्रों को सीधा खड़ा होकर उचित स्वर में बोलना चाहिए।
- एक समय में एक ही छात्र उत्तर दे।
- उत्तर देने के लिए प्रतिभाशाली व कमजोर दोनों प्रकार के छात्रों को प्रेरित करना चाहिए।
- सही उत्तर देने पर पुनर्बलन प्रदान करना चाहिए।

2. विवरण प्रविधि—

विवरण विधि के माध्यम से छात्रों के मस्तिष्क में वस्तुओं तथा घटनाओं के मानसिक चित्र इतने सजीव ढंग से प्रस्तुत किये जाते हैं कि वे पाठ्यवस्तु को आसानी से समझ जाते हैं।

विवरण विधि की विशेषताएँ—

- स्थायी स्मृति का विकास करना।
- तार्किक क्षमता का विकास करना।
- अमूर्त घटनाओं या वस्तुओं को मूर्त रूप देना।
- ध्यान केन्द्रित करना।
- बोध विस्तार करना।

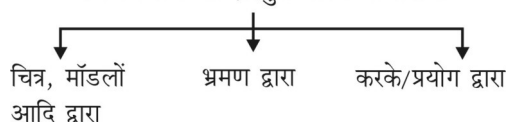
विवरण विधि से शिक्षण करते समय सावधानियाँ—

- विवरण विषय-वस्तु से सम्बन्धित हो।
- विवरण सरल व स्पष्ट हो।
- विवरण, चित्र, मॉडल, श्यामपट्ट के द्वारा प्रस्तुत किया जाये।
- विवरण ज्यादा बड़ा न हो।

3. वर्णन प्रविधि—

वर्णन प्रविधि में किसी घटना, दृश्य एवं नियम का विस्तार से कथन किया जाता है ताकि छात्रों को पाठ अच्छी तरह से समझ में आ जाये।

वर्णन विधि को प्रस्तुत करने के तरीके



- वर्णन विधि और विवरण विधि में अंतर होता है। विवरण विधि में टीका-टिप्पड़ी तथा विश्लेषण की भावना निहित होती है जबकि वर्णन में विषय का सांगोपांग विवेचन, स्पष्टीकरण एवं संश्लेषण मुख्य उद्देश्य होता है।

इस विधि से शिक्षण करते समय शिक्षक को कुछ बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए—

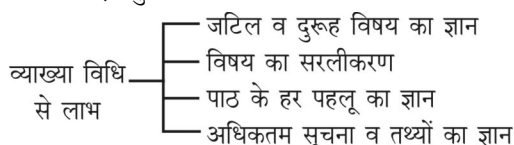
- वर्णन विषय-वस्तु से सम्बद्ध हो।
- वर्णन की भाषा शैली सरल व स्पष्ट हो।
- वर्णन समग्र रूप में प्रस्तुत किया जाये।
- वर्णन क्रमबद्ध और आवश्यकतानुसार हो।
- वर्णन स्तरानुकूल हो।

4. व्याख्या प्रविधि—

व्याख्या विधि का प्रयोग विषय-वस्तु को भली-भाँति व गहनता से स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। व्याख्या के द्वारा शिक्षक कठिन शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों, विचारों, तथ्यों, सिद्धान्तों या अनुप्रयोगों आदि का विश्लेषण करके उनकी जटिलता और दुरुहता को सरलता में परिवर्तित कर कर देता है जिससे पाठ्य-वस्तु विद्यार्थियों के लिए बोधगम्य व ग्राह्य बन जाती है।

व्याख्या विधि एकतरफा सम्प्रेषण होता है जिसमें शिक्षक सूचनाओं का सम्प्रेषण करता है। इसे रुचिकर व उपयोगी बनाने के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना आवश्यक होता है—

- उद्देश्यों को निश्चित कर लेना चाहिए।
- व्याख्या स्तरानुकूल होना चाहिए।
- व्याख्या की भाषा सरल व स्पष्ट होनी चाहिए।
- व्याख्या को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक को चित्र, मॉडलों, उदाहरणों एवं तुलना के तरीकों का समावेशन करना चाहिए।



5. स्पष्टीकरण प्रविधि—

किसी वस्तु, विषय, घटना को अच्छी तरह समझाना स्पष्टीकरण कहलाता है। इस विधि को उद्घाटन प्रविधि भी कहते हैं। यह विधि ज्यादातर जटिल विषयों को सरल रूप से बोधगम्य बनाने के काम आती है। स्पष्टीकरण विधि का प्रयोग करने के लिए शिक्षक को विषय-वस्तु का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक होता है।

- स्पष्टीकरण विधि को सफल बनाने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए—

- पाठ्यवस्तु को छोटे-छोटे भागों में विभाजित करके उसे तार्किक क्रम में नियोजित कर लेना चाहिए।
- स्पष्टीकरण की भाषा सरल व शुद्ध रखना चाहिए।
- स्पष्टीकरण के अंत में प्रश्न अवश्य पूछें।

6. कहानी कथन प्रविधि—

कहानी कथन विधि में कहानी कहते समय विषय-वस्तु के सूक्ष्म तथा जटिल भागों को इतना सरल एवं स्पष्ट बनाया जाता है जिससे कि कक्षा के सभी छात्रों को वे स्पष्ट हो जायें। इस विधि का प्रयोग प्रायः छोटी कक्षाओं तक सीमित है।

कहानी विधि का महत्व

- एकाग्रता
- कल्पना शक्ति का विकास
- अधिग की तीव्रता

कहानी कथन विधि को प्रभावी बनाने के उपाय

- कहानी कथन स्तरानुकूल हो।
- कहानी कथन की भाषा स्पष्ट तथा सरल हो।
- कहानी कथन में प्रसंगानुसार हाव-भाव, आरोह-अवरोह हो।
- कहानी कथन के बाद अधिगमकर्ता से बोधगम्यता के प्रश्न पूछे जायें।

7. निरीक्षण व अवलोकन प्रविधि—

शिक्षण करते समय यदि छात्र को पाठ्य-विषय में शामिल वस्तुओं या घटनाओं के अवलोकन एवं निरीक्षण का अवसर दिया जाये तो शिक्षण अधिगम प्रभावशाली होगा। वास्तव में किसी वस्तु, स्थान, कार्य का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करना ही अवलोकन है। सभी विषयों में विशेषकर विज्ञान, कृषि तथा समाज विज्ञान के लिए यह अधिक उपयोगी है।

इस विधि से शिक्षण करते समय ध्यातव्य बिन्दु—

- अवलोकन निरीक्षण की प्रक्रिया क्रमबद्ध हो।
- उद्देश्य का पूर्व निर्धारण आवश्यक होता है।
- छात्रों को शिक्षक के मार्गदर्शन में ही अवलोकन निरीक्षण करना चाहिए।
- अवलोकन निरीक्षण के बाद उसकी व्याख्या लेखन आवश्यक है।

8. उदाहरण प्रविधि—

किसी सूक्ष्म, गूढ़ व अमूर्त विचार को स्पष्ट करने के लिए तथा उसे स्थूल व मूर्त रूप में प्रस्तुत करने के लिए उदाहरण युक्ति का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण प्रस्तुत करने पर अमूर्त विचार काफी हद तक मूर्त हो जाता है, कठिन बातें सहज व बोधगम्य हो जाती हैं, अरोचक विवरण रोचक हो जाता है तथा पाठ में अस्पष्टता के स्थान पर स्पष्टता आ जाती है।

उदाहरण विधि को प्रभावी बनाने के उपाय—

- उदाहरण सरल व स्पष्ट भाषा में हो।
- उदाहरणों में विविधता हो।

■ उदाहरण स्तरानुकूल हो।

■ उदाहरण सरल से कठिन की ओर तथा ज्ञात से अज्ञात की ओर उन्मुख हो।

9. खेल प्रविधि—

➤ **ह्यूजेज एवं ह्यूजेज के अनुसार—**“वह विधि जो बालकों को उसी उत्साह से सीखने की क्षमता देती है जो उनमें स्वाभाविक रूप में पायी जाती है, प्रायः खेल विधि कहलाती है।”

यह विधि सीखने के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है। रायबर्न ने इसके महत्व को बताते हुए कहा है—‘यह विधि बालक की रचनात्मक शक्तियों को प्रोत्साहित करती है, सामाजिक गुणों को विकसित करती है तथा सामूहिक प्रवृत्ति का विकास करती है। खेल विधि के द्वारा बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक शक्तियों का विकास किया जा सकता है।

10. समूह चर्चा प्रविधि—

किसी विषय पर एक से अधिक लोगों द्वारा चिंतन और वार्तालाप करने को समूह चर्चा विधि कहते हैं। इस विधि से शिक्षण करने से सुनने, समझने आदि का कौशल विकसित होता है।

महत्व—

- सामाजिकता का विकास
- लोकतांत्रिक भावना का विकास
- ज्ञानवर्द्धन
- स्वतंत्रता की भावना को महत्व

समूह-चर्चा विधि को प्रभावी बनाने हेतु प्रमुख बिन्दु—

- चर्चा का विषय स्पष्ट होना चाहिए।
- चर्चा का माध्यम एक भाषा होनी चाहिए।
- अनावश्यक विवाद न हो, शिक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए।
- चर्चा के अन्त में प्रश्न पूँछकर बोधगम्यता का पता लगाना चाहिए।

11. प्रयोगात्मक प्रविधि—

इस विधि का आधार वैज्ञानिकता एवं तार्किकता है। प्रयोग द्वारा शिक्षण करने से छात्र सक्रिय एवं एकाग्र रहते हैं और स्वयं करके सीखने का अवसर प्राप्त होने से अधिगम स्थायी होता है। इस विधि में बालक की समस्त इन्द्रियाँ सक्रिय रहती हैं।

महत्व—

- प्रयोग विधि से क्रियाशीलता बनी रहती है।
- ज्ञान प्रक्रिया दो तरफा होती है।
- कल्पना व यथार्थ का अंतर पता चलता है।
- जिज्ञासा पूर्ति में सहायक होती है।

12. वाद-विवाद प्रविधि—

जब किसी विषय पर चर्चा के लिए दो पक्ष होते हैं उनके अलग-अलग मत होते हैं और दोनों की चर्चा के बाद निष्कर्ष निकाला जाता है। इसी विधि को वाद-विवाद विधि कहते हैं।

महत्व—

- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होती है।
- तथ्य को स्पष्ट करने में सहायता मिलती है।
- मानसिक विकास के लिए उपयोगी है।
- सुनने, बोलने का कौशल विकसित होता है।

13. कार्यशाला प्रविधि—

कार्यशाला एक निश्चित विषय पर परिचर्या का प्रायोगिक कार्य होता है, जिसमें सभी प्रतिभागी सदस्य अपने ज्ञान, अनुभवों व कौशलों के पारस्परिक आदान-प्रदान के द्वारा विषय के बारे में सीखते हैं।

कार्यशाला वह प्रविधि है, जिसमें छात्र वास्तविक रूप से सक्रिय रहकर कार्य करते हुए अपने व समूह के सदस्यों के अनुभवों के पारस्परिक आदान-प्रदान के द्वारा किसी विषय की जानकारी प्राप्त करता है। चूँकि छात्र इसमें सक्रिय प्रतिभाग करते हैं, अतः प्राप्त ज्ञान स्थायी, विश्वसनीय व उपयोगी होता है। इस प्रविधि का प्रयोग छात्रों के क्रियात्मक पक्ष के विकास के लिए किया जाता है।

कार्यशाला प्रविधि के उद्देश्य—

- शिक्षण सम्बन्धी समस्याओं का समाधान खोजना।
- किसी प्रकरण के व्यावहारिक पक्ष को खोजना।
- शिक्षण की विशिष्ट क्षमताओं का विकास करना।
- शिक्षा व शिक्षण के नवीन उपागमों का प्रशिक्षण देना।

कार्यशाला का क्षेत्र—

- पाठ योजना के नवीन प्रारूप बनाने हेतु।
- क्रियात्मक शोध के प्रयोग हेतु।
- विविध प्रकार के प्रश्नावली के निर्माण हेतु।

कार्यशाला में शिक्षण क्रम—

- समस्या का चयन, प्रस्तुतीकरण व स्पष्टीकरण।
- पाठ पर आधारित कार्य।
- कार्य का अभ्यास।
- वास्तविक अनुभवों का आदान-प्रदान।
- सहभागियों के साथ कार्य।
- कार्यों/तैयारी सामग्री की जाँच/परीक्षण।
- निष्कर्ष।

14. भ्रमण प्रविधि—

इस विधि में स्थलों, वस्तुओं या घटनाओं से सम्बन्धित ज्ञान भ्रमण के द्वारा प्राप्त किया जाता है। इस विधि को शैक्षिक भ्रमण भी कहते हैं। भ्रमण के पश्चात् सीखी गयी बातों का लेखन अवश्य करवाना चाहिए ताकि ज्ञान स्थायी रह सके।

भ्रमण विधि के लाभ—

- सीखने में स्वतंत्रता रहती है।
- सामाजिक भावना का विकास होता है।
- समस्त इन्द्रियाँ क्रियाशील रहती हैं।
- विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान सहजता से हो जाता है।

शिक्षण की नवीन विधाएँ (उपागम)

1. बाल केन्द्रित शिक्षण उपागम-

बाल केन्द्रित शिक्षण उपागम में शिक्षण का केन्द्र बिन्दु बालक होता है। बालक की रुचियों, प्रवृत्तियों तथा क्षमताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण प्रदान किया जाता है। इसमें बालक का व्यक्तिगत निरीक्षण कर उसकी दैनिक कठिनाइयों को दूर करने के साथ ही उसे स्वावलम्बी बनाकर उसमें स्वतंत्रता की भावना उत्पन्न की जाती है।

उद्देश्य-

- स्वयं करके सीखने की प्रवृत्ति विकसित करना।
- चिंतन, मनन, जिज्ञासा जैसी प्रवृत्तियों का विकास करना।
- स्वतंत्र रूप से कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- शारीरिक दण्ड प्रक्रिया को बहिष्कृत करना।
- पढ़ाने के बजाय सिखाने की क्रिया पर जोर देना।

बाल केन्द्रित शिक्षण उपागम में शिक्षक की भूमिका-

- बाल केन्द्रित शिक्षण में शिक्षक बालकों का सहयोगी, सेवक तथा मार्गदर्शक के रूप में होता है। वह बालकों का सभी प्रकार से मार्गदर्शन करता है और विभिन्न क्रियाकलापों को क्रियान्वित करने में सहायता करता है।
- शिक्षक वह धुरी है जिस पर बाल केन्द्रित शिक्षण कार्य करता है। बाल केन्द्रित शिक्षण में शिक्षक माली के सदृश पौधों के समान बालकों का पोषण करके उनका शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक विकास करता है।
- बाल केन्द्रित शिक्षा में-
 - शिक्षक बच्चों से मित्रवत व्यवहार करते हैं।
 - शिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका में होते हैं।
 - बच्चों की कठिनाइयों को दूर करते हैं।
 - बच्चों को नाम से सम्बोधित करते हैं।
 - शिक्षण अधिगम सामग्री को अधिक से अधिक प्रयोग करते हैं।
 - बच्चों को अभिव्यक्ति का अवसर देते हैं।

बाल केन्द्रित शिक्षा का महत्व-

- बालक प्रधान शिक्षण।
- सरल और रुचिपूर्ण शिक्षण।
- आत्माभिव्यक्ति के अवसर।
- ज्ञानेन्द्रियों के प्रशिक्षण पर बल।
- क्रियाशीलता पर आधारित शिक्षा।
- स्वयं करके सीखने पर बल।
- शिक्षक सुविधा प्रदाता के रूप में।
- क्रियाकलाप के अनुसार बैठने की व्यवस्था।
- प्रश्न पूछने, खोजने, प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहन।
- सतत आकलन।

2. क्रिया या गतिविधि आधारित शिक्षण उपागम-

उन सभी क्रियाओं के द्वारा जिनमें बच्चे रुचिपूर्वक, जिज्ञासा, कौतुहल, लगन तथा मनोयोग से सक्रिय रहकर कार्य करते हुए सीखते हैं, गतिविधि कहलाती है। गतिविधि या क्रियापरक शिक्षण उपागम का अर्थ है-छात्र का अपनी स्वयं की क्रिया के द्वारा ज्ञान प्राप्त करना। छात्र की क्रिया से तात्पर्य है कि जिस क्रिया को छात्र किसी उद्देश्य से पूर्ण करता है।

शोइनचेन के अनुसार-“क्रिया परक विधि का प्रयोग उस समय किया जाता है जब किसी विषय के शिक्षण में लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए छात्रों के द्वारा किसी प्रकार की क्रिया की जाती है।

शारीरिक क्रिया-कदमताल, पी.टी., उछल कूद आदि।

मानसिक क्रिया-चिंतन, मनन, तर्क, वर्ग पहेली आदि।

उद्देश्य-

- बच्चों की रुचियों, मनोवृत्तियों व स्तर को समझते हुए शिक्षण करना।
- खेल-खेल में शिक्षण करना।
- बच्चों में सक्रियता का विकास करना।
- शिक्षण को रोचक व प्रभावी बनाना।

गतिविधि आधारित शिक्षण उपागम के लाभ-

- शारीरिक क्षमता का विकास।
- दिशाओं का ज्ञान।
- जोड़ व घटाने का ज्ञान।
- पशु-पक्षी सम्बन्धी भेद ज्ञान।
- पशु-पक्षी के नामों की जानकारी।

गतिविधि आधारित शिक्षण उपागम के प्रयोग में ध्यान देने योग्य मुख्य बातें-

- कक्षा में सभी बच्चों को गतिविधि में भाग लेने के अवसर मिलें।
- बच्चों में किसी प्रकार का भय न हो तथा गतिविधि रुचिकर हो।
- गतिविधि बच्चों में प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने वाली हो।
- बच्चों को शारीरिक क्रिया के साथ-साथ मानसिक क्रिया का भी अभ्यास हो।
- गतिविधि के नियम लचीले हों।

गतिविधियाँ कराने के ढंग-

शिक्षक तीन प्रकार की गतिविधियों (यथा ज्ञान प्राप्त करने वाली, ज्ञान व्यक्त करने वाली तथा अनुभव करने वाली) के द्वारा रोचकतापूर्ण वातावरण का सृजन करके सीखने की क्रिया को सहजता प्रदान कर सकता है। ये गतिविधियाँ लिखित, मौखिक, एकल, सामूहिक, सामग्री के साथ या सामग्री के बिना किसी भी रूप में करायी जा सकती हैं।

गतिविधि आधारित शिक्षण विधि की विशेषताएँ -

- स्वयं करके सीखने पर बल।
- मनोरंजक व रुचिपूर्ण।
- बालकेन्द्रिता पर बल।
- हस्तकौशल का विकास।
- वास्तविक परिस्थिति में ज्ञानार्जन पर बल।

3. रुचिपूर्ण/आनन्ददायी शिक्षण उपागम-

- रुचिपूर्ण शिक्षण से आशय ऐसी विधा से है जो बालक की अभिरुचियों को ध्यान में रखते हुए उनके सर्वांगीण विकास हेतु विकसित की गयी है।
- रुचिपूर्ण शिक्षण एक समयबद्ध कार्यक्रम तथा सुविचारित रणनीति है, यह बालकों को शिक्षा देने हेतु आकर्षक एवं बाल केन्द्रित प्रणाली है, जिसमें बालकों को आनन्दित करने वाले क्रिया-कलाप शामिल होते हैं।

उद्देश्य-

- बालकों का नामांकन, ठहराव तथा गुणात्मक शिक्षा की सम्प्राप्ति।
- शिक्षक को एक मित्र व सहयोगी के रूप में कल्पित करना।
- अपव्यय व अवरोधन को रोकना।
- वैयक्तिक भिन्नताओं को महत्व देना।

रुचिपूर्ण शिक्षण में सीखने-सिखाने हेतु किए जाने वाले क्रिया-कलाप-

गीत, कविता, कहानी-चित्रण, खेल, अभिनय, नाटक, भ्रमण, निरीक्षण, पहेली, वार्तालाप आदि।

रुचिपूर्ण शिक्षण की विशेषताएँ-

- बच्चों का सर्वांगीण विकास करना।
- रुचिपूर्ण व आनन्ददायी शिक्षण पद्धति का प्रयोग करना।
- क्रियाशीलता पर बल देना।
- रोचक वातावरण का निर्माण करना।

4. सहभागी शिक्षण उपागम-

सहभागी शिक्षण का सामान्य अर्थ शिक्षक एवं शिक्षार्थी की सहभागिता से लिया जाता है। श्रीमती आर. के. शर्मा सहभागी शिक्षण के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है-“जिस शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षार्थी का सहयोग प्राप्त करके उसे यह अनुभव कराया जाता है कि वह इस शिक्षण प्रक्रिया का महत्वपूर्ण पक्ष है, सहभागी शिक्षण कहलाता है।”

उद्देश्य-

- शिक्षक व छात्र दोनों को क्रियाशील बनाना।

- छात्रों को स्थायी ज्ञान प्रदान करना।
- विषय-वस्तु की प्रस्तुति को सरल व रुचिकर बनाना।
- सहयोग एवं सहकारिता की भावना विकसित करना।
- छात्रों में चिंतन, मनन, कल्पना, तर्क, जिज्ञासा आदि प्रवृत्तियों का विकास करना।

सहभागी शिक्षण हेतु किये जाने वाले क्रिया-कलाप-

- प्रस्तुतीकरण के पश्चात् कठिन शब्दों का उच्चारणाभ्यास करना।
- छात्रों के द्वारा अपने अनुभव की अभिव्यक्ति करना।
- श्यामपट्ट पर शब्दों का मिलान करना, चित्र बनवाना आदि।
- समूह में बाँटकर विषयगत जानकारी प्राप्त करना।
- कहानी, नाटक का मंचन छात्रों की सहभागिता से करना।

5. दक्षता आधारित शिक्षण उपागम-

दक्षता आधारित शिक्षण से तात्पर्य है दक्ष अध्यापकों द्वारा ऐसा शिक्षण जो छात्रों को ज्ञान प्राप्ति में दक्ष बना सके। दक्षताओं का विकास तभी सम्भव है जब शिक्षार्थी किसी ज्ञान की इकाई को इस सीमा तक सीख लें कि वह उसके जीवन का अंग बन जाए। दक्षता आधारित शिक्षण को ‘मास्टरी लर्निंग’ अथवा ऑप्टिमम लर्निंग कहा जाता है।

उद्देश्य-

- छात्रों को दक्ष बनाना।
- प्रतिस्पर्द्धा की भावना विकसित करना।
- ज्ञान को स्थायित्व प्रदान करना।
- शिक्षण के प्रति रुचि विकसित करना।
- सहयोग की भावना विकसित करना।

दक्षता आधारित शिक्षण के सोपान-

- पूर्व तैयारी-उद्देश्य निर्धारण, सहायक सामग्री।
- विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण।
- नियम-निर्णय का समन्वयीकरण, सूचीकरण।
- अभ्यास।
- अभ्यास कार्य के मध्य की गयी त्रुटियों का शुद्धिकरण।
- प्रयोग

दक्षता आधारित शिक्षण में ध्यान रखने वाली मुख्य बातें-

- दक्षता कार्यक्षेत्र छात्रों के स्तरानुकूल होना चाहिए।
- अभ्यास कार्य के समय बालकों की थकान का विशेष ध्यान रखा जाय।
- दक्षता को उनके जीवन से सम्बन्धित किया जाना चाहिए।
- छात्रों को आवश्यक मार्गदर्शन दिया जाय।
- शिक्षकों और छात्रों को धैर्य के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए।

- शिक्षण में टी.एल.एम. व अन्य शैक्षिक सामग्रियों का प्रयोग करके तथा छात्रों के ज्ञान में वृद्धि करके दक्षता बढ़ायी जा सकती है।

6. उपचारात्मक शिक्षण-

➤ **योकम व सिम्पसन के अनुसार**—“उपचारात्मक शिक्षण उस विधि को खोजने का प्रयत्न करता है, जो छात्र को अपनी कुशलता या विचार की त्रुटियों को दूर करने में सफलता प्रदान करे।”

उपचारात्मक शिक्षण का अभिप्राय उस शिक्षण से है जिसकी व्यवस्था छात्रों की कमियों/दुर्बलताओं/अशुद्धियों को दूर करने के लिए की जाती है। उनकी दुर्बलताओं को जानकर शिक्षा का ऐसा कार्यक्रम बनाया जाता है, जिससे उनकी विशिष्ट कठिनाइयों, बुरी आदतों व नकारात्मक मनोवृत्तियों को दूर करके सीखने के दूषित प्रभावों को नष्ट किया जा सकता है और गलत ढंग से सीखी गयी बातों में सुधार किया जा सकता है।

उपचारात्मक शिक्षण निदानात्मक परीक्षण के बाद आता है।

उपचारात्मक शिक्षण का महत्व-

- छात्रों की प्रकरण सम्बन्धी कठिनाइयों का पता चलता है।
- छात्रों की सामान्य व विशिष्ट कठिनाइयों का निराकरण हो जाता है।
- छात्रों की क्षमताओं को उचित दिशा में मोड़ने में सहायता मिलती है।
- छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है।
- छात्रों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों में सुधार के साथ-साथ भविष्य में होने वाली त्रुटियों से भी बचाव होता है।
- उपचारात्मक शिक्षण से बालकों को अपने वातावरण से अनुकूलन करने में सहायता मिलती है।

उपचारात्मक शिक्षण के समय ध्यान देने वाली मुख्य बातें-

- छात्रों की कठिनाइयों की प्रकृति भली प्रकार समझ लेनी चाहिए कि वे सामान्य हैं या विशिष्ट।
- शिक्षण छात्रों के स्तर, रुचि, आवश्यकता केन्द्रित हो।
- विषय-वस्तु सीखने में जिस स्थल पर बच्चों को कठिनाई हो, वहीं से उपचारात्मक शिक्षण प्रारम्भ करना चाहिए।
- व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर छात्रों को दिये जाने वाले कार्यों में समय-समय पर परिवर्तन किया जाना चाहिए।
- अभ्यास कार्य व अन्य कार्यों का सतत् मूल्यांकन किया जाये।
- छात्रों को समय-समय पर उनकी प्रगति से अवगत कराया जाना चाहिए।

उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करने की विधियाँ-

- | | |
|-----------------------|----------------------------------|
| ■ व्यक्तिगत शिक्षण | ■ सामूहिक शिक्षण |
| ■ साधारण अभ्यास कार्य | ■ विशिष्ट अभ्यास कार्य |
| ■ समूह चर्चा | ■ वाद-विवाद |
| ■ प्रोजेक्ट कार्य | ■ पुनरावृत्ति कार्य |
| ■ सहपाठी अध्ययन समूह | ■ समस्त कार्यों का सतत मूल्यांकन |

शिक्षक छात्रों की कठिनाइयों को कैसे जानें?

- कक्षा कार्य या अभ्यास कार्य द्वारा
- गृह कार्य/प्रोजेक्ट कार्य द्वारा
- सत्र परीक्षा के परिणाम द्वारा
- मासिक/अर्द्धवार्षिक/वार्षिक परीक्षाओं के परिणाम द्वारा
- कक्षा में छात्रों से पूछे जाने वाले प्रश्न के प्राप्त उत्तरों द्वारा
- छात्रों के व्यवहार, प्रतिक्रियाओं के सतत निरीक्षण/अवलोकन द्वारा

7. बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण उपागम-

⇒ बहुकक्षा शिक्षण का अर्थ -

- बहुकक्षा शिक्षण का अर्थ है एक शिक्षक द्वारा एक से अधिक कक्षाओं को एक साथ पढ़ाना। इस शिक्षण व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षक की श्रम शक्ति, सूझ-बूझ और समय का अधिक उपयोग होता है।
- बहुकक्षा शिक्षण को प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए शिक्षक को पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों, संदर्शिकाओं, समय विभाजन चक्र, समूह नायक, मॉनीटर, बैठक व्यवस्था, बच्चों के विषयवार समूह को सही रूप में संचालित करना होता है। इसमें शिक्षक को एक से अधिक कक्षाओं के बच्चों को एक साथ बैठाकर शिक्षण कार्य करना होता है।
- बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में बाँटकर उन्हें समूह-कार्य दिया जाता है, जिससे बच्चों को एक-दूसरे के साथ चर्चा करते हुए तथा एक-दूसरे को सहयोग देते हुए विषय को समझने का अवसर मिल जाता है।

बहु कक्षा शिक्षण की आवश्यकता-

- वर्तमान में प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी को देखते हुए यह शिक्षण बहुत ही उपयोगी है।
- भाषा, गणित, पर्यावरणीय अध्ययन, कला और कार्यानुभव में उपयोगी।
- संज्ञानात्मक विकास के साथ-साथ सह-संज्ञानात्मक विकास में उपयोगी।

- गीत, लोकगीत, नाटक, अंत्याक्षरी आदि में उपयोगी।
- बहुकक्षा शिक्षण में 'मॉनीटर प्रणाली' तथा 'प्रोजेक्ट प्रणाली' का विशेष महत्व होता है।

बहुकक्षा शिक्षण में ध्यान देने वाली मुख्य बातें-

- शिक्षकों एवं कक्षा कक्षाओं की संख्या की जानकारी।
- कक्षा-कक्ष में बैठने की स्थिति की जानकारी।
- समय-विभाजन चक्र प्रबन्धन की जानकारी।
- स्थान प्रबन्धन की जानकारी।
- पाठ्य-वस्तु प्रबन्धन।
- शिक्षण सामग्री प्रबन्धन।

⇒ बहुस्तरीय शिक्षण का अर्थ-

- मानसिक स्तरीय शिक्षण ही बहुस्तरीय शिक्षण कहलाता है। एक ही कक्षा में अलग-अलग तरीके से व अलग-अलग गति से सीखने वाले छात्र होते हैं। जब एक शिक्षक एक ही समय में कक्षा के प्रत्येक बच्चे को उसके स्तर के आधार पर समूहों में बाँटकर शिक्षण कार्य करता है तो वह बहुस्तरीय शिक्षण कहलाता है।
- जैसे किसी कक्षा में गणित विषय में तेज, मध्यम तथा धीमी गति से सीखने वाले बच्चे हैं, उन्हें क्रमशः कठिन, मध्यम एवं सरल प्रश्न देकर हल कराना बहुस्तरीय शिक्षण कहलाता है।

बहुस्तरीय शिक्षण की आवश्यकता-

- बच्चों की उपलब्धि स्तर का अलग होना।
- बच्चों में सीखने की गति का अलग होना।

8. शिक्षण का रचनात्मक उपागम-

- रचनात्मक शिक्षण अधिगम में विद्यार्थियों को सक्रिय शिक्षार्थी समझा जाता है और अध्यापक विद्यार्थियों द्वारा ज्ञान की रचना करने की प्रक्रिया को सुगम बनाता है। यह विद्यार्थी केन्द्रित उपागम होता है अतः इसमें विद्यार्थियों को अधिकतम स्वतंत्रता दी जाती है।
- इसमें सम्पूर्ण प्रक्रिया ज्ञान सृजन के उद्देश्यों पर आधारित होती है।
- शिक्षण और अधिगम का रचनावाद उपागम जिस सिद्धान्त पर आधारित है उसे रचनावादी अधिगम सिद्धान्त कहते हैं।
- इसके अनुसार ज्ञान का निर्माण अधिगमकर्ता के पूर्व ज्ञान पर आधारित होता है। विद्यार्थी वस्तुओं एवं उन्हें प्रस्तुत की गयी गतिविधियों से ही सक्रिय रूप से पुराने अनुभवों को नये विचारों से जोड़ते हुए ज्ञान का सृजन करता है।

रचनावाद

- रचनावाद दर्शनशास्त्र का एक स्कूल है जो अठारहवीं शताब्दी के पूर्व में इटालियन दर्शनशास्त्री Giambattista Vico से सम्बन्धित है, जहाँ आनुवांशिकी का अध्ययन किया जाता था।
- वर्तमान में यह स्विस् मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे एवं रसियन मनोवैज्ञानिक लेव वाइगोत्सकी के योगदान से बहुत विस्तृत रूप में शिक्षा दर्शन के रूप में विकसित हो चुका है।
- रचनावाद पियाजे के संज्ञानात्मक विकास पर आधारित है। इसके अनुसार ज्ञान अधिगमकर्ता द्वारा सक्रिय रहकर सृजन होता है न कि निष्क्रिय रहकर वातावरण द्वारा प्राप्त किया जाता है। 'ज्ञानने के लिए आना' अपनाते की एक प्रक्रिया है जो कि बालक के अनुभविक संसार एवं उसमें निरंतर सुधारों पर आधारित है।
- वाइगोत्सकी ने समाज रचनावाद से प्रभावित संज्ञानात्मक विकास पर कार्य किया जो कि व्यक्तिगत रूप से सामाजिक अनुक्रिया की सहायता से वातावरण द्वारा ज्ञान के निर्माण पर बल देता है।

रचनावादी उपागम की विशेषताएँ-

- विद्यार्थी अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रूप से सम्मिलित होता है।
- वातावरण प्रजातांत्रिक होता है।
- गतिविधियाँ अंतर्क्रियात्मक एवं विद्यार्थी केन्द्रित होती हैं।
- अध्यापक सुलभकर्ता के रूप में होता है।
- विद्यार्थियों के विचारों, भावनाओं, उत्तरों आदि का सम्मान किया जाता है।
- विद्यार्थी अपने अनुभवों से सीखते हैं।
- प्रक्रिया भी उत्पाद जितनी ही महत्वपूर्ण होती है।

सूक्ष्म शिक्षण

सूक्ष्म शिक्षण का अर्थ व परिभाषाएँ-

सूक्ष्म शिक्षण से तात्पर्य है-शिक्षण का लघु रूप। शिक्षण की जटिल प्रक्रिया को सरलतम ढंग से छोटे-छोटे सोपानों में प्रशिक्षुओं के सामने प्रस्तुत करने की एक रुचिपूर्ण प्रक्रिया है, सूक्ष्म शिक्षण। सूक्ष्म शिक्षण के अन्तर्गत प्रशिक्षुओं को शिक्षण कौशल की बारीकियों से अवगत कराया जाता है।

- **मैकनाइट के अनुसार**—“सूक्ष्म शिक्षण वह सूक्ष्म पदीय परिस्थितियाँ हैं जिनका आयोजन पुराने कौशलों में सुधार एवं नवीन कौशलों में विकास के लिए किया जाता है।”
- **डॉ. डब्ल्यू एलन के अनुसार**—“यह शिक्षण का लघुरूप होता है इसमें कक्षा का आकार तथा समय भी कम होता है।”

- **क्लिफ्ट एवं उनके सहयोगी के अनुसार**—“सूक्ष्म शिक्षण, शिक्षक प्रशिक्षण की वह विधि है जो शिक्षण अभ्यास को किसी कौशल विशेष तक सीमित करके तथा कक्षा के आकार एवं शिक्षण अवधि को घटाकर शिक्षण को अधिक सरल एवं नियंत्रित करती है।”
- **बी. के. पासी के अनुसार**—“सूक्ष्म शिक्षण एक प्रशिक्षण तकनीकी है जो प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षकों से यह अभिलाषा रखती है कि किसी तथ्य को थोड़े से छात्रों को, थोड़े समय में एक विशिष्ट शिक्षण कौशल के माध्यम से शिक्षण दे।”

सूक्ष्म शिक्षण में-

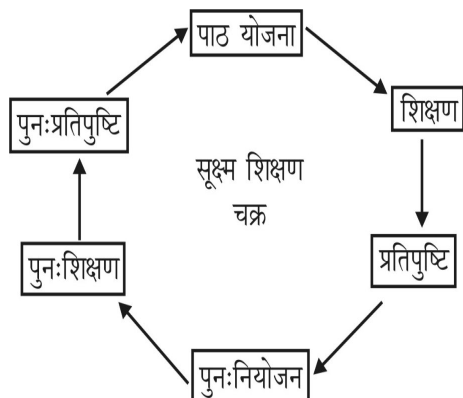
- कक्षा-कक्ष का आकार छोटा होता है।
- पाठ्य वस्तु सीमित होती है।
- पढ़ाने की अवधि 6-10 मिनट होती है।
- छात्रों (प्रशिक्षु) की संख्या 5-10 होती है।
- एक शिक्षण कौशल पर ही बल दिया जाता है।

इन्हें भी जानें

- ए. डब्ल्यू. एलन को सूक्ष्म शिक्षण का जन्मदाता माना जाता है। भारत में सेंट्रल पैदागॉजीकल इंस्टीट्यूट के डॉ. डी. डी0 तिवारी ने इस विधि का सर्वप्रथम प्रयोग किया था।

आवश्यकता एवं महत्व-

- सूक्ष्म शिक्षण की प्रक्रिया द्वारा छात्राध्यापकों को वास्तविक शिक्षण के लिए तैयार किया जाता है।
- परम्परागत शिक्षण को सरल बनाकर प्रशिक्षुओं को समझाया जाता है।
- इसके द्वारा सीमित समय व संसाधनों में शिक्षण कार्य का अनुभव प्राप्त होता है और एक-एक कौशल को क्रमशः सीखते हुए शिक्षण कला में दक्षता प्राप्त होती है।
- प्रशिक्षु पढ़ाने के बाद स्वयं शीघ्र ही पर्यवेक्षकों की सलाह पर अपने शिक्षण काय का मूल्यांकन करते हैं व सुधार करते हैं।



सूक्ष्म शिक्षण चक्र; सूक्ष्म शिक्षण में एक निश्चित चक्र का अनुसरण किया जाता है-

1. ***पाठ योजना**— किसी एक शिक्षण कौशल और पाठ्यवस्तु की इकाई पर एक सूक्ष्म पाठ योजना तैयार की जाती है।
2. **शिक्षण**—पाठ योजना के आधार पर पाँच से दस मिनट तक पाँच से दस छात्रों की कक्षा को पढ़ाया जाता है। प्रशिक्षु द्वारा दिये गये पाठ को वीडियो टेप या साधारण कैसेट पर टेप किया जाता है।
3. **प्रतिपुष्टि**—प्रत्येक प्रशिक्षु को व्यक्तिशः तत्कालीन प्रतिपुष्टि प्रदान करना अति आवश्यक होता है। प्रतिपुष्टि के लिए सामान्यतः 5 से 6 मिनट का समय दिया जाता है।
4. **पुनःनियोजन**—प्राप्त प्रतिपुष्टि या पृष्ठ पोषण के आधार पर प्रशिक्षु सुझाव संकेतों को अपनाते हुए अपने सूक्ष्म पाठ का पुनःनियोजन करता है।
5. **पुनः शिक्षण**—पुनः निर्मित पाठ योजना को प्रशिक्षु पढ़ाता है।
6. **पुनः प्रतिपुष्टि**—इस सोपान पर भी प्रशिक्षु को पुनः प्रतिपुष्टि प्राप्त होती है।

सूक्ष्म शिक्षण के मुख्य सिद्धान्त-

1. **अभ्यास का सिद्धान्त**—सूक्ष्म शिक्षण में छोटी-छोटी इकाई में अभ्यास कराया जाता है ताकि प्रशिक्षु कक्षागत समस्याओं से अवगत हो सके।
2. **निरन्तरता का सिद्धान्त**—यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक शिक्षण कौशल में परिपक्वता नहीं आ जाती है।
3. **प्रबलन व मूल्यांकन का सिद्धान्त**—इस प्रक्रिया में प्रशिक्षु पाठ नियोजन, शिक्षण पर्यवेक्षक के निर्देशन में करते हैं और कमियों में सुधार करते हैं। शिक्षण का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करते हैं, प्रतिपोषण प्राप्त करते हैं। इस विधि में प्रशिक्षुओं के लिए स्वमूल्यांकन का अवसर ज्यादा रहता है एतएव अभिप्रेरणा मौजूद रहने से शिक्षण कार्य रुचिपूर्ण लगने लगता है।

शिक्षण कौशल

शिक्षण कौशल का अर्थ-

- **प्रो. एन. एल. गेज के अनुसार**—“शिक्षण-कौशल वह विशिष्ट अनुदेशन प्रक्रिया है जिसे शिक्षक अपने कक्षा-शिक्षण में प्रयोग करता है। यह शिक्षण क्रम की विभिन्न क्रियाओं से सम्बन्धित होता है, जिन्हें शिक्षक अपने कक्षा अंतःप्रक्रिया में लगातार प्रयोग करता है।”

- **इण्डियन इन्स्टीट्यूट फॉर टीचर-एजुकेशन के अनुसार-**
“प्रमुख रूप से वे शिक्षण क्रियाएँ जो कि छात्रों में अपेक्षित परिवर्तन लाने में प्रभावी हैं, शिक्षण कौशल कहलाते हैं।”
- **बी. के पासी के अनुसार-**“शिक्षण-कौशल वह विशिष्ट अनुदेशन प्रक्रिया है जिसे शिक्षक अपने कक्षा-शिक्षण में प्रयोग करता है। यह शिक्षण क्रम की विभिन्न क्रियाओं से सम्बन्धित होता है, जिन्हें शिक्षक अपने कक्षा अंतःप्रक्रिया में लगातार प्रयोग करता है।”

शिक्षण कौशलों की विशेषताएँ-

- शिक्षण कौशल शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होते हैं।
- शिक्षण कौशल कक्षा अंतःप्रक्रिया की परिस्थिति उत्पन्न करते हैं।
- शिक्षण कार्य को आधार प्रदान करते हैं।
- सीखने में सहायक होते हैं।
- शिक्षण को प्रभावी बनाने में सहायक होते हैं।

एलन तथा रायन ने 14 शिक्षण कौशलों को प्रमुख माना है।

1. पाठ प्रस्तावना कौशल-

किसी भी शिक्षण की शुरुआत का प्रथम चरण प्रस्तावना होती है। प्रस्तावना से आशय भूमिका या विषय-वस्तु की सामान्य जानकारी से है। प्रस्तावना कौशल के प्रयोग में सर्वप्रथम शिक्षक पढ़ाये जाने वाले पाठ के बारे में छात्रों की जानकारी लेने के लिए प्रश्न करता है। तदनुसार उनके पूर्व ज्ञान को नयी जानकारी से जोड़ते हुए शिक्षण करता है।

प्रस्तावना कौशल के घटक-

1. कथनों एवं प्रश्नों का छात्रों के पूर्व ज्ञान से सम्बन्ध
2. कथनों एवं प्रश्नों का मूलपाठ तथा उसके उद्देश्यों से सम्बन्ध
3. विचारों, कथनों एवं प्रश्नों में शृंखलाबद्धता
4. पाठ उद्देश्य एवं छात्र स्तर के उपयुक्त उपकरणों एवं साधनों का चयन एवं प्रयोग
5. उपयुक्त एवं समुचित अवधि विस्तार
6. छात्र ध्यान एवं रुचि आकर्षण
7. छात्रों को अभिप्रेरित करने की क्षमता
8. अध्यापक में उत्साह एवं सजगता

पाठ प्रस्तावना के विविध तरीके-

- पूर्व ज्ञान पर प्रश्न पूछकर
- कहानी या कविता सुनाकर
- उदाहरण या घटना बताकर
- प्रदर्शन या प्रयोग द्वारा, चार्ट, चित्र मॉडल के प्रयोग द्वारा

2. उद्देश्य लेखन कौशल-

राल्फ टायलर और रॉबर्ट गैने के अनुसार व्यवहारिक उद्देश्यों की निम्नलिखित तीन उपयोगिताएँ हैं-

- (i) शिक्षक शिक्षण आरम्भ करने के पूर्व यह निश्चित कर लेता है कि छात्र शिक्षणोपरांत किस प्रकार के कार्य का प्रतिपादन कर सकेंगे। छात्रों को किसी कार्य को करने के योग्य बनाने के लिए शिक्षक को विभिन्न क्रियाओं को करने में सहायता मिलती है।
- (ii) कार्य मूल्यांकन में सहायता मिलती है।
- (iii) छात्रों को यदि उद्देश्य की जानकारी रहती है तो वे उद्देश्य प्राप्त करने के लिए वांछित व्यवहार की दिशा में प्रयास करते हैं।

इसके अलावा इसकी निम्न उपयोगिता है-

- (i) शिक्षार्थी की पाठ में रुचि जागृत होती है।
- (ii) शिक्षण में स्पष्टता आती है।
- (iii) शिक्षण अधिगम के प्रति क्रियाशीलता बढ़ती है।

उद्देश्य लेखन कौशल के घटक-

1. उद्देश्यों को छात्र व्यवहारपरक बनाना।
2. उद्देश्यों को निरीक्षण योग्य व्यवहार के रूप में व्यक्त करना।
3. व्यवहार किस परिस्थिति में होगा इसका स्पष्ट संकेत करना।
4. छात्रों के कार्य का न्यूनतम स्तर निर्धारित करना।
5. विषय-वस्तु के साथ उद्देश्यों का सार्थक सम्बन्ध बनाना।

3. प्रश्न कौशल-

शिक्षण कार्य, प्रश्नों की शृंखला में अग्रसर होता है। पाठ का उत्तरोत्तर विकास शिक्षण में प्रश्नों के द्वारा ही होता है। एतएव प्रश्न पूछने का कौशल शिक्षक में होना जरूरी है।

थ्रिंग के अनुसार-“शिक्षण का अर्थ कुशलता से प्रश्न करना है, यह शिक्षण का उत्तम साधन है।”

बंकन के अनुसार-“प्रश्न कौशल जिज्ञासा के साथ ज्ञान को स्वयं अन्वेषित करने की ओर प्रेरित करने वाला होना चाहिए। जिज्ञासा ज्यों-ज्यों गहरी होती जाती है ज्ञान भी बढ़ता जाता है।”

प्रश्न पूछने के उद्देश्य-

- प्रश्न पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ते हैं।
- रुचि व जिज्ञासा को जागृत करते हैं।
- अधिगम समस्याओं का ज्ञान होता है।
- क्रियाशीलता में वृद्धि होती है।
- पाठ शिक्षण को क्रमबद्ध बनाते हैं।

प्रश्नों के प्रकार-

- प्रस्तावना प्रश्न
- विकासात्मक प्रश्न

- समस्यात्मक प्रश्न
- बोध प्रश्न
- पुनरावृत्ति प्रश्न

प्रश्न कौशल के घटक-

1. संकेत तकनीकी का प्रयोग
2. विस्तृत सूचना प्राप्ति तकनीक का प्रयोग
3. पुनः केन्द्रीयकरण तकनीक का प्रयोग
4. पुनः प्रेक्षण तकनीकी का प्रयोग
5. आलोचनात्मक सजगता

प्रश्न कौशल से सम्बन्धित मुख्य बातें-

- प्रश्न स्पष्ट व सरल हो
- प्रश्न प्रासंगिक हो
- प्रश्न स्तरानुकूल हो
- प्रश्नों में विविधता हो
- भाषा बोधगम्य हो
- प्रश्न क्रमबद्ध हो

4. व्याख्या कौशल-

इस कौशल के प्रयोग में शिक्षक विविध प्रकरणों, तथ्यों को समझाने के लिए सरल से सरल भाव, विचार, उदाहरण के द्वारा क्रमिक व तार्किक रूप से विषय-वस्तु का प्रकटन करता है। इस कौशल की सफलता इस बात में निहित है कि शिक्षक पाठ का सम्पूर्ण व गहन ज्ञान रखता हो।

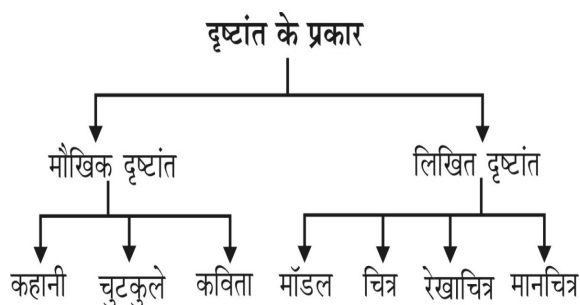
कौशल के घटक-

1. प्रारम्भिक कथनों का स्पष्टता से प्रयोग
2. निष्कर्षात्मक कथन स्पष्ट करना
3. भाषा में प्रवाह होना
4. उपयुक्त शब्दों का प्रयोग
5. कथनों में तारतम्यता होना
6. असम्बद्ध कथनों की अनुपस्थिति
7. विचारों को परस्पर जोड़ने वाले शब्दों का प्रयोग

5. दृष्टांत कौशल-

व्याख्या कौशल की एक प्रमुख विधि है उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण, इस दक्षता को ही दृष्टांत कौशल कहा जाता है। इस कौशल के प्रयोग में आगमन विधि का संयोजन किया जाता है।

लेण्डन के अनुसार- “उदाहरणों में न केवल स्पष्ट करने की क्षमता होती है, बल्कि यह ज्ञान को स्थायित्व प्रदान करने में भी मददगार है।”



दृष्टान्त कौशल को बोधगम्य बनाने के उपाय-

- दृष्टांत सरल व स्पष्ट हो
- पाठ्यवस्तु से सम्बद्ध हो
- रुचिपूर्ण हो
- छात्रों के स्तानुकूल हो
- पाठ विकास में सहायक हो

कौशल के घटक-

1. सरल उदाहरणों का चयन
2. प्रासंगिक उदाहरण
3. उदाहरणों की व्याख्या का उचित माध्यम
4. उदाहरण में आगमन/निगमन विधि का उपयोग
5. उदाहरणों की उपयुक्त संख्या

6. छात्र सहभागिता कौशल-

बाल केन्द्रित शिक्षण में छात्र सहभागिता जरूरी है। इस कौशल का मुख्य लक्ष्य छात्रों के सहयोग से, प्रतिक्रिया से पाठ का क्रमशः विकास करना है।

छात्र सहभागिता कौशल का प्रयोग कैसे करें-

- प्रश्न पूछकर
- चित्र बनवाकर
- रिक्त स्थान भरवाकर
- वाक्य अधूरे छोड़कर
- खेल, गीत, कविता, नाटक आदि द्वारा

कौशल के घटक-

1. प्रश्न पूछना
2. अनुशीलन प्रश्न पूछना
3. पुनर्बलन प्रयोग
4. विराम कौशल प्रयोग
5. छात्रों की शाब्दिक अनुक्रियाएँ
6. छात्रों द्वारा किये गये कार्य

7. उद्दीपन परिवर्तन कौशल-

छात्रों का ध्यान आकर्षित करने के लिए तथा ध्यान को पाठ में लगाये रखने के लिए शिक्षक अपने व्यवहार में जानबूझकर जो परिवर्तन लाता है उसे उद्दीपन परिवर्तन कौशल कहते हैं।

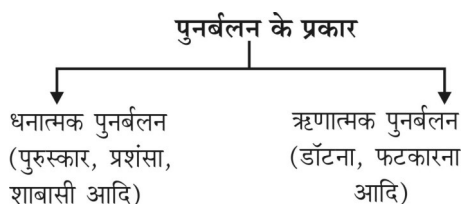
➤ **टेबर, ग्लेसर एवं सेफर के अनुसार**—“कोई परिस्थिति, घटना अथवा वातावरण में परिवर्तन से यदि छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन होता है तो उसे उद्दीपन परिवर्तन कहते हैं।”

उद्दीपन परिवर्तन कौशल के घटक-

1. यथोचित शरीर संचालन
2. हाव-भाव, भाव-भंगिमा का प्रयोग
3. भावों का केन्द्रीकरण
4. स्वरों में उतार-चढ़ाव
5. शिक्षक-शिक्षार्थी वार्तालाप में परिवर्तन
6. मौन

8. पुनर्बलन कौशल-

पुनर्बलन से तात्पर्य ऐसे उद्दीपनों से है, जिनके प्रस्तुतीकरण या हटाने से क्रिया-अनुक्रिया के होने की सम्भावना अधिक हो जाती है। स्किनर के अनुसार शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की प्रशंसा करना, उत्तर को स्वीकार करना या सिर हिलाने मात्र से ही विद्यार्थी पुनर्बलित हो जाता है।



पुनर्बलन का सकारात्मक प्रयोग छात्रों के वांछित व्यवहारों को प्रबल बनाने के लिए किया जाता है और ऋणात्मक पुनर्बलन द्वारा अवांछित व्यवहारों की पुनरावृत्ति को रोकने का प्रयास किया जाता है।

पुनर्बलन कौशल के घटक-

- प्रोत्साहन देने वाले कथनों का प्रयोग
- छात्र प्रतिक्रिया का आदर
- हाव-भाव व अन्य शाब्दिक संकेतों का प्रयोग
- नकारात्मक शाब्दिक संकेतों का प्रयोग
- नकारात्मक अशाब्दिक संकेतों का प्रयोग
- छात्रों के सही उत्तर को श्यामपट्ट पर लिखना
- **हल के अनुसार**—“पुनर्बलन एक प्रकार का पारितोषिक है। यह एक उद्दीपक है, जो विशेष अनुक्रियाओं की सम्भावनाओं को परिवर्तित करने की क्षमता रखता है।”

- पुनर्बलन का प्रत्यय स्किनर के क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त का केन्द्र बिन्दु है।

9. श्यामपट्ट लेखन कौशल-

प्रत्येक शिक्षक के लिए अनिवार्य है कि उसे श्यामपट्ट लेखन में दक्षता प्राप्त हो। श्यामपट्ट प्रयोग से श्रवणेन्द्रिय और नेत्रेन्द्रिय दोनों में सक्रियता रहती है, जिससे विषय-वस्तु की बोधगम्यता बढ़ जाती है। इसे शिक्षण का विकासात्मक कौशल भी कहते हैं।

श्यामपट्ट कार्य की सावधानियाँ-

1. श्यामपट्ट लेख सुन्दर, आकर्षक तथा स्पष्ट होना चाहिए।
2. विशिष्ट बिन्दुओं को दर्शाने के लिए रंगीन चाक का प्रयोग करना चाहिए।
3. चित्र, रेखाचित्र आदि अभ्यास के बाद स्पष्ट रूप से बनाये जायें।
4. श्यामपट्ट सार मुख्य-मुख्य बिन्दुओं के रूप में दिया जाना चाहिए।
5. श्यामपट्ट पर लिखी सामग्री क्रमबद्ध होनी चाहिए।
6. शिक्षक को श्यामपट्ट के एक ओर खड़ा होकर लिखना चाहिए ताकि छात्र श्यामपट्ट को पूर्णतः देख सकें।
7. श्यामपट्ट पर अनावश्यक बिन्दु न लिखें।
8. श्यामपट्ट पर लिखते समय चॉक की आवाज़ नहीं होनी चाहिए।
9. प्रयोग के बाद चॉक और डस्टर को यथास्थान रख देना चाहिए।

श्यामपट्ट का महत्व-

- प्रारम्भिक सूचना देने में सहायक
- विषय की व्याख्या व विश्लेषण में सहायक
- चित्र-मानचित्र, रेखाचित्र बनाकर समझ बढ़ाने में सहायक
- समूह शिक्षण में उपयोगी
- शिक्षण की गुणवत्ता में वृद्धि

10. पुनरावृत्ति कौशल-

शिक्षण कार्य कितना सफल रहा इसका मापन अभ्यास प्रश्नों द्वारा किया जाता है, इसे ही पुनरावृत्ति कौशल कहा जाता है। इस कौशल के प्रयोग में पढ़ाये गये पाठों, प्रसंगों, तथ्यों को दोहराया जाता है, जिससे अधिगम स्थायी होने के साथ-साथ त्रुटि रहित भी होता है। पुनरावृत्ति कौशल को स्थायीकरण कौशल भी कहते हैं।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. एक प्रभावी शिक्षक वह है, जो कर सकता है-
 - (a) कक्षा पर नियंत्रण
 - (b) कम समय में अधिक सूचना देना
 - (c) विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करना
 - (d) दत्तकार्य को ध्यानपूर्वक जाँचना
2. एक शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण चुनौती है-
 - (a) विद्यार्थियों से उनका गृहकार्य करवाना
 - (b) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को आनन्दप्रद बनाना
 - (c) कक्षा में अनुशासन बनाए रखना
 - (d) प्रश्नपत्र तैयार करना
3. विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा विकसित करने के लिए, एक शिक्षक को क्या करना चाहिए?
 - (a) गलाकाट प्रतियोगिता को प्रोत्साहित करना
 - (b) विद्यार्थियों के सम्मुख एक अप्राप्य लक्ष्य रखना
 - (c) नई तकनीक व नई विधियों का प्रयोग करना
 - (d) उनके आकांक्षा स्तर को घटाना
4. एक शिक्षक को विद्यार्थियों की तत्परता स्तर को बढ़ाना है। ऐसा करने के लिये सबसे अच्छा तरीका कौन-सा होगा?
 - (a) विशेष प्रकरण से सम्बन्धित सृजनात्मक क्रियाकलाप को कक्षा में संगठित करवाकर
 - (b) कक्षा में एक इनडोर गेम आयोजित करवाकर
 - (c) कहानी कथन विधि द्वारा
 - (d) कक्षा के किसी एक विद्यार्थी द्वारा नियंत्रण करवाकर
5. कक्षा शिक्षण में अधिगम को किस रूप में पहचाना जाता है?
 - (a) व्यक्तिगत समायोजन
 - (b) सामाजिक व राजनीतिक भिन्नता
 - (c) व्यवहार परिवर्तन
 - (d) विशेष बड़े रोजगार के लिए तैयार करना
6. शिक्षण कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व शिक्षक को
 - (a) छात्रों को खड़ा करना चाहिए
 - (b) छात्रों को मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए
 - (c) श्याम-पट को साफ करना चाहिए
 - (d) छात्रों को चुप रहने के लिए कहना चाहिए
7. शिक्षण करते समय आपको लगे कि जो कुछ आपने पढ़ाया है वह सही नहीं है तो आप
 - (a) प्रकरण अधूरा छोड़ देंगे तथा दूसरा प्रकरण शुरू कर देंगे
 - (b) छात्रों से कहेंगे कि गलती हुई और उसे ठीक कर देंगे
 - (c) छात्रों का उससे ध्यान हटा देंगे
 - (d) छात्रों को डाँट पिलायेंगे
8. सलीम संगीत में निष्णात है परन्तु गणित में अच्छा नहीं कर पाता। गणित के अध्यापक के रूप में आप सलीम को क्या कहेंगे?
 - (a) उससे कहेंगे कि संगीत का कोई भविष्य नहीं है
 - (b) उससे संगीत छोड़कर गणित की पढ़ाई करने को कहेंगे
 - (c) उसके अभिभावकों को बुलाकर बात करेंगे
 - (d) उससे कहेंगे कि वह गणित में भी अच्छा प्रदर्शन कर सकता है और उसे गणितीय अवधारणाएँ समझाएँगे
9. शिक्षकों को निम्नलिखित शिक्षण विधियों को अभ्यास में लाना चाहिए
 - (a) भाषण विधि
 - (b) अन्तःक्रियात्मक विधियाँ
 - (c) वर्णनात्मक
 - (d) उपरोक्त में से कोई नहीं
10. सामान्यतः छात्रों में पठन-पाठन के लिए निम्न विशिष्टतायें होती हैं
 - (a) अधिगम में क्रियाशीलता
 - (b) छात्रों में सीखने की योग्यता
 - (c) स्वयं क्रिया करके नवीन अनुभवों द्वारा ज्ञान का निर्माण करना
 - (d) उपरोक्त सभी
11. आपके द्वारा पूछे गये प्रश्न का विद्यार्थी गलत उत्तर देता है, तो आप
 - (a) दूसरा प्रश्न पूछेंगे जिससे विद्यार्थी स्वयं महसूस करे कि उत्तर गलत था
 - (b) उसे बतायेंगे कि उसका उत्तर गलत क्यों था
 - (c) किसी दूसरे विद्यार्थी को उत्तर देने के लिए कहेंगे
 - (d) सही उत्तर बतायेंगे
12. शिक्षण को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जाता है
 - (a) अधिगम का सरलीकरण
 - (b) शिक्षकों द्वारा ज्ञान का स्थानान्तरण तथा छात्र द्वारा ज्ञान को ग्रहण करना
 - (c) पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना
 - (d) शिक्षकों द्वारा ज्ञान का स्थानान्तरण
13. 6-11 वर्ष आयु वर्ग के लिए अधिगम
 - (a) ज्ञान निर्माण की एक सक्रिय प्रक्रिया है
 - (b) निष्क्रियता से रटने की प्रक्रिया है
 - (c) कक्षा-कक्ष में ध्यानपूर्वक सुनने की प्रक्रिया है
 - (d) पाठ्यपुस्तक का अध्ययन करने की प्रक्रिया है

14. शिक्षण और अधिक प्रभावी हो सकता है, यदि

- (a) छात्रों को स्वयं कार्य करने की स्वायत्तता दिया जाये
- (b) छात्र अधिगम शिक्षक द्वारा निर्देशित एवं नियंत्रित हो
- (c) शिक्षक तथ्यों की व्याख्या करने में केन्द्रीय भूमिका निभाये
- (d) शिक्षक अधिगम को निर्देशित करे

15. एक बालक अधिक सीखता है, यदि उसे

- (a) पाठ्यपुस्तक के माध्यम से पढ़ाया जाये
- (b) कम्प्यूटर से पढ़ाया जाये
- (c) व्याख्यान विधि से पढ़ाया जाये
- (d) क्रिया विधि से पढ़ाया जाये

16. कक्षा-कक्ष में शिक्षक प्रयास करता है

- (a) छात्रों को अनुभव प्रदान करने का
- (b) छात्रों को सहायक अधिगम वातावरण देने का
- (c) छात्रों को चिन्तन का अवसर देने का
- (d) उपरोक्त सभी

17. शिक्षा के दो प्रमुख उद्देश्य हैं

- (a) बालकों में विषयों का ज्ञान व उनका मानसिक विकास करना
- (b) विषयों का ज्ञान देना व परीक्षा के लिए तैयार करना
- (c) विषयों का ज्ञान देना व उसको कंठस्थ करवाना
- (d) विषयों का ज्ञान देना व व्यावसायिक कौशल का विकास करना

18. कक्षा में किसी विषय-वस्तु की परिचर्चा के समय एक अध्यापक के लिए आवश्यक प्रथम गतिविधि है

- (a) तर्क-सम्बन्धी तथ्यों की व्याख्या
- (b) उद्देश्य की सूचना
- (c) विषय-वस्तु को मौखिक रूप से बताना
- (d) श्यामपट्ट पर विषय-वस्तु लिखना

19. निम्नलिखित में से कौन पुनर्बलन का उदाहरण है?

- (a) नहीं लता! उत्तर 45 नहीं है।
- (b) कमला! उत्तर देने में तुम कीर्ति की सहायता नहीं कर सकती
- (c) अरे नहीं! आमतौर पर, तुम गलत हो।
- (d) सुनील! तुमने सही कहा।

20. विद्यार्थियों के साथ सम्प्रेषण का अर्थ होता है

- (a) उनसे प्रश्न करने को कहना
- (b) विचारों का आदान-प्रदान
- (c) उन्हें निर्देश देना
- (d) उन्हें अपने विचारों से अवगत कराना

21. कक्षा में प्रभावी व्याख्यान देते समय, एक अध्यापक

- (a) सम्बन्ध स्थापित करता है

- (b) सार्थक शारीरिक हाव-भाव को समावेशित करता है
- (c) व्याख्यान स्थल पर स्थैतिक बना रहता है
- (d) ध्वनि की तीव्रता और तरीके में परिवर्तन करता है

22. विद्यालयी क्षेत्र में रचनात्मक निर्धारकों को जानने के लिए इनमें से कौन-सा उपागम नहीं है?

- (a) वार्तालाप कौशल
- (b) बहुविकल्पीय प्रश्न
- (c) परियोजना कार्य
- (d) मौखिक प्रश्न

23. निम्न का मिलान करते हुये दी गई तालिका में से सही उत्तर का चयन करें:

सूची-अ

सूची-ब

- | | |
|--|--------------------|
| (L) बीज अंकुरित होने का अनुभव प्रदान करना | 1. अवलोकन करना |
| (M) भूमिका निर्वाह/रोल प्ले | 2. प्रश्न पूछना |
| (N) परिवार में लैंगिक विभेदीकरण की क्रियाओं या अभ्यास पर वार्तालाप | 3. भाग लेना |
| (O) दुग्धशाला में विभिन्न दूध के उत्पादों की प्रक्रिया कर बनाना व डिब्बा बन्द करना | 4. विचार/मनन करना। |

कोड:

	L	M	N	O
(a)	1	3	4	2
(b)	2	3	4	1
(c)	3	1	2	4
(d)	4	2	3	2

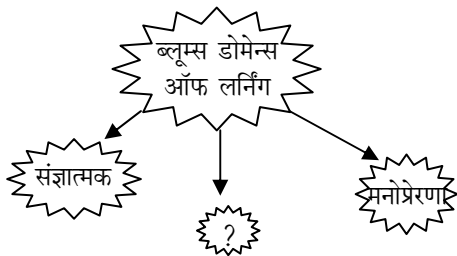
24. शैक्षिक भ्रमण अधिगम के लिए आवश्यक साधन क्यों है?

- (a) यह रटने की आदत का विकास करता है
- (b) पाठ्यचर्या समय पर पूर्ण होती है
- (c) यह कल्पना शक्ति का विकास करता है
- (d) भ्रमण के स्थान से प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है

25. प्राथमिक कक्षाओं में विषय-वस्तु की नीरसता दूर करने के लिए शिक्षक को उपयुक्त शिक्षण नीति का उपयोग करना चाहिए, वह है-

- (a) वार्तालाप नीति
- (b) प्रश्नोत्तर नीति
- (c) खेल और मनोरंजन नीति
- (d) प्रदर्शन नीति

26. निम्नलिखित रिक्त स्थान के लिए सही उत्तर का चयन करें-



- (a) संज्ञानात्मक एवं मनोप्रेरणा
(b) ज्ञानात्मक
(c) भावात्मक
(d) शारीरिक क्षमता
27. छात्रों को 'ठीक, शाबास, बहुत अच्छा' कहना है
(a) शाब्दिक पुनर्बलन
(b) अशाब्दिक पुनर्बलन
(c) सकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन
(d) नकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन
28. एक आदर्श अध्यापक में पाया जाने वाला गुण है
(a) लोकतन्त्रात्मक दृष्टिकोण (b) विषय-वस्तु पर अधिकार
(c) बाल मनोविज्ञान का ज्ञान (d) उपरोक्त सभी
29. एक शिक्षिका अपने विद्यार्थियों की सदैव इस रूप से सहायता करती है कि वे एक विषय-क्षेत्र से प्राप्त ज्ञान को दूसरे विषय-क्षेत्रों के ज्ञान के साथ जोड़ सकें। इससे को बढ़ावा मिलता है।
(a) पुनर्बलन
(b) ज्ञान के सह-संबंध एवं अंतरण
(c) वैयक्तिक भिन्नताओं
(d) शिक्षार्थी-स्वायत्तता
30. आप कक्षा का अवधान केंद्रित कर सकते हैं
(a) उच्च स्वर में बोलकर (b) श्यामपट्ट पर लिखकर
(c) चित्र बनाकर (d) उद्दीपन परिवर्तन द्वारा
31. एक शिक्षिका पाठ को पूर्वपठित पाठ से जोड़ते हुए बच्चों को सारांश लिखना सिखा रही है। वह क्या कर रही है?
(a) वह बच्चों की पाठ समझने की स्वशैली विकसित करने में सहायता कर रही है
(b) वह बच्चों को सम्पूर्ण पाठ्य-वस्तु को पूर्णरूप से न पढ़ने की आवश्यकता का संकेत दे रहा है
(c) वह आकलन के दृष्टिकोण से पाठ्य-वस्तु के महत्व को पुनर्बलित कर रही है

(d) वह विद्यार्थियों को सामर्थ्यनुकूल स्मरण करने को प्रेरित कर रही है

32. शिक्षार्थी तब तक नहीं सीख सकते जब तक
(a) उन्हें शिक्षा के सामाजिक उद्देश्यों की आवश्यकताओं के अनुरूप न पढ़ाया जाए
(b) उन्हें यह पता न हो कि जो तथ्य उन्हें पढ़ाए गए हैं निकट भविष्य में उनका परीक्षण किया जाएगा
(c) वे सीखने के लिए तैयार न हों
(d) दैनिक आधार पर घर में उनके माता-पिता विद्यालय में उनके सीखने के बारे में नहीं पूछेंगे
33. वर्तमान समय में शिक्षा का सबसे उपयुक्त उपागम कौन-सा है?
(a) व्यवहारवादी उपागम (b) सृजनवादी उपागम
(c) संरचनात्मक उपागम (d) मानवतावादी उपागम
34. स्कूलों में अधिकतम शिक्षकों में अपने छात्रों के लिए किसका सर्वाधिक अभाव पाया जाता है?
(a) स्नेह (b) क्रोध
(c) दोषारोपण (d) घृणा
35. कक्षा-कक्ष में शिक्षण व शिक्षार्थियों के मध्य संप्रेषण होना चाहिए—
(a) पाठ्य-पुस्तक केंद्रित (b) विद्यार्थी केंद्रित
(c) शिक्षक केंद्रित (d) उद्देश्य केंद्रित
36. शिवानी द्वारा पूछे गए एक प्रश्न का उत्तर शिक्षक तत्काल नहीं दे सकता है, शिक्षक की प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए?
(a) शिक्षक द्वारा शिवानी को चुप करा देना चाहिए
(b) शिक्षक द्वारा शिवानी का ध्यान बाँटा देना चाहिए
(c) शिक्षक को कहना चाहिए कि "मैं नहीं जानता हूँ"
(d) शिक्षक द्वारा इस प्रश्न का सही उत्तर बाद में समझकर देना चाहिए
37. आधुनिक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका है—
(a) सीखने हेतु एक अच्छे सुलभकर्ता की
(b) बच्चों को गणित, विज्ञान और भाषा सिखाने की
(c) बच्चों को मूल्य आधारित शिक्षा देने की
(d) बच्चों को सभी कुछ पढ़ाने की
38. निम्न में से कौन-सा प्रबलन के प्रकार हैं?
(a) प्राथमिक व गौण (b) धनात्मक व ऋणात्मक
(c) 'ए' और 'बी' दोनों (d) कोई भी नहीं

39. निम्न में से कौन-सी घटना नकारात्मक पुनर्बलन का उदाहरण है—
 (a) दण्ड देना
 (b) पुरस्कार को रोक लेना
 (c) दर्दनाक उद्दीपक को दूर करना
 (d) अत्यधिक पुरस्कार देना
40. बालक के लिए अध्यापक द्वारा दी गई प्रतिपुष्टि का ज्ञान है—
 (a) पुनर्बलन (b) स्थानांतरण
 (c) कुंठा (d) प्रतिगमन
41. कक्षा में अनुशासन बनाए रखने के लिए सर्वाधिक प्रभावशाली उपाय क्या है?
 (a) अनुशासनहीन छात्रों को कक्षा से बाहर निकाल देना
 (b) शिक्षण को रोचक एवं व्यावहारिक बनाना
 (c) छात्रों के अभिभावकों को सूचित करना
 (d) अनुशासनहीन छात्रों को विशिष्ट सुविधाएँ प्रदान करना
42. सामान्य से विशेष की तर्क की प्रक्रिया निम्नलिखित में से कौन-सी पद्धति में है?
 (a) आगमनात्मक (b) निगमनात्मक
 (c) (a) और (b) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं
43. कक्षा शिक्षण में पाठ प्रस्तावना सोपान सीखने के किस नियम पर आधारित है?
 (a) प्रभाव का नियम (b) सादृश्यता का नियम
 (c) तत्परता का नियम (d) साहचर्य का नियम
44. निम्न में से कौन शिक्षण कुशलता से सम्बन्धित है?
 (a) श्यामपट्ट पर लिखना (b) प्रश्नों को हल करना
 (c) प्रश्न पूछना (d) उपरोक्त सभी
45. कक्षा में विद्यार्थियों की रुचि बनाए रखने के लिए एक शिक्षक को उचित है
 (a) श्यामपट्ट का प्रयोग करना
 (b) चर्चा करना
 (c) कहानी कहना
 (d) प्रश्न पूछना
46. यदि कुछ विद्यार्थी कक्षा में अध्ययन की चित्तवृत्ति में नहीं हैं, तो आप
 (a) उन्हें अध्ययन के लिए बाध्य करेंगे
 (b) उन विद्यार्थियों को कक्षा छोड़ने के लिए कहेंगे
 (c) उन्हें चेतावनी देंगे कि वे अवश्य अध्ययन करें नहीं तो आप प्रधानाध्यापक को सूचित कर देंगे
 (d) उन्हें उनकी रुचि अथवा आप अपने विषय के अनुसार रुचिपूर्ण चीजें बताएँगे
47. कक्षा में जो विद्यार्थी प्रश्न पूछते हैं उन्हें
 (a) कक्षा के बाद शिक्षक से मिलने की सलाह दी जाए
 (b) कक्षा चर्चा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए
 (c) लगातार प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए
 (d) स्वतन्त्र रूप से उत्तर ढूँढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए
48. श्यामपट्ट पर लिखते समय सबसे महत्वपूर्ण क्या है?
 (a) अच्छी लिखावट
 (b) लेखन में स्पष्टता
 (c) बड़े अक्षरों में लिखना
 (d) छोटे अक्षरों में लिखना
49. एक शिक्षक को साधन सम्पन्न होना चाहिए। इसका अर्थ है
 (a) उनके पास पर्याप्त धन-सम्पदा होनी चाहिए ताकि उसे शिक्षण देने की जरूरत न पड़े
 (b) उनका अधिकारियों के उच्च स्तर से सम्पर्क होना चाहिए
 (c) उनको अपने विद्यार्थियों की समस्याओं को हल करने का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए
 (d) विद्यार्थियों के बीच उनकी प्रसिद्धि होनी चाहिए
50. अपने विद्यार्थियों को समझने के लिए एक शिक्षक में अच्छी जानकारी होनी चाहिए
 (a) बाल मनोविज्ञान की
 (b) बच्चों को समझने की प्रवृत्ति की
 (c) विषय वस्तु के प्रति विद्यार्थियों के मत की
 (d) उपरोक्त सभी की
51. विद्यार्थियों में श्रम की स्फूर्ति का विकास करने के लिए
 (a) शिक्षक अपने ही श्रम में प्रवृत्ति दिखाएगा
 (b) शिक्षक श्रम के महत्व पर व्याख्यान करेगा
 (c) समय-समय पर विद्यार्थियों को श्रम करने का अवसर देना पड़ेगा
 (d) विद्यार्थियों को श्रम करने वाले लोगों का उदाहरण देना पड़ेगा
52. यदि एक विद्यार्थी कक्षा में भाग लेने से संकोच करता है तो आप
 (a) उससे प्रश्न नहीं पूछेंगे
 (b) जिन प्रश्नों के उत्तर वह दे सकता है, केवल उन्हीं प्रश्नों को पूछेंगे
 (c) उन प्रश्नों को नहीं पूछेंगे जिसके उत्तर उसके सामर्थ्य से बाहर है जिसके कारण वह कक्षा में उपहास का पात्र बन सकता है।
 (d) उससे केवल तब प्रश्न पूछेंगे जब वह उसके उत्तर देने के लिए उत्साहित हो

53. शिक्षक का बर्ताव होना चाहिए -

- (a) प्रशासनात्मक (b) शिक्षाप्रद
(c) आदर्शवादी (d) निदेशात्मक

54. निम्नलिखित में से कौन-सी एक महत्वपूर्ण गतिविधि बच्चों को सीखने के लिए सक्षम बनाती है?

- (a) संवाद (b) पुरस्कार
(c) व्याख्यान (d) निर्देश

55. प्राथमिक कक्षा में सकारात्मक वातावरण निर्मित करने के लिए एक शिक्षक को

- (a) विभेद नहीं करना चाहिए और प्रत्येक बच्चे के लिए समान लक्ष्य सुनिश्चित करने चाहिए
(b) समूह-गतिविधियों के दौरान समाजमिति के आधार पर उन्हें अपने समूह बनाने की अनुमति देनी चाहिए
(c) सकारात्मक अंत वाली कहानियाँ सुनानी चाहिए।
(d) सुबह प्रत्येक बच्चे का अभिवादन करना चाहिए

56. ब्लूम की टैक्सोनामी - - - की पदानुक्रमिक व्यवस्था है।

- (a) पाठ्यचर्या संबंधी घोषणाओं (b) पठन कौशल
(c) संज्ञानात्मक उद्देश्यों (d) उपलब्धि लक्ष्यों

57. बीजों का अंकुरण संकल्पना के शिक्षण की सबसे प्रभावी पद्धति है-

- (a) विद्यार्थियों द्वारा पौधे के बीज बोना और उसके अंकुरण के चरणों का अवलोकन करना
(b) श्यामपट्ट पर चित्र बनाना और वर्णन करना
(c) बीज की वृद्धि के चित्र दिखाना
(d) विस्तृत व्याख्या करना

58. निम्नलिखित में से कौन-सा 'समझ के लिए शिक्षण' को प्रदर्शित नहीं करता?

- (a) समानता और अंतर देखने और सादृश्यता स्थापित करने के लिए विद्यार्थियों की सहायता करना
(b) विद्यार्थियों को एकांकी तथ्यों और प्रक्रियाओं को याद करने के योग्य बनाना
(c) परिघटना या अवधारणा को अपने शब्दों में अभिव्यक्त करने के लिए विद्यार्थियों को कहना
(d) नियम कैसे काम करता है इसे स्पष्ट करने हेतु उदाहरण उपलब्ध कराने के लिए विद्यार्थियों को पढ़ाना

59. विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सीखने सम्बन्धी समस्याओं को संबोधित करने का सबसे बेहतर तरीका है

- (a) महँगी और चमकदार सहायक सामग्री का प्रयोग करना
(b) सरल और रोचक पाठ्य-पुस्तकों को प्रयोग करना

(c) कहानी-कथन पद्धति का प्रयोग करना

(d) क्षमता के अनुरूप विभिन्न शिक्षण-पद्धतियों का प्रयोग करना

60. शिक्षार्थी जो पहले सीख चुके हैं उसकी पुनरावृत्ति और प्रत्यास्मरण में शिक्षार्थियों की मदद करना महत्वपूर्ण है क्योंकि -

- (a) पूर्व पाठों को दोहराने का यह एक प्रभावी तरीका है
(b) यह शिक्षार्थियों की स्मृति को बढ़ाता है जिससे सीखना सुदृढ़ होता है
(c) यह किसी भी कक्षा-अनुदेशन के लिए एक सुविधाजनक शुरुआत है
(d) नई जानकारी को पूर्व जानकारी से जोड़ना सीखने को समृद्ध बनाता है

61. निचली कक्षाओं में शिक्षण की खेल-पद्धति मूल रूप से आधारित है

- (a) शिक्षण-पद्धति के सिद्धांतों पर
(b) विकास एवं वृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर
(c) शिक्षण के समाजशास्त्रीय सिद्धांतों पर
(d) शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों के सिद्धांत पर

62. एक शिक्षिका पाठ्य-वस्तु और फल-सब्जियों के कुछ चित्रों का प्रयोग करती है और अपने विद्यार्थियों से चर्चा करती है। विद्यार्थी इस जानकारी को अपने पूर्व ज्ञान से जोड़ते हैं और पोषण की संकल्पना को सीखते हैं। यह उपागम पर आधारित है।

- (a) ज्ञान के निर्माण
(b) अधिगम के शास्त्रीय अनुबन्धन
(c) पुनर्बलन के सिद्धांत
(d) अधिगम के सक्रिय अनुबन्धन

63. भारत में बहुत से बच्चे, विशेषकर लड़कियाँ, विद्यालय में आने से पहले और विद्यालय से वापस जाने के बाद घर का काम करते हैं। आपके विचार से इस संदर्भ में एक शिक्षिका को गृहकार्य के बारे में क्या करना चाहिए?

- (a) शिक्षिका को ऐसा गृहकार्य देना चाहिए जो विद्यालय में कराए गए अधिगम को बच्चों के घरेलू जीवन से जोड़ता है।
(b) शिक्षिका को सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे अपना गृहकार्य पूरा करने के लिए सुबह जल्दी उठें और देर तक रुकें।
(c) बच्चों के माता-पिता से उनके गृहकार्य को पूरा कराने के लिए द्यूशन लगवाने के लिए कहिए।
(d) उसे उन बच्चों को कठोर दंड देना चाहिए जो अपना गृहकार्य पूरा नहीं करते हैं।

64. बच्चों को समूह में कार्य देना एक प्रभावी शिक्षण-रणनीति है, क्योंकि –
- इससे शिक्षक का काम कम हो जाता है।
 - छोटे समूह में कुछ बच्चों को दूसरे बच्चों पर हावी होने की अनुमति होती है।
 - सीखने की प्रक्रिया में बच्चे एक-दूसरे से सीखते हैं और परस्पर सहायता भी करते हैं।
 - बच्चे अपना काम जल्दी करने में समर्थ होते हैं।
65. मधु गणित में कमजोर है। एक अच्छे अध्यापक की दृष्टि में उसके गणित में कमजोर होने का क्या कारण हो सकता है?
- प्रायः लड़कियाँ गणित में कमजोर होती हैं
 - उसके माता-पिता अनपढ़ हैं
 - उसे अध्ययन में रुचि नहीं है
 - गणित शिक्षण की विधि त्रुटिपूर्ण है
66. कठोर शिल्प उपागम किस सिद्धांत पर आधारित है?
- औद्योगिक
 - इंजीनियरिंग
 - व्यावसायिक
 - अनुदेशन
67. शिक्षक को ज्ञान होना चाहिए -
- अध्यापन विषय का
 - बाल मनोविज्ञान का
 - शिक्षा संहिता का
 - अध्यापन विषय एवं बाल-मनोविज्ञान का
68. एक सशक्त विद्यालय अपने शिक्षकों में निम्नलिखित योग्यताओं में से किसे सर्वाधिक बढ़ावा देगा?
- प्रतिस्पर्धात्मक अभिवृत्ति
 - परीक्षण करने की प्रवृत्ति
 - स्मृति
 - अनुशासित स्वभाव
69. बच्चे की जिज्ञासा शान्त करनी चाहिए
- जब शिक्षक फुर्सत में हो
 - जब विद्यार्थी फुर्सत में हो
 - कुछ समय के पश्चात्
 - तत्काल, जब विद्यार्थी द्वारा जिज्ञासा की गई है
70. भारत में अधिकांश कक्षाएँ बहुभाषी होती हैं इसे शिक्षक द्वारा के रूप में देखा जाना चाहिए।
- परेशानी
 - समस्या
 - संसाधन
 - बाधा
71. अध्ययन की दृष्टि से व्यक्तिगत विभिन्नताओं का महत्व है-
- विद्यार्थियों की व्यक्तिगत शिक्षण व्यवस्था
 - व्यक्तिगत रुचियों के अनुसार गृह कार्य देना
 - विद्यार्थियों का समरूप समूहों में वर्गीकरण
 - उपर्युक्त सभी
72. एक कक्षा में वैयक्तिक विभिन्नताओं के क्षेत्र हो सकते हैं :
- रुचियों के
 - सीखने के
 - चरित्र के
 - उपरोक्त सभी
73. समान आयु के बच्चों में भी आकृति, योग्यता, स्वभाव, रुचि, प्रवृत्ति और अन्य बातों में बहुत अन्तर होता है इस सन्दर्भ में विद्यालय की क्या भूमिका है?
- बच्चों के आकलन के लिए नियामक मानक स्थापित करना
 - सुनिश्चित करना कि शिक्षक मानकीकृत निर्देश और पाठ्य-पुस्तकों का उपयोग करे
 - सुनिश्चित करना कि सभी बच्चों का विकास एक ही प्रकार से हो
 - सुनिश्चित करना कि प्रत्येक बच्चे को अपनी क्षमताओं के अनुसार विकास के अवसर मिलें
74. भारत में भाषिक विभिन्नता बहुत है। इस संदर्भ में विशेषकर कक्षा I और II के प्राथमिक स्तर पर बहुभाषिक कक्षाओं के बारे में सर्वथा उपयुक्त कथन है—
- शिक्षार्थियों को अपनी मातृभाषा या स्थानीय भाषा का प्रयोग करने पर दंडित किया जाए।
 - विद्यालय में उन्हीं बच्चों को प्रवेश दिया जाए जिनकी मातृभाषा वही हो जो शिक्षा के लिए अपनाई जा रही हो
 - शिक्षक को सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए और सभी भाषाओं में अभिव्यक्ति के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
 - जो बच्चे कक्षा में मातृभाषा का उपयोग करते हैं अध्यापक को उनकी उपेक्षा करनी चाहिए।
75. शिक्षार्थियों (अधिगमकर्ता) की वैयक्तिक विभिन्नताओं के संदर्भ में शिक्षिका को चाहिए—
- विविध प्रकार की अधिगम परिस्थितियों को उपलब्ध कराना
 - निगमनात्मक पद्धति के आधार पर समस्याओं का समाधान करना
 - कलनविधि (एल्गोरिथ्म) का अधिकतर प्रयोग करना।
 - बाद करने के लिए शिक्षार्थियों को तथ्य उपलब्ध कराना।
76. जिस कक्षाकक्ष में विविध पृष्ठभूमि से विद्यार्थी आते हों, वहाँ एक प्रभावी शिक्षक—
- समान आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों का समूह बनाएगा और उन्हें एक साथ रखेगा
 - वंचित पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम करने के लिए कहेगा ताकि वे अपने साथियों के बराबर पहुँच सकें
 - समूह में वैयक्तिक भिन्नता को बताने के लिए उनकी सांस्कृतिक जानकारी पर ध्यान देगा

- (d) सांस्कृतिक जानकारी की अनदेखी करेगा और एक सर्वमान्य तरीके से अपने सभी विद्यार्थियों के साथ व्यवहार करेगा।
77. एक शिक्षिका अपनी कक्षा में विविधता को संबोधित कर सकती है –
- भिन्नताओं को स्वीकार करके और उसे महत्व देकर
 - बच्चों की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का शिक्षा-शास्त्रीय संसाधन के रूप में प्रयोग करके
 - विभिन्न अधिगम शैलियों को समायोजित करके
 - मानक निर्देश देकर और निष्पादन हेतु सर्वमान्य मानदण्ड निर्धारित करके
- नीचे दिए गए कूट के आधार पर सही उत्तर चुनिए।
- A, B और C
 - A, B, C और D
 - A, B और D
 - B, C और D
78. अपनी कक्षा की वैयक्तिक भिन्नताओं से निपटने के लिए शिक्षक को चाहिए कि—
- शिक्षण और आकलन के समान और मानक तरीके हों
 - बच्चों को उनके अंकों के आधार पर अलग कर उनको नामित करें
 - बच्चों से बातचीत करें और उनके दृष्टिकोण को महत्व दें
 - विद्यार्थियों के लिए कठोर नियमों को लागू करें
79. अध्यापन के समय अध्यापक को निम्नलिखित में से किसका सर्वाधिक ध्यान रखना चाहिए?
- विषय-वस्तु
 - विद्यार्थियों की आयु
 - वैयक्तिक भिन्नता
 - विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि
80. वैयक्तिक भिन्नता का क्या अर्थ है?
- दो व्यक्तियों में शारीरिक भिन्नता होना
 - कोई दो व्यक्ति शारीरिक, मानसिक योग्यता और संवेगात्मक दशा में समान और एक जैसे नहीं होते हैं
 - कोई दो व्यक्ति शारीरिक और मानसिक योग्यता में समान और एक जैसे होते हैं
 - उपरोक्त में से कोई नहीं
81. शिक्षार्थियों में वैयक्तिक भिन्नताओं को संबोधित करने के लिए एक विद्यालय किस प्रकार का सहयोग उपलब्ध करवा सकता है?
- सभी शिक्षार्थियों के लिए समान स्तर की पाठ्यचर्या का अनुगमन करना
 - बाल-केन्द्रित पाठ्यचर्या का पालन करना और शिक्षार्थियों को सीखने के अनेक अवसर उपलब्ध करवाना।
 - शिक्षार्थियों में वैयक्तिक भिन्नताओं को समाप्त करने के लिए हर संभव उपाय करना।
 - धीमी गति से सीखने वाले शिक्षार्थियों को विशेष विद्यालयों में भेजना।
82. वैयक्तिक अंतरों का ज्ञान शिक्षकों की मदद किसमें करता है?
- पिछड़े शिक्षार्थियों के साथ कठोर परिश्रम करने की निरर्थकता को समझने में, क्योंकि वे बाकी कक्षा के समान कभी नहीं हो सकते
 - वैयक्तिक अंतरों को शिक्षार्थियों की असफलता की स्वीकृति एवं उत्तरदायी ठहराने में
 - सभी शिक्षार्थियों को समान रूप से लाभ पहुँचाने के लिए अपनी प्रस्तुति-शैली को एकरूप बनाने में
 - सभी शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं का आकलन करने और उसके अनुरूप उन्हें पढ़ाने में
83. अनुसंधान से पता चला है कि विद्यालयों में अनेक स्तरों पर विभेदीकरण पाया जाता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर इनमें से कौन-सा विभेदीकरण का एक उदाहरण नहीं है?
- बहुत से अध्यापक पढ़ाने के लिए केवल व्याख्यान विधि का प्रयोग करते हैं।
 - मध्याह्न भोजन के दौरान दलित बच्चों को अलग बैठाया जाता है।
 - लड़कियों को गणित तथा विज्ञान विषयों को लेने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है।
 - अध्यापकों की निम्न सामाजिक-आर्थिक परिवेश से आए बच्चों से बहुत कम अपेक्षाएँ होती हैं।
84. आप अनपढ़ माता-पिता के बच्चे को अंग्रेजी सिखाना चाहते हैं—
- आप बच्चे से अंग्रेजी में बात करेंगे
 - आप बच्चे को अंग्रेजी में बोलने के लिए बाध्य करेंगे
 - आप बच्चे को मातृभाषा में बोलने से रोकेंगे
 - आप उसे मातृ-भाषा की सहायता से अंग्रेजी सिखाने का प्रयास करेंगे
85. शिक्षा को बाल-केन्द्रित शिक्षा माना जाता है, जब
- बालक के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास होता है
 - बालक की माँग रुचि व अभिवृत्ति की प्राथमिकता होती है
 - शिक्षक के स्वयं के महत्व को ध्यान में रखा जाता है
 - पाठ्यक्रम को महत्व दिया जाता है
86. प्राथमिक स्तर पर बच्चों के लिए संगीत, कहानी कहने, नाटक, कला, शिल्प, खेल आदि जैसी गतिविधियों का संचालन—
- सप्ताह में एक बार होना चाहिए।
 - प्रत्येक विषय के साथ सम्मिलित होना चाहिए
 - अलग से संचालित करना चाहिए
 - अतिरिक्त समय में कराया जाना चाहिए

87. एक शिक्षिका अपने आप कभी भी प्रश्नों के उत्तर नहीं देती। वह अपने विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए, समूह चर्चाएं और सहयोगात्मक अधिगम अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह उपागम के सिद्धांत पर आधारित है?
- सीखने की तत्परता
 - सक्रिय भागीदारी
 - अनुदेशात्मक सामग्री के उचित संगठन
 - अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करना और भूमिका-प्रतिरूप बनाना
88. सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका होनी चाहिए—
- सुगमकर्ता की
 - अनुदेशकर्ता की
 - प्रशिक्षक की
 - नियंत्रणकर्ता की
89. एक प्रभावी शिक्षक के लिए आवश्यक है कि—
- वह उच्च जाति से सम्बन्धित हो
 - उसका उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर हो
 - वह संप्रेषण में निपुण हो
 - वह कठोर हो
90. गतिविधि आधारित शिक्षण पर बल देता है।
- सभी विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी
 - निश्चित अवधि में गतिविधि पूरा करने
 - खेलने
 - अनुशासित कथा
91. सह-शैक्षणिक क्षेत्रों में निष्पादन के आधार पर शैक्षणिक क्षेत्रों में निष्पादन के स्तर को बढ़ाने का औचित्य स्थापन किस आधार पर किया जा सकता है?
- यह वैयक्तिक भिन्नताओं को संतुष्ट करता है
 - यह हाशियाकृत विद्यार्थियों के लिए प्रतिपूरक भेदभाव का नीति का अनुगमन करता है
 - यह सार्वभौमिक धारण (retention) को सुनिश्चित करता है
 - यह हाथ के लिए जाने वाले श्रम के प्रति सम्मान विकसित करता है
92. बालक केन्द्रित शिक्षा के अंतर्गत क्या सम्मिलित नहीं है?
- गृहकार्य प्रदान करना
 - बालक को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना
 - बाल के अनुभव को प्राथमिकता प्रदान करना
 - बालक की सृजनात्मकता को बढ़ावा देना
93. एक शिक्षार्थी केन्द्रित कक्षा-कक्ष में अध्यापिका करेगी
- अधिगम को सुगम बनाने के लिए बच्चों को एक-दूसरे के साथ अंकों के लिए मुकाबला करने हेतु प्रोत्साहित करना
 - मुख्य तथ्यों की व्याख्या करने के लिए व्याख्यान पद्धति का प्रयोग करना और बाद में शिक्षार्थियों का उनकी सजगता के लिए आकलन करना
 - वह अपने विद्यार्थियों से जिस प्रकार की अपेक्षा करती है उसे प्रदर्शित करना और तब बच्चों को वैसा करने के लिए दिशा-निर्देश देना
 - इस प्रकार की पद्धतियों को नियोजित करना जिसमें शिक्षार्थी अपने स्वयं के अधिगम के लिए पहल करने में प्रोत्साहित हों
94. एक प्रभावशाली अध्यापिका होने के लिए यह महत्वपूर्ण है
- पुस्तक के उत्तरों को लिखाने पर बल देना
 - समूह गतिविधि के बजाय वैयक्तिक अधिगम पर ध्यान देना
 - विद्यार्थियों के द्वारा प्रश्न पूछने के कारण उत्पन्न व्यवधान की अनदेखी करना
 - प्रत्येक बच्चे के सम्पर्क में रहना
95. प्राथमिक विद्यालय के कक्षा-कक्ष के संदर्भ में सक्रियबद्धता का क्या अर्थ है ?
- याद करना, प्रत्यास्मरण और सुनाना
 - शिक्षक का अनुकरण और नकल करना
 - जाँच-पड़ताल करना, प्रश्न पूछना और वाद-विवाद
 - शिक्षक द्वारा दिये गये उत्तरों को नकल करना
96. कक्षा तक पहुँचने वाली बच्चों की भोली अवधारणाओं को जानना—
- शिक्षक की योजना और शिक्षण में रुकावट बनता है
 - शिक्षक के हौसले को पस्त कर देता है क्योंकि इससे उसका कार्यभार बढ़ता है
 - शिक्षक के किसी उद्देश्य की पूर्ति नहीं करता
 - शिक्षक के लिए अपने शिक्षण को अधिक सार्थक बनाने की योजना बनाने में सहायक होता है
97. किसी प्रगतिशील कक्षा की व्यवस्था में शिक्षक एक ऐसे वातावरण को उपलब्ध कराकर अधिगम को सुगम बनाता है, जो—
- खोज को प्रोत्साहन देता है
 - नियामक है
 - समावेशन को हतोत्साहित करता है
 - आवृत्ति को बढ़ावा देता है
98. अधिगमकर्ता-केन्द्रित विधि का आशय है
- वे विधियाँ, जहाँ अधिगम में अधिगमकर्ता की अपनी पहल तथा प्रयास सम्मिलित होते हैं
 - उन विधियों को अपनाना, जिनमें शिक्षक मुख्य कर्ता (पात्र) होता है

- (c) कि शिक्षक अधिगमकर्ता के लिए स्वयं निष्कर्ष निकाल देते हैं
- (d) परम्परागत व्याख्यात्मक विधियाँ
99. निम्नलिखित में से कौन सी स्थिति बालकेंद्रित कक्षा-कक्ष को प्रदर्शित कर रही है ?
- (a) एक कक्षा जिसमें शिक्षिका नोट लिखा देती है और शिक्षार्थियों से उन्हें याद करने को कहा जाता है
- (b) एक कक्षा जिसमें पाठ्य-पुस्तक एक मात्र संसाधन होता है जिसका संदर्भ शिक्षिका देती है।
- (c) एक कक्षा जिसमें शिक्षार्थी समूहों में बैठे हैं और शिक्षिका बारी-बारी से प्रत्येक समूह में जा रही है।
- (d) एक कक्षा जिसमें शिक्षार्थियों का व्यवहार शिक्षिका द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कार और दंड से संचालित होता है
100. के विचार से बच्चे सक्रिय ज्ञान-निर्माता तथा नन्हें वैज्ञानिक हैं, जो संसार के बारे में अपने सिद्धान्तों की रचना करते हैं।
- (a) स्किनर (b) पैवलोव
- (c) युंग (d) पियाजे
101. “बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ का सृजन करते हैं।” इसका श्रेय-----को जाता है।
- (a) पैवलोव (b) कोहलबर्ग
- (c) स्किनर (d) पियाजे
102. “बच्चे अपनी समझ से विश्व की परिकल्पना करते हैं।” ये कथन किसने दिया था?
- (a) पैवलूव (b) स्किनर
- (c) पियाजे (d) कोहलबर्ग
103. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना महत्वपूर्ण है, क्योंकि—
- (a) शिक्षार्थी हमेशा समूहों में ही बेहतर सीखते हैं।
- (b) शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में ऐसा ही बताया गया है।
- (c) इससे प्रत्येक शिक्षार्थी को अनुशासित करने के लिए शिक्षकों को बेहतर अवसर मिलते हैं।
- (d) बच्चों की विकास दर भिन्न होती है और वे भिन्न तरीकों से सीख सकते हैं।
104. नर्सरी कक्षा में शुरुआत करने के लिए कौन-सी विषयवस्तु सबसे अच्छी है?
- (a) मेरा परिवार (b) मेरा प्रिय मित्र
- (c) मेरा पड़ोस (d) मेरा विद्यालय
105. सम्प्रेषण कार्य होना चाहिए—
- (a) स्पष्ट (b) विश्वसनीय
- (c) समयबद्ध (d) उपरोक्त सभी
106. सम्प्रेषण का वास्तविक अर्थ है—
- (a) सूचनाओं को भली प्रकार से प्रेषित करना
- (b) सूचनाओं पर भाषण देना
- (c) शिक्षक और छात्र के बीच वार्तालाप होना
- (d) इनमें से कोई नहीं
107. सामूहिक सम्प्रेषण का गुण है—
- (a) यह विधि सरल तथा सस्ती है
- (b) छात्रों को व्यवहार कुशल बनाती है
- (c) छात्रों में नेतृत्व कुशलता का विकास करती है
- (d) उपरोक्त सभी
108. सम्प्रेषण के प्रकार हैं—
- (a) चार (b) दो
- (c) तीन (d) पाँच
109. सम्प्रेषण के प्रमुख घटक हैं—
- (a) प्रेषक (b) प्रापक
- (c) माध्यम (d) उपरोक्त सभी

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|----------|
| 1. (c) | 12. (b) | 23. (a) | 34. (d) | 45. (d) | 56. (c) | 67. (d) | 78. (c) | 89. (c) | 100. (d) |
| 2. (b) | 13. (a) | 24. (d) | 35. (d) | 46. (d) | 57. (a) | 68. (a) | 79. (c) | 90. (a) | 101. (d) |
| 3. (c) | 14. (a) | 25. (c) | 36. (d) | 47. (c) | 58. (b) | 69. (d) | 80. (b) | 91. (a) | 102. (c) |
| 4. (a) | 15. (d) | 26. (c) | 37. (a) | 48. (b) | 59. (d) | 70. (c) | 81. (b) | 92. (a) | 103. (d) |
| 5. (c) | 16. (d) | 27. (c) | 38. (c) | 49. (c) | 60. (d) | 71. (d) | 82. (d) | 93. (d) | 104. (a) |
| 6. (b) | 17. (a) | 28. (d) | 39. (c) | 50. (d) | 61. (b) | 72. (d) | 83. (a) | 94. (d) | 105. (d) |
| 7. (b) | 18. (d) | 29. (b) | 40. (a) | 51. (c) | 62. (a) | 73. (d) | 84. (d) | 95. (c) | 106. (d) |
| 8. (d) | 19. (d) | 30. (d) | 41. (b) | 52. (d) | 63. (a) | 74. (c) | 85. (b) | 96. (d) | 107. (d) |
| 9. (b) | 20. (b) | 31. (a) | 42. (b) | 53. (c) | 64. (c) | 75. (a) | 86. (b) | 97. (a) | 108. (b) |
| 10. (d) | 21. (b) | 32. (c) | 43. (c) | 54. (a) | 65. (d) | 76. (d) | 87. (b) | 98. (a) | 109. (d) |
| 11. (c) | 22. (b) | 33. (b) | 44. (d) | 55. (a) | 66. (b) | 77. (a) | 88. (a) | 99. (c) | |

समावेशी शिक्षा-निर्देशन एवं परामर्श

7.

समावेशी शिक्षा

शैक्षिक समावेश से अभिप्राय

सलमानका सम्मेलन (1994) के अनुसार शैक्षिक समावेश से तात्पर्य है— “बच्चों के उनके शारीरिक, बुद्धिमत्ता, सामाजिक, भावनात्मकता, भाषायी या कोई अन्य परिस्थितियों पर ध्यान दिये बिना विद्यालय को सभी बच्चों को दाखिला देना चाहिए। यह सम्मिलित करता है विकलांग और प्रतिभावान बच्चे, गली के और कार्य करने वाले बच्चे, गाँव या बंजारे बच्चे, भाषायी, प्रजातीय या सांस्कृतिक अल्पसंख्यक के बच्चे तथा दूसरे अलाभान्वित या अधिकारहीन क्षेत्र या समूह के बच्चे को।”

मानव विकास संसाधन मंत्रालय के समावेशित शिक्षा स्कीम के अनुसार— समावेशित शिक्षा से तात्पर्य सभी सीखने वाले, बिना विकलांग एवं विकलांग नवयुवक, पूर्व-विद्यालय प्रावधानों, विद्यालय और सामुदायिक शैक्षिक स्थानों पर युपयुक्त तंत्र एवं सहायक सुविधाओं के साथ एक साथ सीख (पढ़) सके।

एक बात ध्यान रखनी चाहिए कि समावेशित शिक्षा से तात्पर्य केवल विकलांग बच्चों को ही कक्षा में सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा देना ही नहीं है, बल्कि सभी बच्चे जो विभिन्न वर्ग एवं योग्यता के हैं, को एक साथ एक ही कक्षा में शिक्षा देना समावेशित शिक्षा कहलाता है।

शैक्षिक समावेशन के अंतर्गत आने वाले

विभिन्न वर्ग के बालक

विशिष्ट आवश्यकता वाले बालक

विशिष्ट आवश्यकता वाले बालक से अभिप्राय—

- **क्रुक शैंक के अनुसार—**“विशिष्ट बालक वह है जो बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक अथवा संवेगात्मक दृष्टि से सामान्य समझे जाने वाली दृष्टि तथा विकास से इतना भिन्न है कि वह नियमित विद्यालय कार्यक्रम से पूर्ण लाभ नहीं उठा सकता है तथा विशिष्ट कक्षा अथवा पूरक शिक्षण व सेवा चाहता है।”
- **क्रो एवं क्रो के अनुसार—**“विशिष्ट प्रकार या विशिष्ट शब्द ऐसे गुणों या उस गुण को रखने वाले व्यक्ति पर लागू किया जाता है जिसके कारण व्यक्ति अपने साथियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है।”
- **हीबर्ड के अनुसार—**“विशिष्ट बच्चों की श्रेणी में वे बच्चे आते हैं जिन्हें सीखने में कठिनाई का अनुभव होता है या जिनका मानसिक या शैक्षिक निष्पादन या सृजन अत्यन्त उच्च कोटि का होता है या जिनको व्यवहारिक, सांवेगिक एवं सामाजिक समस्याएँ घेर लेती हैं या वे विभिन्न शारीरिक अपंगताओं या निर्बलताओं से पीड़ित रहते हैं, जिनके कारण ही उनके लिए अलग से विशिष्ट शिक्षा की व्यवस्था करनी पड़ती है।”

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि, विशिष्ट बच्चे वे बच्चे हैं जो कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, शैक्षिक, सांवेगिक एवं व्यावहारिक विशेषताओं के कारण किसी सामान्य या औसत बच्चों से उस सीमा तक स्पष्ट रूप से अलग होते हैं, जहाँ कि उन्हें अपनी योग्यताओं, क्षमताओं एवं शक्तियों को समुचित रूप से विकसित करने के लिए परम्परागत शिक्षण-विधियों में परिमार्जन या विशिष्ट प्रकार के कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है, उन्हें विशिष्ट बालक या विशिष्ट आवश्यकता वाले बालक कहा जाता है।

विशिष्ट आवश्यकता वाले बालकों की पहचान—

विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे सामान्य बच्चों से विशिष्ट लक्षणों वाले होते हैं। विशिष्ट बच्चों में निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ पायी जाती हैं— यह अंतर्मुखी, निराशवादी, सांवेगिक अस्थिरता वाले, शर्मिले, निष्क्रीय, आत्मकेन्द्रित, चिंताग्रस्त, निर्भर प्रवृत्ति, कभी-कभी उग्र, एकाकी भावना वाले उच्च सृजात्मक कौशल वाले, दृढ़ निश्चयी आदि होते हैं इनकी पहचान हम निम्नलिखित तरीके से कर सकते हैं—

1. **निरीक्षण द्वारा—** अध्यापक अपने कक्षा-कक्ष में शिक्षण के दौरान उपरोक्त लक्षणों के आधार पर विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान कर सकता है।

2. **मानसिक परीक्षण द्वारा—** छात्रों का मानसिक परीक्षण कर उनकी विशिष्टता का पता लगाया जा सकता है। बुद्धि परीक्षण, मानसिक योग्यता परीक्षण, व्यक्तित्व परीक्षण आदि की सहायता से विशिष्ट आवश्यकता वाले बालकों की पहचान की जा सकती है।

3. **व्यवहार के अवलोकन के द्वारा—** विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों द्वारा किये गये व्यवहारों के अवलोकन, मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं विश्लेषण से उनकी विशिष्टताओं का पता लगाया जा सकता है।

4. **चिकित्सकीय परीक्षण द्वारा—** जब साधारण परीक्षणों द्वारा विशिष्ट बालकों की पहचान नहीं हो पाती है तब चिकित्सकीय परीक्षण कर उनकी पहचान की जाती है।

5. **शैक्षिक परिणामों के द्वारा—** विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के कक्षा के परीक्षा में प्राप्त परिणामों का अवलोकन एवं विश्लेषण के द्वारा इनकी विशिष्टता का पता लगाया जा सकता है।

6. **समाजमिति एवं साक्षात्कार के द्वारा—** विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान के लिए समाजमिति एवं उनका प्रत्यक्ष विधि से साक्षात्कार कर उनकी विशिष्टताओं का पता लगाया जा सकता है।

विशिष्ट बालकों के प्रकार—

■ मनोवैज्ञानिकों ने विशिष्ट बालकों या असाधारण बालकों के कई प्रकार बताए हैं। हेवार्ड तथा औरलैंसकी (Heward and Orlansky, 1980) के अनुसार विशिष्ट बालकों के निम्नवत् प्रकार होते हैं—

विशिष्ट बालक—

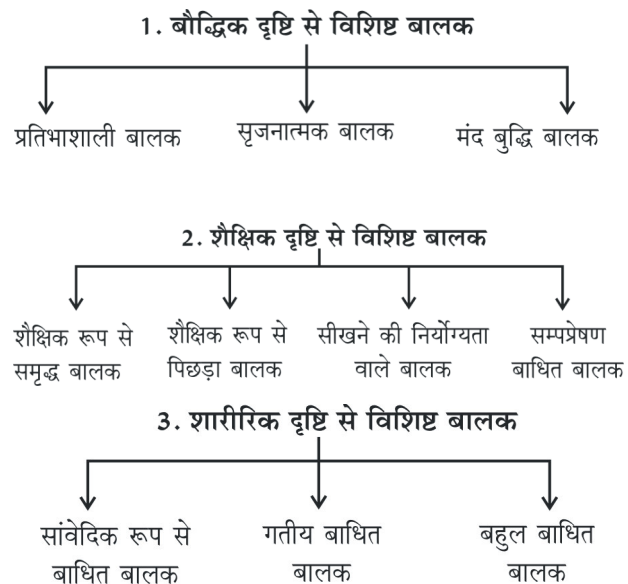
- (i) प्रतिभाशाली या प्रवीण बालक
- (ii) मानसिक मंद बालक
- (iii) अधिगम असमर्थ बालक
- (iv) व्यवहार रोगों से ग्रसित बालक
- (v) संचार रोगों जैसे— भाषा दोष से ग्रसित बालक
- (vi) श्रव्य-दोष से ग्रसित बालक
- (vii) दृष्टि दोष से ग्रसित बालक
- (viii) शारीरिक एवं अन्य स्वास्थ्य क्षति से ग्रसित बालक
- (ix) गंभीर एवं बहु-विकलांगता से ग्रसित बालक

■ रिली एवं लेविस (1983) ने विशिष्ट बालकों को निम्नांकित छः भागों में बाँटा है—

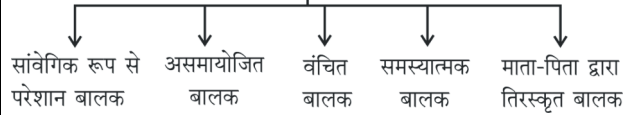
विशिष्ट बालक—

- (i) प्रतिभाशाली बालक
- (ii) मानसिक मंद बालक
- (iii) अधिगम असमर्थ बालक
- (iv) मानसिक रोग से ग्रसित बालक
- (v) शारीरिक रूप से विकलांग बालक
- (vi) बहु विकलांगता से ग्रसित बालक

सामान्य रूप से विशिष्ट बालकों को निम्नांकित भागों में बाँटा जा सकता है—



4. सामाजिक रूप से विशिष्ट बालक



प्रतिभाशाली बालक

प्रतिभाशाली बालक का अर्थ—

- **स्किनर एवं हैरीमैन के अनुसार—** “प्रतिभाशाली” शब्द का प्रयोग उन 1% बालकों के लिए किया जाता है, जो सबसे अधिक बुद्धिमान होते हैं।”
- **क्रो एवं क्रो के अनुसार—** “प्रतिभाशाली बालक दो प्रकार के होते हैं—(i) वे बालक, जिनकी बुद्धि लब्धि 130 से अधिक होती है और जो असाधारण बुद्धि वाले होते हैं। (ii) वे बालक जो कला, गणित, संगीत, अभिनय आदि में एक या अधिक में विशेष योग्यता रखते हैं।”
- **अब्दुल रउफ के अनुसार—** “प्रायः उच्च बुद्धि लब्धि को प्रतिभाशाली का संकेत माना जाता है। अतः ‘प्रतिभाशाली बच्चे’ शब्द का अभिप्राय बच्चे की उच्च बुद्धि लब्धि से किया जा सकता है।”
- **कालसनिक के अनुसार—** “वह प्रत्येक बालक जो अपने आयु स्तर के बच्चों में किसी योग्यता में अधिक हो और जो हमारे समाज के लिए महत्वपूर्ण योगदार कर सके, प्रतिभाशाली बालक है।”

■ प्रतिभाशाली बच्चों की बुद्धि लब्धि को लेकर विद्वानों में मतभेद है। क्रो एवं क्रो जहाँ बुद्धि लब्धि 130 से अधिक वाले बालक को प्रतिभाशाली बालक मानते हैं वहीं टरमैन के अनुसार 140 से अधिक बुद्धि लब्धि वाले बालक प्रतिभाशाली की श्रेणी में आते हैं। सामान्यतः 130-140 और उसके ऊपर बुद्धि लब्धि वाले बालकों को प्रतिभाशाली माना जाता है।

प्रतिभाशाली बालकों की पहचान—

प्रतिभाशाली बालकों की पहचान के लिए प्रयोग में लायी जाने वाली दो प्रमुख विधियों (1) विधिवत अवलोकन (2) प्रमापीकृत परीक्षण का प्रयोग किया जा सकता है। इन दोनों विधियों के अंतर्गत आने वाले कुछ प्रमुख उपकरण निम्नवत् हैं—

1. विधिवत अवलोकन—

- (i) अध्यापक निर्णय
- (ii) सहपाठी निर्णय

2. प्रमापीकृत परीक्षण—

- (i) समूहगत बुद्धि परीक्षण
- (ii) व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण
- (iii) सम्प्राप्ति परीक्षण
- (iv) विशिष्ट योग्यता परीक्षण
- (v) रुचि सूचि

- (vi) व्यक्तित्व परीक्षण
- (vii) प्रवणता परीक्षण
- (viii) सम्बन्धित व्यक्तियों से एकत्र सूचना

प्रतिभाशाली बालक की विशेषताएँ—

डी होन एवं कफ के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों की निम्न विशेषताएँ होती हैं—

- प्रतिभाशाली बच्चे रटने की बजाय समझने में विश्वास करते हैं।
- इनका शब्द भण्डार विस्तृत होता है।
- प्रतिभाशाली बच्चे कठिन कार्यों को सुगमतापूर्वक कर लेते हैं।
- इनका चिंतन मौलिक होता है।
- इनकी ज्ञानेन्द्रियों का विकास तीव्र गति से होता है।
- ये अमूर्त चिंतन एवं अमूर्त विषयों में अधिक रुचि लेते हैं।
- इनमें सृजनशीलता का गुण पाया जाता है।
- प्रतिभाशाली बच्चे सुगमता से याद कर लेते हैं।
- ये बच्चे सामान्य बुद्धि का प्रयोग अधिक करते हैं।
- प्रतिभाशाली बच्चे स्पष्ट रूप से सोचने, अर्थों को पहचानने और सम्बन्धों को पहचानने में दक्ष होते हैं।

शीली एवं सिल्वरमैन के अनुसार प्रतिभाशाली बच्चों का वर्गीकरण—

प्रवर्ग	बुद्धि लब्धि स्तर
न्यून प्रतिभाशाली	115-129
मध्यम प्रतिभाशाली	130-144
उच्च प्रतिभाशाली	145-159
असाधारण प्रतिभाशाली	160-174
प्रगाढ़ प्रतिभाशाली	175 से अधिक

प्रतिभाशाली बालक की समस्याएँ एवं आवश्यकताएँ—
प्रतिभाशाली एवं प्रवीण बालक हर क्षेत्र में— बुद्धि में, शारीरिक क्षमता में, शारीरिक बनावट में, सामाजिक कुशलता में, उपलब्धि में, सांवेगिक स्थायित्व में उत्कृष्ट होते हैं। परन्तु कभी-कभी यह भी देखा गया है कि कुछ प्रतिभाशाली ऐसे भी होते हैं जो शारीरिक रूप से कमजोर, नाटे, कुरूप असाामाजिक होते हैं। किन्तु यहाँ हम एक समूह के सामान्यीकरण से प्राप्त समस्याओं की ही चर्चा करेंगे—

शारीरिक समस्याएँ—

- शारीरिक विकास तीव्र गति से होता है।
- खेलकूद जैसे क्रियाकलापों में अधिक रुचि लेते हैं।
- इन्हें साधारण खेलों एवं खेल के साधारण नियम उबाऊ लगते हैं।

■ अन्य बालकों की तुलना में खेल के मैदान में ये अधिक आक्रामक होते हैं।

■ खेल के मैदान में इनकी उपलब्धि अधिक होती है तथा इनके विपक्ष में अन्य बालक खेलने में कठिनाई महसूस करते हैं।

शैक्षिक समस्याएँ—

■ ये अपने आयु वर्ग के बालकों की तुलना में अधिक बुद्धि लब्धि वाले होते हैं।

■ अत्यधिक पाठ्यक्रम को बालक विद्यालय में पहुँचने से पहले ही स्वयं या अपने पिता की सहायता से पूरा कर लेते हैं।

■ सामान्य कक्षाओं में बालक ऊबने लगते हैं।

■ कभी-कभी बालक को विद्यालय से रुचि खत्म भी हो जाती है।

■ ज्यादातर प्रतिभाशाली बालक विद्यालय में रुचि लेते हैं तथा उन्हें पढ़ना-लिखना अच्छा लगता है।

■ ऐसे बालकों में रचनात्मक, अभिप्रेरणा तथा उचित बुद्धिमत्ता पायी जाती है।

■ ऐसे बालक पाठ्य सहगामी क्रियाओं में अधिक रुचि लेते हैं तथा बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

■ सामान्य कक्षाओं में बालक कम लाभान्वित होते हैं।

■ ऐसे बालकों को ऐसा लगता है कि पाठ्यक्रम बहुत धीमी गति से पूरा किया जा रहा है।

सामाजिक एवं सांवेगिक समस्याएँ—

■ प्रतिभाशाली बालक हमेशा खुश रहते हैं तथा अपने समूह के नेता होते हैं।

■ ज्यादातर प्रतिभाशाली एवं प्रवीण बालक सांवेगिक रूप से स्थायी होते हैं तथा किसी भी प्रकार की मानसिक अस्वस्थता के होने की सम्भावनाओं से दूर होते हैं।

■ सामान्यतया इन बालकों की रुचियाँ व्यापक होती हैं तथा इन्हें सकारात्मक रूप में लेते हैं।

नोट— कुछ कला प्रेमी प्रतिभाशाली बालकों में मानसिक अस्वस्थता आ जाती है। क्योंकि ये बालक समाज से अलग-थलग रहते हैं तथा वास्तविकता से दूर कल्पना की दुनिया में जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसे बालकों में सांवेगिक अस्थायित्व पाया जाता है। इन्हें अपने आयु-वर्ग के बालकों में समायोजन की समस्या आ जाती है तथा इन बालकों का अपने वरिष्ठ एवं अध्यापकों से व्यवहार भी बिल्कुल असामान्य सा होता है। ऐसे बालकों से समाज के लोग असंतुष्ट रहते हैं।

नैतिक समस्याएँ

■ ऐसे बालकों में सामाजिक न्याय एवं सही-गलत की अच्छी समझ होती है।

■ कुछ प्रतिभाशाली बालक समाज द्वारा स्थापित मूल्यों एवं अनुमन्य व्यवहार की परवाह नहीं करते।

■ ऐसे बालक अपने को उत्कृष्ट प्रस्तुत करने में अपने ही सहपाठियों की भावनाओं आदि को आसानी से चोट भी पहुँचा देते हैं।

आवश्यकताएँ

■ प्रतिभाशाली बालकों के शारीरिक विकास के अनुसार इन बालकों को नये एवं अधिक चुनौतिपूर्ण खेलों में शामिल करने की आवश्यकता होती है। कुछ सामान्य नियमित खेलों में नियमों में परिवर्तन करके उन्हें आकर्षक बनाने की जरूरत होती है।

■ ऐसे बालकों की शैक्षिक समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें विशिष्ट कक्षाओं की जरूरत होती है।

■ ऐसे बालकों के लिए पाठ्यक्रम को अधिक समृद्ध करने की आवश्यकता होती है।

■ नये शिक्षण व्यूह आदि की सहायता से कक्षाओं को अधिक प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाना होता है।

■ ऐसे बालकों की शैक्षिक रुचियों के अनुसार शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन एवं पाठ्यचर्या का समृद्धिकरण की आवश्यकता होती है।

विस एवं गलाधर (1982) ने पाठ्यचर्या के समृद्धिकरण हेतु सात प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों का सुझाव दिया है—

- कक्षा का समृद्धिकरण
- सलाहकार शिक्षक कार्यक्रम
- संसाधन कक्ष
- सामुदायिक परामर्शदाता कार्यक्रम
- स्वाध्याय कार्यक्रम
- विशिष्ट कक्षा
- विशेष विद्यालय
- प्रतिभाशाली बालकों की क्षमताओं का सही एवं न्यायसंगत उपयोग कर बालक का सर्वांगीण विकास के लिए बालक को एक शैक्षिक सत्र में एक से अधिक कक्षा प्रोन्नति का प्रावधान किया जाना चाहिए।

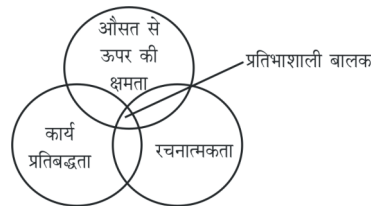
■ प्रतिभाशाली बालकों के समाज में सही समायोजन हेतु उचित परामर्श एवं निर्देशन की जरूरत होती है। साथ ही इन बालकों के माता-पिता या संरक्षकों को भी परामर्श एवं निर्देशन दिया जाना चाहिए।

■ नैतिक समस्याओं को दूर करने हेतु बालकों को समाज की जरूरतों से परिचित कराना चाहिए तथा समाज के प्रति उत्तरदायित्व को स्पष्ट करना चाहिए।

■ समाज में कुछ नैतिक समस्याओं को हल करने वाली समितियों का सदस्य बनाना चाहिए।

तीन वृत्त सिद्धांत

रेंजुली द्वारा प्रतिपादित तीन-वृत्त सिद्धांत में तीन वृत्त मानव लक्षण के तीन समूहों (औसत से ऊपर की क्षमता, रचनात्मकता और कार्य प्रतिबद्धता) का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार ये तीनों गुण एक दूसरे से जुड़कर या एक दूसरे से अंतःक्रिया कर प्रतिभाशाली व्यवहार के रूप में प्रकट होते हैं।



प्रतिभाशाली बच्चों की शिक्षा—

प्रतिभाशाली बच्चे को किस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए? इसका उत्तर देते हुए हैविंगहर्स्ट ने अपनी पुस्तक "A survey of the education gifted children" में लिखा है कि "प्रतिभाशाली बच्चों के लिए शिक्षा का सफल कार्यक्रम वही हो सकता है, जिसका उद्देश्य उनकी विभिन्न योग्यताओं का विकास करना हो।" इस कथन के अनुसार प्रतिभाशाली बच्चों की शिक्षा का कार्यक्रम इस प्रकार होना चाहिए—

- प्रतिभाशाली बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा की व्यवस्था
- सर्वांगीण विकास पर बल
- विशेष व समृद्ध पाठ्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा
- संस्कृति की शिक्षा
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन
- सामाजिक अनुभवों के अवसर देना
- नेतृत्व प्रशिक्षण देना
- श्रेष्ठ एवं विशेष रूप से प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा शिक्षण
- कक्षा संवर्द्धन
- मानसिक उद्वेलन विधि द्वारा शिक्षा
- पुस्तकालय सुविधाएँ उपलब्ध कराना
- योजना विधि द्वारा शिक्षण
- विशेष कक्षाओं का आयोजन
- शिक्षक द्वारा व्यक्तिगत ध्यान देना
- समय-समय पर विशेष निर्देशन-परामर्श प्रदान करना
- तीव्र उन्नति

निम्न उपलब्धि वाले प्रतिभाशाली बालक

प्रतिभाशाली बालक शिक्षा एवं समायोजन की दृष्टि से शिक्षकों के लिए सबसे उचित चुनौती देने वाले बालक होते हैं। ऐसे बालक अधिक तीव्र गति से सीखते हैं, जिससे कक्षा की विषय वस्तु को अन्य छात्रों की अपेक्षा शीघ्रता से सीख लेते हैं और अति आत्म-विश्वास का शिकार हो कक्षा में रुचि लेना बंद कर देते हैं। यदि इन पर उचित ध्यान न दिया जाये तो ये अपना ध्यान विभिन्न तरह के शरारतों में लगा देते हैं और कक्षा में अनुशासन एवं समायोजन की समस्या पैदा कर देते हैं। ये बालक पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु को अत्यधिक आसान समझ लेते हैं जिस कारण इनकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर नीचे गिर जाता है।

धीमी गति से सीखने वाले बालक

धीमी गति से सीखने वाले बालक का अर्थ—

➤ **क्रिक के अनुसार** यदि सामान्य बालक की शैक्षिक उपलब्धि अपने आयु वर्ग के बालकों से कम है तब उसे धीमी गति से सीखने वाला माना जायेगा। इसके अतिरिक्त यदि बालक का विकास, समायोजन, आत्मनिर्भरता अपनी आयु वर्ग के बालकों से कम है तब भी इन्हें धीमी गति से सीखने वाला बालक कहा जा सकता है।

धीमी गति से सीखने वाले बच्चों की विशेषताएँ—

1. **शारीरिक विशेषता—** धीमी गति से सीखने वाले बच्चे वे होते हैं, जिनमें शारीरिक या मानसिक या शारीरिक-मानसिक दोनों (मिश्रित) प्रकार के विशेषताओं का विकास धीमी गति से होता है। इनमें परिपक्वता भी देर से आती है। ये साफ कपड़े नहीं पहनते हैं। ऐसे बच्चे लिखना, कला, आत्मविश्वास एवं सामाजिक गुणों का लोप, चिंतामुक्त, विद्यालय में अनुपस्थिति, इन्द्रियदोषों से ग्रसित एवं सीखने में ह्रास जैसी बिमारी से ग्रसित होते हैं।

2. **अवधान शक्ति का अभाव—** धीमी गति से सीखने वाले बच्चों में स्मरण शक्ति की कमी के कारण धारण शक्ति का अभाव होता है। ये बच्चे पढ़ाई लिखाई से कतराते हैं। शिक्षक द्वारा की गयी प्रस्तुतीकरण का ये प्रत्यक्षीकरण नहीं कर पाते हैं क्योंकि प्रस्तुतीकरण इनके अनुकूल नहीं होता है।

3. **असुरक्षा का भाव—** धीमी गति से सीखने वाले बच्चों में असुरक्षा का भाव अधिक रहता है। यह भाव शारीरिक एवं मानसिक कमजोरी के कारण आ जाता है।

4. **अभिव्यक्ति या सम्प्रेषण क्षमता का अभाव—** धीमी गति से सीखने वाले बच्चों में कल्पना शक्ति कम होती है। साथी ही दूरदर्शिता का भी अभाव होता है। ये अपने विचारों को अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं। इनमें भविष्य बोध का गुण भी नहीं होता है।

5. **समस्याग्रस्तता—** धीमी गति से सीखने वाले बच्चों में सामाजिक सांस्कृतिक तथा शैक्षिक समस्याएँ पायी जाती हैं। इन्हें हतोत्साहित करने से इनमें समाजविरोधी अभिवृत्ति उत्पन्न हो जाती है।

धीमी गति से सीखने वाले बच्चों की पहचान—

- उनके क्रियाकलापों का अवलोकन करके।
- उनके मित्रों, रिश्तेदारों, परिवारों और स्वयं उनसे सूचनाओं को एकत्रित करके।
- चिकित्सकीय जाँच द्वारा
- शैक्षिक परीक्षाओं से प्राप्त परिणामों द्वारा
- व्यक्तित्व परीक्षाओं द्वारा
- बुद्धि परीक्षणों द्वारा
- अन्य मनोवैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा

बच्चों के धीमी गति से सीखने के कारण—

- सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति
- परिवार के सदस्यों का मानसिक स्तर
- संवेगात्मक घटक
- व्यक्तिगत घटक
- शारीरिक दुर्घटना
- मानसिक दुर्घटना

धीमी गति से सीखने वाले बच्चों की समस्याएँ—

- ज्ञानात्मक अधिगम समस्याएँ
- भाषा एवं वाणी की समस्याएँ
- श्रवण प्रत्यक्षीकरण की समस्याएँ
- दृष्टि एवं व्यवहारिक समस्याएँ
- सामाजिक एवं संवेगात्मक समस्याएँ
- समायोजन की समस्याएँ

धीमी गति से सीखने वाले बच्चों की शिक्षा—

- पाठ्यक्रम का लचीलापन
- क्रियात्मक विधियों का प्रयोग
- कार्यों का स्तरीकरण
- व्यवहारिक आयाम द्वारा शिक्षा
- अधिगम के लिए तत्पर करना
- अभिक्रमिक अनुदेशन आव्यूह
- प्रगति आलेख तैयार करना
- शिक्षक द्वारा बच्चे का अवलोकन
- सम्प्रत्यय की संरचना का निर्माण करना
- शिक्षक की भूमिका

गिलफोर्ड तथा टेन्सले ने धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के लिए निम्न सुझाव दिये हैं—

- पाठ्यवस्तु के अनुदेशन निर्माण तथा इनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखना चाहिए।
- अध्ययन के लिए बच्चे की पहुँच के अनुरूप व्यापक सुविधाओं का आयोजन करना चाहिए।
- शिक्षक को ऐसे बच्चों के लिए छोटी कक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। अनुवर्ग शिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए।
- पाठ्यवस्तु को छोटे खण्डों में प्रस्तुत करना चाहिए।
- इनको असफल होने पर भी प्रवेश देना चाहिए।
- माता-पिता से सहयोग लेने का प्रयास करना चाहिए।
- इनको हर सम्भव स्वतंत्रता देनी चाहिए।
- योग्य एवं प्रतिभावान बच्चों की सहायता लेनी चाहिए जिससे सहयोगी अधिगम को बढ़ावा मिले।

पिछड़े बालक

पिछड़े बालक का अर्थ—

जो बालक अपनी कक्षा के अन्य बालकों से अध्ययन तथा शैक्षिक प्रगति की दृष्टि से पिछड़े जाते हैं, उन्हें पिछड़ा बालक कहते हैं।

➤ **बार्टन हार्ट के अनुसार—** “पिछड़े बच्चे वे होते हैं, जिनकी शैक्षिक उपलब्धता उस स्तर से निम्न स्तर की होती है, जिनके लिए वह योग्य होते हैं।”

➤ **सिरिल बर्ट के अनुसार—** “पिछड़ा बालक वह है, जो अपने विद्यालयी जीवन के मध्य में (अर्थात् लगभग $10\frac{1}{2}$ वर्ष की आयु में) अपनी कक्षा से नीचे की कक्षा के उस कार्य को न कर सके, जो उसकी आयु बालकों के लिए सामान्य कार्य है।”

■ बर्ट के अनुसार जिस बालक की शैक्षिक लब्धि 85 से कम होती है, उसे पिछड़ा बालक कहा जा सकता है।

■ पिछड़ापन दो प्रकार का होता है—

(i) **सामान्य पिछड़ापन—** इस प्रकार के पिछड़ेपन में बच्चे सभी पक्षों में पिछड़ा दिखाई देते हैं।

(ii) **विशिष्ट पिछड़ापन—** इस प्रकार के पिछड़ेपन में बच्चे किसी एक विशेष विषय या पक्ष में पिछड़ा होता है।

पिछड़े बच्चों की पहचान—

1. **विभिन्न परिस्थितियों एवं व्यवहार का ज्ञान—** शैक्षिक पिछड़ेपन के बाह्य कारणों का पता लगाने के लिए बच्चे की सामाजिक-आर्थिक स्तर, माता-पिता का शिक्षा स्तर, सत्र में बच्चे की उपस्थिति, विद्यालय में प्रवेश का समय, विद्यालय का वातावरण, शिक्षकों का शैक्षिक ज्ञानात्मक स्तर, प्रयोग में लायी जाने वाली शिक्षण विधियों एवं उपकरणों आदि का ज्ञान सहायक सिद्ध हो सकता है।

2. **व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण—** मनोवैज्ञानिकों ने पिछड़ेपन का कारण बच्चों का मंद बुद्धि होना पाया है।

■ **बार्टन हार्ट** ने हालाँकि इस पर आपत्ति जताते हुए कहा है—
“एक बालक मंदबुद्धि और पिछड़ा हुआ दोनों ही हो सकता है लेकिन उसका पिछड़ा हुआ होना इसलिए आवश्यक नहीं है क्योंकि वह मंदबुद्धि है।”

3. **मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण**

4. **उपलब्धि परीक्षण**

5. **सामूहिक परीक्षण**

6. **अन्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण**

पिछड़ेपन का कारण

1. सामान्य से कम शारीरिक विकास
2. शारीरिक दोष
3. शारीरिक रोग
4. निम्न सामान्य बुद्धि
5. परिवार की निर्धनता तथा बड़ा आकार
6. विद्यालय का दोषपूर्ण संगठन
7. परिवार के झगड़े

पिछड़े बालक की विशेषताएँ—

- सीखने की गति धीमी
- जीवन में निराशा का अनुभव
- समाज विरोधी कार्यों की प्रकृति
- जन्मजात योग्यता की तुलना में कम शैक्षिक प्रगति
- सामान्य विद्यालय के पाठ्यक्रम से लाभ उठाने में असमर्थता
- सामान्य शिक्षण-विधियों द्वारा शिक्षा ग्रहण करने में विफलता
- मानसिक रूप से अस्वस्थ और असमायोजित व्यवहार
- बुद्धि परीक्षाओं में निम्न बुद्धि लब्धि
- व्यवहार सम्बन्धी समस्याओं की अभिव्यक्ति

पिछड़े बच्चों की शिक्षा—

- विशिष्ट विद्यालयों की स्थापना
- विशिष्ट कक्षाओं की स्थापना
- अच्छे शिक्षकों की नियुक्ति
- छोटे समूह में शिक्षा
- विशेष पाठ्यक्रम का निर्माण
- हस्तशिल्पों की शिक्षा
- सांस्कृतिक विषयों की शिक्षा
- विशेष शिक्षण विधियों का प्रयोग
- श्रव्य-दृश्य साधनों का प्रयोग
- निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण
- उचित निर्देशन एवं परामर्श
- आत्म विश्वास की जागृति

मानसिक रूप से मंद बालक या

मंद बुद्धि बालक

मानसिक रूप से मंद बालक या मंद बुद्धि बालक का अर्थ—

मंद बुद्धि बालकों से तात्पर्य उन बालकों से होता है जिनकी मानसिक योग्यता सामान्य बालकों से कम होती है।

➤ **क्रो एवं क्रो के अनुसार** “जिन बालकों की बुद्धि लब्धि 70 से कम होती है उनको मंद बुद्धि बालक कहते हैं।”

- **मानसिक मन्दता पर अमेरिकन एसोशिएशन के अनुसार**
 “मानसिक पिछड़ेपन से तात्पर्य सार्थक रूप से औसत से कम सामान्य बौद्धिक कार्यपरकता से है, जो अनुकूल व्यवहार में कमी के साथ-साथ विद्यमान होती है तथा विकासात्मक अवस्था में परिलक्षित होती है।”

मंद बुद्धि बालकों की पहचान—

- विस्तृत अवलोकन
- व्यक्तिगत व सामूहिक बुद्धि परीक्षण
- उपलब्धि परीक्षण
- व्यक्तित्व परीक्षण
- अन्य मनोवैज्ञानिक परीक्षण

मंदबुद्धि बालकों की विशेषतायें—

- ऐसे बालक नई बातों को सीखने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। ऐसे बालक ऐसी सीखी गयी बातों को नवीन परिस्थितियों में प्रयुक्त करने में प्रायः कठिनाई का अनुभव करते हैं।
- ऐसे बालक अन्य व्यक्तियों या परिजनों की जरा भी चिंता किये बिना केवल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की चिंता करते हैं।
- ऐसे बालकों में धैर्य, कल्पना, चिंतन तथा आत्मविश्वास आदि योग्यताओं की कमी होती है।
- ऐसे बालकों की बुद्धि लब्धि का मान प्रायः 71 से कम होती है।
- ऐसे बालकों में नवीन बातों को सीखने की गति सामान्य बालकों से मंद होती है।

मानसिक मंद बालकों की समस्याएँ एवं आवश्यकताएँ—

संज्ञानात्मक समस्याएँ— मानसिक मंद बालकों को निम्नवत् चार संज्ञानात्मक क्षेत्रों में समस्याएँ होती हैं—

- अवधान
- स्मृति
- भाषा
- शिक्षा

अवधान क्षमता—

- ऐसे बालकों में अवधान की कमी के कारण बालक का अधिगम प्रभावित हो जाता है, जिससे बालक की क्रियात्मकता में कमी आ जाती है।
- ऐसे बालक जटिल प्रक्रियाओं को समझने में कठिनाई महसूस करते हैं।
- ऐसे बालक में अवधान विस्तार में कमी पायी जाती है।

स्मृति क्षमता—

- स्मृति के संदर्भ में भी मानसिक मंद बालक सामान्य बालकों की तुलना में पीछे होते हैं।

- मानसिक मंद बालक गहन मानसिक प्रक्रिया स्तर में कमजोर होते हैं।

- मानसिक मंद बालक पूर्वाभ्यास करने में कठिनाई महसूस करते हैं।

- ऐसे बालकों की समस्या-समाधान करने की क्षमता भी सामान्य बालकों की तुलना में कम होती है।

भाषा विकास—

- ऐसे बालकों में उच्चारण सम्बन्धी समस्या जैसे वाणी दोष आदि पाया जाता है।

शैक्षिक उपलब्धि—

- मानसिक मंद बालकों की शैक्षिक उपलब्धि बुद्धि-लब्धि कम होने के कारण सामान्य बालकों की तुलना में कम होती है।

व्यक्तित्व सम्बन्धी समस्याएँ—

- मानसिक मंद बालकों में सामाजिक व सांवेगिक समस्याएँ विविधता में पायी जाती है।

- ये बालक स्वयं अवधान की कमी के चलते किसी से मिलना जुलना पसंद नहीं करते।

- इनके सहपाठी इन्हें सामान्य खेल-कूद, सामूहिक क्रियाकलापों आदि में स्वीकार नहीं करते।

आवश्यकताएँ—

अवधान क्षमता का विकास

- मानसिक मंद बालकों के अवधान क्षमता को बढ़ाने के लिए पाठ्य-सामग्री या अनुदेशों को छोटे-छोटे टुकड़ों में प्रस्तुत करना चाहिए।

- उनकी रुचि के अनुरूप सहायक सामग्रियों का इस्तेमाल करना चाहिए।

- खेल-खेल में आकर्षक वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए जिससे बालक की अवधान क्षमता का विकास हो सके।

स्मृति विकास—

- स्मृति के विकास हेतु इन बालकों को अधिगम नीतियों के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

- इन बालकों को अपनी सामान्य बातों को याद रखने हेतु दैनंदिनी लेखन आदि का प्रशिक्षण देना चाहिए।

भाषा विकास—

- ऐसे बालकों को अधिक से अधिक अंतःक्रिया का अवसर प्रदान करना चाहिए।

- नियमित शब्दों का उच्चारण अभ्यास कराना चाहिए तथा उनके सहपाठियों के साथ खेलने-कूदने एवं बात-चीत करने के अवसर प्रदान करना चाहिए।

शैक्षिक उपलब्धि

- मानसिक मंद बालकों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए बालकों का मूल्यांकन उनके सीखने के स्तर एवं मानसिक स्तर के अनुसार करना चाहिए।

■ ऐसे बालकों की मूल्यांकन प्रक्रिया मौखिक एवं छोटे-छोटे क्रियाकलापों पर आधारित होनी चाहिए।

■ बालाकों के स्वामित्व स्तर के मूल्यांकन की बजाय उनके सीखने की मात्रा का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

व्यक्तित्व सम्बन्धी आवश्यकताएँ—

■ ऐसे बालकों को छोटे-छोटे कार्यों के लिए पुनर्बलन का प्रयोग करना चाहिए।

■ अन्य जटिल कार्यों को करने के लिए अभिप्रेरणा प्रदान करना चाहिए।

मंद बुद्धि बालकों की शिक्षा—

- अपनी देखभाल का प्रशिक्षण देना चाहिए।
- विशेष प्रशिक्षित शिक्षक द्वारा शिक्षा की व्यवस्था।
- आर्थिक प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए।
- सामाजिक प्रशिक्षण देना चाहिए।
- शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य से समायोजन करने की शिक्षा।
- निष्क्रीय और सक्रिय मनोरंजन की शिक्षा।
- सुनने, निरीक्षण करने, बोलने और लिखने की शिक्षा।
- विशिष्ट कक्षा व्यवस्था करनी चाहिए।

आंशिक रूप से शारीरिक अक्षम बच्चे (दृष्टि बाधित, श्रवण बाधित, वाक दोष, अस्थि बाधित)

आंशिक रूप से अक्षम बच्चों का अर्थ— ऐसे बच्चों या बच्चियों का कोई न कोई अंग दुर्बल होता है, जिससे वे अपनी सामान्य क्रियाएँ नहीं कर पाते हैं ऐसे बच्चों को आंशिक रूप से शारीरिक अक्षम कहा जाता है।

आंशिक अक्षम बच्चों या व्यक्तियों में समायोजन से सम्बन्धित अनेक समस्याएँ होती हैं। आंशिक शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों को चार वर्गों में विभाजित किया जाता है—

1. दृष्टि बाधित बालक
2. श्रवण बाधित बालक
3. वाक दोष बालक
4. अस्थि बाधित बालक

आंशिक रूप से दृष्टिबाधित बालक

सामान्य शब्दों में ठीक प्रकार से देख पाने में असमर्थता, दृष्टिबाधिता कहलाती है।

दृष्टि बाधिता दो प्रकार की होती है—

- (1) आंशिक या अल्पदृष्टि दोष
- (2) पूर्णतः दृष्टि अभाव या दृष्टिहीन

1. आंशिक दृष्टि बाधित बालक— कानूनी परिभाषा के अनुसार सुधारात्मक उपायों के बावजूद अल्प दृष्टि बालक या व्यक्ति की देखने की क्षमता (दृष्टितीक्ष्णता) 20/70 फीट या दृष्टि क्षेत्र 20

डिग्री होती है। अर्थात् सामान्य दृष्टि वाला जिस वस्तु को 70 फीट की दूरी से देख सकता है उसे आंशिक दृष्टि दोष वाला व्यक्ति 20 फीट की दूरी से देख पायेगा तथा दृष्टि के बिल्कुल सीध में रखने पर व्यक्ति मात्र 20 डिग्री या कम की परिधि में आने वाली वस्तुओं को देख सकने में सक्षम होगा।

शैक्षणिक परिभाषा के अनुसार अल्प दृष्टि वाले वे व्यक्ति हैं, जो कि छिपे हुए अक्षर पढ़ तो सकते हैं परन्तु उनके लिए मोटी छपाई वाली पुस्तकों या लिखे हुए अक्षरों को बड़ा करके दिखाने वाले उपकरणों की आवश्यकता होती है।

2. दृष्टिहीनता या पूर्णतः दृष्टि अभाव— वैधानिक रूप से दृष्टिहीनता वह स्थिति है जब किसी व्यक्ति की देखने की क्षमता या दृष्टितीक्ष्णता स्वस्थ या अच्छे नेत्र में, चश्मे या कांटेक्ट लेंस के साथ सर्वोत्तम सम्भव सुधार करने के बाद 20/200 या उससे कम हो अथवा वे व्यक्ति जिनका दृष्टि क्षेत्र 20 डिग्री से कम होता है।

शैक्षणिक परिभाषा के अनुसार दृष्टिहीन व्यक्ति वे व्यक्ति हैं जिनकी आँखें इतनी गम्भीर रूप से प्रभावित हैं कि उनको शैक्षिक उद्देश्यों के लिए ब्रेल लिपि या श्रवण प्रणाली का प्रयोग करना पड़ता है।

इस प्रकार हमने देखा कि आंशिक दृष्टि की श्रेणी में वे बच्चे या व्यक्ति आते हैं, जिनमें अवशिष्ट की मात्रा सामान्य दृष्टि वाले और पूर्ण अन्धत्व के बीच की होती है। इनको पढ़ने-लिखने, चलने-फिरने अथवा सामान्य काम-काज करने में समस्या का सामना करना पड़ता है। ऐसे बालकों के दृष्टिमूलक कार्य प्रभावित हो सकते हैं तथा दृष्टिमूलक कार्य का सम्पादन करने के लिए इन्हें सहायक उपकरणों की सहायता लेनी पड़ती है।

दृष्टि-अक्षम बालक की समस्याएँ एवं आवश्यकताएँ—

भाषा विकास—

■ दृष्टि अक्षम बालक भाषा विकास की दृष्टि से सामान्य बालकों से भिन्न नहीं होते। किन्तु इनके भाषा अधिगम में थोड़ा अन्तर होता है। जैसे— दृष्टि अक्षम बालक ज्यादा स्वकेंद्रित वार्ता करते हैं जबकि सामान्य बालक क्रियाकलाप सम्बन्धी वार्ता अधिक करते हैं।

संप्रत्ययात्मक क्षमता—

■ दृष्टि अक्षम बालक सामान्य बालकों की तुलना में संप्रत्ययात्मक विकास में कुछ पीछे होते हैं।

■ दृष्टि अक्षम बालक एवं सामान्य बालक की संप्रत्ययात्मक क्षमता में अंतर उनके स्पर्शीय अनुभव एवं दृश्य अनुभव के अंतर की वजह से होता है।

चलिष्णुता (Mobility)—

■ चलिष्णुता अपने वातावरण से समायोजन करने की एक महत्वपूर्ण क्षमता है। दृष्टि अक्षमता से सबसे ज्यादा बालकों की चलिष्णुता प्रभावित होती है। फलस्वरूप बालक की वातावरण से अंतःक्रिया प्रभावित हो जाती है।

■ ऐसे बालकों को भीड़ वाले स्थान एवं दुर्घटना बाहुल्य क्षेत्र में विचरण करने में कठिनाई होती है।

अन्य इन्द्रियों की तीक्ष्णता—

■ बालक अपनी अक्षमता की वजह से सूचनाएँ प्राप्त करने में कमी को पूरा करने के लिए अन्य इन्द्रियों का प्रयोग अधिक तत्परता एवं अवधान के साथ करता है।

शैक्षिक उपलब्धि—

■ कुछ अध्ययन स्पष्ट करते हैं कि दृष्टि अक्षम बालकों की शैक्षिक उपलब्धि सामान्य बालकों की अपेक्षा कम होती है।

सामाजिक समायोजन—

■ कोई भी अध्ययन यह प्रदर्शित नहीं करता कि दृष्टि अक्षम बालक कुसमायोजित होते हैं। अर्थात् दृष्टि अक्षम बालकों में व्यक्तित्व सम्बन्धी समस्याएँ समाज के दृष्टिकोण एवं व्यवहार की वजह से आती है न कि दृष्टिबाधित में निहित होती है।

आवश्यकताएँ—

दृष्टि अक्षम बालक की मुख्यतः चार आवश्यकताएँ इस प्रकार हैं—

- ब्रेल
- शेष दृष्टि का प्रयोग
- श्रवण कौशल
- अनुपस्थिति एवं चलिष्णुता प्रशिक्षण

■ **ब्रेल**— 19वीं शताब्दी में फ्रांस के लुई ब्रेल ने दृष्टि अक्षम व्यक्तियों के लिए सूचनाओं के आदान-प्रदान हेतु विकसित 12 बिन्दु पद्धति का संशोधन कर छः बिन्दु पद्धति का प्रतिपादन किया, जो दृष्टि अक्षमों की शिक्षा व्यवस्था तथा संप्रत्यय को चमत्कारिक रूप से बदल दिया।

■ शेष दृष्टि का प्रयोग—

■ हैनिनेन का विश्वास है कि अधिकतर दृष्टि अक्षम बालकों को मुद्रित सामग्री पढ़ना चाहिए क्योंकि मुद्रित सामग्री को पढ़ने की गति अधिक होती है।

■ दृष्टि अक्षम बालकों को शेष दृष्टि क्षमता का प्रयोग कर मुद्रित सामग्री से अधिक लाभ लेने में मदद करने हेतु अग्रलिखित दो विधियाँ हैं—

- (i) बड़े अक्षरों में मुद्रण
- (ii) आवर्धक लेंसों का प्रयोग

आंशिक दृष्टिबाधित बच्चों की शिक्षा व्यवस्था निम्न प्रकार से की जा सकती है—

- इन्हें विभिन्न प्रकार से प्रकाशों में रखा जाय उनके सम्बन्ध में कुछ कहने और देखने को प्रोत्साहित किया जाय, जिससे कि उनके शब्दावली में वृद्धि हो।
- वस्तुओं के निरीक्षण में पर्याप्त समय दिया जाय और रंगीन प्रकाश दिया जाय।
- उनसे चित्रों, आकृतियों आदि बनाने को कहा जाय।

- वस्तुओं के आकार के बोध हेतु स्पर्श कराया जाय और लम्बाई और चौड़ाई का ज्ञान दिया जाय।
- स्मृति के विकास में संकेतों का प्रयोग किया जाय, जटिलता को कम करने के लिए विशिष्ट क्रम में रखा जाय।
- गेंद को पकड़ने एवं फेंकने का अभ्यास कराया जाय।
- उन्हें प्रत्ययों का शिक्षण कराया जाय।
- उन्हें तथ्यों एवं घटनाओं को समझने की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- इनके लिए विशेष कक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- इनके शिक्षण कार्य में सहकारिता योजना का प्रयोग करना चाहिए।
- कम देखने वाले बच्चों और औसत बच्चों का पाठ्यक्रम एक समान नहीं होता है। अध्यापक को यह ध्यान देना चाहिए कि उनकी आँखों पर जोर न पड़े।
- इनके कक्षा-कक्ष में प्रकाश पर्याप्त होना चाहिए।
- इनके कक्षा का फर्नीचर ऐसा होना चाहिए कि वे सुविधानुसार चाहे जहाँ बैठ सकें।
- इनके शिक्षण हेतु विशेष रूप प्रशिक्षित अध्यापकों को लगाया जाना चाहिए।
- इनके शिक्षण में शिक्षण सहायक उपकरणों जैसे लेंस वाले चश्मे, दृष्टि यंत्रों, आकृतियों, दृष्टि कैमरा चलायमान टेलीस्कोप, अक्षर चित्रों को बड़ा प्रदर्शित करने वाले यंत्रों का प्रयोग करना चाहिए।

आंशिक रूप से दृष्टि बाधित बच्चों की पहचान—

- ऐसे बच्चे अक्सर सिर दर्द की शिकायत करते हैं और आँखें बंद कर लेते हैं।
- ऐसे बच्चे बार-बार पलक झपकाते हैं।
- पुस्तक या अन्य वस्तुओं को आँख के पास ले आते हैं।
- जब श्यामपट्ट लिखी चीजों को लिखते समय बगल में बैठे छात्र से जोर से पढ़ने को कहता है।
- एक आँख को बंद करके सिर को ऊपर उठाता है।
- अक्सर आँखों को मलता रहता है।
- आँखों का आकार भिन्न प्रकार का होता है।
- आँखों की पलक छोटी एवं आँख लाल रहती है।
- प्रकाश के प्रति संवेदनशील रहता है।
- जब दूर की वस्तुएँ देखता है तो शरीर में तानव होता है।
- पढ़ने के समय अनुदेशन सामग्री नहीं रखता है।
- आँखों से पानी बहता रहता है।
- चलते समय गलत तरीके से पैर रखता है।
- श्यामपट्ट पर लिखी विषय-वस्तु को उठ-उठ कर देखता है।
- आँखों का टेढ़ापन या तिरछापन अथवा आँखें भारी होती हैं।

श्रवण बाधित बच्चे

श्रवण बाधित बालक का अर्थ— श्रवण बाधित बच्चों से अभिप्राय ऐसे बच्चों से है जो बच्चे सुनने की क्षमता पूर्ण रूप से खो देते हैं, वे अन्य बच्चों की अपेक्षा गम्भीर रूप से कठिनाइयों का सामना करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जो बच्चे पूर्णतया नहीं सुन पाते वे बहरे होते हैं।

आंशिक रूप से श्रवण बाधित बच्चे— आंशिक रूप से कम सुनने वाले बच्चे वे हैं जो श्रवण क्षमता को कुछ सीमा तक खो देते हैं। ऐसे बच्चों के जोर से की गयी ध्वनि अथवा बोली गयी आवाज को सुनने के लिए श्रवण यंत्र की आवश्यकता नहीं होती है। श्रवणयंत्र यदि इन्हें उपलब्ध हो तो आवाज को और अच्छी प्रकार से सुन सकेंगे। ऐसे बच्चों को सामान्य स्कूलों में तथा सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा देने में कठिनाई नहीं आती है। जब किसी बच्चे के श्रवण अंगों में कोई दोष होता है तब इसे श्रवण बाधिता कहा जाता है।

श्रवण बाधित बच्चों के लक्षण—

- इनके व्यवहार में लगातार एकाग्रता नहीं होती है।
- अध्यापक के होठों की गतिविधि और उसके हाव-भाव पर ध्यान देते हैं।
- प्रश्न पूछने पर अध्यापक से दुबारा पूछने को कहते हैं।
- ऐसे बच्चे गतिविधियों के विषय में और कार्यों के प्रति अधिक सजग होते हैं।
- ये अपने सिर को एक ओर झुकाकर या घुमाकर सुनने का प्रयास करते हैं।
- बिना जानकारी के भी वार्ता के बीच में बिना वजह बोलते हैं।
- शाब्दिक निर्देशनों को समझने में और अनुसरण करने में कठिनाई होती है।
- कक्षा में ध्वनि के स्रोत को नहीं जान पाता है।
- शब्दों के सही उच्चारण में उसे कठिनाई होती है।
- बिना जानकारी के बड़बड़ाता रहता है।
- अधिक धीरे या अधिक तेज बोलता है।
- इनकी भाषा का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है।
- कभी-कभी कान दर्द की शिकायत करता है।

श्रवण बाधितों का वर्गीकरण

स्तर	श्रवण बाधिता के प्रकार	डेसीबल स्तर	बाधित प्रतिशत
1.	कम बाधित बालक	35-54DB तक	40%
2.	मन्द बाधित बालक	55-69DB तक	40-50%
3.	गम्भीर बाधित बालक	70-89DB तक	50-75%
4.	पूर्ण/गहन बाधित बालक	90-100DB तक	100%

■ श्रवण कौशल—

■ दृष्टि अक्षम बालकों को अपने श्रवण कौशल के उपयोग का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

■ ऐसे बालकों के लिए रिकार्डेड सामग्री आदि की व्यवस्था करनी चाहिए।

■ अनुपस्थिति एवं चलिष्णुता प्रशिक्षण—

■ चलिष्णुता ही सामाजिक अंतःक्रिया के लिए अधिक जिम्मेदार घटक है। बालक की चलिष्णुता को बढ़ाने के लिए उन्हें प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

■ सामान्यतया चलिष्णुता का प्रशिक्षण देने की चार प्रमुख विधियाँ हैं—

- (i) मानव निर्देशक
- (ii) निर्देशक श्वान
- (iii) लम्बी छड़ी
- (iv) इलेक्ट्रॉनिक यंत्र

■ प्रौद्योगिकीय एवं विशिष्ट सहायक सामग्रियाँ—

■ दृष्टि अक्षम बालकों के कौशल अधिगम में सहायता प्रदान करने के लिए अन्य प्रौद्योगिकीय यंत्रों जैसे— आप्टाकॉन (Optacon) कुर्जवेन पठन मशीन, वसब्रिल, केन्मेर गिनतारा आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

■ श्रवण हास से ग्रसित बालक की समस्याएँ एवं आवश्यकताएँ

■ भाषा एवं वाणी विकास—

■ श्रवण हास से ग्रसित बालक को ध्वनि का कोई संप्रत्यय ही नहीं होता है, जिससे बालक अपने समाज से अंतःक्रिया करने में अक्षम हो जाता है। फलस्वरूप भाषा एवं वाणी का विकास बुरी तरह से प्रभावित हो जाता है।

■ बौद्धिक क्षमता—

■ सामान्यतया श्रवण हास से ग्रसित बालकों की बौद्धिक क्षमता कम होती है तथा वह अपने विचारों को भाषा के अभाव में अभिव्यक्त भी नहीं कर पाता है।

■ शैक्षिक उपलब्धि—

■ श्रवण हास से ग्रसित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि कम होती है क्योंकि इन बालकों की पठन क्षमता सबसे अधिक प्रभावित होती है जो बालक की उपलब्धि का एक मुख्य घटक है।

■ सामाजिक समायोजन—

■ श्रवण हास से ग्रसित बालक समाज से कट सा जाता है तथा बालक एक प्रकार से समाजीकरण की प्रक्रिया से वंचित रह जाता है।

■ आवश्यकताएँ—

■ श्रवण हास वाले बालकों की सबसे बड़ी समस्या सम्प्रेषण स्थापित करने में अक्षमता है। सम्प्रेषण समस्या को दूर करने के लिए दो प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है—

- (i) मौखिक प्रशिक्षण
- (ii) शारीरिक प्रशिक्षण

प्रौद्योगिकी तरक्की—

■ प्रौद्योगिकी तरक्की से श्रवण हास के क्षेत्र में अद्भुत परिवर्तन हुआ है तथा श्रवण हास बालकों का जीवन उत्कृष्ट हुआ है। मुख्यतः चार क्षेत्रों में यह तरक्की अवलोकित होती है—

- (i) कम्प्यूटर आधारित अनुदेशन
- (ii) दूरदर्शन
- (iii) दूरभाष
- (iv) श्रवण यंत्र

आंशिक श्रवण बाधित बालकों की शिक्षा—

1. इनकी शिक्षा के लिए विशेष सम्प्रेषण तकनीकी अपनायी जानी चाहिए जिसमें कि ओष्ठ पठन विधि, संकेत भाषा का प्रयोग करके, स्पर्श विधि से, शरीर से विभिन्न गति करवाकर एवं ध्वनि प्रवर्द्धक यंत्रों का प्रयोग जैसी उपयोगी सम्प्रेषण विधियों का प्रयोग प्रभावी रहेगा।
2. **शिक्षण तकनीकी का प्रयोग—** श्रवण बाधित बच्चों के लिए सहायक सामग्री जैसे— आकृतियाँ, चित्र, संकेत, शब्द, मॉडल, मानचित्रों का प्रयोग किया जा सकता है। बीच-बीच में अध्यापक द्वारा प्रश्न पूछना अनिवार्य है। विशेष प्रशिक्षित अध्यापकों का प्रयोग किया जा सकता है। इनके लिए कम्प्यूटर अनुदेशन विधि लाभदायी है।
3. पृथक कक्षाओं की व्यवस्था होनी चाहिए।
4. इन्हें अंशतः कुछ समय के लिए पृथक विद्यालय में रखा जा सकता है।
5. शिशु कार्यक्रम चलाकर प्रारम्भ से ही शिक्षित किया जा सकता है।
6. श्रवण बाधितों को शैक्षिक सुविधाएँ, जैसे— सहायक उपकरण, व्यवसायिक प्रशिक्षण, पूर्व प्राथमिक शिक्षा, कक्षा का समुचित प्रबन्धन, बोलने एवं पढ़ने का प्रशिक्षण, माता-पिता की भूमिका, विद्यालय का वातावरण, आदि तत्त्वों का उचित समन्वय करके प्रशिक्षित किया जा सकता है।
7. श्रवण बाधित को इस प्रकार प्रशिक्षित करना कि वह सामान्य कक्षा के लिए स्वयं को तैयार कर सके।
8. श्रवण बाधित बच्चों की अभिरुचि, अभियोग्यता को ध्यान में रखकर उन्हें शैक्षिक निर्देशन दिया जाना चाहिए। उन्हें आवश्यकतानुसार व्यवसायिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाना चाहिए ताकि वह अपनी दैनिक जरूरतों के अनुसार धनार्जन कर सके।

वाक दोष

वाक दोष का अर्थ—

➤ लाहन एवं काफमैन के अनुसार— “वाणी मुखर भाषा के ध्वनि की क्रमबद्ध एवं व्यवहारिक अभिव्यक्ति है।” जब इस

प्रकार उपर्युक्त से अलग या भिन्न स्थिति उत्पन्न होती है तो यही स्थिति वाक दोष कहलाती है।

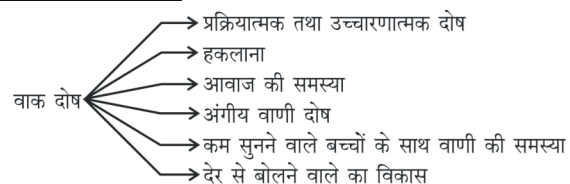
वाक दोष युक्त बच्चे वे हैं जो मुख की आवाज, बोले गये शब्दों में तालमेल तथा शब्दों को संयोजित करने में कठिनाई महसूस करते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि वे बोलते समय कुछ शब्दों को छोड़ देते हैं, बदल देते हैं, तोड़-मरोड़ देते हैं तथा कुछ जोड़ देते हैं। वाकदोष बाधित बच्चों में बोलने की लयक्रम टूट जाता है और उनकी आवाज में हकलाहट होती है।

➤ **राइपर के अनुसार—** “वे बच्चे जिसको सम्प्रेषण में समस्या होती है और उसका स्वर या वाणी अन्य बच्चों से भिन्न प्रकार की होती है। वह स्वयं भी सजग होता है कि वह अपनी बात करने में असमर्थ है। उसकी वाणी मधुर नहीं होती है।”

वाकदोष बालक की विशेषताएँ—

- इनके तालु व जबड़े में दोष होता है, जिसके कारण ये शब्दों का सही उच्चारण नहीं कर पाते हैं।
- इनकी आवाज में मधुरता नहीं होती है।
- इस प्रकार के जो बच्चे होते हैं, उनकी श्वसन क्रिया असामान्य होती है और उनकी आवाज भी हल्की होती है। जो बोलते हैं वह स्पष्ट नहीं होता है, बोलने में संकोच करते हैं तथा धारा प्रवाह नहीं बोल पाते हैं।
- वाकदोष तब उत्पन्न होता है जब सामान्य बच्चों से ऐसे बच्चों की बोलचाल विशिष्ट होती है। जैसे— सम्प्रेषण में बाधा उत्पन्न होती है, बोलते समय बहुत एकाग्र होना पड़ता है तथा बोलने एवं सुनने दोनों में कठिनाई होती है।
- कुछ बच्चों में श्रोता प्रक्रिया में दोष होना अथवा वाक के स्वर में बोलना जिससे उनमें नासिक दोष होता है, जिसके कारण ये नाक के स्वर में बोलते हैं और सुनने वाले को समझने में कठिनाई होती है। इसके अनेक कारण होते हैं, जैसे— संक्रामक रोग, टोन्सिल्ल्स में सूजन आदि।
- कुछ बच्चे बोलने में तुतलाते हैं। धाराप्रवाह बोलने में उन्हें कठिनाई होती है, रुक-रुक कर बोलते हैं। इस प्रकार का दोष गले और जीभ में दोष के कारण होता है। इन्हें बोलने में संकोच होता है परन्तु बलपूर्वक बोलते हैं।

वाक दोष के प्रकार—



भाषा-दोष से ग्रसित बालक की समस्याएँ एवं आवश्यकताएँ—

■ **उच्चारण दोष—** इस दोष में बालक कुछ विशेष शब्दों का उच्चारण करने में कठिनाई महसूस करता है।

■ **प्रवाह**— प्रवाह से तात्पर्य वाणी के प्रवाह से है। बालक में यह प्रवाह की समस्या 'हकलाना' कहलाती है।

■ **आवाज**— वाणी दोष से ग्रसित बालक की आवाज में तारत्व, अनुनाद, गुणवत्ता एवं उच्चता की समस्याएँ पायी जाती हैं। आवाज में कर्कशता, मोटी आवाज या आवाज में रूखापन होना आदि से बालक समस्याग्रस्त रहता है।

■ **भाषा**— भाषा-दोष के रूप में बालक के दो अलग-अलग या संयुक्त रूप से निम्नवत् समस्याएँ हो सकती हैं—

(i) बालक को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में या

(ii) दूसरों के विचारों के अर्थापन करने में

आवश्यकताएँ—

■ भाषा-दोष से ग्रसित बालक को विशेष शिक्षा सेवाओं तथा संबंधित सेवाओं की आवश्यकता होती है। ज्यादातर बालकों को भाषा एवं वाणी-रोगशास्त्र सेवाओं की आवश्यकता होती है। ये सेवाएँ निम्नलिखित को शामिल करती हैं—

■ भाषा दोष से ग्रसित बालकों की पहचान करना

■ विशिष्ट भाषा-दोषों का निदान

■ चिकित्सकीय या अन्य व्यावसायिक सलाह

■ भाषा एवं वाणी सेवाओं का प्रावधान

■ भाषा दोष से ग्रसित बालकों, उनके माता-पिता, संबन्धित शिक्षकों का परामर्श एवं निर्देशन

■ **सहायक प्रौद्योगिकी**

सहायक प्रौद्योगिकी बालक के अपने अधिगम का प्रदर्शन करने, कक्षा कार्य को सम्पन्न करने तथा अपने विचारों को साझा करने में सहयोग प्रदान करती है।

वाकदोष वाले बच्चों की शिक्षा—

1. **उपयुक्त वाक अभ्यास**— वाक दोष वाले बच्चों को समुचित एवं पर्याप्त वाक अभ्यास देना चाहिए। शिक्षक को बच्चों के सामने सही और गलत दोनों शब्दों को स्वयं बोलकर तत्पश्चात् बच्चों से अनुकरण अभ्यास कराया जाना चाहिए।

2. **दुश्चिंता से मुक्ति**— 70-80% व्यक्ति कहीं न कहीं, कभी न कभी हकलाट या तुतलाहट से ग्रसित होते हैं। यह दोष अधिकतर सांवेगिक कारणों जैसे— चिंता, लज्जा, ग्लानि आदि से उत्पन्न होती है। इसलिए शिक्षकों को चाहिए कि कक्षा का वातावरण आनन्दपूर्ण, सुखप्रद, मैत्रीभावना से परिपूर्ण और स्वस्थ रखे। एतएव शिक्षक का व्यवहार एवं कक्षा का वातावरण ऐसा होना चाहिए जिससे बच्चों में चिंता उत्पन्न न हो।

3. **लज्जा एवं घबराहट से बचाव**— अध्यापकों को चाहिए कि वह वाक दोष से पीड़ित बच्चों को कक्षा में लज्जा एवं घबराहट उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों से दूर करे। प्रायः सामान्य कक्षाओं में सामान्य बच्चे इस प्रकार के बच्चों को हँसी-मजाक का केन्द्र बना लेते हैं ऐसी परिस्थितियों में इन बच्चों में कुंठा एवं अवसाद की स्थिति का जन्म होता है।

जहाँ तक संभव हो सके ऐसे बच्चों का पता उनके बाल्यकाल में लगाकर उपचार करना चाहिए ताकि सामान्य बच्चों के साथ उनका समायोजन स्थापित हो सके।

4. **पर्याप्त अभिप्रेरणा प्रदान करना**— अध्यापकों को सबसे पहले ऐसे बच्चों को चिन्हित कर उन्हें प्रोत्साहन एवं अभिप्रेरणा प्रदान करना चाहिए। इससे उनके आत्म विश्वास में वृद्धि होगी और वे उत्सुकता से सीखने के लिए प्रेरित होंगे।

5. **दोष पर बल न देना**— शिक्षक को वाकदोष वाले बच्चों के बाधित स्तर एवं मात्रा पर अधिक बल नहीं देना चाहिए अन्यथा वह हतोत्साहित हो जायेगा तथा उसमें अपेक्षित सुधार नहीं हो पायेगा।

6. **सही निदान करना**— किसी भी वाकदोष वाले बच्चों को शिक्षा देने से पूर्व उसकी आवश्यकतानुसार (स्तर एवं मात्रा का पता लगा कर) ही निदान करना चाहिए क्योंकि जल्दबाजी में किया गया निदान गलत निष्कर्षों को जन्म देता है। परिणामस्वरूप अपेक्षित सुधार के स्थान पर अनापेक्षित गति की सम्भावना होती है।

अस्थि बाधित बालक

अस्थि बाधित बालक का अर्थ—

अस्थि बाधित बालक वे बालक हैं, जिनकी किसी एक या अधिक हड्डियों में दोष आ गया हो या क्षतिग्रस्त हो गयी हो, जिससे वो सामान्य बच्चों की भाँति शारीरिक अभ्यास करने में असमर्थ हो गया हो, ऐसे बच्चों की मांसपेशियों तथा जोड़ों अथवा अस्थियों में किसी कारण से दोष आ जाता है।

अस्थिबाधित बच्चों की विशेषताएँ—

- अस्थिबाधित बच्चे सामान्यतः मानसिक दृष्टि से सामान्य या सामान्य से अधिक होते हैं किन्तु पोलियो या अन्य शारीरिक रोगों से क्षतिग्रस्त हो जाते हैं।
- शारीरिक रूप से बाधित बच्चे क्रियाशील कम होते हैं तथा अपने आपको एकाग्र भी कम समय के लिए रख पाते हैं।
- ऐसे बच्चे अपने आपको किसी कार्य में कम समय के लिए ही लगा पाते हैं।
- यह दूसरों पर आश्रित रहते हैं, साथियों के साथ अंतर्क्रिया कम कर पाते हैं।
- इनमें हीनग्रंथियों का विकास हो जाता है।
- इन्हें सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने में कठिनाई होती है।
- इनमें उत्सुकता होती है।

अस्थिबाधिता के प्रकार—

चिकित्सा विज्ञान के आधार पर अस्थिबाधिता को आठ प्रकारों में विभाजित किया गया है—

1. लूले-लगँड़े, हथकटे
2. एक या इससे अधिक अंगों का लकवाग्रस्त
3. पाँवफिरा
4. मेरुदण्ड का वक्र होना

5. विकृत नितम्ब
6. मष्तिष्कीय पक्षाघात
7. मेरुदण्डीय द्विशामुखी
8. मांसपेशीय असमर्थता

अस्थि बाधित बच्चों की पहचान-

- शारीरिक अंगों पर समुचित नियंत्रण न होना।
- वैसाखियों की सहायता से चलना।
- शारीरिक कार्यों तथा अभ्यास में दर्द एवं कठिनाई का अनुभव करना।
- वस्तुओं को उठाने एवं रखने में कठिनाई का अनुभव करना
- लड़खड़ा कर चलना।
- चलते-चलते गिर जाना।
- शारीरिक अंगों की गतिविधि में नियंत्रण का अभाव।
- अंगों का असामान्य होना।
- जोड़ों में दर्द रहना।
- चलने में कठिनाई का अनुभव एवं ज्यादा न चल पाना।
- नकली अंगों की सहायता लेना/उपयोग करना।
- चलने, उठने तथा बैठने में कठिनाइयों का अनुभव करना।

अस्थिबाधा के कारण-

- (1) जन्मजात अनियमितता के कारण
- (2) दुर्घटना के कारण
- (3) बीमारी के कारण

अस्थि बाधित बच्चों की शिक्षा-

ऐसे बच्चों की शिक्षा को निम्नलिखित प्रकार से वर्णित किया जा सकता है-

- (1) उपचार सुविधाएं प्रदान कर
- (2) प्रशिक्षित अध्यापक द्वारा शिक्षण कार्य
- (3) विशेष कक्षाओं के आयोजन द्वारा
- (4) अतिरिक्त कक्षा के सृजन से
- (5) विशेष विद्यालयों के निर्माण से
- (6) पाठ्यक्रम को आवश्यकतानुसार बनाकर
- (7) अभिवृत्तियों में परिवर्तन करके
- (8) प्रशासनिक परिवर्तन द्वारा
- (9) अधिगम अनुभव करवाकर
- (10) समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा
- (11) पुनर्वास योजना बनाकर उन्हें लागू करना
- (12) मनोवैज्ञानिक परामर्श दिलवाकर
- (13) समन्वित शिक्षा द्वारा
- (14) आर्थिक सहायता द्वारा
- (15) सहायक सामग्री प्रदान कर

अपवंचित वर्ग के बच्चे (अनुसूचित जाति एवं जनजाति, पिछड़ी जाति, घुमन्तु वर्ग तथा श्रमिक परिवारों के बच्चे)

वंचन का अर्थ-

वंचन वह परिवेशजन्य अवस्था है जिसका स्वरूप एवं अर्थ सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भिन्नता के साथ-साथ परिवर्तित होता जाता है। यहाँ पर वंचन को अपेक्षित अनुभवों की न्यूनता के अर्थ में लिया जाता है न कि किसी समूह की सदस्यता के रूप में।

यहाँ पर अध्ययन की मुख्य धारा वंचन रूप में संवेदी अनुभवों के वंचन से है जिसमें परिवेशीय अनुभव प्रमुख होने के कारण बच्चों के विकास पर इनका सीधा परन्तु निषेधात्मक प्रभाव पड़ता है। यूनेस्को ने अपने भारतीय अध्ययन आख्या में चार प्रकार के असुविधा सम्पन्न समूहों का उल्लेख किया है। यह अध्ययन अनुसूचित जाति एवं जनजाति, पिछड़े एवं अल्पसंख्यकों आदि जाति के अध्ययनों पर आधारित है-

1. अनुसूचित जाति
2. अनुसूचित जनजाति
3. भ्रमणकारी (घुमन्तु) जनजाति
4. संदर्भित जनजाति
5. पिछड़ी जनजाति
6. श्रमिक परिवारों के बच्चे

इन परिवारों के अध्ययन के बाद बच्चों में निम्न लक्षण देखने को मिलते हैं-

1. निम्न महत्वाकांक्षा
2. निम्न शैक्षिक उपलब्धि
3. निम्न व्यक्तित्व विशेषताएँ, जैसे- अपने विचारों में अस्थिरता, अति उत्साही और समूह पालक, न्यून बहिर्मुखी, न्यून आत्मवलोकन
4. अनुपयुक्त आत्म सम्प्रत्यय
5. बौद्धिक मंदता
6. सामाजिक कुशलता का अभाव
7. भाषा विपन्नता
8. कक्षाओं को छोड़ना अथवा पढ़ाई के प्रति उदासीन होना।

सामाजिक दृष्टि से सुविधावंचित समूहों के विद्यार्थियों की शिक्षा

- सामाजिक दृष्टि से सुविधावंचित समूहों के अंतर्गत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक वर्ग, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक रूप से अन्य पिछड़े वर्ग शामिल हैं।
- आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों के ऐसे विद्यार्थी शामिल हैं जिनके माता-पिता या अभिभावक की वार्षिक आय सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम आय से कम है।

- इनमें सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक, भाषायी लिंग या ऐसे अन्य किसी कारकों के कारण सुविधावंचित समूहों या वर्गों के लोगों को भी शामिल किया गया है। जैसे—
- शहरी क्षेत्रों के सुविधावंचित बच्चे
- बाल मजदूर, खासतौर पर बंधुआ बाल मजदूरी और घरेलू कामगार
- पारिस्थितिकीय दृष्टि से वंचित, दुर्गम, वनवासी, रेगिस्तानी इलाकों में रहने वाले बच्चे जो प्रायः घरेलू कार्यों जैसे जलाऊ ईंधन, पानी आदि की व्यवस्था इत्यादि में व्यस्त रहते हैं।
- अत्यधिक निर्धन भूमिहीन कृषकों के बच्चे
- कचरा चुनने वाले परिवारों और अन्य मलीन कार्यों में लिप्त परिवारों के बच्चे
- देह व्यापार में लिप्त अभिभावकों के बच्चे
- मानवीय आपदा, नागरिक संघर्ष से प्रभावित क्षेत्रों के बच्चे
- बंजारों, मौसमी प्रवासी श्रमिकों, खानाबदोश समुदायों और चारवाहों के बच्चे जिनकी जीवनशैली घूमन्तू और अस्थायी है।

अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के विद्यार्थियों के साथ भेदभाव

शिक्षक द्वारा—

- विद्यार्थियों को कक्षा में अलग बैठाना
- सवर्ण जातियों और अनुसूचित जातियों के प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार करना।
- कक्षागत क्रियाओं में उन पर पर्याप्त ध्यान नहीं देना।
- विद्यालय में सार्वजनिक कार्यों में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को सम्मिलित न करना।
- सामाजिक दृष्टि से वंचित समूहों के विद्यार्थियों के बारे में अपमान जनक टिप्पणी करना।
- विद्यालय के संसाधनों जैसे पेयजल, मध्याह्न भोजन आदि से इन समूहों के विद्यार्थियों को दूर रखना व भेदभाव करना।

सहपाठियों द्वारा

- अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को जातिसूचक शब्दों से बुलाना
- कक्षा में इन विद्यार्थियों के साथ नहीं बैठना।
- कक्षा की गतिविधियों में या कक्षा के बाहर खेल गतिविधियों में उन्हें शामिल न करना।

व्यवस्था तंत्र द्वारा

- जातिगत विशेषताओं का पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में शामिल न करना।
- शिक्षकों को इन समूहों से जुड़े मुद्दों पर पर्याप्त प्रशिक्षण न दिया जाना।
- अनुसूचित जाति के शिक्षकों की अपर्याप्त नियुक्ति

अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों की शिक्षा से संबंधित मुद्दों और चुनौतियों का निराकरण

- विद्यालय में शिक्षकों और विद्यार्थियों के व्यवहार संबंधी दिशा निर्देश बनाना।
- आवश्यकतानुसार अनुसूचित जाति की बहुलता वाले बसाव क्षेत्रों में विद्यालय खोलना।
- भेदभाव के तरीकों की पहचान करना।
- विद्यालय या प्रखंड स्तर पर शिकायतों का निश्चित समय-सीमा के भीतर निवारण करना।
- पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ जैसे कि खेल, संगीत समारोह, नाटक आदि को बढ़ावा दिया जाये एवं इनमें वंचित समूहों के विद्यार्थियों की भागीदारी भी सुनिश्चित करना।

अल्पसंख्यक समुदायों के विद्यार्थियों के साथ होने वाले भेदभाव

- सामान्यतया उन्हें ऐसे विद्यालयों में पढ़ना पड़ता है जहाँ विद्यालय और कक्षा की परिस्थितियाँ उनके अनुरूप नहीं होती हैं और बहुसंख्यक समाज की संस्कृति या धार्मिक भावनाएँ प्रभावी होती हैं।

अल्पसंख्यक समुदायों के विद्यार्थियों की शिक्षा से संबंधित मुद्दों और चुनौतियों का निराकरण—

- अल्पसंख्यक बहुलता वाले क्षेत्रों में विद्यालय खोलना
- अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों की सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता आदि के बारे में सभी शिक्षकों को संवेदनशील बनाना।
- पाठ्यचर्या और शैक्षिक प्रक्रियाओं में अल्पसंख्यक समुदायों की संस्कृति का समावेशन सुनिश्चित करना।
- धार्मिक त्योहारों के दौरान अल्पसंख्यक समुदाय के बच्चों के साथ संवेदनशील तरीके से व्यवहार करना।
- विद्यालय प्रबन्धन समिति में अल्पसंख्यक समुदाय के सदस्यों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना।

सामाजिक दृष्टि से वंचित समूहों के विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए योजनाएँ—

- कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय
- पुस्तक बैंक योजना
- आश्रम विद्यालय
- मुफ्त पुस्तकें और गणवेश
- मैट्रिक पूर्व छात्रवृत्ति
- सुधारात्मक कोचिंग योजना
- मदरसों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की योजना
- मदरसा शिक्षा का आधुनिकीकरण
- निजी सहायता प्राप्त/सहायता नहीं पाने वाले अल्पसंख्यक संस्थानों में बुनियादी सुविधाओं के विकास की योजना।

विद्यालय प्रबंधन समिति की भूमिका—

- सामाजिक आर्थिक दृष्टि से वंचित समूहों के विद्यार्थियों को विद्यालयों में प्रवेश दिलाए और उनकी नियमित उपस्थिति का ध्यान रखें।
- अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यक समुदाय की बहुलता वाले क्षेत्रों में बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के तहत निर्धारित मानदण्डों और मानकों के क्रियान्वयन पर ध्यान रखें।
- अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यक समुदायों की बहुलता वाले क्षेत्रों में शिक्षकों को गैर शैक्षिक कार्य न दिये जाये।
- अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और धार्मिक अल्पसंख्यकों से संबंधित पूर्वाग्रह और गलत धारणाएँ विद्यालय में प्रबलित न हो।
- विद्यालय एक धर्मनिरपेक्ष वातावरण में काम कर रहा हो।
- प्राथमिक स्तर पर कक्षाओं में पठन-पाठन स्थानीय भाषा में हो न कि केवल राज्य स्तरीय भाषा के माध्यम से।
- विद्यालय में शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में समानता के बजाय समता की नीति को अपनाए।

अपवंचित बच्चों की शिक्षा—

रथ ने अपवंचित बच्चों की समस्याओं का विश्लेषण करते हुए तीन विशिष्ट उपायों की संस्तुति की थी—

1. पूर्व विद्यालय वातावरण के कारण उत्पन्न अधिगम न्यूनताओं को दूर करने का प्रयास
2. विशिष्ट विषयों में न्यूनताओं को दूर करने का प्रयास
3. वंचित बच्चों की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रयास

यह सर्वविदित है कि शारीरिक और मानसिक विशेषताओं में वैयक्तिक भिन्नता होती है। अतः यह मानना कि सभी बच्चे अकसर मिलने पर समान क्षमता वाले हो जायेंगे यह तर्क संगत नहीं लगता है। अतः क्षमता की वास्तविक मूल्यांकन होना चाहिए। इस मूल्यांकन से न केवल कमियों के सम्बन्ध में ज्ञान होता है बल्कि ऐसे कौशल और क्षमताओं का पता लगता है जो कि अपवंचित बच्चों में होती है। ऐसे कौशलों को विकसित तथा पुरस्कृत करना भी वंचित बच्चों की स्थिति को सुधारने में सहयोगी सिद्ध होता है।

इस प्रकार से अपवंचित बच्चों की समस्या बहुआयामी है और समाधान के लिए विद्यालय, परिवार तथा समाज द्वारा सभी अवसरों पर प्रयास अपेक्षित है।

समस्यात्मक बालक

समस्यात्मक बालक का अर्थ—

समस्यात्मक बच्चों से हमारा तात्पर्य उन बच्चों से है जो परिवार एवं कक्षा व विद्यालय में भाँति-भाँति की समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। ऐसे बच्चों का व्यवहार सामान्य प्रकार के बच्चों से भिन्न होता है। वे वातावरण के साथ अपने आप को समायोजित नहीं कर पाते हैं। ऐसे बच्चे अपने अध्यापकों के लिए समस्या बने रहते हैं। समस्यात्मक

बच्चे कई प्रकार के हो सकते हैं, जैसे— चोरी करने वाले बच्चे, झूठ बोलने वाले बच्चे, क्रोध करने वाले बच्चे, विद्यालय से भाग जाने वाले बच्चे, गृहकार्य न करने वाले बच्चे, कक्षा में देर से आने वाले बच्चे आदि। समस्यात्मक बच्चों के समस्यात्मक व्यवहार के कारणों को जानकर ऐसे बच्चों के व्यवहार में सुधार लाया जा सकता है। प्रायः बच्चे आवश्यकताएँ पूरी न होने पर, अत्यधिक लाड़ प्यार में, कठोर अनुशासन के कारण या असुरक्षा की भावना के कारण, विभिन्न प्रकार का समस्यात्मक व्यवहार करता है। समस्यात्मक बच्चों को उनके समस्यात्मक व्यवहार के लिए प्रताणित अथवा शारीरिक दण्ड न देकर मनावैज्ञानिक ढंग से शिक्षा देनी चाहिए।

➤ **वैलेस्टाइन के अनुसार—** “समस्यात्मक बच्चे वे हैं जिनके व्यवहार तथा व्यक्तित्व इस सीमा तक असामान्य होते हैं कि वे घर, विद्यालय तथा समाज में समस्याओं के जनक बन जाते हैं।”

समस्यात्मक बच्चों की पहचान—

- (1) निरीक्षण विधि का प्रयोग करके
- (2) साक्षात्कार द्वारा
- (3) अभिभावकों, शिक्षकों तथा मित्रों से वार्तालाप
- (4) कथात्मक अभिलेख
- (5) संचयी अभिलेख के द्वारा
- (6) मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के द्वारा

समस्यात्मक बच्चों के लक्षण—

(अ) न्यून मानसिक दक्षता और समस्यात्मक लक्षण—

- (1) पैसे एवं अन्य वस्तुओं की चोरी करना
- (2) स्कूल के कार्यों में सक्रिय न होना
- (3) शारीरिक एवं मानसिक कष्ट देकर आनन्द लेना
- (4) अनुशासन का विरोध करना
- (5) बुरा आचरण
- (6) असहयोग की प्रवृत्ति रखना
- (7) सन्देह करना
- (8) धोखा देना
- (9) अश्लील बातें करना
- (10) बिस्तर गीला करना

(ब) अत्यधिक मानसिक दक्षता का होना—

- (1) मानसिक द्रव्य से ग्रसित होना
- (2) हीन भावना का शिकार होना
- (3) सीमा से अधिक कठोर व्यवहार का होना
- (4) अप्रसन्न एवं चिड़चिड़े होना
- (5) भयभीत परन्तु आत्मकेन्द्रित होना
- (6) लोगों के विरोध का शिकार होना
- (7) अनावश्यक तर्क आधारित आख्याएँ प्रस्तुत करना।

समस्यात्मक व्यवहार के कारण—

- (i) आनुवांशिक कारण
- (ii) शारीरिक कारण
- (iii) स्वभाव सम्बन्धी तथा संवेगात्मक कारण
- (iv) सामाजिक तथा परिवेशीय कारण

समस्यात्मक बच्चों की शिक्षा—

- (i) माता-पिता को बच्चों के प्रति प्रेम, सहानुभूति तथा सहयोगात्मक व्यवहार करना चाहिए।
- (ii) बच्चे की मूल प्रवृत्तियों का दमन न करके उनका शमन या परिशोधन किया जाना चाहिए।
- (iii) बच्चों के अच्छे कार्य के लिए प्रोत्साहन तथा पुरस्कार दिया जाना चाहिए।
- (iv) बच्चे के सहयोगियों का गुप्त निरीक्षण रखना चाहिए।
- (v) बच्चों को नैतिक शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।
- (vi) बच्चों को मनोरंजन के उचित अवसर दिये जाने चाहिए।
- (vii) बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकता की पूर्ति की जानी चाहिए।
- (viii) अध्यापक का व्यवहार मधुर एवं सहयोगात्मक होना चाहिए।
- (ix) बच्चों की आवश्यकता, परिस्थिति तथा क्षमता के अनुरूप ही उन्हें गृहकार्य दिया जाना चाहिए।

अधिगम अक्षमता

अधिगम अक्षमता का अर्थ—

सामान्य भाषा में अधिगम अक्षमता का तात्पर्य सीखने की क्षमता अथवा योग्यता की कमी या अनुपस्थिति से है।

अधिगम अक्षमता पद का सर्वप्रथम प्रयोग वर्ष 1963 में सैमुअल किर्क ने किया था और इसे इन्होंने निम्न शब्दों में परिभाषित किया—

“अधिगम अक्षमता को वाक, भाषा, पठन, लेखन या अंकगणितीय प्रक्रियाओं में से किसी एक या अधिक प्रक्रियाओं में मंदता, विकृति अथवा अवरूद्ध विकास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो सम्भवतः मस्तिष्क कार्यविरूपता या संवेगात्मक अथवा व्यवहारिक विक्षोभ का परिणाम है न कि मानसिक मंदता, संवेदी अक्षमता अथवा सांस्कृतिक या अनुदेशन कारक का।”

अधिगम अक्षमता की विशेषताएँ—

- अधिगम अक्षमता आंतरिक होती है।
- यह स्थायी स्वरूप का होता है अर्थात् यह व्यक्ति विशेष में आजीवन विद्यमान रहता है।
- यह कोई एक विकृति नहीं बल्कि विकृतियों का एक विषम समूह है।
- चूँकि यह समस्या केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र की कार्यविरूपता से सम्बन्धित है, अतः यह एक जैविक समस्या है।
- यह कोई विकृति नहीं बल्कि विकृतियों का एक विषम समूह है।

- यह श्रवण, सोच, वाक, पठन, लेखन एवं अंकगणितीय गणना में शामिल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया में विकृति के फलस्वरूप उत्पन्न होता है, अतः यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या भी है।

अधिगम अक्षमता के प्रकार—

1. डिस्लेक्सिया (पढ़ने सम्बन्धी विकार)
2. डिस्ग्राफिया— (लेखन सम्बन्धी विकार)
3. *डिस्कैलकुलिया (गणितीय कौशल सम्बन्धी विकार)
4. डिस्फैसिया (वाक क्षमता सम्बन्धी विकार)
5. डिस्त्रैक्सिया (लेखन एवं चित्रांकन सम्बन्धी विकार)
6. डिसआर्थोग्राफिया (वर्तनी सम्बन्धी विकार)
7. ऑडिटरी प्रोसेसिंग डिसऑर्डर (श्रवण सम्बन्धी विकार)
8. विजुअल परसेप्शन डिसऑर्डर (दृश्य प्रत्यक्षण क्षमता सम्बन्धी विकार)
9. सेंसरी इंटीग्रेशन ऑर प्रोसेसिंग डिसऑर्डर (इन्द्रिय समन्वयन क्षमता सम्बन्धी विकार)
10. आर्गनाइजेशनल लर्निंग डिसऑर्डर (संगठनात्मक पठन सम्बन्धी विकार)

विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की

शिक्षा व्यवस्था

भारत जैसे प्रजातांत्रिक देश में प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा का अधिकार प्राप्त है। वर्तमान समय में शिक्षा के अधिकार कानून को लागू करना इसका परिचायक है। साथ ही पूर्व में संविधान के नीतिनिदेशक तत्त्व (अनु. 45 में) शामिल अनिवार्य शिक्षा के उपबन्ध को जीवन जीने के अधिकार (अनु. 21) में अन्तः स्थापित का नया उपबन्ध (अनु. 21 क) बना दिया है। इसमें प्रत्येक बच्चे को यह अधिकार है कि वह अपने सामर्थ्य के अनुसार सहायता ग्रहण करें। प्रत्येक कक्षा-कक्ष में शिक्षण की कुछ सम्बन्धित समस्याएं होती हैं तथा कुछ बच्चों में इसकी प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है। इस प्रकार के बच्चों में अध्यापक की सहायता की अधिक आवश्यकता पड़ती है। परन्तु कभी-कभी अध्यापक इनकी आवश्यकता को नहीं समझ पाते हैं तब अध्यापक अपने आप को असफल अनुभव करने लगते हैं, क्योंकि विशिष्ट बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सामान्य तथा विशिष्ट शिक्षा कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है। पूर्ण रूप से लाभान्वित होने के लिए विशेष सहायता, साधनों एवं अधिगम सामग्री की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त उपकरणों की भी आवश्यकता होती है। जैसे की श्रवण बाधित बच्चों के लिए श्रवण यंत्र, वाणी प्रशिक्षक एवं दृष्टि बाधित बच्चों के लिए देखने के उपकरण जैसे ‘उत्तल लेंस’ जिसकी सहायता से छोटे शब्दों को बड़े शब्दों के रूप में देखा जा सकता है। इसी प्रकार मन्दबुद्धि बच्चों को खिलौने तथा खेलने की सामग्री की आवश्यकता होती है। प्रतिभाशाली बच्चों को उच्च स्तर की अधिगम सामग्री, अथवा सपुस्तिका एवं योग्य अध्यापक की आवश्यकता होती है अधिकांश विद्यालयों में प्रतिभाशाली या विशिष्ट बच्चों के शिक्षण हेतु पढ़ाने में सहायक

सामग्री तथा साधन पूर्णतया उपलब्ध नहीं होते हैं। इससे बच्चों की वास्तविक क्षमता तथा कार्यकलापों में अन्तर बढ़ जाता है। विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा व्यवस्था देते समय तीन प्रमुख समस्याएं क्रमशः (विशिष्ट बच्चों को समझने की समस्या, औपचारिक शिक्षा की समस्या, एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण की समस्या) आती है। चूँकि विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे कई प्रकार के होते हैं विशिष्ट बच्चों के लिए उनकी श्रेणी के अनुसार ही शिक्षा कार्यक्रम बनाना चाहिए। सामान्य रूप से विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा व्यवस्था को हम निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझ सकते हैं—

(1) विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान व उनका आकलन करना—

अधिकांश विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों का चिन्हीकरण ही नहीं हो पाता है। परिणाम स्वरूप उनकी क्षमताओं का पूर्ण ज्ञान नहीं हो पाता है। जबकि ऐसे बच्चों को यदि अध्यापकों द्वारा ध्यान दिया जाए तो आसानी से पहचाना जा सकता है। बच्चे को चिकित्सीय एवं मनोवैज्ञानिक सलाह दिलाने का प्रयास करना चाहिए। इस सम्बन्ध में 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद', नई दिल्ली द्वारा विकसित क्रियात्मक निर्धारण निर्देशिका के अनुसार निर्धारण किया जा सकता है।

(2) सेवाओं का स्थापन—

मनोवैज्ञानिक एवं चिकित्सकीय निर्धारण के पश्चात् विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को उपयुक्त श्रेणी तथा उपयुक्त शिक्षण संस्था में रखा जाना चाहिए। किसी भी शिक्षण संस्था में विशिष्ट बच्चों के स्तर का निर्धारण उनके अतीत तथा पिछले अनुभवों के आधार पर किया जा सकता है। जहाँ तक शारीरिक व मानसिक बाधित बच्चों का सम्बन्ध है, इस सम्बन्ध में निम्नलिखित कार्यक्रम हैं—

- (i) सामान्य कक्षाओं में पूर्णकालिक स्थापन
- (ii) सामान्य कक्षा तथा विशिष्ट कक्षा में बारी-बारी से अंशकालिक स्थापन
- (iii) विशिष्ट कक्षाओं में पूर्ण कालिक स्थापन, विशिष्ट शिक्षण में पूर्णकालिक स्थापन
- (iv) आवासीय शिक्षा संस्थाओं में पूर्णकालिक स्थापन

चूँकि हमारे देश में बुद्धिमान, सृजनात्मक, भावात्मक तथा सामाजिक रूप से बाधित बच्चों के लिए विशिष्ट संस्थाओं तथा विशिष्ट कक्षाओं का प्रावधान नहीं है, इसलिए प्रभावित बच्चे सामान्य शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करते हैं। **पूणे में विलक्षण तथा प्रतिभाशाली बच्चों के लिए 'ज्ञान प्रबोधिनी' नामक संस्था की स्थापना की गयी है।** इसी तरह का राष्ट्रीय स्तर का अनुसंधान केन्द्र जिसे 'दृष्टि विकलांग राष्ट्रीय संस्थान' (National Institute for the Visually Handicapped NIVH) कहा जाता है, वर्ष 1971 से देहरादून, उत्तराखण्ड में कार्य कर रहा है।

3. वैयक्तिकता पर बल— चूँकि विशिष्ट बच्चे एक विषमांगी समूह बनाते हैं अर्थात् विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे विभिन्न प्रकार के होते हैं, जो कि विभिन्न श्रेणी में वर्गीकृत हो सकते हैं।

प्रत्येक श्रेणी के बच्चों की अपनी विशेषताएँ होती हैं। बच्चों के विशिष्ट गुणों पर विचार करते हुए उन्हें विभिन्न समूहों में बाँटा जा सकता है। इस प्रकार विशिष्ट बच्चों की शिक्षा उनकी वैयक्तिक विशेषताओं से मिलती जुलती होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में प्रत्येक बच्चे की वैयक्तिकता के आधार पर शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए।

4. अधिगम पर बल— यह आवश्यक नहीं है कि बच्चे किसी विषयवस्तु को उसी प्रकार से सीखे, जैसे— अध्यापक सिखाते हैं। क्योंकि वर्तमान में शिक्षा की अपेक्षा अधिगम पर विशेष जोर देना न्यायसंगत है। अध्यापकों को चाहिए कि वे इस प्रकार से बच्चों को शिक्षा प्रदान करें कि वह अधिगम करने पर बल दे। जब विशिष्ट बच्चों का शैक्षिक कार्यक्रम बनाया जाय तो विशेषज्ञ को उपर्युक्त बातों पर बल देना चाहिए, चाहे वो बच्चे शारीरिक रूप से विशिष्ट हो या सांवेगिक रूप से विशिष्ट हो, सामाजिक हो या प्रतिभाशाली बच्चे ही क्यों न हों।

5. विशिष्ट शिक्षा संस्थाओं का स्वरूप— हमारे देश में विशेष रूप से दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित, मानसिक मन्दित तथा शारीरिक व मानसिक रूप से बाधित बच्चों के लिए विशिष्ट शिक्षा स्थापित की गयी है। विशिष्ट विद्यालय में प्रशिक्षित अध्यापक संसाधनों, उपकरणों तथा अन्य विशेष सहायक सामग्री की सहायता से बच्चों की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण उपलब्ध कराते हैं। कुछ सरकारी संस्थाओं को छोड़कर प्रायः यह देखा गया है कि विशिष्ट शिक्षा पर पर्याप्त धन व्यय करना पड़ता है। कुछ बच्चों के अभिभावक सामान्य रूप से इतना अधिक धन खर्च करने की क्षमता नहीं रखते हैं। इसलिए आर्थिक संकट के कारण अपने बच्चों को मजबूर होकर शिक्षण संस्थान से हटा लेते हैं।

6. समन्वित शिक्षा की स्थापन— शारीरिक एवं मानसिक रूप से बाधित बच्चों की शिक्षा की दिशा में एक नवीन प्रयास किया जा रहा है। बाधित बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ सामान्य शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण दिया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कहा गया है कि “जहाँ तक संभव होगा आंशिक रूप से बाधित बच्चों तथा हाथ-पैर से अक्षम बच्चों की शिक्षा सामान्य बच्चों की शिक्षा के समान ही होगी। जहाँ तक सम्भव होगा आंशिक रूप से बाधित बच्चों के लिए विशिष्ट शिक्षा जिला मुख्यालयों में विशिष्ट शिक्षा संस्थाएँ तथा आवासीय शिक्षा संस्थाएँ स्थापित की जायें। प्रत्येक सम्भव दशा में गम्भीर रूप से बाधित बच्चों की शिक्षा को प्रेरित किया जाये।

7. भत्तों का प्रावधान— भारत सरकार ने शारीरिक रूप से बाधित बच्चों की शिक्षा के लिए कुछ भत्तों का प्रावधान किया है, जैसे— यात्रा भत्ता, वर्दी भत्ता, पुस्तक खरीदना, छात्रवृत्ति आदि। विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को भी राष्ट्रीय प्रतिभावान विद्यालय (NTS) जैसी संस्थाओं से लाभ तथा छात्रवृत्ति के लिए मार्गदर्शन किया जाना चाहिए।

8. सामान्य शिक्षा से पूर्व तैयारी हेतु प्रशिक्षण— शिक्षा संस्थाओं में औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने से पहले बाधित बच्चों

को कुछ तैयारी करवानी चाहिए। यह तैयारी किसी विशिष्ट शिक्षा संस्था, 'विशिष्ट बच्चों के शिक्षा केन्द्र (ECEC), बालवाड़ी, आंगनवाड़ी अथवा किसी प्राथमिक स्कूल की कक्षाओं के माध्यम से की जा सकती है। इसमें प्रवेश के लिए अध्यापक को बच्चे का सामान्य परीक्षण करना चाहिए, इसके पश्चात बच्चों की वैयक्तिक परीक्षा, माता-पिता का साक्षात्कार आदि करना चाहिए। इस प्रकार के परीक्षणों से बाधित बच्चों के बारे में अध्यापक को यह जानकारी प्राप्त होती है कि बच्चे कार्य करने में किस सीमा तक सक्षम हैं तथा वे कितना काम कर सकते हैं और क्या-क्या काम कर सकते हैं। उनको कितना ज्ञान है। विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे को संसाधन युक्त कक्षा-कक्ष में उनकी आवश्यकता के अनुरूप प्रशिक्षण/शिक्षण दिया जाता है। मानसिक एवं शारीरिक रूप से बाधित बच्चों को सामान्य समुदायों के साथ समन्वित करने और उन्हें सहज तथा आत्म विश्वास से जीवन का सामना करने के योग्य बनाने का लक्ष्य होना चाहिए।

9. संसाधनयुक्त अध्यापक की सहायता— प्रत्येक शिक्षा संस्थान के बाधित बच्चों की सहायता हेतु एक संसाधन युक्त अध्यापक को रखना चाहिए। यह पूर्णकालिक एवं अंशकालिक दोनों प्रवृत्तियों का हो सकता है। ये संसाधन युक्त अध्यापक संसाधनयुक्त सामग्री की सहायता से, संसाधन कक्षों के माध्यम से शारीरिक एवं मानसिक आवश्यकता वाले बाधित बच्चों को अपनी सेवायें दे सकता है। ये बाधित बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं की शिक्षण प्रणाली में निपुण होते हैं। संसाधनयुक्त शिक्षाविद सामान्य अध्यापकों को इस सम्बन्ध में सलाह भी दे सकते हैं।

10. सहायक सामग्री तथा उपकरण (टी.एल.एम.)— ऐसे विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे जो पुराने अनुदेशन सामग्री, परम्परानुसार साधन, शिक्षण सहायता तथा संसाधन उपकरणों का लाभ ग्रहण नहीं कर पाये हैं उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए संसाधन कक्ष के उपकरण तथा सुविधाओं का लाभ विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को मिलना चाहिए। ऐसे बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप जैसे गम्भीर रूप से दृष्टि बाधित बच्चों के लिए ब्रेललिपि सामग्री, मोटे छापे की पठन सामग्री अथवा पठन सामग्री तथा श्रवण बाधितों के लिए श्रवणयंत्र तथा अन्य सहायक सामग्री वाणी में सहायक यंत्र, मानसिक मंदित बच्चों के लिए खेल, खिलौने, तथा अधिगम असमर्थता वाले बच्चों के लिए उनकी बाधिता के अनुरूप सामग्री विशिष्ट शिक्षा संस्थाओं में उपलब्ध होने चाहिए।

विशेष तथा समावेशित शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नीतियाँ

■ अन्तर्राष्ट्रीय नीतियाँ एवं कानून—

■ विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने 9 दिसम्बर 1975 को एक घोषणा पत्र जारी किया। यह घोषणा पत्र विकलांग व्यक्तियों के मानव अधिकारों की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कदम था।

■ सन् 1990 ई. में जोमेटिन (थाईलैण्ड) में 'सभी के लिए शिक्षा पर विश्व सम्मेलन' का आयोजन हुआ, जिसमें 155 राष्ट्र के

प्रतिनिधि एवं 150 गैर सरकारी संस्थाओं ने भाग लिया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य था शिक्षा को सर्वव्यापी बनाने के लिए तथा निरक्षरता हटाने के लिए उपायों पर विचार करना।

■ सन् 1994 ई. में स्पेन के सालामांका शहर में 'विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के शिक्षण पर विश्व सम्मेलन' का आयोजन यूनेस्को एवं स्पेन की सरकार ने मिलकर किया। इसी सम्मेलन में सर्वप्रथम समावेशी शिक्षा पर चर्चा हुई।

■ विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर अधिवेशन, जिसको संक्षेप में यू.एन.सी.आर.पी.डी. भी कहते हैं, विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों को संरक्षित रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जो 3 मई सन् 2008 को अंतर्राष्ट्रीय कानून बना।

■ राष्ट्रीय नीतियाँ एवं कानून—

■ भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 में कहा गया है कि कानून के समक्ष सभी नागरिक एक समान हैं। तथा अनुच्छेद 15 में कहा गया है कि राज्य किसी भी नागरिक को धर्म, नस्ल, जाति, लिंग, जन्म, स्थान या इसमें से किसी भी आधार पर भेदभाव नहीं करेगा।

■ अनुच्छेद 41 जहाँ कार्य करने के अधिकार की बात करता है वहीं अनुच्छेद 45 कहता है कि राज्य 6 वर्ष के आयु वाले बच्चों को प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा देने का प्रयास करे।

■ अनुच्छेद 46 कहता है कि राज्य जनता के दुर्बल वर्गों के विशिष्टतया, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के शिक्षा और अर्थ सम्बन्धी हितों की विशेष सावधानी से अभिवृद्धि करेगा और सामाजिक अन्याय और सभी प्रकार के शोषण से उनकी संरक्षा करेगा।

■ भारतीय संविधान के 86वें संशोधन (2002) के द्वारा अनुच्छेद 21(क) में 6-14 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा की बात कही गयी है।

■ शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 जो 1 अप्रैल 2010 से लागू हुआ, यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षा प्रत्येक बच्चे का अधिकार है तथा राज्य को अनिवार्य रूप से उसको ये अधिकार प्रदान करने होंगे तथा उनसे कोई शुल्क नहीं लिया जायेगा।

■ मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम सन् 1987 में लागू हुआ, जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि मानसिक रोगी व्यक्तियों की शीघ्र पहचान करके उनका अच्छा उपचार किया जा सके।

■ भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम जिसे संक्षेप में हम आर.सी.आई. एक्ट कहते हैं, सन् 1992 में पारित हुआ तथा 22 जून 1993 को लागू हुआ। सन् 2000 में इस अधिनियम में संशोधन किया गया।

नोट— पुनर्वास के क्षेत्र में स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन कई राष्ट्रीय संस्थान हैं, जैसे मानसिक स्वास्थ्य तथा न्यूरो विज्ञान राष्ट्रीय संस्थान, बंगलुरु; अखिल भारतीय शारीरिक चिकित्सा तथा पुनर्वास, मुम्बई; अखिल भारतीय वाणी तथा श्रवण संस्थान, मैसूर; केन्द्रिय मनोचिकित्सा संस्थान, राँची आदि।

■ विकलांग/दिव्यांग व्यक्तियों के लिए अधिनियम सन् 1995 में पारित हुआ तथा इसका पूरा नाम विकलांग/दिव्यांग अधिनियम-1995 (PWD Act-1995) है।

■ यह अधिनियम 7 फरवरी 1996 ई. से लागू हुआ। इस अधिनियम के अंतर्गत सात विकलांगताएँ/दिव्यांगताएँ आती हैं-

- (i) अंधत्व
- (ii) अल्पदृष्टि
- (iii) श्रवण बाधा
- (iv) मानसिक विकलांगता
- (v) मानसिक रोग
- (vi) गामक बाधा
- (vii) कोढ़ उपचरित

विशेष-

■ 16 दिसम्बर 2016 को लोकसभा में 'दिव्यांगजन अधिकार विधेयक, 2016' पारित हुआ। यह विधेयक 21 वर्ष पुराने दिव्यांग व्यक्ति (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण तथा पूर्ण सहभागिता) अधिनियम, 1995 का स्थान लेगा।

■ अब सात की जगह इक्कीस प्रकार की अक्षमताओं को इस श्रेणी में रखा गया है-

वाणी व भाषा पीड़ित अक्षमता, विशिष्ट प्रज्ञा/अधिगम अक्षमता, एसिड अटैक पीड़ित, तीन रक्त सम्बन्धी बीमारियों जैसे- थैलेसेमिया, हीमोफीलिया और सिकल सेल बिमारी, वामनता तथा पेशीय दुर्बिकास आदि।

■ इसके अतिरिक्त इस विधेयक में दिव्यांग बच्चों के लिए 6-18 वर्ष की आयु तक मुफ्त शिक्षा के अधिकार की व्यवस्था की गयी है।

■ विशेष श्रेणी के दिव्यांगजनों हेतु सरकारी प्रतिष्ठानों में आरक्षण को 3% से बढ़ाकर 4% तक कर दिया गया है।

■ 40 प्रतिशत या उससे अधिक किसी भी प्रकार की अक्षमता वाले व्यक्तियों को दिव्यांग कहा जाता है।

■ दिव्यांगजनों के अधिकार से सम्बन्धित संयुक्त राष्ट्र अभिसमय (United Nations Convention on the Rights of Persons with Disabilities- UNCRPD) को भारतवर्ष ने वर्ष 2007 में अभिपुष्ट किया था।

■ 3 दिसम्बर 2015 को 'सुगम्य भारत अभियान' की शुरुआत की गयी थी।

■ राष्ट्रीय न्यास अधिनियम सन् 1999 में पारित हुआ तथा इसका पूरा नाम है- "राष्ट्रीय न्यास अधिनियम (स्वालीनता, प्रमस्तिष्क पक्षाघात, मानसिक विकलांगता और बहु-विकलांगता प्रभावित व्यक्तियों के कल्याण हेतु) 1999"। इसको संक्षेप में एन.टी.एक्ट 1999 भी कहते हैं। यह अधिनियम चार विकलांगताओं के लिए है-

- (i) स्वालीनता
- (ii) प्रमस्तिष्क पक्षाघात
- (iii) मानसिक विकलांगता
- (iv) बहु विकलांगता

■ विकलांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति 10 जनवरी 2006 को पारित हुआ। इस नीति का निर्माण विकलांग व्यक्तियों के लिए समान अवसर, उनके अधिकारों के संरक्षण और समाज में पूर्ण भागीदारी के लिए वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से हुआ।

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण तथ्य

निम्न सात राष्ट्रीय संस्थान हैं जो मानव बल के विकास के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं-

1. राष्ट्रीय विकलांग संस्थान, नई दिल्ली
2. राष्ट्रीय दृष्टि विकलांग संस्थान, देहरादून
3. राष्ट्रीय आर्थोपेडिक विकलांग संस्थान, कोलकाता
4. राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान, सिकन्दराबाद
5. राष्ट्रीय श्रवण विकलांग संस्थान, मुम्बई
6. राष्ट्रीय पुनर्वास तथा अनुसंधान संस्थान, कटक
7. राष्ट्रीय बहु-विकलांग सशक्तिकरण संस्थान, चेन्नई

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. यदि कोई छात्र असामाजिक व्यवहार का प्रदर्शन कर रहा हो, तो शिक्षक को क्या करना चाहिए?
 - (a) छात्र को शारीरिक दण्ड देना चाहिए
 - (b) उसके व्यवहार का कारण जानना चाहिए
 - (c) उसे उपदेश देना चाहिए
 - (d) उसे कक्षा से बाहर निकाल देना चाहिए
2. यदि कोई बच्चा विद्यालय में हमेशा देर से पहुँचता है, तो आप क्या करेंगे?
 - (a) उसे डाँटेंगे ताकि वह यह गलती दोबारा न दोहराए
 - (b) प्रधानाचार्य को बताएंगे
 - (c) उसके माता-पिता से संपर्क करेंगे
 - (d) बच्चे से बातचीत करके कारण जानने का प्रयास करेंगे
3. प्रतिभावान बालक की पहचान अवलोकन द्वारा नहीं की जा सकती क्योंकि
 - (a) अवलोकन वस्तुनिष्ठ तकनीक नहीं है
 - (b) अवलोकन व्यक्तिनिष्ठ प्रविधि है
 - (c) अवलोकन सिर्फ विशेषज्ञों द्वारा ही किया जा सकता है
 - (d) उपरोक्त में से सभी
4. गिफ्टेड (मेधावी) होने का लक्षण है

I. अभिव्यक्ति में नव्यता	II. जिज्ञासा
III. वाचालता	IV. अति सक्रियता
(a) I और IV	(b) I और II
(c) III और IV	(d) II और III

5. सम्पुष्ट कार्यक्रम जरूरी होते हैं-
- (a) कमजोर अधिगमकर्ताओं के लिए
 - (b) प्रतिभाशाली बालकों के लिए
 - (c) साधारण बालकों के लिए
 - (d) शारीरिक रूप से अयोग्य बालकों के लिए
6. प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान की विधि है
- (a) अवलोकन
 - (b) बुद्धि परीक्षण
 - (c) व्यक्तित्व परीक्षण
 - (d) उपरोक्त सभी
7. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता प्रतिभावान शिक्षार्थी की है?
- (a) यदि कक्षा की गतिविधियाँ अधिक चुनौतीपूर्ण नहीं होती हैं, तो वह कम प्रेरित अनुभव करता है और ऊब जाता है।
 - (b) वह बहुत ही तुनकमिजाज होता है
 - (c) वह रस्मी व्यवहार करता है जैसे हाथ थपथपाना, डोलना आदि।
 - (d) वह आक्रामक और कुण्ठित हो जाता है।
8. सृजनात्मक बालक में निम्न में से कौन-सा गुण नहीं पाया जाता है?
- (a) खोजपूर्ण प्रवृत्ति
 - (b) अच्छी अन्तर्दृष्टि
 - (c) क्रियाशीलता
 - (d) सीमित रुचियाँ
9. समस्या के अर्थ को जानने की योग्यता, वातावरण के दोषों, कमियों एवं रक्तियों के प्रति सजगता विशेषता है
- (a) प्रतिभाशाली बालकों की
 - (b) सामान्य बालकों की
 - (c) सृजनशील बालकों की
 - (d) इनमें से कोई नहीं।
10. पृथक कक्षाओं एवं संवर्धन कार्यक्रमों का प्रयोग शिक्षा के लिये किया जाता है
- (a) प्रतिभाशाली बालकों के लिये
 - (b) निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले बालकों के लिये
 - (c) प्रतिभाशाली एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले बालकों के लिये
 - (d) इनमें से कोई नहीं।
11. आपकी कक्षा के कुछ छात्र अति मेधावी हैं, आप उन्हें किस तरह पढ़ाएँगे?
- (a) कक्षा के साथ
 - (b) उच्च कक्षा के साथ
 - (c) समृद्धिकरण कार्यक्रमों के द्वारा
 - (d) जब वे चाहें
12. एक मेधावी छात्र अध्ययन में बेहतर उपलब्धि हासिल नहीं कर पा रहा है। शिक्षक को निम्न में से उसके लिए कौन-सी गतिविधि अपनानी चाहिए?
- (a) उसके बेहतर प्रदर्शन की प्रतिज्ञा
 - (b) उसकी कम उपलब्धि के कारण का पता करना
 - (c) उसे परीक्षा में कृपांक देना
 - (d) उसके अभिभावक से कहना कि वह उसे स्कूल से निकाल लें
13. प्रतिभाशाली बालक
- (a) तीव्र और आसानी से सीखते हैं
 - (b) जो सुनते या पढ़ते हैं बिना रटे कण्ठस्थ कर लेते हैं
 - (c) वस्तु चिन्तन करते हैं
 - (d) कम समय में ही अभिप्रेरण का अनुसरण करते हैं
14. सृजनशील बालक के बारे में कौन-सा कथन सत्य नहीं है?
- (a) सृजनशील बालक जिज्ञासु होता है
 - (b) सृजनशील बालक साहसी नहीं होता है
 - (c) सृजनशील बालक बहिर्मुखी होता है
 - (d) सृजनशील बालक महत्वाकांक्षी होता है
15. प्रतिभाशाली शिक्षार्थी है।
- (a) अभिसारी चिंतक
 - (b) अपसारी चिंतक
 - (c) बहिर्मुखी
 - (d) बहुत परिश्रमी
16. निम्न में से कौन-सा बुद्धिमान बच्चे का लक्षण नहीं है?
- (a) वह जो लम्बे निबन्धों को बहुत जल्दी रटने की क्षमता रखता है
 - (b) वह जो प्रभावपूर्ण एवं उचित तरीके से सम्प्रेषण करने की क्षमता रखता है
 - (c) वह जो अमूर्त रूप से सोचता रहता है
 - (d) वह जो परिवेश में स्वयं को समायोजित कर सकता है
17. प्रतिभाशाली बच्चों के संदर्भ में संवर्द्धन का अर्थ है
- (a) आकलन की प्रक्रिया का संवर्द्धन करना
 - (b) शैक्षणिक गतिविधियों के संपादन में संवर्द्धन करना
 - (c) सह-शैक्षणिक गतिविधियों के संपादन की गति को बढ़ाना
 - (d) ऐसे विद्यार्थियों को वर्तमान स्तर/ग्रेड को छोड़कर अपने उच्च स्तर/ग्रेड में प्रोन्नत करना
18. प्रतिभाशाली बच्चे
- (a) मानव के लिए महत्वपूर्ण किसी भी क्षेत्र में अस्वभावतः अच्छा निष्पादन करते हैं
 - (b) सामान्यतः शारीरिक रूप से कमजोर होते हैं और सामाजिक अंतः क्रिया में अच्छे नहीं होते
 - (c) सामान्यतः अपने शिक्षकों को पसंद नहीं करते
 - (d) बिना किसी सहायता के अपने सामर्थ्य का पूर्ण विकास करते हैं
19. “प्रतिभाशाली बालक वह है, जो अपने उत्पादन की मात्रा, दर तथा गुणवत्ता में विशिष्ट होता है।” यह कथन दिया गया है—
- (a) टर्मन एवं ओडन द्वारा
 - (b) कैरल एवं मार्टिन्स द्वारा
 - (c) आर डब्ल्यू टेलर द्वारा
 - (d) इनमें से कोई नहीं

20. प्रतिभाशाली बालकों में निम्न विशेषता होती है?
 (a) अधिक महत्वाकांक्षा (b) बुद्धिलब्धि 130 से अधिक
 (c) विस्तृत शब्दकोष (d) उपरोक्त सभी
21. प्रतिभाशाली शिक्षार्थियों के लिए
 (a) अभिक्षमता को कौशल के रूप में समझना सही है
 (b) प्रगति के निरीक्षण करने की आवश्यकता नहीं है
 (c) शिक्षक को अनुकूलन करना चाहिए जिससे शिक्षार्थी में बदलाव आता है
 (d) शिक्षक को पहल करनी चाहिए और समस्या-समाधान में मुख्य भूमिका निभानी चाहिए
22. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रदत्तकार्य प्रतिभाशाली विद्यार्थी के लिए उपयुक्त है?
 (a) विभिन्न विषयों (themes) को ध्यान में रखते हुए विज्ञान की एक नई आदर्शात्मक पुस्तक का निर्माण करना।
 (b) सम्पूर्ण कक्षा की अपेक्षा उसे अपनी पाठ्य-पुस्तक को शीघ्र समाप्त करने देना।
 (c) अन्य विद्यार्थियों की तुलना में समान प्रकार के परन्तु अपेक्षाकृत अधिक अभ्यास
 (d) उसे अपने समयव्यस्ती साथियों को अनुशिक्षण देने के लिए कहना ताकि उसकी शक्तियों को दिशा मिल सके तथा वह व्यस्त रह सके।
23. निम्नलिखित में से प्रतिभाशाली अधिगमकर्ताओं के लिए क्या समुचित है?
 (a) वे अन्यो को भी कुशल-प्रभावी बनाते हैं तथा सहयोगी अधिगम के लिए आवश्यक है
 (b) वे सदैव अन्यो का नेतृत्व करते हैं और कक्षा में अतिरिक्त उत्तरदायित्व ग्रहण करते हैं
 (c) अपनी उच्चस्तरीय संवेदनात्मकता के कारण वे भी निम्न श्रेणी पा सकते हैं
 (d) बुनियादी तौर पर उनकी मस्तिष्कीय शक्ति के कारण ही उनका महत्त्व है
24. प्रतिभाशाली विद्यार्थी
 (a) स्वभाव के अन्तर्मुखी होते हैं
 (b) अपनी आवश्यकताओं को दृढ़तापूर्वक नहीं कह पाते
 (c) अपने निर्णयों में आत्मनिर्भर होते हैं
 (d) शिक्षकों से स्वतंत्र होते हैं
25. प्रतिभाशाली शिक्षार्थियों को से जुड़े प्रश्नों पर अधिक समय देने के लिए कहा जा सकता है।
 (a) समझ (b) सृजन
 (c) विश्लेषण (d) स्मरण
26. निम्नलिखित में से कौन-सा तरीका अध्यापिका के द्वारा एक सृजनात्मक बच्चे की पहचान करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होगा?
 (a) यह अवलोकन करना कि बच्ची समूह कार्यों में साथियों के साथ किस प्रकार से प्रतिक्रिया करती है
 (b) मानकीकृत बुद्धि परीक्षणों को देना
 (c) वस्तुनिष्ठ प्रकार के परीक्षणों को देना
 (d) बच्चे को विस्तृत रूप से अवलोकन करना, विशेष रूप से उस समय जब वह समस्याओं को हल करती है
27. अध्यापक के दृष्टिकोण से प्रतिभाशीलता किसका संयोजन है?
 (a) उच्च योग्यता-उच्च सृजनात्मकता-उच्च वचनबद्धता
 (b) उच्च प्रेरणा-उच्च वचनबद्धता-उच्च क्षमता
 (c) उच्च योग्यता-उच्च क्षमता-उच्च वचनबद्धता
 (d) उच्च क्षमता-उच्च सृजनात्मकता-उच्च स्मरणशक्ति
28. 'प्रतिभाशाली होने' का संकेत निम्न में से क्या नहीं है?
 (a) विचारों में सृजनात्मकता (b) दूसरों के साथ लड़ना
 (c) अभिव्यक्ति में अनूठापन (d) कौतूहल
29. निम्नलिखित में से किस समूह के बच्चों को समायोजन की समस्या होती है?
 (a) औसत बुद्धि के बच्चे (b) ग्रामीण बच्चे
 (c) अध्ययनशील बच्चे (d) कुशाग्र बुद्धि के बच्चे
30. इनमें से कौन-सी विशेषता प्रतिभाशाली बच्चों की नहीं है?
 (a) उच्च आत्म क्षमता
 (b) निम्न औसतीय मानसिक प्रक्रियाएँ
 (c) अन्तर्दृष्टिपूर्वक समस्याओं का समाधान करना
 (d) उच्चतर श्रेणी की मानसिक प्रक्रियाएँ
31. 140 से अधिक बुद्धिलब्धि (IQ) वाले बच्चों को किस श्रेणी में रखेंगे?
 (a) मूर्ख (b) मन्दबुद्धि
 (c) सामान्य बुद्धि (d) प्रतिभाशाली
32. सृजनात्मक शिक्षार्थी वह है जो –
 (a) परीक्षा में हर बार अच्छे अंक प्राप्त करने के योग्य हैं
 (b) पार्श्व (लेट्रल) चिंतन और समस्या-समाधान में अच्छा है
 (c) ड्राइंग और पेंटिंग में बहुत विलक्षण है
 (d) बहुत बुद्धिमान है
33. एक शिक्षिका अपनी कक्षा को प्रतिभाशाली बच्चों की योग्यताओं (potential) की उपलब्धि चाहती है। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसे निम्नलिखित में से क्या नहीं करना चाहिए?
 (a) विशेष ध्यान के लिए उन्हें समकक्षियों से अलग करना

- (b) उनकी सृजनात्मकता को समृद्ध करने के लिए उन्हें चुनौती देना
- (c) गैर-शैक्षणिक गतिविधियों में आनंद लेना सिखाना
- (d) तनाव को नियंत्रित करना सिखाना
34. ---- 'प्रतिभाशाली' होने का संकेत नहीं है।
- (a) दूसरों के साथ झगड़ना
- (b) अभिव्यक्ति में नवीनता
- (c) जिज्ञासा
- (d) सृजनात्मक विचार
35. प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी गतिविधि सर्वाधिक उपयुक्त है?
- (a) अभी हाल ही में हुए मैच का प्रतिवेदन लिखना
- (b) दी गई संकल्पनाओं के आधार पर मौलिक नाटक लिखना
- (c) पाँच पाठों के अंत में दिए गए अभ्यासों को एक बार में हल करना
- (d) शिक्षक दिवस पर कक्षा को पढ़ाना
36. ----- के कारण प्रतिभाशालिता होती है।
- (a) मनो-सामाजिक कारकों
- (b) आनुवंशिक रचना
- (c) वातावरणीय अभिप्रेरणा
- (d) (b) और (c) का संयोजन
37. प्रतिभाशाली शिक्षार्थी (को)
- (a) अधिगम-निर्योग्य नहीं हो सकते।
- (b) ऐसे सहयोग की आवश्यकता होती है जो सामान्यतः विद्यालयों द्वारा उपलब्ध नहीं कराए जाते।
- (c) शिक्षक के बिना अपने अध्ययन को व्यवस्थित कर लेते हैं।
- (d) अन्य शिक्षार्थियों के लिए अच्छे मॉडल बन सकते हैं।
38. रेनजुली प्रतिभाशाली की अपनी परिभाषा के लिए जाने जाते हैं।
- (a) चार-पंक्तिय (टीयर) (b) चार-स्तरीय
- (c) त्रि-वृत्तीय (d) त्रि-मुखी
39. समस्यात्मक बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु आप क्या प्रयास करेंगे?
- (a) बालक के वातावरण और दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने का प्रयास करेंगे।
- (b) बालक को दंड देकर सुधारने का प्रयास करेंगे।
- (c) उस पर ध्यान नहीं देंगे।
- (d) उसको कक्षा में आगे की पंक्ति में स्थान देंगे।
40. अधिगम निर्योग्यताओं वाले बालकों में प्रक्रमण सम्बन्धी निम्न में से किस प्रकार की कमी पायी जाती है?
- (a) संख्याओं सम्बन्धी सूचनाओं को याद करने में, समय एवं दिशा की कम समझ
- (b) प्रायः अत्यधिक सक्रिय व्यवहार
- (c) मांसपेशियों पर कम नियन्त्रण
- (d) कम मानसिक सक्रियता।
41. यदि एक बच्चा 16 को 61 लिखता है तथा 6 और d के मध्य अन्तर नहीं कर पाता हो, तो यह है
- (a) दृष्टि-दोष (b) सीखने में अक्षम
- (c) मानसिक दोष (d) मानसिक क्षय
42. निम्नलिखित में से कौन-सा संकेत बच्चों में दृष्टि बाधिता की समस्या सूचित नहीं करता?
- (a) दिशा-निर्देश के अनुसरण में समस्या
- (b) उदासी
- (c) ठोकर लगने का भय
- (d) दूरी मापने में असमर्थता
43. वाक् बाधित बच्चों का विकास किया जा सकता है उनको
- (a) कक्षा में अपने विचार को प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित करके
- (b) सही ध्वनि के उच्चारण के लिए सहायता करके
- (c) उनके द्वारा कथित गलतियों को सुनने में सहायता करके
- (d) मूल्यांकन के लिए विशेषज्ञ के पास भेजकर
44. मन्द अधिगमकर्ता जिनकी शैक्षिक उपलब्धि सामान्य योग्यता से कम रह जाती है कहे जाते हैं
- (a) पिछड़े (b) विशेष
- (c) बाल अपराधी (d) मानसिक रूप से कमजोर
45. एक मन्द गति से सीखने वाले बालक को जरूरत होती है
- (a) अतिरिक्त सहायता की (b) विशेष सहायता की
- (c) किसी सहायता की नहीं (d) कुछ सहायता की
46. आपकी कक्षा के एक विद्यार्थी में झूठ बोलने की आदत है। आप उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे?
- (a) झूठ न बोलने के लिए कहेंगे
- (b) उसे सजा देंगे
- (c) उसकी उपेक्षा करेंगे
- (d) उसे विश्वास में लेंगे एवं परामर्श देंगे
47. डिस्ग्राफिया मुख्यतः किस कठिनाई से जुड़ा है?
- (a) पठन की (b) लिखने की
- (c) चित्रकला करने की (d) सुनने की
48. एक व्यक्ति वैधानिक रूप से दृष्टि-बाधित है, यदि उसका विजन क्षेत्र 20 डिग्री है, जबकि उसकी विजुअल एक्ज्यूडटी -
- (a) अत्यधिक उपयुक्त सुधार के साथ, ठीक आँख में 6/6 से कम है

- (b) अत्यधिक उपयुक्त सुधार के साथ, ठीक आँख में 6/7 से कम है
- (c) अत्यधिक उपयुक्त सुधार के साथ, ठीक आँख में 6/30 से कम है
- (d) अत्यधिक उपयुक्त सुधार के साथ, ठीक आँख में 6/60 से कम है
49. सामाजिक नियमों व कानूनों के विरुद्ध व्यवहार करने वाला बालक कहलाता है-
- (a) पिछड़ा बालक (b) मंदबुद्धि बालक
- (c) जड़बुद्धि बालक (d) बाल अपराधी
50. आंशिक दृष्टि दोष युक्त बालक का कक्षा व्यवहार कैसा होता है?
- (a) वह पुस्तक को आँखों के निकट लाकर पढ़ता है
- (b) वह शिक्षक से अक्षर स्पष्ट न दिखने की शिकायत करता है
- (c) श्यामपट्ट पर लिखे हुए को नोट बुक में नहीं उतार पाता है
- (d) उपरोक्त सभी
51. कम गति से सीखने वाले बच्चों की मुख्य विशेषता होती है
- (a) उनमें किसी-न-किसी प्रकार की अक्षमता होती है जो उसके ज्ञानार्जन व शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है
- (b) उनमें कक्षा में समायोजन में कोई कठिनाई उत्पन्न नहीं होती
- (c) उन्हें केवल गणित में कठिनाई होती है
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं
52. निम्न में से कौन-सी अक्षमता केवल जन्मजात होती है?
- (a) दृष्टि दोष (b) श्रवण दोष
- (c) मूक-बधिर (d) मन्द बुद्धि
53. समस्या बालक है-
- (a) चोरी करने वाला
- (b) झूठ बोलने वाला
- (c) माता-पिता का कहना न मानने वाला
- (d) इनमें से सभी।
54. हस्तशिल्प की शिक्षा दी जानी चाहिए
- (a) सामान्य बालक को (b) पिछड़े बालक को
- (c) मंद बुद्धि बालक को (d) प्रखर बुद्धि बालक को।
55. ब्रेल लिपि का प्रयोग निम्न में से किनके लिए किया जाता है?
- (a) शारीरिक निःशक्त (b) दृष्टिबाधित
- (c) वाचनबाधित (d) इनमें से कोई नहीं।
56. छात्रों में चोरी करने की आदत को कैसे दूर किया जा सकता है?
- (a) बालकों को पारितोषिक देकर (b) उदाहरण देकर
- (c) ताड़ना देकर (d) सजा देकर।
57. दुबले-पतले एवं क्षीण शरीर तथा कमजोर हृदय वाले बच्चों को कहा जाता है
- (a) समस्यात्मक बालक (b) अपंग बालक
- (c) पिछड़ा बालक (d) नाजुक बालक।
58. चिह्न भाषा एवं श्रवण-दृश्य विधियों का प्रयोग किन बालकों की शिक्षा के लिए उपयोगी है?
- (a) प्रतिभाशाली (b) मन्दित श्रवण वाले
- (c) पिछड़ा बालक (d) समस्यात्मक बालक
59. श्रवणबाधित बच्चों को पढ़ाने के लिए क्या प्रयुक्त की जाती है?
- (a) ब्रेललिपि (b) सांकेतिक भाषा
- (c) यंत्र (d) उपरोक्त सभी
60. निम्न में से कौन-सी मानसिक मन्दता की विशेषता नहीं है?
- (a) बुद्धि लब्धि का 25 से 70 के मध्य होना
- (b) धीमी गति से सीखना एवं दैनिक जीवन की क्रियाओं को न कर पाना
- (c) वातावरण के साथ अनुकूलन में कठिनाई
- (d) अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों का कमजोर होना।
61. अधिगम निर्योग्य का लक्षण है
- (a) भागने की प्रवृत्ति होना।
- (b) अशान्त, ऊर्जावान एवं विध्वंसक होना।
- (c) अवधान सम्बन्धी बाधा/ विकार।
- (d) अभिप्रेरणा का अभाव।
62. निम्न में से कौन-सी पिछड़े हुये बालकों की विशेषता नहीं है?
- (a) अपनी प्रकृति प्रदत्त योग्यताओं से कम स्तर की शैक्षिक उपलब्धि का प्रदर्शन करते हैं
- (b) सामान्य विद्यालयी कार्य के साथ वे गति नहीं रख पाते।
- (c) अपनी आयु के बालकों से काफी पिछड़े जाते हैं।
- (d) कम बुद्धि रखते हैं।
63. इनमें किस से घटक के प्रभाव से शैक्षिक पिछड़ापन नहीं उत्पन्न होगा?
- (a) परिवार की खराब सामाजिक-आर्थिक स्तर
- (b) स्कूल (विद्यालय) की सोचनीय शैक्षिक माहौल
- (c) परिवार का पेशा
- (d) परिवार की सोचनीय भावनात्मक वातावरण
64. समान आयु वर्ग से सम्बद्ध अन्य सहपाठियों से जब किसी छात्र की तुलना की जाती है तो उसमें एक स्पष्ट शैक्षिक कमी (त्रुटि) दृष्टिगोचर होती है। ऐसे बच्चे को कहते हैं?
- (a) प्रतिभाशाली बालक (b) पिछड़ा बालक
- (c) अपवादी बालक (d) इनमें कोई नहीं

65. पिछड़े बालक ऐसे बच्चे हैं
 (a) सीखने की गति धीमी हो
 (b) बुद्धि लब्धि स्तर 80-90
 (c) मानसिक रूप से अस्वस्थ और असमायोजित व्यवहार
 (d) उपरोक्त सभी
66. यदि आपकी कक्षा का बच्चा 'C' को 'D' तथा 'D' को 'C' लिखे/ पढ़े, तो वह कौन-से रोग से पीड़ित है?
 (a) मलेरिया (b) डिसलेक्सिया
 (c) फाइलेरिया (d) टायफाइड
67. निम्न में से कौन-सा विशिष्ट अधिगम विकलांगता का उदाहरण है?
 (a) मानसिक मन्दता
 (b) डिसलेक्सिया
 (c) एटेंशन डेफिसिट हाइपर डिसऑर्डर
 (d) आटिस्म
68. जो बालक स्कूल के जीवन के मध्य में अपनी आयु स्तर की कक्षा से एक नीचे की कक्षा का कार्य करने में असमर्थ हो, वह है-
 (a) पिछड़ा बालक
 (b) मानसिक रूप से मन्द बालक
 (c) समस्यात्मक बालक
 (d) मादक द्रव्य का सेवन करने वाला बालक
69. निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
 (a) अक्षम व्यक्तियों के प्रति विपरीत विचार एवं भावना बच्चा बड़ों से सीखता है
 (b) विशेष आवश्यकता वाले बच्चे दूसरे क्षेत्रों में कार्य करने में अक्षम होते हैं
 (c) शारीरिक अक्षमता वाला बच्चा मानसिक अक्षमता नहीं रखता
 (d) a एवं b दोनों
70. आशा 14 वर्ष की आयु में वह सब कार्य करती है जो अधिकतर 6-7 वर्ष के बच्चे करते हैं आशा की यह अवस्था का कारण है-
 (a) मानसिक अक्षमता (b) अपंगता
 (c) आनुवंशिकता (d) कुपोषण
71. एक बालक जो शारीरिक दोषों से ग्रस्त है उसमें उत्पन्न होती है-
 (a) संवेगात्मक स्थिरता (b) अच्छी आदतें
 (c) मिथ्याभिमान (d) हीनता की भावना
72. सुनने में असमर्थ बच्चा-
 (a) केवल अकादमिक शिक्षा से लाभ नहीं उठा पाएगा, उसे उसके स्थान पर व्यावसायिक शिक्षा दी जानी चाहिए।
 (b) नियमित विद्यालय में बहुत अच्छा कर सकता है यदि उसे उपयुक्त सुविधा और साधन उपलब्ध कराए जाएं।
 (c) नियमित विद्यालय में अपने सहपाठियों के समान सभी प्रदर्शन नहीं कर सकेगा।
 (d) श्रवण असमर्थता वाले बच्चों के विद्यालय में ही भेजा जाना चाहिए, नियमित विद्यालय में नहीं।
73. एक बच्चा जो से ग्रस्त है, वह 'saw' और 'was' और nuclear और 'unclear' में अन्तर नहीं कर सकता।
 (a) शब्द 'जम्बलिंग' विकार (b) डिस्लेक्सिमिया
 (c) डिस्मोर्फिमिया (d) डिस्लेक्सिया
74. शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों को सामान्यतः होते हैं।
 (a) डिस्कलकुलिया (b) डिस्लेक्सिया
 (c) डिस्ग्राफिया (d) डिस्थिमिया
75. श्रवण हास से ग्रसित बच्चे कक्षा में किस से सबसे मुख्य नैराश्य (कुण्ठा) का सामना करते हैं?
 (a) दूसरों के साथ सम्प्रेषण करने तथा सूचनाओं को बांटने में अक्षमता
 (b) दूसरे विद्यार्थियों के साथ परीक्षा देने में अक्षमता
 (c) प्रस्तावित पाठ्य-पुस्तक को पढ़ने की अक्षमता
 (d) खेल-कूद में भागीदारिता निभाने में अक्षमता
76. सामान्य विद्यार्थियों के साथ यदि आपको एक नेत्र बाधित विद्यार्थी को पढ़ने का अवसर प्राप्त हो, तब आप उससे कक्षा में किस प्रकार का व्यवहार करना चाहेंगे?
 (a) उस पर अतिरिक्त ध्यान नहीं देंगे, क्योंकि इससे अधिकांश की पढ़ाई में बाधा पहुँचती है।
 (b) कक्षा में उसके साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करेंगे
 (c) आप सोचेंगे कि अंधापन उसकी नियति ही थी और कुछ नहीं कर सकते।
 (d) आगे वाली पंक्ति में उसके बैठने की व्यवस्था करेंगे और उसकी सुविधा के अनुसार गति से उसको पढ़ाएंगे।
77. कक्षा में पाँच शारीरिक विकलांग बच्चे हैं। खेल के कालांश में उन्हें-
 (a) एक कोने में बैठाना चाहिए ताकि वे खेल का आनंद ले सकें।
 (b) अन्य बच्चों के साथ उचित खेलों में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
 (c) केवल आंतरिक खेलों में हिस्सा लेने की अनुमति देनी चाहिए।

- (d) कक्षा के सभी विद्यार्थियों के साथ खेलने के लिए जोर डालना चाहिए।
78. किस प्रकार के बच्चों की शिक्षा हेतु सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया जाता है?
- (a) दृष्टि दोष युक्त बच्चे (b) मूक-बधिर
(c) मन्द बुद्धि (d) इनमें से कोई नहीं
79. दृष्टि दोष से युक्त बच्चों को आकृतियों का ज्ञान देना चाहिए—
- (a) मौखिक व्याख्यान द्वारा
(b) त्रि-आयामी आकृतियों के स्पर्श के द्वारा
(c) क्षेत्र भ्रमण द्वारा
(d) इनमें से कोई नहीं
80. अपराधी बालक कौन होते हैं?
- (a) जो असामाजिक कार्य करते हैं
(b) जो शिक्षक के लिए सिरदर्द होते हैं
(c) जो कक्षा में अव्वल आते हैं
(d) जो समाज में रहना पसंद नहीं करते हैं
81. अधिगम—निर्योग्यता वाले बच्चे
- (a) कुछ भी नहीं सीख सकते
(b) अधिगम के कुछ पक्षों से संघर्ष करते हैं
(c) बहुत सक्रिय होते हैं, लेकिन उनकी बुद्धि लब्धि कम होती है
(d) बहुत बुद्धिमान तथा परिपक्व होते हैं
82. एक बच्चा जो आंशिक रूप से देख सकता है
- (a) बिना किसी विशेष प्रावधान के उसे 'नियमित' विद्यालय में डालना चाहिए
(b) उसे शिक्षा नहीं देनी चाहिए, क्योंकि वह उसके किसी काम नहीं आएगी
(c) उसे अलग संस्थान में डालने की आवश्यकता है
(d) विशेष प्रावधान करते हुए उसे 'नियमित' विद्यालय में रखना चाहिए।
83. अधिगम अशक्तता वाले
- (a) बच्चों को एकसमान दिखाई देने वाले अक्षरों और वर्णों में भ्रम होता है
(b) बच्चे दृश्य शब्दों (साइट वर्ड्स) को आसानी से पहचानते और समझते हैं
(c) बच्चों का मानसिक विकास मन्द होता है
(d) बच्चे निम्न बुद्धिलब्धि वाले होते हैं
84. अधिगम निर्योग्यता वाले शिक्षार्थियों द्वारा एक पूर्ण और उत्पादक जीवन जीने के अवसरों को बढ़ाने का सबसे सही तरीका है
- (a) इस तरह के शिक्षार्थियों की कमजोरियों पर ध्यान केन्द्रित करना
(b) इस तरह के शिक्षार्थियों से उच्च अपेक्षाओं को बनाए रखना
(c) विविध कौशलों और युक्तियों का शिक्षण करना जिसे सभी सन्दर्भों में लागू किया जा सकता है
(d) इन बच्चों को अपने लक्ष्यों का निर्धारण करने के लिए प्रोत्साहित करना
85. अधिगम—अक्षमताएं
- (a) सामान्य या अधिक बुद्धि-लब्धांक वाले बच्चों में भी पाई जाती है।
(b) समय व हस्तक्षेप के स्वरूप की उपेक्षा करते हुए भी अपरिवर्तनशील नहीं होती है
(c) वस्तुपरक तथ्य है तथा संस्कृति की इनमें कोई भूमिका नहीं है
(d) पठन-अक्षमता के पर्याय हैं
86. मंदबुद्धि बालकों को शिक्षित करने के लिए प्रथम विद्यालय किसने स्थापित किया?
- (a) टरमैन (b) सेग्विन
(c) गार्डनर (d) बिने
87. एक औसत बुद्धि वाला बच्चा यदि भाषा को पढ़ने एवं समझने में कठिनाई प्रदर्शित करता है, तो यह संकेत देता है कि बच्चा..... का लक्षण प्रदर्शित कर रहा है।
- (a) लेखन-अक्षमता (डिस्प्रेफिया)
(b) गणितीय-अक्षमता (डिस्कैल्कुलिया)
(c) गतिसमन्वय-अक्षमता (डिस्प्रेक्सिया)
(d) पठन-अक्षमता (डिस्लेक्सिया)
88. इनमें से कौन-सी अशक्तता वाले बच्चे की एक विशेषता है?
- (a) 50 से नीचे की बुद्धिलब्धि
(b) धाराप्रवाह रूप से पढ़ने तथा शब्दों पर पलटकर जाने में कठिनाई
(c) अन्य बच्चों को धमकाना तथा आक्रामक कार्यों में लगे रहना
(d) एक ही प्रकार की गत्यात्मक क्रिया को बार-बार दोहराना
89. एक बच्चे को कॉपी में लिखने में विपरीत छवियाँ, दर्पण छवि आदि जैसी गलतियाँ मिलती हैं। इस प्रकार का बच्चा लक्षण प्रदर्शित कर रहा है
- (a) अधिगम में असुविधा के
(b) अधिगम में अशक्तता के
(c) अधिगम में कठिनाई के
(d) अधिगम में समस्या के

90. यदि आपकी कक्षा में कोई बच्चा अधिगम अक्षम हो, तो आप क्या करेंगे?
- उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देंगे
 - उसकी अक्षमता किस प्रकार है यह जानकार उसको सिखाने का प्रयास करेंगे
 - उसकी अतिरिक्त कक्षा लेंगे
 - उसकी बैठक व्यवस्था कक्षा के बुद्धिमान बच्चों के साथ करेंगे
91. 'राष्ट्रीय दृष्टि बाधितार्थ संस्थान' (NIVH) स्थित है—
- शिमला में
 - कोलकाता में
 - देहरादून में
 - दिल्ली में
92. गतिक कौशलों में अधिगम निर्योग्यता कहलाती है।
- डिस्फ्रेजिया
 - डिस्प्रेक्सिया
 - डिस्कैलकुलिया
 - डिस्टेक्सिया
93. अधिगम निर्योग्यता
- समुचित निवेश के साथ सुधार योग्य नहीं होता
 - एक स्थिर अवस्था है
 - एक चर अवस्था है
 - जरूरी नहीं कि कार्य-पद्धति की हानि करें
94. निम्नलिखित में से किस पद्धति का उपयोग करते हुए हकलाने (stuttering) की समस्या से निबटा जा सकता है?
- अनुश्रुत वाक् (Dictated speech)
 - प्रवर्द्धित वाक् (Prolonged speech)
 - परिणामकारी वाक् (Pragmatic speech)
 - लम्बित वाक् (Protracted speech)
95. निम्नलिखित में से कौन-सा विकासात्मक विकार का उदाहरण नहीं है?
- आत्मविमोह (Autism)
 - प्रमस्तिष्क घात (Cerebral palsy)
 - पर-अभिघातज तनाव (Post-traumatic)
 - न्यून अवधान सक्रिय विकास (Attention deficit hyperactivity disorder)
96. अधिगम-निर्योग्यता वाले बच्चों की प्रगति का निरीक्षण करने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी पद्धति सबसे उपयुक्त है?
- व्यक्ति (केस) अध्ययन
 - घटनावृत्त अभिलेख (वास्तविक रिकार्ड)
 - व्यवहार-रेटिंग स्केल
 - संरचित व्यवहारपरक अवलोकन
97. एकाग्रता-समय के साथ मेल बैठाने के लिए एक दत्त कार्य को पूरा करने के लिए आवंटित समय को घटाना और चरणबद्ध तरीके से इस एकाग्रता-समय को बढ़ाना निम्नलिखित में से किस प्रकार के विकार से निपटने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?
- अशांतकारी व्यवहार सम्बन्धी विकार
 - डिस्फेंसिया
 - संवेदी एकीकरण विकार
 - एकाग्रता-हास अतिक्रियाशील विकार
98. शब्दों में अक्षरों के क्रम को पढ़ने में कठिनाई का अनुभव करना और अक्सर चाक्षुष स्मृति का हास.....से सम्बन्धित है।
- डिस्केल्कुलिया
 - डिस्प्रैफिया
 - डिस्प्रैक्सिया
 - डिस्टेक्सिया
99. माध्यमिक विद्यालय की कक्षा में शिक्षिका के पास एक 'बधिर' बच्चा है। उसके लिए यह महत्वपूर्ण है कि
- वह बच्चे को उस स्थान पर बैठाए जहाँ से यह शिक्षिका के होंठ तथा चेहरे के भाव साफ तौर पर देख सके
 - विद्यालय सलाहकार (काउंसलर) से कहे कि वे बच्चे के अभिभावकों से बात करे तथा उन्हें अपने बच्चे को विद्यालय से हटाने के लिए कहे
 - उसके प्रति संकेत करे जिसे वह बच्चा बार-बार भी नहीं कर पा रहा
 - बच्चे को डॉट-फटकार कर उसे अलग स्थान पर बैठाए ताकि वह बधिर केन्द्र में प्रवेश ले ले
100. निम्नलिखित में से कौन-सा व्यवहार बच्चे की अधिगम-निर्योग्यता की पहचान करता है।
- मनोभाव का जल्दी-जल्दी बदलना (मूड स्विंग्स)
 - अपमानजनक व्यवहार
 - शब्दों को सही तरह से न समझ पाना तथा शब्दों को सही तरह से न लिख पाना
 - a और b
101. कोई शिक्षिका अपनी कक्षा में फर्नीचर की तीखी धार वाले किनारों को रुई से ढँका रखने को कहती है और 'छुओ तथा अनुभव करो' वाले सूचना-पट्टों का उपयोग करने को कहती है। वह किस वर्ग के विशेष शिक्षार्थियों की आवश्यकता पूर्ति करने का प्रयास कर रही है?
- सामाजिक रूप से वंचित शिक्षार्थी
 - दृष्टि विकलांग शिक्षार्थी
 - श्रवण विकलांग शिक्षार्थी
 - सीख न सकने वाले शिक्षार्थी

102. आप एक अतिसक्रिय बालक को कैसे सही दिशा में लाएँगे?
- उसे पहली पंक्ति में बिठाएँगे तथा उस पर कड़ी नजर रखेंगे
 - उसे कक्षा में कोने में बैठने की जगह निर्धारित करेंगे
 - उसे श्यामपट्ट आदि साफ करने का काम देंगे
 - उपरोक्त में से कोई नहीं
103. कक्षा पाँच के न्यून दृष्टि वाले बच्चे को
- निम्न स्तर के कार्य के लिए माफ करना उचित है
 - उसके दैनिक कार्य में उसके माता-पिता तथा मित्रों को सहायता करनी चाहिए
 - कक्षा में सामान्य रूप से बर्ताव करना चाहिए एवं ऑडियो सीडी के जरिए सहायता प्रदान करनी चाहिए
 - कक्षा में विशेष बर्ताव करना चाहिए
104. डिसलेक्सिया सम्बन्धित है—
- मानसिक विकार से
 - गणितीय विकार से
 - पठन विकार से
 - व्यावहारिक विकार से
105. विकृत लिखावट से सम्बन्धित लिखने की योग्यता में कमी किसका एक लक्षण है?
- डिस्ट्रैफिया
 - डिस्प्रेक्सिया
 - डिस्कैल्कुलिया
 - डिस्लेक्सिया
106. शिक्षा-शास्त्र का वह प्रकार जिसमें विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता होती है
- विशेष लोगों को दी जाती है
 - विकलांग व्यक्तियों को दी जाती है
 - बुद्धिमान व्यक्तियों को दी जाती है
 - स्थानीय मुखिया द्वारा संस्थापित होती है
107. वर्तनी, वाचन एवं गणना में कठिनाई, सामान्य बुद्धि एवं अच्छी अनुकूलनात्मक योग्यता विशेषता है
- धीमी गति से सीखने वालों की
 - सामान्य/औसत अधिगमकर्ता की
 - मानसिक रूप से पिछड़े बालकों की
 - अधिगम निर्योग्य बालकों की।
108. मानसिक रूप से पिछड़े बालकों के लिये निम्न में से कौन-सी व्यूह रचना कार्य करेगी?
- कार्यों को मूर्त रूप से समझाना
 - विद्यार्थियों को लक्ष्य निर्धारित करने के लिये प्रोत्साहित करना
 - स्व-अध्ययन के अवसर प्रदान करना
 - सहायता के लिये बाहर से संसाधनों को प्राप्त करना।
109. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 41 व 46 किसके कल्याण से सम्बन्धित हैं?
- आर्थिक रूप से पिछड़े व्यक्तियों से
 - विकलांग व्यक्तियों से
 - धार्मिक रूप से पिछड़े व्यक्तियों से
 - क्षेत्रीय रूप से पिछड़े व्यक्तियों से
110. विशिष्ट बालकों के अन्तर्गत निम्न में से कौन-सा बालक आता है?
- पिछड़ा बालक
 - प्रतिभाशाली बालक
 - मन्द बुद्धि बालक
 - ये सभी
111. यदि कोई छात्र असामाजिक व्यवहार का प्रदर्शन करता हो, तो शिक्षक को क्या करना चाहिए?
- छात्र को शारीरिक दण्ड देना चाहिए
 - उसके व्यवहार का कारण जानना चाहिए
 - उसे उपदेश देना चाहिए
 - उसे कक्षा से बाहर निकाल देना चाहिए
112. बालक में अपराधी प्रवृत्ति के विकसित होने के मुख्य कारण है—
- पारिवार का वातावरण
 - अनुशासनहीनता
 - आर्थिक अभाव
 - दोषपूर्ण पाठ्यक्रम
113. सिरिल बर्ट के अनुसार पिछड़े बालकों की बुद्धिलब्धि होती है?
- 120 से अधिक
 - 85 से कम
 - 120 से कम
 - उपरोक्त में से कोई
114. शैक्षिक समस्याओं से ग्रस्त बालकों को किस समस्या का सामना करना पड़ता है?
- कान व उससे जुड़ी नसों का सही प्रकार से काम नहीं करना
 - भाषा के बोलने में असामान्यता का होना
 - मानसिक सक्रियता का कम होना
 - व्यावहारिक एवं सामाजिक बुद्धि में कमी का होना
115. पाँचवीं कक्षा के 'दृष्टिबाधित' विद्यार्थी—
- के माता-पिता और मित्रों द्वारा उसे दैनिक कार्यों को करने में सहायता की जानी चाहिए
 - के साथ कक्षा में सामान्य रूप से व्यवहार किया जान चाहिए और श्रव्य सी.डी. के माध्यम से सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए
 - के साथ कक्षा में विशेष व्यवहार किया जाना चाहिए
 - को निचले स्तर के कार्य करने की छूट मिलनी चाहिए
116. जब एक शिक्षिका दृष्टिबाधित शिक्षार्थी को कक्षा के अन्य शिक्षार्थियों के साथ सामूहिक गतिविधियों में शामिल करती है, तो वह —
- कक्षा के लिए सीखने हेतु बाधाएँ उत्पन्न कर रही है
 - समावेशी शिक्षा की भावना के अनुसार कार्य कर रही है
 - सभी शिक्षार्थियों में दृष्टिबाधित शिक्षार्थी के प्रति सहानुभूति विकसित करने में मदद कर रही है
 - दृष्टिबाधित शिक्षार्थी पर सम्भवतः तनाव बढ़ा रही है

117. सीखने-संबंधी निर्योग्यताएँ सामान्यतः

- (a) औसत से श्रेष्ठ बुद्धि-लब्धि वाले बच्चों में पाई जाती है।
- (b) लड़कियों की तुलना में अधिकतर लड़कों में पाई जाती है
- (c) अधिकतर उन बच्चों में पाई जाती है जो शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों से सम्बन्ध रखते हैं
- (d) उन बच्चों में पाई जाती हैं विशेषतः जिनके पैत्रिक अभिभावक इस प्रकार की समस्याओं से ग्रसित होते हैं

118. निम्नलिखित में से के अतिरिक्त सभी के कारण अधिगम अक्षमता उत्पन्न हो सकती है –

- (a) जन्म से पहले माँ द्वारा मदिरा सेवन
- (b) मंदबुद्धिता
- (c) शैशवकाल के समय दिमागी बुखार
- (d) शिक्षक की शिक्षण-शैली

119. गतिक कौशलों में अधिगम निर्योग्यता---कहलाती है।

- (a) डिस्फ़ेज़िया (b) डिस्प्रेक्सिया
- (c) डिस्केलकुलिया (d) डिस्लेक्सिया

120. पिछड़े बच्चों के लिए शैक्षिक लब्धि की अवधारणा किसने दी है?

- (a) गॉर्डन (b) शोनेल
- (c) बर्टन हॉल (d) सिरिल बर्ट

121. समावेशित विद्यालय योजना के सन्दर्भ में कौन सा कथन गलत है?

- (a) समानता की भावना का विकास
- (b) धनात्मक आत्मसम्मान का विकास
- (c) विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों में आत्म-हीनता की भावना का विकास
- (d) विशेष बालकों के नैतिक आचरण को उठाना

122. निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में एन सी ई आर टी मनोविज्ञान का प्रयोग कर रहा है?

- (a) पाठ्यपुस्तकों का निर्माण
- (b) विद्यालय संगठन
- (c) विषय निर्धारण
- (d) वित्तीय सहायता

123. निम्नलिखित में से कौन-सा विशिष्ट बालकों का प्रकार नहीं माना जाता है?

- (a) धीमी गति से सीखने वाले
- (b) सृजनशील बालक
- (c) शारीरिक रूप से विकलांग
- (d) साधन-सम्पन्न बालक

124. शिक्षा में समावेशन का अर्थ है

- (a) शारीरिक अयोग्य बालकों को शिक्षा प्रदान करना
- (b) मंदबुद्धि बालकों को शिक्षा प्रदान करना

- (c) लड़के, लड़कियों व वयस्को को शिक्षा प्रदान करना
- (d) सभी विद्यार्थियों को शिक्षा की मुख्य धारा प्रणाली में स्वीकारना

125. विशेष शिक्षा सम्बन्धित हैं

- (a) मेधावी छात्र के लिए शिक्षा से
- (b) कम योग्य छात्रों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम से
- (c) शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम से
- (d) पिछड़ी बुद्धि के छात्रों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम से

126. इनमें से कौन-सा अनुच्छेद यह कहता है कि धर्म और भाषा के आधार पर आधारित अल्पसंख्यक अपने अनुसार शिक्षा संस्थानों को स्थापित कर चला सकते हैं?

- (a) अनुच्छेद 29 (1) (b) अनुच्छेद 29 (2)
- (c) अनुच्छेद 30 (1) (d) अनुच्छेद 30 (2)

127. एकीकृत छात्र-केन्द्रित अधिगम के लिए पाठ्यक्रम में निम्नलिखित में से क्या लाभकारी नहीं है?

- (a) छात्र का अभिप्रेरण विकास
- (b) सहकर्मी संचार का विकास
- (c) छात्र-शिक्षक सम्बन्ध का निर्माण
- (d) खोज/सक्रिय अधिगम का ह्रास

128. पठन-पाठन में शिक्षकों को करना चाहिए—

- (a) ज्ञान का मौखिक स्थानान्तरण
- (b) जिज्ञासु प्रवृत्ति का प्रोत्साहन
- (c) कक्षा-कक्ष में पाठ्यपुस्तक द्वारा शिक्षण
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

129. एक समावेशी कक्षा के लिये, शिक्षकों को, किस प्रकार की तैयारी की आवश्यकता नहीं होती है?

- (a) व्यावहारिक व सामाजिक संक्रियाओं की सम्पूर्ण भागीदारी
- (b) समस्यागत क्षेत्रों के बालकों से शीघ्र व सतत सम्पर्क
- (c) निदानात्मक व उपचारात्मक प्रक्रियाओं का अधिकतर प्रयोग
- (d) धैर्यशीलता का कम होना

130. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का बालकों का अधिकार, 2009 के अन्तर्गत, किसी भी अध्यापक को निम्न में से किस कार्य के लिये नहीं लगाया जा सकता?

- (a) दस वर्ष पश्चात होने वाली जनगणना में
- (b) आपदा राहत कार्य में
- (c) चुनाव सम्बन्धी कार्य में
- (d) पल्स पोलियो कार्यक्रम में।

131. कुपोषण के प्रभाव के बारे में निम्न में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है?

- (a) जीवन के बाद के वर्षों में यह मस्तिष्क की कोशिकाओं को प्रभावित करता है।
- (b) यह बालकों की सीखने की योग्यताओं को प्रभावित करता है।
- (c) बालक निराश एवं आशंकित रहते हैं।
- (d) यह कद को प्रभावित करता है।

132. बालकों का मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार 2009 में निम्न में से किस पर ध्यान नहीं दिया गया है?

- (a) अध्यापकों को प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करना
- (b) घुमन्तू बालकों के प्रवेश को सुनिश्चित करना
- (c) एकेडेमिक कैलेंडर को निर्धारित करना
- (d) 14 वर्ष के पश्चात की शिक्षा।

133. निम्न में से कौन-सी विशेषता सामाजिक रूप से वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की नहीं है?

- (a) बालकों को देखभाल के अनुभव उन्हें स्कूल के लिए प्रभावशाली ढंग से तैयार नहीं करते
- (b) नियमित स्वास्थ्य सम्बन्धी देखभाल नहीं मिलती
- (c) व्यापक एवं विविध अनुभवों को प्राप्त करने का मौका नहीं मिलता
- (d) विद्यालय में अच्छा करने के लिये अभिप्रेरित नहीं किया जाता।

134. निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन 'समावेशन' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

- (a) यह एक विश्वास है कि बच्चों को अपनी योग्यताओं के अनुसार अलग किया जाना चाहिए
- (b) यह एक विश्वास है कि कुछ बच्चे कभी कुछ सीख ही नहीं सकते
- (c) यह एक दर्शन है कि सभी बच्चों को नियमित विद्यालय प्रणाली में समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है
- (d) यह एक दर्शन है कि विशेष बच्चे 'ईश्वर के विशेष उपहार' हैं

135. जिस कक्षा-कक्ष में विविध पृष्ठभूमि से विद्यार्थी आते हों, वहां एक प्रभावी शिक्षक—

- (a) समूह में वैयक्तिक भिन्नता को बताने के लिए उनकी सांस्कृतिक जानकारी पर ध्यान देगा।
- (b) वंचित पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम करने के लिए कहेगा ताकि वे अपने साथियों के बराबर पहुँच सकें।
- (c) सांस्कृतिक जानकारी की अनदेखी करेगा और एक सर्वमान्य तरीके से अपने सभी विद्यार्थियों के साथ व्यवहार करेगा।
- (d) समान आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों का समूह बनाएगा और उन्हें एक साथ रखेगा।

136. वर्तमान में निःशक्त बच्चों की शिक्षा के लिए कहा गया है

- (a) समावेशी शिक्षा
- (b) विशेष शिक्षा
- (c) समेकित शिक्षा
- (d) कोई नहीं

137. शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में निर्दिष्ट किया गया है कि कक्षा-1 से कक्षा-5 तक यदि प्रवेश दिये गये विद्यार्थियों की संख्या दो सौ से अधिक है, तो विद्यार्थी-अध्यापक आवश्यक अनुपात होगा

- (a) तीस
- (b) चालीस
- (c) पैंतालीस
- (d) पचास।

138. समायोजन शिक्षा का मुख्य कार्य है—

- (a) विद्यालय न आने वाले बच्चों को विद्यालय में लाना
- (b) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को मुख्य धारा में लाना
- (c) विशेष व सामान्य बच्चों के साथ-साथ पढ़ने की सुविधा देना
- (d) उपरोक्त सभी

139. समावेशी शिक्षा मानती है कि हमेंको..... के अनुरूप बदलना है।

- (a) व्यवस्था/बच्चे
- (b) परिवेश/परिवार
- (c) बच्चे/व्यवस्था
- (d) बच्चे/व्यवस्था

140. सफल समावेशन को निम्नलिखित की आवश्यकता होती है सिवाय

- (a) पृथक्करण
- (b) अभिभावकों की भागीदारी
- (c) क्षमता-सम्बर्द्धन
- (d) संवेदनशील बनाना

141. विद्यालय में नियमित उपस्थिति के लिए वंचित बच्चों को प्रोत्साहित करने का निम्नलिखित में से कौन-सा तरीका सर्वाधिक उपयुक्त होगा?

- (a) बच्चों को विद्यालय आने की अनुमति न देने को कानून दण्डनीय अपराध बनाया जाए
- (b) विद्यालय द्वारा बच्चों को एकत्रित करने वाले एक व्यक्ति को नियुक्त किया जाए जो प्रतिदिन घरों में बच्चों के लेकर आए
- (c) बच्चों को आकर्षित करने के लिए प्रतिदिन 5 रु. देना
- (d) आवासीय विद्यालय खोलना

142. समावेशी शिक्षा

- (a) हाशिए पर स्थित वर्गों से शिक्षकों को सम्मिलित करने से सम्बन्धित है
- (b) कक्षा में विविधताका उत्सव मनाती है
- (c) दाखिले सम्बन्धी कठोर प्रक्रियाओं को बढ़ावा देती है
- (d) तथ्यों की शिक्षा (मतारोपण) से सम्बन्धित है

143. "पिछड़ा बालक वह है, जो अपने पाठशाली जीवन के मध्य (लगभग $10\frac{1}{2}$ वर्ष की आयु में) में अपनी आयु के अनुरूप सामान्य कक्षा से नीचे की कक्षा का कार्य न कर सके।" यह कथन किसका है?

- (a) सिरिल बर्ट
- (b) टर्मन
- (c) टेलर
- (d) मारंटिस

144. निम्नलिखित में से कौन-सी सर्वाधिक प्रभावकारी विधि हो सकती है, जो आपकी इस अपेक्षा को पूरी कर सके कि वंचित विद्यार्थी अपनी भागीदारी द्वारा सफल हो सकें?

- (a) आप उनकी सफलता हेतु उनकी क्षमता में विश्वास को अभिव्यक्त करें

- (b) पढ़ाए जाने वाले विषय में आप अपनी रुचि विकसित कर सकें
- (c) अपने लक्ष्य को महसूस करने के लिए बच्चों की अन्य बच्चों से प्रायः तुलना करते रहना
- (d) इस बात पर बल देना कि आपकी उनसे उच्च अपेक्षाएँ हैं
- 145. एक समावेशी विद्यालय**
- (a) शिक्षार्थियों को नियोग्यता के अनुसार उनकी सीखने की आवश्यकताओं को निर्धारित करता है
- (b) शिक्षार्थियों की क्षमताओं की परवाह किए बिना सभी के अधिगम-परिणामों को सुधारने के लिए प्रतिबद्ध होता है
- (c) शिक्षार्थियों के मध्य अन्तर करता है और विशेष रूप से सक्षम बच्चों के लिए कम चुनौतीपूर्ण उपलब्धि लक्ष्य निर्धारित करता है
- (d) विशेष रूप से योग्य शिक्षार्थियों के अधिगम-परिणामों को सुधारने के लिए विशिष्ट रूप से प्रतिबद्ध होता है
- 146. 'सभी के लिए विद्यालयों में सभी की शिक्षा' निम्नलिखित में से किसके लिए प्रचार वाक्य हो सकता है?**
- (a) संसक्तिशील शिक्षा (b) समावेशी शिक्षा
- (c) सहयोगात्मक शिक्षा (d) पृथक् शिक्षा
- 147. विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों के नियंत्रण की दृष्टि से सरकारी संगठनों द्वारा संस्था के स्तर पर विभिन्न उपाय किए गए हैं। निम्नलिखित में से कौन-सा कारण सांस्थानिक स्तर से जुड़ा है जिसके कारण बच्चे विद्यालय छोड़ देते हैं?**
- (a) बच्चों से भली-भांति व्यवहार करने की आवश्यकता के प्रति अध्यापकों का संवेदनशील न होना।
- (b) जो बच्चे अनिवार्य पाठ्यचर्या को स्वीकार नहीं कर पाते उनके लिए विकल्पात्मक पाठ्यचर्या का न होना।
- (c) विद्यालय में श्यामपट्ट और शौचालय जैसी आधारभूत सेवाओं का अभाव होना।
- (d) अध्यापकों को समुपयुक्त योग्यता वाल न होना तथा उन्हें कम आय देना।
- 148. वंचित शिक्षार्थियों के साथ व्यवहार करने के सन्दर्भ में अध्यापक/अध्यापिका को निम्नलिखित मूल्यों में से किसमें विश्वास व्यक्त करना चाहिए?**
- (a) विद्यार्थी से किसी प्रकार की मांग न होना
- (b) विद्यार्थियों द्वारा स्वीकृति हेतु आघातकता (shocked) व क्रोध का प्रयोग करना।
- (c) छात्रों की सफलता हेतु व्यक्तिगत उत्तरदायित्व
- (d) समुचित व्यवहार की उच्च अपेक्षाएँ
- 149. विद्यालयों में समावेशन मुख्यतः केन्द्रित होता है**
- (a) विशिष्ट श्रेणी वाले बच्चों के लिए सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रावधानों के निर्माण पर
- (b) केवल नियोग्य छात्रों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने पर
- (c) सम्पूर्ण कक्षा की कीमत पर नियोग्य बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने पर
- (d) विद्यालयों में निरक्षर अभिभावकों की शैक्षिक आवश्यकताओं पर
- 150. समावेशी शिक्षा के पीछे मूलाधार यह है कि**
- (a) समाज में विभिन्नता है और विद्यालयों को इस विभिन्नता के प्रति संवेदनशीलता होने के लिए समावेशी होने की आवश्यकता है
- (b) प्रत्येक बच्चे के निष्पादन के लिए मानक एकसमान तथा मानकीकृत होने चाहिए
- (c) हमें विशेष आवश्यकता है और सुविधाओं तक उनकी पहुँच होनी चाहिए
- (d) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए अलग विद्यालयों की व्यवस्था करना लागत प्रभावी नहीं है
- 151. वंचित समूहों के विद्यार्थियों को सामान्य विद्यार्थियों के साथ-साथ पढ़ाना चाहिए। इसका अभिप्राय है**
- (a) समावेशी शिक्षा (b) विशेष शिक्षा
- (c) एकीकृत शिक्षा (d) अपवर्जन शिक्षा
- 152. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों से व्यवहार करने के लिए निम्नलिखित दार्शनिक दृष्टिकोणों में से किसका अनुसरण किया जाना चाहिए?**
- (a) उन्हें किसी प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता ही नहीं होती
- (b) उन्हें समावेशी शिक्षा का और नियमित विद्यालयों में अध्ययन करने का अधिकार प्राप्त है
- (c) उन्हें पृथक् करे उनकी शिक्षा किसी भिन्न शैक्षिक संस्थाओं में होनी चाहिए
- (d) उन्हें केवल व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए
- 153. 'वंचित वर्ग' की पृष्ठभूमि के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षक को चाहिए कि**
- (a) उन्हें बहुत-सा लिखित कार्य दे
- (b) उनके बारे में अधिक जानकारी जुटाने का प्रयास करे और उन्हें कक्षा में होने वाली चर्चा में शामिल करें।
- (c) उन्हें कक्षा में अलग बिठाए
- (d) उन पर ध्यान न दें क्योंकि वे दूसरे शिक्षार्थियों के साथ अंतर्क्रिया नहीं कर सकते।
- 154. शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ना चाहिए—**
- (a) व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों में जो उन्हें जीवन कौशल के लिए तैयार करेंगे
- (b) घर पर माता-पिता और देखभाल करने वालों के साथ जो उन्हें आवश्यक सहायता उपलब्ध कराएँ
- (c) खासतौर पर उन्हीं के लिए बनाए गए विशेष विद्यालयों में

- (d) समावेशी शिक्षा व्यवस्था में इस प्रावधान के साथ कि उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके
- 155. समन्वित शिक्षा की सफलता निर्भर करती है—**
- समुदाय के समर्थन पर
 - पाठ्यपुस्तकों की उत्कृष्टता पर
 - शिक्षण-अधिगम वस्तु की गुणवत्ता पर
 - शिक्षकों में अभिवृत्तिगत परिवर्तन पर
- 156. आपको अपनी कक्षा में दो मन्द बुद्धि बच्चों को बैठाने के लिए बोला गया है। आप**
- उन्हें अपने विद्यार्थी के रूप में ग्रहण करने से इनकार करेंगे
 - प्रधानाध्यापक को उन्हें किसी और कक्षा में जोकि मन्द बुद्धि बालकों के लिए विशेष रूप से चिह्नित है, में बैठाने के लिए बोलेंगे
 - ऐसे विद्यार्थियों को सिखाने की तकनीक सीखेंगे
 - उपरोक्त में से कोई नहीं
- 157. असंगठित घर से आने वाला बच्चा सबसे अधिक कठिनाई का अनुभव करेगा**
- सुनिर्मित पाठों में
 - स्वतन्त्र अध्ययन में
 - नियोजित निर्देश में
 - अभ्यास पुस्तिकाओं में
- 158. विशेष रूप से जरूरतमन्द बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिए—**
- दूसरे सामान्य बच्चों के साथ
 - विशेष विद्यालयों में विशेष बच्चों के लिए विकसित विधियों द्वारा
 - विशेष विद्यालयों में
 - विशेष विद्यालयों में विशेष शिक्षकों द्वारा
- 159. जिन विद्यालयों में समेकित शिक्षा दी जाती है उसके शिक्षकों को किस क्षेत्र विशेष में प्रशिक्षित करना चाहिए?**
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान और शिक्षण
 - व्याख्यान विधि द्वारा शिक्षण
 - क्रियात्मकता के साथ शिक्षण
 - उपरोक्त में से कोई नहीं
- 160. एक समावेशी कक्षा में किसी शिक्षिका की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है :**
- यह सुनिश्चित करना कि शिक्षिका कक्षा को मानक निर्देश दे रही है।
 - बच्चे के माता-पिता के व्यवसाय को जानना ताकि शिक्षिका प्रत्येक बच्चे के भावी व्यवसाय को जान सके।
 - सुनिश्चित करना कि प्रत्येक बच्चे को अपनी संभावना को प्राप्त करने का अवसर मिले।
 - कक्षा के लिए ऐसी योजना बनाना कि प्रत्येक बच्चा समान गति से आगे बढ़े।
- 161. शिक्षार्थियों को सबसे कम प्रतिबंधित विद्यालय वातावरण में रखने के माध्यम से, विद्यालय—**
- लड़कियों और अलाभान्वित वर्गों के लिए शैक्षिक अवसरों को समान करता है।
 - वंचित वर्ग के बच्चों के जीवन को सामान्य करता है, जो इन बच्चों के समुदायों और अभिभावकों के साथ विद्यालय के सम्बन्ध को बढ़ा रहा है
 - विज्ञान मेला और प्रश्नोत्तरी जैसी गतिविधियों में अलाभान्वित वर्ग के बच्चों को भागीदार बनाता है
 - दूसरे बच्चों को संवेदनशील बनाता है कि वे अलाभान्वित बच्चों को दबाएँ नहीं उन्हें नीचा न दिखाएँ
- 162. एक समावेशी विद्यालय के अतिरिक्त निम्नलिखित प्रश्नों पर मनन करता है।**
- क्या हम अधिगमयोग्य परिवेश की योजना बनाने और उसे प्रदान करने के लिए समूह में कार्य करते हैं?
 - क्या हम विशेष बालक को बेहतर देखभाल उपलब्ध कराने के लिए उचित तरीके से उन्हें अलग करते हैं?
 - क्या हम शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए युक्तियाँ अपनाते हैं?
 - क्या हम यह विश्वास करते हैं कि सभी शिक्षार्थी सीख सकते हैं?
- 163. एक शिक्षिका की कक्षा में कुछ शारीरिक विकलांगता वाले बच्चे हैं। निम्नलिखित में से उसके लिए क्या कहना सबसे उचित होगा?**
- पोलियोग्रस्त बच्चे अब एक गाना प्रस्तुत करेंगे।
 - पहिया-कुर्सी वाले बच्चे हॉल में जाने के लिए अपने समयवस्क साथी बच्चों से मदद ले सकते हैं।
 - शारीरिक रूप से असुविधाग्रस्त बच्चे कक्षा में ही कोई वैकल्पिक गतिविधि कर सकते हैं।
 - मोहन खेल के मैदान में जाने के लिए आप अपनी बैसाखियों का प्रयोग क्यों नहीं करते?
- 164. एक समावेशी कक्षा वह है, जहाँ —**
- तब तक आकलन की पुनरावृत्ति होती रहती है जब तक प्रत्येक अधिगमकर्ता न्यूनतम श्रेणी प्राप्त न कर ले
 - विद्यार्थियों का भार कम करने के लिए अध्यापक केवल अनुमोदित पुस्तकों से ही पढ़ते हैं
 - समस्याओं का अधिकाधिक समाधान करने की सम्भावना की दृष्टि से बच्चों की सक्रिय भागीदारी रहती है
 - अध्यापक प्रत्येक अधिगमकर्ता के लिए वैविध्यपूर्ण व सार्थक अधिगमात्मक अनुभवों हेतु परिवेश का निर्माण करते हैं

165. शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के क्रियान्वयन के बाद कक्षा-कक्ष –
- (a) अप्रभावित है, क्योंकि शिक्षा का अधिकार विद्यालय में कक्षा की औसत आयु को प्रभावित नहीं करता
 - (b) जेंडर के अनुसार अधिक समजातीय हैं
 - (c) आयु के अनुसार अधिक समजातीय हैं
 - (d) आयु के अनुसार अधिक विषमजातीय हैं
166. समावेशी शिक्षा उस विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था की ओर संकेत करती है जो –
- (a) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को विशिष्ट विद्यालयों के माध्यम से शिक्षा देने को प्रोत्साहित करती है।
 - (b) केवल बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल देती है
 - (c) जो सभी निर्योग्य बच्चों को शामिल करती है
 - (d) जो उनकी शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, भाषिक या अन्य विभिन्न योग्यता स्थितियों को ध्यान में रखे बगैर बच्चों को शामिल करती है
167. निःशक्त बच्चों के लिए समेकित शिक्षा की केंद्रीय प्रायोजित योजना का उद्देश्य है में निःशक्त बच्चों को शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराना।
- (a) मुक्त विद्यालयों
 - (b) 'ब्लाइंड रिलीफ एसोसिएशन' के विद्यालयों
 - (c) नियमित विद्यालयों
 - (d) विशेष विद्यालयों
168. 'कमजोर वर्ग के बालक' से तात्पर्य है
- (a) ऐसे अभिभावकों के बालक से जिनकी वार्षिक आय कम है
 - (b) ऐसे अभिभावकों के बालक से जो वंचित वर्ग में आते हैं
 - (c) ऐसे अभिभावकों के बालक से जो गरीबी रेखा से नीचे की सीमा में आते हैं
 - (d) ऐसे अभिभावकों के बालकों से जो सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम सीमा की वार्षिक आय की सीमा से नीचे के वर्ग में आते हैं।
169. एक शिक्षक को स्कूल में प्रथम बार आए विशेष आवश्यकता वाले बच्चे के साथ करना चाहिए-
- (a) उसकी विशेष आवश्यकता के अनुसार विशेष स्कूल में जाने की सलाह
 - (b) अन्य बच्चों से अलग करना
 - (c) बच्चे के अभिभावक से सहयोगी योजना की चर्चा
 - (d) बच्चे की विशेष आवश्यकता के स्तर की जाँच के लिए प्रवेश परीक्षा
170. आर.टी.ई. एक्ट 2009 के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों को प्रति सप्ताह कुल कितने घण्टे की योजना बनाकर कार्य करना है?
- (a) 30 घण्टे
 - (b) 45 घण्टे
 - (c) 42 घण्टे
 - (d) 50 घण्टे
171. सामाजार्थिक मुद्दों से जूझ रहे उन बच्चों को जिनकी प्रतिभा प्रभावित हो सकती है को.....सहायता करता है।
- (a) स्वअधिगम मॉडल
 - (b) विभेदित निर्देश
 - (c) पाठ्यचर्या का विस्तार
 - (d) संज्ञानात्मक वर्गीकरण
172. समेकित शिक्षा इंगित करती है-
- (a) सभी बच्चों के लिए एकसमान शिक्षण विधि
 - (b) सामान्य बच्चों एवं भिन्न रूप से योग्य बच्चों के लिए एक ही स्कूल
 - (c) सामान्य बच्चों एवं भिन्न रूप से योग्य बच्चों के लिए पृथक् स्कूल
 - (d) सामान्य बच्चों एवं भिन्न रूप से योग्य बच्चों के लिए एकसमान सुविधा
173. विविध शिक्षार्थियों वाली एक समावेशी कक्षा में सहयोगी अधिगम और समवयस्कों से सीखना-
- (a) सक्रिय रूप से निरूत्साहित किया जाना चाहिए और प्रतियोगिता को बढ़ावा देना चाहिए।
 - (b) केवल कभी-कभी ही प्रयोग किया जाना चाहिए, क्योंकि यह सहपाठियों से तुलना को बढ़ावा देता है।
 - (c) सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिससे समवयस्कों की स्वीकार्यता बढ़े।
 - (d) कार्यान्वित नहीं किया जाना चाहिए और विद्यार्थियों को क्षमताओं के अनुसार अलग-अलग किया जाना चाहिए।
174. एक 40 मिनट की कक्षा में सभी विद्यार्थियों व मुख्यतः विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की माँग को पूरा करते हुए आप किस प्रकार पढ़ाएंगे?
- (a) वैयक्तिक पर ध्यान देकर
 - (b) कक्षा में संमांगी समूह बनाकर
 - (c) सभी विद्यार्थियों के लिये क्रियाकलाप आयोजित कराकर परन्तु विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए
 - (d) कक्षा के किसी योग्य विद्यार्थी को जिम्मेदारी सौंपते हुए

175. सांस्कृतिक तथा भाषिक रूप से वैविध्यपूर्ण कक्षा में यह निश्चित करने से पहले कि शिक्षार्थी विशिष्ट शिक्षा-वर्ग में आता है या नहीं, एक शिक्षक को करना चाहिए—

- (a) माता-पिता को इसमें सम्मिलित नहीं करना चाहिए, क्योंकि उनके पास अपना कार्य होता है
- (b) अक्षमता स्थापित करने से पहले शिक्षार्थी की मातृभाषा का मूल्यांकन करना चाहिए
- (c) पारंगत मनोवैज्ञानिक का उपयोग
- (d) वातावरणीय कारकों को अप्रभावी बनाने के लिए बच्चे को अलग कर देना चाहिए

176. वाणी दोष नहीं है—

- (a) ध्वनि परिवर्तन और अस्पष्ट उच्चारण
- (b) धीमी या तेज गति से बोलना

(c) हकलाना और तुतलाना

(d) तीव्र अस्पष्ट वाणी

177. भाषा-अवबोधन से सम्बद्ध विकार है

- (a) चलाघात (apraxia)
- (b) पठन-वैकल्य (dyslexia)
- (c) वाक-सम्बद्ध रोग (aspeechia)
- (d) भाषाघात (aphasia)

178. निम्नलिखित में से कौन-सा विकासात्मक विकार का उदाहरण नहीं है?

- (a) आत्मविमोह (Autism)
- (b) प्रमस्तिष्क घात (Cerebral palsy)
- (c) पर-अभिघातज तनाव (Post-traumatic stress)
- (d) न्यून अवधान सक्रिय विकास (Attention deficit hyperactivity disorder)

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | |
|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|
| 1. (b) | 2. (d) | 3. (d) | 4. (b) | 5. (b) | 6. (d) | 7. (a) | 8. (d) | 9. (c) |
| 10. (a) | 11. (c) | 12. (b) | 13. (a) | 14. (b) | 15. (b) | 16. (a) | 17. (d) | 18. (d) |
| 19. (c) | 20. (d) | 21. (c) | 22. (a) | 23. (c) | 24. (d) | 25. (b) | 26. (d) | 27. (d) |
| 28. (b) | 29. (d) | 30. (b) | 31. (d) | 32. (b) | 33. (a) | 34. (a) | 35. (b) | 36. (d) |
| 37. (b) | 38. (c) | 39. (a) | 40. (a) | 41. (b) | 42. (a) | 43. (b) | 44. (a) | 45. (b) |
| 46. (d) | 47. (b) | 48. (d) | 49. (d) | 50. (d) | 51. (a) | 52. (d) | 53. (d) | 54. (b) |
| 55. (b) | 56. (b) | 57. (a) | 58. (b) | 59. (b) | 60. (d) | 61. (c) | 62. (d) | 63. (c) |
| 64. (b) | 65. (d) | 66. (b) | 67. (b) | 68. (a) | 69. (d) | 70. (a) | 71. (d) | 72. (b) |
| 73. (d) | 74. (c) | 75. (a) | 76. (d) | 77. (b) | 78. (b) | 79. (b) | 80. (a) | 81. (b) |
| 82. (d) | 83. (a) | 84. (c) | 85. (a) | 86. (b) | 87. (d) | 88. (b) | 89. (b) | 90. (b) |
| 91. (c) | 92. (b) | 93. (b) | 94. (b) | 95. (c) | 96. (d) | 97. (d) | 98. (d) | 99. (a) |
| 100. (c) | 101. (b) | 102. (d) | 103. (c) | 104. (c) | 105. (a) | 106. (b) | 107. (d) | 108. (a) |
| 109. (b) | 110. (d) | 111. (b) | 112. (a) | 113. (b) | 114. (b) | 115. (b) | 116. (b) | 117. (d) |
| 118. (d) | 119. (b) | 120. (d) | 121. (c) | 122. (a) | 123. (d) | 124. (d) | 125. (b) | 126. (c) |
| 127. (d) | 128. (b) | 129. (d) | 130. (d) | 131. (a) | 132. (d) | 133. (b) | 134. (c) | 135. (c) |
| 136. (a) | 137. (b) | 138. (d) | 139. (a) | 140. (a) | 141. (d) | 142. (b) | 143. (a) | 144. (a) |
| 145. (b) | 146. (b) | 147. (b) | 148. (c) | 149. (a) | 150. (a) | 151. (a) | 152. (b) | 153. (b) |
| 154. (d) | 155. (d) | 156. (c) | 157. (b) | 158. (a) | 159. (a) | 160. (c) | 161. (d) | 162. (b) |
| 163. (c) | 164. (d) | 165. (c) | 166. (d) | 167. (c) | 168. (d) | 169. (c) | 170. (b) | 171. (a) |
| 172. (b) | 173. (c) | 174. (c) | 175. (b) | 176. (b) | 177. (d) | 178. (c) | | |

समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन एवं परामर्श

निर्देशन का अर्थ, उद्देश्य, प्रकार एवं आवश्यकता तथा क्षेत्र

निर्देशन का अर्थ एवं परिभाषा— निर्देशन का तात्पर्य एक ऐसी प्रक्रिया से है, जिसमें एक व्यक्ति को इस प्रकार सहायता प्रदान की जाती है कि वह अपनी जन्मजात तथा अर्जित क्षमताओं को समझते हुए उनका उपयोग अपनी समस्याओं को स्वयं हल करने में कर सके। इस प्रकार निर्देशन में दो व्यक्ति होते हैं। एक वह जिसको निर्देशन प्रदान किया जाता है तथा दूसरा वह जो निर्देशन करता है।

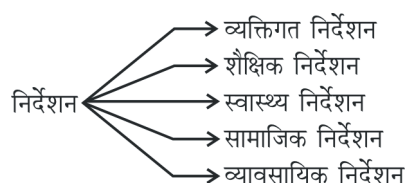
- **स्किनर के अनुसार—** “निर्देशन, नवयुवकों को अपने से, दूसरों से और परिस्थितियों से सामंजस्य करना सीखने के लिए सहायता देने की प्रक्रिया है।”
- **जोन्स के अनुसार—** “निर्देशन का अर्थ है— प्रदर्शन करना, इंगित करना, सूचित करना तथा पथ प्रदर्शन करना। इसका अर्थ सहायता करने से अधिक है।”
- **क्रो एवं क्रो के अनुसार—** “निर्देशन लक्ष्य करना नहीं है। वह अपनी विचारधाराओं को दूसरों पर आरोपित नहीं करता है, वह दूसरों के कार्यों को अपने ऊपर नहीं लेता है, वरन निर्देशन तो वह सहायता है जो एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को प्रदान करता है। इस सहायता से वह व्यक्ति अपने जीव का मार्ग स्वयं ही प्रशस्त करता है, अपनी विचारधारा का विकास करता है, अपने निर्णय को निश्चित करता है तथा अपना दायित्व संभालता है।”

निर्देशन के उद्देश्य—

निर्देशन वस्तुतः एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। अतः इसके कुछ निश्चित उद्देश्य होने स्वाभाविक ही हैं। निर्देशन के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत होते हैं—

- (i) व्यक्ति को उसकी योग्यताओं व शक्तियों का ज्ञान कराना
- (ii) व्यक्ति को उसकी योग्यताएँ व क्षमताएँ विकसित करने में सहायता देना
- (iii) व्यक्ति को उसकी योग्यताओं व क्षमताओं के अनुरूप शैक्षिक व व्यवसायिक अवसरों की जानकारी देना
- (iv) व्यक्ति को अपने वातावरण के साथ अच्छा समायोजन करने में सहायता प्रदान करना
- (v) व्यक्ति को अपनी समस्याओं का स्वयं समाधान करने योग्य बनाना।

निर्देशन के प्रकार— निर्देशन के निम्न प्रकार होते हैं—



1. व्यक्तिगत निर्देशन—

यह निर्देशन व्यक्तिगत कठिनाइयों से सम्बन्धित होता है। इसमें निम्नलिखित बातों का होना आवश्यक है—

- छात्रों को उनकी समस्याओं का ज्ञान कराना और उन्हें समुचित निर्देशन देना
- छात्रों के संतुलित विकास में सहायता करना
- छात्रों को अध्ययन के सम्बन्ध में मार्गदर्शन करना
- छात्रों को वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में व्यक्तिगत रूप से सहायता करना

2. शैक्षिक निर्देशन—

जोन्स के अनुसार शैक्षिक निर्देशन का अर्थ उस व्यक्तिगत सहायता से, जो छात्रों को इस कारण से प्रदान की जाती है कि वे अपने लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम, पाठ्य-विषय एवं विद्यालयी जीवन का चयन कर सकें और उनसे समायोजन कर सकें।

शैक्षिक निर्देशन का सम्बन्ध शिक्षा और अध्ययन से होता है, इसमें निम्नलिखित बातें सम्मिलित होती हैं—

- पाठ्य विषयों का चयन करते समय छात्रों का मार्गदर्शन करना
- विद्यालय में प्रवेश के समय छात्रों को आवश्यक और उचित निर्देशन देना।
- छात्रों को भावी योजना बनाने में सहायता देना और अन्य उच्च शिक्षा संस्थाओं के सम्बन्ध में सूचना देना
- छात्रों को ज्ञानार्जन तथा अध्ययन की विधियाँ बताना।
- छात्रों की पारिवारिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक उपलब्धि तथा रुचियों और क्षमताओं की जानकारी प्राप्त कर उन्हें आवश्यकता तथा परिस्थिति के अनुसार सहायता या मार्गदर्शन देना।

3. स्वास्थ्य निर्देशन—

स्वास्थ्य निर्देशन का सम्बन्ध विशेष रूप से छात्र की निम्नलिखित स्वास्थ्य सुरक्षा सम्बन्धित बातों से हैं—

- छात्रों को स्वास्थ्य जीवन के महत्व के विषय में बताना
- छात्रों को उत्तम स्वस्थ आदतों के विषय में जानकारी देना
- स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने वाली आदतों को छोड़ने के विषय में उचित निर्देशन देना
- छात्रों को प्राथमिक उपचार के विषय में जानकारी कराना और उसका प्रशिक्षण देना
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को विशेष सूचना प्रदान करना
- छात्रों को काम-शिक्षा की स्तरानुकूल वांछित जानकारी प्रदान करना।

4. सामाजिक निर्देशन—

इसमें छात्रों को सामाजिक सम्बन्धों का निर्देशन दिया जाता है। इस निर्देशन में निम्नलिखित बातें होती हैं—

- छात्रों को सामाजिक समायोजन के विषय में आवश्यक परामर्श देना
- छात्रों को विभिन्न सामाजिक व्यवहारों के विषय में विभिन्न सूचनाएँ प्रदान करना
- छात्रों को विद्यालय के सामाजिक जीवन का ज्ञान कराना
- विद्यालय में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन को संगठित करने में छात्रों की सहायता करना

5. व्यावसायिक निर्देशन—

व्यावसायिक निर्देशन के अंतर्गत छात्रों को वे सुझाव दिये जाते हैं, जिन्हें ग्रहण करके वे अपने भविष्य के लिए व्यवसाय का चुनाव करते हैं। इस विषय में निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाता है—

- किसी छात्र या व्यक्ति विशेष को ऐसे सहायता देना कि वह अपने लिए उचित व्यवसाय का चुनाव ठीक प्रकार से कर सके।
- छात्रों को विभिन्न व्यवसायों के विषय में जानकारी कराना
- विभिन्न व्यवसायों के गुण एवं दोषों की सूचना प्रदान करना
- छात्रों की रुचियों, योग्यताओं तथा क्षमताओं से सम्बन्धित व्यवसायों की जानकारी प्राप्त करना और उसके आधार पर छात्रों को निर्देशन देना
- छात्रों को विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित प्रशिक्षण केन्द्रों की सूचना प्रदान करना।

निर्देशन की विधियाँ—

छात्रों को निर्देशन प्रदान करने के लिए दो विधियाँ प्रयोग की जाती हैं—

1. वैयक्तिक सम्पर्क विधि
2. सामूहिक विधि

निर्देशन के सोपान—

1. साक्षात्कार
2. प्रश्नावली
3. संचित अभिलेखों का अध्ययन
4. मनोवैज्ञानिक परीक्षण
5. अनुस्थापन वार्तालाप
6. पारिवारिक दशाओं का अध्ययन
7. पार्श्व चित्र
8. अनुगामी कार्यक्रम

निर्देशन की आवश्यकता एवं क्षेत्र—

वर्तमान समय में औद्योगीकरण, नगरीकरण, जनसंख्या विस्फोट के परिणाम स्वरूप समाज में जो परिवर्तन हुए उनके कारण आज निर्देशन की आवश्यकता और भी बढ़ गयी है और यह सत्य है कि

जैसे-जैसे समाज की जटिलता बढ़ती जायेगी वैसे-वैसे निर्देशन की आवश्यकता बढ़ती जायेगी।

निर्देशन की आवश्यकता को निम्नलिखित तीन दृष्टिकोणों से प्रस्तुत कर सकते हैं—

1. सामाजिक आर्थिक दृष्टिकोण से आवश्यकता
2. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से आवश्यकता
3. शैक्षिक दृष्टिकोण से आवश्यकता

1. सामाजिक आर्थिक दृष्टिकोण से निर्देशन की आवश्यकता—

- औद्योगीकरण तथा नगरीकरण
- संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन
- पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव
- परिवर्तित सामाजिक मूल्य
- जनसंख्या वृद्धि
- व्यवसायों की बहुलता

2. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से निर्देशन की आवश्यकता—

- वैयक्तिक भिन्नताओं को समझना
- समायोजन
- व्यक्तित्व का विकास
- संवेगात्मक समस्याएँ

3. शैक्षिक दृष्टिकोण से निर्देशन की आवश्यकता—

- पाठ्यक्रम का चयन
- अपव्यय एवं अवरोधन रोकने के लिए
- बढ़ती छात्र संख्या
- अनुशासन हीनता की समस्या
- विद्यालय में समायोजन की समस्या

परामर्श का अर्थ, उद्देश्य, प्रकार एवं आवश्यकता तथा क्षेत्र

परामर्श का अर्थ एवं परिभाषा— परामर्शदाता परामर्श चाहने वाले व्यक्ति की समस्या या कठिनाई को समझने का प्रयास करता है तथा उससे विचारों का आदान-प्रदान करके उसकी समस्या का समाधान करने में सहायता प्रदान करता है। इस प्रकार की सहायता परामर्श कहलाती है।

➤ **रोजर्स के अनुसार—** “परामर्श किसी व्यक्ति के साथ लगातार प्रत्यक्ष सम्पर्क की वह कड़ी है जिसका उद्देश्य व्यक्ति को उसकी अभिवृत्तियों तथा व्यवहार में परिवर्तन लाने में सहायता प्रदान करना है।”

➤ **मायर्स के अनुसार—** “परामर्श का तात्पर्य दो व्यक्तियों के सम्पर्क से है, जिसमें एक को किसी प्रकार की दूसरे व्यक्ति द्वारा सहायता प्रदान की जाती है।”

➤ **डॉ. सीताराम जायसवाल के अनुसार—** “निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि परामर्श का मूल तत्त्व दो व्यक्तियों के बीच ऐसा सम्पर्क है, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को स्वयं को समझने में सहायता देता है।”

परामर्श के उद्देश्य—

- **रूथ स्ट्रैंग के अनुसार—** “परामर्श का उद्देश्य आत्मपरिचय या आत्मबोध है।”
- **डन्समूर के अनुसार—** “परामर्श का उद्देश्य छात्र को अपनी कठिनाइयों को हल करने की योजना बनाने में सहायता देना है।”
- **राबर्ट्स के अनुसार—** “परामर्श का उद्देश्य परामर्श लेने वाले को अपनी शैक्षिक, व्यावसायिक और वैयक्तिक समस्याओं को समझने में सहायता देना है।”
- **जे.पी. अग्रवाल के अनुसार—** “परामर्श का उद्देश्य है छात्र को अपनी विशिष्ट योग्यताओं और उचित दृष्टिकोणों का विकास करने में सहायता देना।”

परामर्श के प्रकार—

1. **नैदानिक परामर्श—** नैदानिक परामर्श का सम्बन्ध व्यक्ति के सामान्य कार्य सम्बन्धी असमयोजनों से है। इसमें साधारण कार्य सम्बन्धी असमयोजन का निदान व उपचार किया जाता है।
2. **मनोवैज्ञानिक परामर्श—** परामर्शदाता विभिन्न मनोवैज्ञानिक विधियों का प्रयोग कर परामर्श प्रार्थी की कठिनाइयों को समझने का प्रयास करता है और उसकी मानसिक समस्याओं का समाधान करने में सहायता करता है।
3. **शैक्षिक परामर्श—** शैक्षिक परामर्श छात्र को अपनी शिक्षा एवं अध्ययन में सफलता प्राप्त करने तथा पाठ्यक्रमों एवं विषयों का उचित चुनाव करने के लिए दिया जाता है।
4. **सामाजिक परामर्श—** इसका उद्देश्य परामर्श प्रार्थी को सामाजिक कुशलताओं का विकास करने में सहायता देना है।
5. **व्यावसायिक परामर्श—** व्यावसायिक परामर्श व्यक्ति की उन समस्याओं का समाधान करने में सहायता करता है, जो किसी व्यवसाय के चुनाव या उसके लिए तैयारी करते समय उसके सम्मुख आती है।

परामर्श की विधियाँ—

- व्यक्तिगत परामर्श
- समूह परामर्श

परामर्श की आवश्यकता एवं क्षेत्र—

- छात्रों की वर्तमान समस्याओं को हल करने में सहायता देने के लिए
- विशेष योग्यताओं तथा उचित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित एवं विकसित करने के लिए।
- छात्रों को अपने उत्तरदायित्व को समझने में सहायता देना
- शैक्षिक तथा व्यावसायिक चयन की योजना बनाने में छात्रों की सहायकता करने के लिए।
- छात्रों को सामाजिक और संवेगात्मक सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करने के लिए।

परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थाएँ

मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश इलाहाबाद

- मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश इलाहाबाद की स्थापना **आचार्य नरेन्द्र देव समिति** की संस्तुति के आधार पर लाउदर रोड, इलाहाबाद में सन् 1947 में की गयी। वर्तमान में यह राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उत्तर प्रदेश लखनऊ की ब्यूरो ऑफ साइकोलॉजी नामक इकाई के रूप में एक विशिष्ट संस्था है।
- मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश इलाहाबाद, संस्था का अध्यक्ष पदेन निदेशक कहलाता है। इसमें वरिष्ठ मनोवैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक के भी पद सृजित किये गये हैं।
- इस संस्था का मुख्य उद्देश्य है प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को शिक्षण, निर्देशन एवं परामर्श प्रदान करने हेतु, मनोवैज्ञानिक रूप से सक्षम बनाने हेतु प्रशिक्षण देना तथा छात्रों को व्यावसायिक व वैयक्तिक निर्देशन प्रदान करना।

मनोविज्ञानशाला के प्रमुख कार्य—

1. **निर्देशन—**
 - शैक्षिक निर्देशन
 - वैयक्तिक निर्देशन
 - बाल निर्देशन
 - व्यावसायिक निर्देशन
2. **प्रशिक्षण—** निर्देशन सेवाओं के लिए उपयुक्त मनोवैज्ञानिक तैयार हो सकें, इसके लिए मनोविज्ञानशाला में एक सत्रीय कोर्स का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसे डिप्लोमा इन गाइडेन्स साइकोलॉजी कहा जाता है।
3. **सेवाकालीन प्रशिक्षण**
 - शिक्षा विभाग के अधिकारियों को इस संस्था द्वारा एक-एक सप्ताह का प्रशिक्षण दिया जाता है।
 - समय-समय पर प्रदेश तथा अन्य प्रदेशों के विद्यालयों, महाविद्यालयों, शिक्षण संस्थाओं के शिक्षकों, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षकों, प्रवक्ताओं आदि को मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण दिया जाता है।
4. **चयन कार्य—** मनोविज्ञानशाला राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार के विभिन्न विभागों के चयन आदि प्रक्रिया में आवश्यकतानुसार सहायता प्रदान करती है। जैसे— पुलिस विभाग, स्पोर्ट्स कॉलेज आदि।
5. **राष्ट्रीय प्रतिभाखोज परीक्षा का आयोजन—** यह संस्था राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के आयोजन एवं संचालन में प्रादेशिक स्तर पर नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करती है।
6. **शोध कार्य—** मनोविज्ञानशाला मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के निर्माण अनुशीलन तथा मानकीकरण का कार्य करती है। जैसे थीमेटिक एपरसेप्शन परीक्षण (TAT) का भारतीय स्थिति में अनुकूलन किया गया है। कुछ विदेशी अशाब्दिक परीक्षणों के मानक तैयार किये गये हैं।

7. **प्रकाशन कार्य**— इस संस्था से 'व्यावसायिक सूचना', 'आपका बालक' जैसे त्रैमासिक समाचार पत्र प्रकाशित होते रहे हैं, एवं समय-समय पर मनोवैज्ञानिक समस्याओं से युक्त 'बलाघात', 'उत्कर्ष' आदि पुस्तकें भी प्रकाशित की जाती हैं। यहाँ से अनेक शोध एवं निष्कर्ष भी प्रकाशित किये जाते हैं।

8. **अनुवर्ती कार्य**— छात्रों को सामूहिक तथा वैयक्तिक रूप से दिये गये निर्देशन का अनुवर्ती अध्ययन भी किया जाता है।

मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र

मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश इलाहाबाद ने अपनी सेवाओं के विस्तार करने एवं उन्हें सर्वसुलभ बनाने हेतु मण्डल स्तर पर 'मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र' की स्थापना की है। इसके प्रमुख कार्य निम्न हैं—

- यह मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश इलाहाबाद द्वारा किये जा रहे कार्यों की मण्डलीय स्तर पर सेवा प्रदान करता है।
- छात्रों को व्यवसाय चुनने में परामर्श देता है।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को परामर्श देता है।
- छात्रों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं के निवारण हेतु परामर्श देता है।

जिला चिकित्सालय

सम्पूर्ण प्रदेश भर में जिला चिकित्सालायों में मुख्य चिकित्साधिकारी के नेतृत्व में एक 'विशेषज्ञ डाक्टरों की समिति' होती है जो विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए विकलांगता आदि का परीक्षण करके सेवाओं में आरक्षण का लाभ प्रदान कराते हैं। यह विशेषज्ञ डॉक्टरों की समिति विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समुचित उपकरण जैसे— चश्मा आदि प्रदान करने की संस्तुति करती है एवं उन्हें तथा अन्य जनों को भी व्यावसायिक परामर्श देती है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षित

डायट मेंटर

बालकों को परामर्श एवं निर्देशन प्रदान करने हेतु प्रत्येक जिले में 'जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान' में मनोविज्ञान विभाग होते हैं, जो छात्रों व शिक्षकों को मनोवैज्ञानिक परामर्श देने का कार्य करते हैं। यद्यपि इस संस्था का मुख्य कार्य तो अध्यापकों को प्रशिक्षण देना है लेकिन यहाँ उन्हें शिक्षण हेतु मनोवैज्ञानिक विधियों का भी प्रशिक्षण दिया जाता है।

पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तंत्र

निर्देशन कार्यकर्ता के समूहों में यदि हम ध्यान से देखें तो ज्ञात होता है कि विद्यालय के सामाजिक कार्यकर्ता का स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। विद्यालय का सामाजिक कार्यकर्ता बालक के परिवार एवं विद्यालय के मध्य एक सेतु का कार्य करता है। जैसा कि हम जानते हैं कि बालक की समस्याओं के लिए उनका पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण, साथीगण एवं मित्रगण आदि सभी उत्तरदायी होते हैं। विद्यालय के परामर्शदाता को बालक के घर की स्थिति, माता-

पिता का व्यवहार, उसके आस-पास के परिवेश के बारे में जानकारी देने का कार्य विद्यालय का सामाजिक कार्यकर्ता ही करता है।

बालकों के निर्देशन एवं परामर्श का कार्य एकमात्र विद्यालय के द्वारा ही नहीं सम्भव है बल्कि अन्य बहुत से अभिकरण इसमें अपेक्षित सहयोग प्रदान करते हैं। जैसे— चिकित्सक, मनोचिकित्सक एवं बालक से सम्बन्धित अन्य लोग।

समुदाय एवं विद्यालय की सहयोगी समितियाँ

विद्यालय में निर्देशक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। छात्रों की प्रगति सम्बन्धी समस्याओं के समुचित निराकरण के लिए विद्यालय में परामर्श सेवा का विधान होना चाहिए। सामान्यतः विद्यालय परामर्श सेवा संगठन के तीन प्रारूप माने जाते हैं—

1. रेखा संगठन
2. कर्मचारी संगठन
3. रेखा कर्मचारी मिश्रित संगठन

1. **रेखा संगठन**— यह संगठन छोटे विद्यालयों के लिए उपयुक्त माना जाता है। इस संगठन में विद्यालय के अधीक्षक, प्रधानाचार्य, अध्यापकगण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस प्रकार के संगठन में अधिकार क्रम से कर्मचारियों में ऊपर से नीचे तक एक सीधा स्तरीकरण होता है। विद्यालय का अधीक्षक उत्तरदायित्व एवं अधिकार की दृष्टि से सबसे ऊपर इसके बाद प्रधानाचार्य, अध्यापक फिर छात्रों का क्रम आता है। छोटे विद्यालय के परामर्श संगठन में परामर्श समिति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह विद्यालय के निर्देशन कार्यक्रम की योजना तैयार करने संगठित करने आदि का कार्य करती है।

2. **कर्मचारी संगठन**— इसमें मुख्य प्रशासकीय अधिकार कार्यक्षेत्रों के शीर्ष अधिकारी को सौंपे जाते हैं। इस संगठन से यह लाभ है कि प्रत्येक वर्ग के कर्मचारी अपने-अपने कार्यों में विशेष दक्षता प्राप्त कर लेते हैं। विशेषज्ञ यद्यपि प्रशासनिक अधिकारी के नियंत्रण में कार्य करते हैं किन्तु परामर्श व्यवस्था की प्रक्रिया एवं नीति निर्धारण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

3. **रेखा कर्मचारी मिश्रित संगठन**— बड़े आकार के विद्यालयों में रेखा कर्मचारी मिश्रित संगठन की आवश्यकता होती है। यहाँ विद्यालय अधीक्षक को सलाह प्रदान करने के उद्देश्य से सहायक अधीक्षक होते हैं। ये सहायक अधीक्षक 4 हो सकते हैं—

1. प्रशासकीय शोधकार्य के लिए छात्रों को सेवायें देने वाले सहायक अधीक्षक
2. विशिष्ट सेवाओं के लिए सहायक अधीक्षक
3. अध्यापन सहायक अधीक्षक
4. विद्यालय के कर्मचारियों से सम्बन्धित सहायक अधीक्षक

ये चारों ही सहायक अधीक्षक परस्पर सहयोगपूर्ण ढंग से कार्य करते हैं एवं विद्यालय अधीक्षक को परामर्श योजना सम्बन्धी सुझाव भेजते हैं। इस संगठन में उपर्युक्त दोनों रेखा एवं कर्मचारी संगठन पद्धति के लाभ विद्यमान रहते हैं।

रेखा के क्रम से स्वास्थ्य निदेशक के अधीन चिकित्सक, मनोचिकित्सक एवं नर्सों की सेवाएँ आती हैं। छात्रों के लिए आवश्यक सेवा कर्मचारियों में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक कार्यकर्ता अथवा समाज सेवक, उपस्थिति अधिकारी तथा विद्यालय दर्शन के लिए आये हुए अध्यापक सम्मिलित होते हैं। ये सभी लोग कर्मचारी सेवाओं के सहायक अधीक्षक के अंतर्गत कार्य करते हैं। प्रधानाध्यापकों के अधीन अध्यापक गण, निर्देशन विशेषज्ञ आते हैं। इसी प्रकार अन्य कर्मचारी परस्पर मिल-जुलकर कार्य करते हैं, अधिकार एवं कर्तव्य की दृष्टि से किसी भी स्थान उच्च या निम्न नहीं होता है।

सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन

वर्ष 1972 में उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा अधिनियम के अस्तित्व में आने के बाद प्राथमिक विद्यालयों को स्थानीय निकायों के अधीन रखा गया। उत्तर प्रदेश शासन द्वारा संविधान के 73वें संशोधन की मूल भावना को दृष्टिगत रखते हुए 1 जुलाई 1999 को ग्राम पंचायतों को प्राथमिक विद्यालयों, अनौपचारिक शिक्षा तथा प्रौढ़ शिक्षा के कार्य स्थानान्तरित करने का निर्णय लिया गया। पंचायत राज अधिनियम के अंतर्गत 'ग्राम शिक्षा समिति' को प्रभावी बनाया गया। इसके माध्यम से सामुदायिक सहभागिता सहयोग तथा समन्वय पर बल प्रदान किया गया।

प्रारम्भिक शिक्षा में पंचायतों तथा स्थानीय निकायों की भूमिका—

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में शिक्षा के प्रबन्ध के संदर्भ में आम जनता को सम्मिलित करने की पहल को महत्ता दी गयी। इसमें गैर सरकारी संगठनों का सहयोग एवं स्वैच्छिक प्रयास भी सम्मिलित है। लोगों की भागीदारी का अर्थ है— सभी स्तरों पर शैक्षिक प्रक्रियाओं के साथ गैर सरकारी संगठनों तथा स्वैच्छिक संगठनों से भी अधिक माता-पिता, विकासात्मक एजेन्सियों, नियोक्ताओं, व्यावसायिक रूप से सक्षम शिक्षकों तथा वित्त व्यवस्था करने वाले निकायों के प्रतिनिधियों को सम्मिलित करना।

प्रारम्भिक शिक्षा में पंचायतों तथा स्थानीय निकायों को शामिल करने के लाभ—

लोगों की सहभागिता शैक्षिक संस्थाओं तथा समुदाय के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने, शिक्षा की उपयोगिता तथा कोटि में सुधार करने, अनुपस्थिति एवं कर्तव्यहीनता को कम करने, समुदाय की संसाधनों तक अधिक पहुँच तथा शैक्षिक संस्थाओं के प्रबन्ध को बेहतर ढंग से अनुशासित करने की ओर ले जायेगी। साथ ही इससे शैक्षिक संस्थाओं में स्थानीय राजनीति तथा सत्ता के दखल को भी दूर रखा जा सकेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार प्रारम्भिक शिक्षा के प्रबन्ध में निम्नलिखित पर बल प्रदान किया जायेगा—

1. जिला शिक्षा बोर्डों, जिला शिक्षा तथा प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना
2. प्रबन्ध का विकेन्द्रीकरण

3. स्वायत्तता की व्यवस्था
4. संस्थाओं, पद्धतियों तथा शिक्षकों का दायित्व निश्चित करना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं कार्ययोजना 1992 में सभी स्तरों पर शिक्षा की आयोजना तथा प्रबन्ध के विकेन्द्रीकरण और इस प्रक्रिया में जनसहभागिता के महत्त्व पर बल प्रदान किया गया है। विकेन्द्रीकरण का अभिप्राय है— जिला, उपजिला तथा पंचायत स्तरों पर निर्णय लेने में लोगो के चुने हुए प्रतिनिधियों की लोकतांत्रिक सहभागिता।

पंचायती राज सम्बन्धी 1991 के संविधान संशोधन विधेयक में जिला उपजिला और पंचायत स्तरों पर लोकतांत्रिक विधि से चुने गये निकाय स्थापित करने की परिकल्पना की गयी। संविधान की 11वीं अनुसूची में अन्य बातों के साथ-साथ पंचायती राज निकायों को अधोलिखित दायित्व सौंपने का प्रावधान है—

प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूलों सहित शिक्षा तकनीकी प्रशिक्षण, व्यावसायिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, गैर औपचारिक शिक्षा, पुस्तकालय तथा सांस्कृतिक क्रियाकलाप।

जिला स्तर के निकाय— इस विधान के अन्तर्गत एक ऐसा जिला स्तर का निकाय गठित किया जाए जो अनौपचारिक तथा प्रौढ़ शिक्षा और उच्चतर माध्यमिक स्तर तक स्कूली शिक्षा सहित सभी शैक्षिक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिए जिम्मेदार हो। इस निकाय में निम्नलिखित को प्रतिनिधित्व प्राप्त हो— (1) शिक्षाविदों (2) महिलाओं (3) युवकों के प्रतिनिधि (4) अभिभावकों के प्रतिनिधि (5) अनुसूचित जातियों/जनजातियों के प्रतिनिधि (6) अल्पसंख्यकों (7) जिले की उपयुक्त संस्थाओं के प्रतिनिधि।

इस निकाय में शहरी क्षेत्रों तथा छावनियों में कार्य कर रही लोकतांत्रिक संस्थाओं (नगर परिषद् तथा छावनी बोर्डों) के प्रतिनिधि होने चाहिए। उक्त जिला निकाय को आयोजन तथा प्रबन्ध की जिम्मेदारी सौंपी जाये। यह निकाय जिला स्तर पर विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन का प्रशिक्षण तथा निरीक्षण करेगा।

'जिला निकाय' जिला स्तर पर प्रारम्भिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा तथा प्रौढ़ शिक्षा के सभी कार्यक्रमों में पर्याप्त पाठ्यचर्या एवं शैक्षिक निवेशों के लिए जिला शिक्षा तथा प्रशिक्षण संस्थान तथा अन्य संस्थाओं की विशेषज्ञता प्राप्त करेगा।

प्रारम्भिक शिक्षा में राज्य सरकारों की भूमिका— राष्ट्रीय शिक्षा नीति कार्ययोजना, 1986 के अनुसार राज्य सरकारें मानव संसाधन विकास से सम्बन्धित सभी कार्यकलापों के समेकन के लिए एक कार्य ढाँचा तैयार करने के सम्बन्ध में विचार करेंगी। यह समेकन राज्य शिक्षा सलाहकार बोर्ड के माध्यम से किया जायेगा। राज्य सरकारें केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड की रूपरेखा के अनुसार इस बोर्ड की स्थापना करेंगी। इसमें सुविख्यात शिक्षाविदों तथा विशेषज्ञों के अलावा संस्थागत तथा संगठनात्मक प्रतिनिधि होंगे। इसमें समाज के कमजोर वर्ग— विशेष रूप से महिलाएँ, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति तथा अल्पसंख्यकों को भी प्रतिनिधित्व प्रदान किया जायेगा। यह बोर्ड सभी मानव संसाधन विकास कार्यक्रमों को समन्वित करने वाले एक प्रमुख निकाय के रूप में कार्य करेगा।

प्राथमिक तथा उच्च शिक्षा को उन्नत बनाने के लिये केन्द्रीय सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्था स्थापित करने की योजना प्रस्तावित की। केन्द्र सरकार ने इस योजना को 1963-64 में प्रस्तावित किया था। प्रायः सभी राज्यों तथा संघशासित प्रदेशों में इस योजना के अनुसार राज्य शिक्षा संस्थान स्थापित हो चुके हैं। विद्यालय शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों एवं इसके अतिरिक्त विशिष्ट शैक्षिक कार्यक्रमों से सम्बद्ध उपर्युक्त रैंक के जिला स्तर के अधिकारी व प्रमुख शिक्षा अधिकारी, शिक्षा निकाय का मुख्य शिक्षा अधिकारी होगा।

ग्राम शिक्षा समिति-

संविधान संशोधन विधेयक के अन्तर्गत किसी ग्राम या ग्रामों के समूह के लिए पंचायतें बनाई जायेंगी। इस पंचायत में चुने हुए प्रतिनिधि होंगे। इसके अतिरिक्त प्रत्येक पंचायत एक ग्राम शिक्षा समिति गठित कर सकती है जो ग्राम स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में निर्धारित कार्यक्रमों के प्रशासन के लिए जिम्मेदार होगी। इन ग्राम शिक्षा समितियों का मुख्य उत्तरदायित्व व्यवस्थित रूप से घर-घर सर्वेक्षण करके और अभिभावकों के साथ समय-समय पर विचार-विमर्श करके गाँव में सूक्ष्म स्तर की योजना तैयार करना है एवं विद्यालय मानचित्रण भी करना है। कार्ययोजना 1992 के अनुसार राज्य सरकारें ग्राम शिक्षा समिति को निम्नलिखित कार्य सौंपने पर विचार करें-

- ग्राम समुदाय के बीच जागरूकता बढ़ाना तथा उसे पोषित करना, जिसके साथ यह सुनिश्चित किया जा सके कि इसमें सभी वर्गों के लोग सम्मिलित होंगे।
- स्कूलों और केन्द्रों के कारगर तथा नियमित कार्यों का निरीक्षण एवं प्रबन्धन करने के लिए शिक्षक अनुदेशन तथा समुदाय की सहभागिता को बढ़ावा देना

विभिन्न राज्यों में ग्राम शिक्षा समितियों की स्थापना की जा चुकी है। ये समितियाँ समुदाय तथा प्रारम्भिक शिक्षा प्रणाली के बीच मिलन बिन्दु की (Interface) भूमिका निभाती हैं। ये समितियाँ मुख्यतः निम्नलिखित कार्य करती हैं-

- समुदाय को गतिशील बनाना
- अभिभावकों को प्रेरित करना कि वे अपने बच्चों को नियमित विद्यालय भेजें।
- प्रारम्भिक बाल देख-भाल तथा शिक्षा के प्रबन्धन में सहायता प्रदान करना।
- वैकल्पिक केन्द्रों को स्थापित करना।
- 'ग्राम निर्माण समिति' बनाना जो विद्यालय भवन तथा कक्षा-कक्षों के निर्माण तथा उसके निरीक्षण करने का कार्य करें। यह समिति 'ग्राम शिक्षा समिति' की देख-रेख में श्रमिकों, निर्माण सामग्री आदि की व्यवस्था करती है। इसके साथ ही निर्माण कार्य का निरीक्षण भी करती है।
- विद्यालय के लिए दान प्राप्त करना।
- ग्राम के शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- घर-घर सर्वेक्षण के माध्यम से सूक्ष्म आयोजन तैयार करना।

- नामांकन धारण तथा शाला त्याग की दर में कमी लाने के लिए कार्य करना।
- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए विद्यालय की सुविधाओं को उन्नत बनाना।

प्रारम्भिक शिक्षा में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, कार्य योजना 1986 के अनुसार अनौपचारिक शिक्षा, शिशु देखभाल, प्रौढ़ शिक्षा, विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा सहित प्रारम्भिक शिक्षा जैसे कार्यक्रमों के सफल कार्यान्वयन के लिए सबसे निचले स्तरों पर शिक्षा के कार्यक्रमों में जनता की सहभागिता तथा सहयोग अपेक्षित है। इसी प्रकार स्वैच्छिक संगठनों तथा सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ताओं का सहयोग भी व्यापक रूप से अपेक्षित है। सरकार और स्वैच्छिक एजेंसियों के बीच वास्तविक भागीदारी के सम्बन्ध में सुनिश्चित कदम उठायेगी। इसके साथ ही समय-समय पर उनसे आवश्यकतानुसार परामर्श भी प्राप्त किया जायेगा। कार्यक्रम के क्रियान्वयन में सहभागिता करने के लिए उन्हें अपेक्षित सुविधाएँ दी जायेंगी। 1990 से 1993 तक राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों में गैर सरकारी संगठनों द्वारा 9485 से अधिक अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र संचालित किये जा रहे थे। गैर सरकारी संगठन प्रारम्भिक शिक्षा कार्यक्रमों के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। निजी स्कूलों ने अपने प्रयासों से विद्यार्थियों की एक अच्छी संख्या को आकृष्ट कर रखा है।

सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों के सफल संचालन से साक्षरता की स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ है। आज आवश्यकता इस बात की भी है कि हमें स्वयं व्यक्तिगत स्तर पर जागरूक होना होगा एवं अपने कर्तव्यों का ईमानदारी पूर्वक निर्वाह करना होगा। तभी शिक्षा का समुचित रूप से विकास हो सकेगा एवं सरकार के प्रयासों का वास्तविक प्रतिरूप दिखाई देगा। सरकार ने शिक्षा के विकास के लिए जो मानक तय किये हैं हमें उन पर खरा उतरना होगा तभी शिक्षा समुचित रूप से जन-जन तक पहुँच पायेगी। प्रबुद्ध जनों ने देश के विकास के लिए जो स्वप्न देखे हैं वे तभी साकार हो पायेंगे।

बाल-अधिगम में निर्देशन एवं परामर्श का महत्व

बच्चे क्या पढ़ें अथवा बालकों के लिए उनकी क्षमता, प्रवृत्ति, संसाधन को दृष्टिगत रखते हुए क्या अधिगम करें- यह सुझाना बाल अधिगम कहलाता है। किसी समस्या या क्रिया का अधिगम तब किया जा सकता है जब उस समस्या के सम्बन्ध में जागरूक हो। किसी समस्या के अधिगम के लिए यह आवश्यक है कि अधिगमकर्ता के स्नायु इतने विकसित और परिपक्व हों कि वह समस्या का अधिगम कर सके। बाल शिक्षुओं के स्नायु और मस्तिष्क इतने परिपक्व नहीं होते हैं कि किसी समस्या का सरल विधि द्वारा अधिगम कर सकें। बाल शिक्षुओं में जागरूकता नहीं के बराबर पायी जाती है। कुछ अध्ययनों के द्वारा यह स्पष्ट हुआ है कि यद्यपि बाल अधिगम बहुत कठिन है, परन्तु फिर भी सहज एवं सरल परिस्थितियों में बाल शिक्षुओं को अधिगम कराया जा सकता है।

शिक्षा के उपक्रम का उद्देश्य बच्चों को अधिगम कराना (सीखना) है। सिखाने की इस प्रक्रिया को शिक्षण, अनुदेशन, निर्देशन, परामर्श आदि क्रिया-कलापों से पूरा किया जाता है। बालकों को पर्याप्त व शीघ्र अधिगम करने के लिए बच्चों को दिया जाने वाला अनुदेशन निर्देशन व परामर्श कहलाता है।

निर्देशन एवं परामर्श का महत्व-

शैक्षिक (अधिगम) के महत्व को बताते हुए विभिन्न विद्वानों ने अपना मत अग्र प्रकार से प्रकट किया है-

➤ **ब्रेबर के अनुसार-** “शैक्षिक निर्देशन चेतनामिभूत प्रयत्न है, जिनके द्वारा व्यक्ति के बौद्धिक विकास में सहायता प्रदान की जाती है। कोई भी चीज जो शिक्षण या सीखने के साथ की जाती है। शैक्षिक निर्देशन के अंतर्गत आती है।”

➤ **रूथ स्ट्रैंग के अनुसार-** “व्यक्ति को शैक्षिक निर्देशन प्रदान करने का उद्देश्य छात्र को उपयोगी कार्यक्रम को चुनने तथा उसमें प्रगति करने में सहायता देना है।”

बाल अधिगम में परामर्श-निर्देशन का क्षेत्र तथा आवश्यकता-

बालक-बालिकाओं को उचित मार्गदर्शन, परामर्श करना ही महत्वपूर्ण आवश्यकता है। शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श निम्नलिखित दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं-

- भावी शिक्षा कार्यक्रम के चयन में।
- अधिगम हेतु पाठ्य विषयों का चयन में
- विद्यालय में समायोजन करने हेतु।

- अधिगम प्रक्रिया में वांछित प्रगति करने हेतु।
- रोजगार के अवसर हेतु शिक्षण करने हेतु।
- अपव्यय व अवरोधन को रोकने हेतु।
- अधिगम में निर्मित ‘सीखने का पठार’ के न बनने देने तथा यदि बन गया है तो उसे समाप्त करने हेतु परामर्श तथा निर्देशन किया जाता है।
- अधिगम को स्थायी व व्यावहारिक स्वरूप (बोध स्तर) प्रदान करने हेतु।
- अधिगम करने की विधियाँ अपनाने हेतु परामर्श दिया जाता है।
- अधिगम में मन न लगने पर परामर्श व निर्देशन की व्यवस्था की जाती है।

बाल अधिगम में परामर्श के पात्र-

बाल अधिगम में कई तत्व काम करते हैं जैसे- बालक स्वयं, शिक्षक, पाठ्यक्रम वातावरण व अभिभावक या पारिवारिक आर्थिक स्थिति। बाल अधिगम को श्रेष्ठ स्थायी बनाने के लिए इसमें निम्नलिखित को भी परामर्श दिया जाता है-

- शिक्षकों को
- अभिभावकों को
- बच्चों को

बाल अधिगम को स्थाई बनाने हेतु उपर्युक्त लोगों को भी परामर्श दिया जाता है ताकि वे बाल अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकें। निर्देशन व परामर्श बाल अधिगम को स्थायी व सुगम बनाता है।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. विद्यार्थियों को दिये जाने वाले परामर्श की सर्वाधिक उपयोगिता यह है कि

- (a) इससे उनका ज्ञान बढ़ता है
- (b) उनका कौशल बढ़ता है
- (c) उनमें आत्मविश्वास की अभिवृद्धि होती है
- (d) वे दुनियादारी में सफल बन जाते हैं

2. एक छात्र को मार्गदर्शन देने के लिए एक अध्यापक को जानना अत्यावश्यक है

- (a) अधिगम की कठिनाई को
- (b) उसके व्यक्तित्व को
- (c) उसके घर के वातावरण को
- (d) उपरोक्त सभी

3. आपकी कक्षा की एक लड़की की रुचि स्पोर्ट्स में है और वह स्पोर्ट्स में अपने कैरियर को बढ़ाना चाहती है। आप उसे क्या परामर्श देंगे?

- (a) लड़कियों का खेल जगत में कोई भविष्य नहीं है
- (b) उसे अपनी आकांक्षा की पूर्ति हेतु कठोर परिश्रम करना चाहिए
- (c) उसे सिर्फ पढ़ाई में ध्यान लगाने को कहेंगे

(d) लड़कियाँ खेलों में उत्कृष्ट नहीं कर सकती क्योंकि वे शारीरिक रूप से कमजोर होती हैं

4. एक प्रमाणीकृत पठन परीक्षण लेने के लिए पाँचवीं कक्षा को प्रस्तुत करने में शिक्षक को अधिकाधिक परामर्श दिया जाता है कि

- (a) बच्चों को बोलना कि परीक्षण बहुत महत्वपूर्ण है तथा वह उसमें अच्छा प्रदर्शन करेगा
- (b) पूर्ववर्ती परीक्षा से प्रधान प्रश्नों को चिन्हित करना एवं छात्रों को उन्हें उत्तर देने की अनुमति देना
- (c) निम्न कोटि के पाठकों को प्रशिक्षण देना ताकि कक्षा के शेष बच्चे किसी भी तरीके से अच्छा करें।
- (d) परीक्षण में आने वाले समान प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए छात्रों को अभ्यास कराना

5. किसी व्यक्ति को अपने गुण मालूम करने तथा अपने स्थान खोजने में सहायता करने वाली प्रक्रिया को क्या कहते हैं?

- (a) शिक्षा
- (b) सीखना
- (c) निर्देशन
- (d) इनमें से कोई नहीं

6. एक अध्यापक उस बच्चे के साथ परामर्श करते हैं जिसकी निष्पत्त्यात्मक प्रगति एक दुर्घटना के पश्चात् अनुकूल नहीं है। निम्नलिखित में से कौन-सी प्रक्रिया विद्यालय में परामर्श के लिए सबसे बेहतर हो सकती है?
- (a) यह एक उपशामक उपाय है ताकि लोग अपने को आरामदायक महसूस कर सकें
 - (b) यह अपने विचारों द्वारा खोज करने हेतु लोगों में आत्मविश्वास का निर्माण करता है
 - (c) विद्यार्थियों को भविष्य के विकल्पों को चुनने हेतु यह एक अच्छा सम्भावित परामर्श है
 - (d) इस कार्य को केवल अनुभवी कुशल व्यावसायिक विशेषज्ञ से कराया जा सकता है
7. यदि एक विद्यार्थी विद्यालय में लगातार निम्नतर श्रेणी प्राप्त करता है, तो उसके अभिभावक को उसकी सहायता हेतु परामर्श दिया जा सकता है कि -
- (a) वह अध्यापकों की घनिष्ठ संगति में कार्य करें
 - (b) मोबाइल फोन, चलचित्र, कॉम्पिक्स, खेल हेतु अतिरिक्त पर रोक लगाएँ
 - (c) जो भलीभाँति शिक्षा नहीं ले पाए उनकी जीवन-सम्बन्धी कठिनाइयों को वर्णन करें
 - (d) घर पर उसको परिश्रमपूर्वक कार्य करने पर बल दें
8. परामर्श का उद्देश्य है—
- (a) बच्चों को समझना
 - (b) बच्चे की कमियों का कारण पता करना
 - (c) बच्चे को समायोजन में सहायता प्रदान करना
 - (d) उपर्युक्त सभी
9. परामर्श में सम्मिलित नहीं है—
- (a) बच्चे को धैर्यपूर्वक सुनना
 - (b) बच्चे से मित्रतापूर्वक बातचीत करना
 - (c) बच्चे के दृष्टिकोण को समझना
 - (d) बच्चे को अनुशासन में रखना
10. एक अध्यापक उस बच्चे के साथ परामर्श करते हैं जिसकी निष्पत्त्यात्मक प्रगति एक दुर्घटना के पश्चात् अनुकूल नहीं है। निम्नलिखित में से कौन-सी प्रक्रिया विद्यालय में परामर्श के लिए सबसे बेहतर हो सकती है?
- (a) यह एक उपशामक उपाय है ताकि लोग अपने को आरामदायक महसूस कर सकें
 - (b) वह अपने विचारों द्वारा खोज करने हेतु लोगों में आत्मविश्वास का निर्माण करता है
 - (c) विद्यार्थियों को भविष्य के विकल्पों को चुनने हेतु यह एक अच्छा सम्भावित परामर्श है
 - (d) इस कार्य को केवल अनुभवी कुशल व्यावसायिक विशेषज्ञ से कराया जा सकता है
11. एक बच्चा प्रायः अपने सहपाठियों के साथ झगड़ता है, आप क्या करेंगे?
- (a) आप बच्चे को सजा देंगे
 - (b) आप बच्चे को विद्यालय से निकाल देंगे
 - (c) आप कारण पता लगाने का प्रयास करेंगे तथा परामर्श देंगे
 - (d) आप उसके माता-पिता से शिकायत करेंगे
12. कक्षा 4 का एक बच्चा सदैव चिन्तित और कुण्ठित रहता है, आप
- (a) उसके अभिभावक से शिकायत करेंगे
 - (b) मनोचिकित्सक के पास ले जाएँगे
 - (c) स्वयं परामर्शदाता की भूमिका का निर्वाह करेंगे
 - (d) उसे उसके भाग्य पर छोड़ देंगे
13. मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद की स्थापना किस वर्ष की गयी?
- (a) सन् 1947 में
 - (b) सन् 1948 में
 - (c) सन् 1949 में
 - (d) सन् 1950 में
14. मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद किस संस्था के एक इकाई के रूप में कार्य करता है?
- (a) NCERT दिल्ली
 - (b) SEERT लखनऊ
 - (c) NCTE जयपुर
 - (d) डायट
15. मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद के प्रमुख कार्य हैं—
- (a) निर्देशन
 - (b) प्रशिक्षण
 - (c) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन
 - (d) इनमें से सभी
16. मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र की स्थापना क्यों की गयी?
- (a) मनोविज्ञान के क्षेत्र में शोध करने के लिए
 - (b) मनोविज्ञान विषय के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए
 - (c) मनोविज्ञानशाला की सेवाओं के विस्तार के लिए
 - (d) इनमें से सभी
17. मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र के प्रमुख कार्य हैं—
- (a) छात्रों को व्यवसाय चुनने में परामर्श देना
 - (b) मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश इलाहाबाद के सेवाओं को विस्तारित करना
 - (c) छात्रों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं के निवारण हेतु परामर्श देना
 - (d) इनमें से सभी

18. जिला चिकित्सालय के प्रमुख कार्य होते हैं—
 (a) रोगों का निदान करना (b) उपचार करना
 (c) परामर्श देना (d) उपरोक्त सभी
19. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में बच्चों को परामर्श देने के लिए किसकी नियुक्ति की जाती है?
 (a) मनोविज्ञानशाला के मनोवैज्ञानिक की
 (b) डायट मॉटर की
 (c) (i) और (ii) दोनों की
 (d) इनमें से कोई नहीं
20. पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तंत्र के प्रमुख कार्य हैं—
 (a) विद्यालयी प्रशासन की देखभाल करना
 (b) विद्यालय एवं अभिभावक के मध्य सेतु के रूप में कार्य करना
 (c) बालकों को परामर्श एवं निर्देशन प्रदान करना
 (d) उपर्युक्त सभी
21. कौन-सी समुदाय एवं विद्यालय की सहयोगी समितियों में से नहीं है—
 (a) रेखा संगठन
 (b) मातृ संगठन
 (c) कर्मचारी संगठन
 (d) रेखा कर्मचारी मिश्रित संगठन
22. रेखा संगठन क्या है?
 (a) माताओं का संगठन (b) महिलाओं का संगठन
 (c) बालिकाओं का संगठन (d) इनमें से कोई नहीं
23. उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा अधिनियम कब अस्तित्व में आया?
 (a) 1977 (b) 1972
 (c) 1986 (d) 1964
24. स्थानीय स्तर पर प्राथमिक विद्यालय किसके अधीन कार्य करता है?
 (a) ग्राम पंचायत (b) क्षेत्र पंचायत
 (c) जिला पंचायत (d) इनमें से कोई नहीं
25. प्रारम्भिक शिक्षा में स्थानीय निकायों को सम्मिलित करने की आवश्यकता क्यों अनुभव की गयी?
 (a) प्रारम्भिक शिक्षा में जन सहयोग को बढ़ावा देने के लिए
 (b) शिक्षा की गुणवत्ता तथा उपयोगिता में सुधार करने के लिए
 (c) विद्यालय में अनुपस्थिति तथा कार्यविहीनता को कम करने के लिए
 (d) उपर्युक्त सभी
26. राष्ट्रीय शिक्षा नीति किस पर बल नहीं देता है?
 (a) प्रबन्ध के केन्द्रीकरण करने पर
 (b) जिला शिक्षा बोर्डों, जिला शिक्षा तथा प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना पर
 (c) स्वायत्तता की व्यवस्था पर
 (d) संस्थाओं, पद्धतियों तथा शिक्षकों के दायित्व निश्चित करने पर
27. ग्राम शिक्षा समिति का गठन कौन करता है?
 (a) ग्राम पंचायतें
 (b) ग्राम पंचायतें और विद्यालय प्रशासन दोनों
 (c) विद्यालय प्रशासन
 (d) बेसिक शिक्षा अधिकारी
28. ग्राम शिक्षा समिति के प्रमुख कार्य हैं—
 (a) अभिभावकों को अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित करना
 (b) प्रारम्भिक बाल देख-भाल तथा शिक्षा के प्रबन्धन में सहायता प्रदान करना
 (c) समुदाय को गतिशील बनाना
 (d) उपर्युक्त सभी
29. बाल अधिगम में निर्देशन एवं परामर्श का महत्व है—
 (a) भावी शिक्षा कार्यक्रम के चयन में
 (b) विद्यालय में समायोजन करने में
 (c) रोजगार के अवसर हेतु शिक्षण करने में
 (d) उपरोक्त सभी

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (c) | 2. (d) | 3. (b) | 4. (d) | 5. (c) | 6. (b) | 7. (a) | 8. (d) | 9. (d) |
| 10. (b) | 11. (c) | 12. (c) | 13. (a) | 14. (b) | 15. (d) | 16. (c) | 17. (d) | 18. (d) |
| 19. (b) | 20. (d) | 21. (b) | 22. (d) | 23. (b) | 24. (a) | 25. (d) | 26. (a) | 27. (a) |
| 28. (d) | 29. (d) | | | | | | | |

अधिगम और अध्यापन

9.

बालक किस प्रकार सोचते हैं और सीखते हैं;
बालक विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त
करने में कैसे और क्यों असफल होते हैं?

बालक का सोचना या चिंतन

चिंतन का अर्थ एवं परिभाषा— चिंतन एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है। इसमें व्यक्ति नयी परिस्थिति का सामना करने अथवा किसी समस्या का समाधान करने में अपने पूर्व अनुभवों का प्रयोग करता है। चिंतन की प्रक्रिया में संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, प्रत्यय-निर्माण, पूर्व अधिगम स्मृति आदि सम्मिलित रहते हैं।

➤ **रॉस के अनुसार**— “चिंतन मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पहलू है या मन की बातों से सम्बन्धित मानसिक क्रिया है।”

➤ **वेल्लेन्टाइन के अनुसार**— “चिंतन शब्द का प्रयोग उस क्रिया के लिए करना उचित होता है, जिसमें शृंखलाबद्ध विचार किसी लक्ष्य अथवा उद्देश्य की ओर प्रवाहित होते हैं।”

चिंतन की विशेषताएँ—

- चिंतन की प्रक्रिया किसी समस्या, कठिनाई या बाधा के उत्पन्न होने से प्रारम्भ होती है।
- चिंतन के द्वारा व्यक्ति इन समस्याओं के उपाय सोचता है फिर इन उपायों का प्रयोग कर समस्या का समाधान करता है।
- चिंतन की प्रक्रिया स्थूल से अमूर्त की ओर तथा सरल के कठिन की ओर होती है।
- चिंतन की प्रक्रिया में संकेतों, भाषा, प्रतिमाओं, विचारों, सम्प्रत्ययों तथा अमूर्त सम्बन्धों आदि का विशेष योगदान रहता है।
- चिंतन सदैव उद्देश्यपूर्ण होता है।
- चिंतन में व्यक्तिगत भिन्नता पायी जाती है।
- चिंतन प्रक्रिया वातावरण के साथ अंतर्क्रिया का संज्ञानात्मक पक्ष है।
- चिंतन प्रक्रिया व्यक्ति के व्यवहार के सभी पक्षों यथा-ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक, से किसी न किसी रूप से सम्बन्धित होती है।

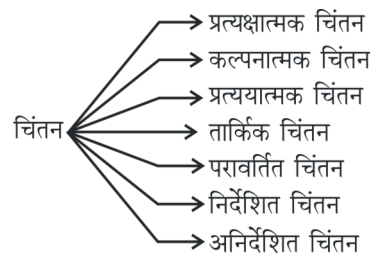
चिंतन की प्रक्रिया—

चिंतन की प्रक्रिया निम्न सोपानों के अंतर्गत सम्पन्न होती है—

1. लक्ष्य की ओर उन्मुख होना
2. लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयास करना

3. पूर्व अनुभवों का स्मरण करना
4. पूर्व अनुभवों को वर्तमान समस्या से संयोजित करना
5. समस्या की सार्थकता देखना

चिंतन के प्रकार—



1. **प्रत्यक्षात्मक चिंतन**— इस चिंतन को मूर्त चिंतन भी कहते हैं। यह चिंतन पूर्व अवलोकित या प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित घटना पर आधारित होती है। यह निम्न प्रकार का चिंतन होता है।
2. **कल्पनात्मक चिंतन**— इसे सृजनात्मक चिंतन भी कहा जाता है। इस प्रकार के चिंतन का आधार मानसिक प्रतिमाएँ होती हैं। इस प्रकार के चिंतन में कोई वस्तु या परिस्थिति प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित नहीं होती हैं।
3. **प्रत्ययात्मक चिंतन**— इस चिंतन को अमूर्त चिंतन भी कहते हैं। इस प्रकार के चिंतन में पूर्व निर्मित सम्प्रत्ययों के आधार पर प्राणी चिंतन करता है। यह चिंतन का सर्वोच्च रूप है। इस प्रकार के चिंतन में सामान्यीकृत विचार, भाषा, प्रतीक तथा संकेतों का प्रयोग किया जाता है।
4. **तार्किक चिंतन**— इस प्रकार के चिंतन में व्यक्ति क्रमबद्ध रूप से चिंतन करता है। इसके द्वारा व्यक्ति अपनी समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास करता है।
5. **परावर्तित चिंतन**— इस प्रकार के चिंतन में पूर्व अनुभवों का पुनर्गठन करके किसी समस्या के समाधान की नूतन विधि को प्रस्तुत किया जाता है।
6. **निर्देशित चिंतन**— इस प्रकार के चिंतन में व्यक्ति किसी लक्ष्य की ओर निर्देशित होकर चिंतन करता है।

7. **अनिर्देशित चिंतन**— इस प्रकार का चिंतन उद्देश्यहीन होता है। इस प्रकार के चिंतन में दिवा स्वप्न, कल्पना की उड़ान जैसे चिंतन को शामिल किया जाता है। इसके अतिरिक्त चिंतन को अन्य प्रकारों में भी विभाजित किया जा सकता है—

1. **यथार्थवादी चिंतन**— इस प्रकार के चिंतन का सम्बन्ध वास्तविकता से होता है और उसके आधार पर व्यक्ति अपनी समस्या का समाधान करता है। यथार्थवादी चिंतन को भी तीन प्रकारों में बाँटा जा सकता है—

(i) **अभिसारी चिंतन**— इस प्रकार के चिंतन में व्यक्ति अपनी समस्या के समाधान में अपने अनुभवों का उपयोग करते हुए चिंतन करता है।

(ii) **अपसारी चिंतन**— इस प्रकार के चिंतन में व्यक्ति कुछ नये तथ्यों एवं विचारों का सृजन करते हुए चिंतन करता है।

(iii) **आलोचनात्मक चिंतन**— इस प्रकार के चिंतन में व्यक्ति किसी घटना, विषयवस्तु तथा तथ्यों को स्वीकार करने से पहले इनके गुणों और दोषों के बारे में चिंतन करता है तथा आलोचनात्मक विचार मंथन द्वारा इनको परखता है।

2. **स्वली चिंतन**— इस प्रकार के चिंतन में व्यक्ति अपने काल्पनिक विचारों से अपनी आवश्यकता एवं इच्छाओं की अभिव्यक्ति करता है।

चिंतन की सामग्री

1. पदार्थ
2. प्रतिमा
3. सम्प्रत्यय
4. संकेत तथा प्रतीक

बालक किस प्रकार सीखते हैं

बालक कई प्रकार के विधियों द्वारा सीखते हैं। प्रारम्भ में अनुकरण द्वारा सीखते हैं, फिर क्रिया द्वारा सीखते हैं और इस प्रकार उम्र बढ़ने के साथ-साथ उनके सोचने व सीखने के तरीकों में भी परिवर्तन होता जाता है। इस प्रकार बालक द्वारा सीखने की निम्न विधियों का प्रयोग किया जाता है—

अनुकरण द्वारा सीखना— जन्म के बाद से ही बालक अपने माता-पिता, भाई-बहन या परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहारों का अवलोकन करता है और उन व्यवहारों को अपने व्यवहार में अनुकरण करता है।

क्रिया द्वारा सीखना— बालक जिस कार्य को स्वयं करते हैं, उसे वह जल्दी सीखते हैं। कारण है कि उसे करने में वे उसके उद्देश्य का निर्माण करते हैं, उसको करने की योजना बनाते हैं और योजना को पूर्ण करते हैं। इस प्रकार सीखने में सक्रिय सहभागिता करते हैं, और सीखते हैं।

निरीक्षण द्वारा सीखना— बालक कुछ व्यवहारों या कार्यों को निरीक्षण द्वारा सीखते हैं। निरीक्षण का अर्थ है किसी वस्तु या कार्य को भलि-भाँति समझना। इस प्रकार वे कार्यों या व्यवहारों को भली-भाँति समझकर सीखते हैं।

सामूहिक विधियों द्वारा सीखना— बालक बहुत से कार्य-व्यवहार अपने समूह द्वारा सीखते हैं। वे अपने मित्र-मण्डली, या विद्यालय में कराये जा रहे सामूहिक कार्यों जैसे- वाद-विवाद, विचार गोष्ठी, परियोजना कार्य आदि के द्वारा सामाजिक कौशल, सम्प्रेषण कौशल, नैतिकता आदि सीखते हैं।

परीक्षण द्वारा सीखना— बालक चंचल स्वभाव के होते हैं। वे तरह-तरह के प्रयोग करते रहते हैं, जैसे- खिलौनों को तोड़कर उसके अंदर के चीजों को देखना, विद्यालय के प्रयोगात्मक क्रियाकलापों को करना आदि। इस प्रकार वे परीक्षण और प्रयोगों द्वारा कुछ न कुछ सीखते रहते हैं।

इसी प्रकार अन्य क्रिया कलापों के द्वारा बालक कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। सीखने के रचनावादी सिद्धांत का भी यही मानना है कि बच्चे ज्ञान का स्वयं निर्माता होते हैं। वे अपने अनुभवों से सीखते हैं। वे किसी बाह्य दबावों या उद्दीपकों के प्रभाव की अपेक्षा आंतरिक प्रेरणा के द्वारा सीखते हैं।

बच्चे विद्यालयी उपलब्धि में क्यों और कैसे असफल होते हैं?

विद्यालय औपचारिक शिक्षा का प्रमुख साधन है, विद्यालय में बच्चों को पूर्व नियोजित व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षा प्रदान करनी होती है। यह शिक्षा वैयक्तिक विभिन्नता से युक्त सभी छात्रों की आवश्यकताओं, रुचियों, मनोवृत्तियों, योग्यताओं, क्षमताओं, बुद्धि आदि के अनुरूप न होने के कारण उनका समुचित विकास नहीं कर पाती है, जिससे छात्र विद्यालयी प्रदर्शन में असफल होने लगते हैं परिणामस्वरूप अपव्यय एवं अवरोधन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। बच्चों के विद्यालयी उपलब्धि में असफलता के अन्य कई कारण हो सकते हैं जो निम्नलिखित हैं—

1. **विद्यालय का वातावरण**— विद्यालय का वातावरण प्रजातांत्रिक, स्नेहपूर्ण, भयमुक्त तथा सृजनात्मक होना चाहिए जहाँ बच्चे अपने विचारों, भावनाओं, प्रश्नों आदि को स्वतंत्रता पूर्वक अभिव्यक्त कर सकें। यदि विद्यालय का वातावरण सत्तात्मक और दोषयुक्त होता है तो विद्यार्थियों का प्रदर्शन गिरता चला जाता है।

2. **पारिवारिक वातावरण**— पारिवारिक वातावरण बच्चों के सफलता या असफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि परिवार में झगड़ा, विखण्डन, निम्न आर्थिक स्थिति आदि अवगुण विद्यमान होते हैं तो बच्चों का विकास सही से नहीं हो पाता है और वे असफल होते हैं।

3. **अभ्यास की कमी**— सीखने की प्रक्रिया में अभ्यास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि बच्चे सीखी गयी बातों को

- अभ्यास में नहीं लाते हैं तो वे उसे भूल जाते हैं परिणामस्वरूप वे अन्य बालकों से पिछड़ जाते हैं।
4. **रुचि एवं जिज्ञासा की कमी**— कक्षा-शिक्षण में जब बच्चे रुचि नहीं लेते हैं तो वे ध्यान से अधिगम नहीं करते हैं परिणाम होता है कि वे असफल होने लगते हैं। साथ ही यदि शिक्षण विधि उबाऊ और निरस होती है तथा बच्चों में रुचि और जिज्ञासा नहीं उत्पन्न कर पाती है तब भी बच्चे असफल होते हैं।
 5. **स्वास्थ्य**— स्वास्थ्य भी बच्चों की असफलता में एक प्रमुख कारण होता है। शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य यदि ठीक नहीं होता है तो बच्चे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में रुचि नहीं लेते हैं परिणामस्वरूप वे विद्यालय के प्रदर्शन में असफल होते हैं।
 6. **बौद्धिक योग्यताएँ**— बच्चों को जो बातें कक्षा शिक्षण में सिखायी जा रही हैं वे उनकी बौद्धिक योग्यता के अनुरूप नहीं होने पर बच्चे नहीं सीख पाते हैं परिणामस्वरूप वे कक्षा प्रदर्श में असफल होते हैं।
 7. **तत्परता की कमी**— यदि बच्चे कक्षा में सिखाई जा रही बातों को सीखने के प्रति तत्पर नहीं रहते हैं तो वे ठीक प्रकार से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भाग नहीं लेते हैं, परिणामस्वरूप विद्यालय प्रदर्शन में असफल होते हैं।
 8. **कक्षा-कक्ष परिवेश**— कक्षा-कक्ष का ऐसा परिवेश जो छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है वही परिवेश छात्रों के अधिगम में सहायक होता है, कक्षा-कक्ष का अनुपयुक्त परिवेश भी बच्चों के कमजोर प्रदर्शन के लिए जिम्मेदार होता है।
 9. **शिक्षण विधियाँ एवं युक्तियाँ**— अनुपयुक्त, प्रभावहीन शिक्षण विधियों के प्रयोग से छात्रों की उपलब्धि पर प्रतिकूल असर पड़ता है फलतः वे विद्यालयी प्रदर्शन में असफल होते हैं और उनकी उपलब्धि का स्तर गिरता जाता है।
 10. **बच्चों की कमजोरियों, कठिनाइयों एवं समस्याओं का समुचित निवारण न होना**— शिक्षण अधिगम में यह आवश्यक है कि बच्चों की कमजोरियों, कठिनाइयों एवं समस्याओं का समुचित निदान एवं उपचार किया जाय। इसके अभाव में बच्चों की सफलता, उनका प्रदर्शन प्रभावित होता है।
 11. **उचित प्रेरणा एवं मार्गदर्शन का अभाव**— उचित प्रेरणा एवं मार्गदर्शन के अभाव में भी बच्चे विद्यालयी प्रदर्शन में असफल होते हैं। अतः आवश्यक है कि शिक्षक द्वारा समय-समय पर उनको अधिगम के लिए प्रेरित करे तथा सही दिशा में मार्गदर्शन करे।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **शिक्षकों को शिक्षार्थियों को शारीरिक दण्ड नहीं देना चाहिए क्योंकि**
 - (a) यह माता-पिता को बहुत गुस्सा दिलाता है
 - (b) यह जोखिम भरा है
 - (c) यह शिक्षार्थियों में तनाव और डर पैदा करता है
 - (d) यह शिक्षकों के लिए केवल एक भावनात्मक रिहाई है
2. **यदि एक शिक्षार्थी कक्षा में निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल होता है, तो यह प्रदर्शित करता है**
 - (a) शिक्षार्थी की असफलता
 - (b) कक्षा की असफलता
 - (c) विद्यालय की असफलता
 - (d) माता-पिता की असफलता
3. **निम्न में से कौन-सा छात्रों के पलायन का कारण नहीं होता?**
 - (a) अरुचिकर विद्यालयी कार्यक्रम
 - (b) अध्यापक का पक्षपातपूर्ण व्यवहार
 - (c) बहुत अधिक गृह कार्य
 - (d) बहुत अधिक छुट्टियाँ
4. **बच्चा किस प्रकार सीखता है?**
 - (a) पुस्तकें पढ़कर
 - (b) परिचर्चा द्वारा
 - (c) प्रश्न पूछकर
 - (d) कई प्रकार से
5. **इन कथनों में से आप किससे सहमत हैं?**
 - (a) एक बच्चा अनुत्तीर्ण होता है क्योंकि सरकार विद्यालयों में पर्याप्त प्रौद्योगिकीय संसाधन प्रदान नहीं कर रही है
 - (b) एक बच्चे की असफलता मुख्य रूप से माता-पिता की शिक्षा तथा आर्थिक स्तर में कमी के कारण है
 - (c) एक बच्चे की असफलता के लिए वंशानुक्रम घटकों को प्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार ठहराया जा सकता है
 - (d) एक बच्चे की असफलता व्यवस्था तथा बच्चे के प्रति प्रतिक्रिया करने में इसकी असमर्थता का एक प्रतिबिम्ब है
6. **कक्षा में पलायन करने वाले विद्यार्थियों के प्रति आपका व्यवहार कैसा होगा?**
 - (a) दमनात्मक
 - (b) प्रशंसात्मक
 - (c) सहानुभूतिपूर्वक
 - (d) निदानात्मक
7. **बच्चे**
 - (a) चिन्तन में वयस्कों की भाँति ही होते हैं और ज्यों-ज्यों वे बड़े होते हैं उनके चिन्तन में गुणात्मक वृद्धि होती है
 - (b) खाली बर्तन के समान होते हैं, जिसमें बड़ों के द्वारा दिया गया ज्ञान भरा जाता है

- (c) निष्क्रिय जीव होते हैं जो प्रदत्त सूचना को ज्यों-का-त्यों प्रतिलिपि के रूप में प्रस्तुत कर देते हैं
- (d) जिज्ञासु प्राणी होते हैं जो अपने चारों ओर के जगत को खोजने के लिए अपने ही तर्कों और क्षमताओं का उपयोग करते हैं
- 8. विद्यालय से विद्यार्थियों को भाग जाने का कारण है**
- (a) कक्षा शिक्षण में रुचि का अभाव
- (b) विद्यार्थियों में अध्ययन में रुचि का अभाव
- (c) विद्यार्थियों को दण्ड नहीं देना
- (d) समस्या के प्रति शिक्षकों की निर्दय अभिवृत्ति
- 9. विद्यालयों में विद्यार्थियों की असफलता के बारे में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं?**
- A. विशेष जातियों और समुदायों से संबंधित विद्यार्थी असफल होते हैं क्योंकि उनमें योग्यता नहीं होती।
- B. विद्यार्थी विद्यालयों में असफल होते हैं क्योंकि उन्हें अधिगम के लिए उपयुक्त पुरस्कार नहीं दिए जाते।
- C. विद्यार्थी असफल होते हैं क्योंकि शिक्षण उस तरीके से नहीं किया जाता जो उनके लिए सार्थक हो।
- D. विद्यार्थी असफल होते हैं क्योंकि विद्यालय व्यवस्था प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकताओं और अभिरुचियों का ध्यान नहीं रखती।
- (a) B और D (b) C और D
- (c) A और B (d) B और C
- 10. बच्चे किस प्रकार से सीखते हैं? नीचे दिए गए कथनों में से कौन-सा इस प्रश्न के विषय में सही नहीं है?**
- (a) बच्चे केवल कक्षा में सीखते हैं।
- (b) बच्चे तब सीखते हैं जब वे संज्ञानात्मक रूप से तैयार होते हैं।
- (c) बच्चे अनेकों प्रकार से सीखते हैं।
- (d) बच्चे सीखते हैं क्योंकि वे स्वाभाविक रूप से प्रेरित होते हैं।
- 11. विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों के नियंत्रण की दृष्टि से सरकारी संगठनों द्वारा संस्था के स्तर पर विभिन्न उपाय किए गए हैं। निम्नलिखित में से कौन-सा कारण संस्थानिक स्तर से जुड़ा है जिसके कारण बच्चे विद्यालय छोड़ देते हैं?**
- (a) विद्यालय में श्यामपट्ट और शौचालय जैसी आधारभूत सेवाओं का अभाव होना
- (b) अध्यापकों का समुपयुक्त योग्यता वाला न होना तथा उन्हें कम आय देना
- (c) बच्चों से भली-भाँति व्यवहार करने की आवश्यकता के प्रति अध्यापकों का संवेदनशील न होना
- (d) जो बच्चे अनिवार्य पाठ्यचर्चा को स्वीकार नहीं कर पाते उनके लिए विकल्पात्मक पाठ्यचर्चा का न होना
- 12. कक्षा-परीक्षणों में अच्छा प्रदर्शन करने में एक बच्चे की असफलता हमें इस विश्वास की तरफ ले जाती है कि –**
- (a) आकलन वस्तुनिष्ठ है तथा असफलताओं को स्पष्ट रूप से पहचानने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है।
- (b) पाठ्यक्रम, शिक्षण-पद्धति तथा आकलन प्रक्रियाओं पर विचार करने की आवश्यकता है।
- (c) कुछ बच्चों को अनुत्तीर्ण होना ही है, चाहे व्यवस्था उन पर कितना भी अधिक प्रयास करे।
- (d) बच्चे कुछ निश्चित सक्षमताओं और कमियों के साथ पैदा होते हैं।
- 13. जब बच्चा 'फेल' होता है, तो इसका तात्पर्य है कि–**
- (a) बच्चे ने उत्तरों को सही तरीके से याद नहीं किया है।
- (b) बच्चे को प्राइवेट ट्यूशन लेनी चाहिए थी।
- (c) व्यवस्था फेल हुई है।
- (d) बच्चा पढ़ाई के लिए योग्य नहीं है।
- 14. कक्षा परीक्षणों में अच्छा प्रदर्शन करने में एक बच्चे की असफलता हमें इस विश्वास की तरफ ले जाती है कि**
- (a) आकलन वस्तुनिष्ठ है तथा असफलताओं को स्पष्ट रूप से पहचानने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है
- (b) बच्चे कुछ निश्चित सक्षमताओं और कमियों के साथ पैदा होते हैं
- (c) पाठ्यक्रम, शिक्षण-पद्धति तथा आकलन प्रक्रियाओं पर विचार करने की आवश्यकता है
- (d) कुछ बच्चों को अनुत्तीर्ण होना ही है, चाहे व्यवस्था उन पर कितना भी अधिक प्रयास करें
- 15. दिए गए वाक्य को पूरा करने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सर्वाधिक उचित विकल्प होगा?**
- जब बच्चे उन गतिविधियों में शामिल होते हैं जो होती है, तब वे जल्दी करते हैं।
- (a) केवल उनके कक्षा-कार्य से संबंधित; प्रत्यास्मरण
- (b) सांस्कृतिक रूप से निष्पक्षीय; स्मरण
- (c) वास्तविक जीवन में उपयोगी; सीखा
- (d) कक्षा-कक्ष में उपयोगी; विस्मरण
- 16. इरफ़ान खिलौनों को तोड़ता है और उसके पुर्जों को देखने के लिए उन्हें अलग-अलग कर देता है। आप क्या करेंगे?**
- (a) उसके जिज्ञासु स्वभाव को प्रोत्साहित करेंगे और उसकी ऊर्जा को सही दिशा में संचारित करेंगे
- (b) उसे समझाएंगे कि खिलौनों को कभी तोड़ना नहीं चाहिए
- (c) इरफ़ान को खिलौनों से कभी भी नहीं खेलने देंगे
- (d) उस पर हमेशा नजर रखेंगे

17. बच्चों में सीखने और सुनने के लिए अधिगम-योग्य वातावरण के लिए निम्नलिखित में से कौन उपयुक्त है?
 (a) शिक्षार्थियों को यह छूट देना कि क्या सीखना है और कैसे सीखना है?
 (b) एक लम्बे समय के लिए निष्क्रिय रूप से सुनना
 (c) निरन्तर गृहकार्य देते रहना
 (d) सीखने वाले द्वारा व्यक्तिगत कार्य करना
18. निम्न में से कौन-सा चिन्तन की प्रक्रिया में सबसे कम महत्वपूर्ण है?
 (a) चित्र (b) प्रतीक एवं चिह्न
 (c) मांसपेशीय क्रियायें (d) भाषा।
19. प्रवाहपूर्णता, व्याख्या, मौलिकता और लचीलापन के साथ सम्बन्धित तत्व है।
 (a) प्रतिभा (b) गुण
 (c) अपसारी चिन्तन (d) त्वरण
20. चिन्तन अनिवार्य रूप से है एक
 (a) संज्ञानात्मक गतिविधि (b) मनोगतिक प्रक्रिया
 (c) मनोवैज्ञानिक परिघटना (d) भावात्मक व्यवहार
21. 'चिन्तन संज्ञानात्मक पक्ष में एक मानसिक क्रिया है।' यह कथन दिया गया है
 (a) डिवी द्वारा (b) गिल्फर्ड द्वारा
 (c) क्रूज द्वारा (d) रॉस द्वारा
22. एक विद्यार्थी एक प्रकरण में मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित करती है, उसका एक दृश्यात्मक प्रस्तुतीकरण बनाती है तथा प्रकरण की समाप्ति पर अपने दिमाग में उत्पन्न होने वाले प्रश्नों को प्रस्तुत करती है। वह –
 (a) विचारों के संघटन के द्वारा अपने चिन्तन को निर्देशित करने की कोशिश कर रही है।
 (b) अनुरक्षण पूर्वाभ्यास की रणनीति का प्रयोग करने की कोशिश कर रही है।
 (c) प्रेक्षण अधिगम सुनिश्चित कर रही है।
 (d) केन्द्र-बिन्दु की विधि का प्रयोग करने की कोशिश कर रही है।
23. 'ऑउट ऑफ-द-बॉक्स' चिन्तन किससे सम्बन्धित है?
 (a) अनुकूल चिन्तन
 (b) स्मृति-आधारित चिन्तन
 (c) अपसारी चिन्तन
 (d) अभिसारी चिन्तन
24. विभिन्न मुद्दों और विमर्शों पर उनके लिए कारण प्रस्तुत करते हुए बच्चों को अपनी व्यक्तिगत राय को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करने वाले प्रश्न किसको बढ़ावा देते हैं?
 (a) बच्चों का मानकीकृत आकलन
 (b) विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक चिन्तन
 (c) अभिसारी चिन्तन
 (d) जानकारी का पुनःस्मरण
25. "चिन्तन मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पहलू है।" चिन्तन की यह परिभाषा किसने दी?
 (a) वॉरेन (b) रॉस
 (c) वेलेण्टाइन (d) स्किनर
26. मान लीजिए आप विद्यालय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष हैं, आप अपने अधिकार-क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले विद्यालयों की शिक्षा की संपूर्ण गुणवत्ता को सुधारने के लिए क्या योजना बनाएंगे। इस प्रकार का प्रश्न का एक उदाहरण है।
 (a) निम्न स्तरीय अपसारी (b) उच्च स्तरीय अभिसारी
 (c) उच्च स्तरीय अपसारी (d) निम्न स्तरीय अभिसारी
27. चिन्तन अनिवार्य रूप से है एक –
 (a) संज्ञानात्मक गतिविधि
 (b) मनोगतिक प्रक्रिया
 (c) मनोवैज्ञानिक परिघटना
 (d) भावात्मक व्यवहार
28. बालक का चिन्तन किसके द्वारा प्रदर्शित नहीं होता?
 (a) आत्मकेन्द्रिकता (b) सजीवतावाद
 (c) यथार्थवाद (d) वैयक्तिकवाद
29. बच्चों में ज्ञान की रचना करने और अर्थ का निर्माण करने की क्षमता होती है। इस परिप्रेक्ष्य में एक शिक्षक की भूमिका है—
 (a) तालमेल बैठाने वाले की
 (b) संप्रेषक और व्याख्याता की
 (c) सुगमकर्ता की
 (d) निर्देशक की

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (c) | 2. (c) | 3. (d) | 4. (d) | 5. (d) | 6. (d) | 7. (d) | 8. (d) | 9. (b) |
| 10. (a) | 11. (d) | 12. (b) | 13. (c) | 14. (c) | 15. (c) | 16. (a) | 17. (a) | 18. (c) |
| 19. (c) | 20. (a) | 21. (d) | 22. (a) | 23. (c) | 24. (b) | 25. (b) | 26. (c) | 27. (a) |
| 28. (d) | 29. (c) | | | | | | | |

10.

अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ : बालकों की अधिगम कार्यनीतियाँ, सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम, अधिगम के सामाजिक संदर्भ

अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ

शिक्षण

शिक्षण से तात्पर्य सिखाने की क्रिया से होता है। शिक्षण के अंतर्गत अध्यापक विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन व परिमार्जन करने का प्रयास करता है।

➤ **एच सी मौरीसन के अनुसार**— “शिक्षण अधिक परिपक्व व्यक्तित्व तथा कम परिपक्व व्यक्तित्व के बीच एक अंतरंग सम्बन्ध है, जिसे बाद वाले की शिक्षा को अग्रसर करने के लिए प्रारूपित किया जाता है।”

➤ **बी.ओ. स्मिथ के अनुसार**— “शिक्षण अधिगम को कराने के निमित्त क्रियाओं की एक प्रणाली है।”

इन परिभाषाओं से चार बातें स्पष्ट होती हैं—

- शिक्षण एक क्रमिक, व्यवस्थित व सप्रयास प्रक्रिया है।
- शिक्षण से अपेक्षित परिणाम पूर्व निश्चित व सुपरिभाषित होते हैं।
- शिक्षण का सम्बन्ध विद्यार्थी के व्यवहार परिवर्तन से होता है।
- शिक्षण प्रक्रिया शिक्षा का एक प्रमुख अंग है।

शिक्षण की अवस्थाएँ—

शिक्षण की मुख्यतः तीन अवस्थाएँ होती हैं—

- पूर्व—सक्रियात्मक अवस्था
- अंतः सक्रियात्मक अवस्था
- पश्च—सक्रियात्मक अवस्था

(i) **पूर्व—सक्रियात्मक अवस्था**— इसके अंतर्गत शिक्षक शिक्षण का उद्देश्य निर्धारित करता है, पाठ्यवस्तु का चयन करता है, उद्देश्य प्राप्ति में सहायक शिक्षण सामग्री का चयन करता है तथा अंत में पाठ योजना का निर्माण करता है।

(ii) **अंतः सक्रियात्मक अवस्था**— इसके अंतर्गत शिक्षक पाठ्यवस्तु को प्रस्तुत करता है। पाठ्यवस्तु को कक्षा में प्रस्तुत करने के लिए इन सोपानों का प्रयोग करता है— प्रस्तुतीकरण, प्रश्नोत्तर, श्यामपट्ट कार्य प्रदर्शन, मूल्यांकन प्रश्न तथा पुनर्बलन।

(iii) **पश्च—सक्रियात्मक अवस्था**— इसके अंतर्गत शिक्षक, शिक्षण का मूल्यांकन, शिक्षण में सुधार तथा शिक्षण की प्रतिपुष्टि जैसे सोपानों का अनुसरण करता है।

शिक्षण के स्तर—

शैक्षिक उद्देश्यों के आधार पर शिक्षण को तीन स्तरों में विभाजित किया जा सकता है—

- स्मृति स्तर शिक्षण/विचारहीन शिक्षण
- अवबोध स्तर शिक्षण
- चिंतन स्तर शिक्षण/सबसे श्रेष्ठ शिक्षण

स्मृति स्तर → बोध स्तर → चिंतन स्तर

■ **स्मृति स्तर शिक्षण**— इस स्तर के अंतर्गत ज्ञान को स्मरण रखने के लिए शिक्षण प्रदान किया जाता है। ब्लूम के संज्ञानात्मक विकास के ज्ञानात्मक क्षेत्र के ‘ज्ञान’ उद्देश्य की प्राप्ति इस स्तर पर की जाती है, जिसके अंतर्गत व्यक्ति आवश्यकतानुसार विभिन्न तथ्यों, विधियों, प्रविधियों, सिद्धांतों आदि का ज्ञान रखना सीखा जाता है। यह मुख्यतः रटने के सिद्धांत पर आधारित है।

हरबर्ट का स्मृति स्तर शिक्षण प्रतिमान

■ स्मृति स्तर के शिक्षण में संकेत अधिगम, शृंखला अधिगम उत्तेजना प्रक्रिया पर विशेष महत्व दिया जाता है। जर्मनी के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एवं दार्शनिक जॉन फ्रेडरिक हरबर्ट को इस स्तर के शिक्षण प्रतिमान का प्रवर्तक माना जाता है।

■ स्मृति स्तर के शिक्षण प्रतिमान के प्रारूप का वर्णन निम्न सोपानों में किया गया है—

- उद्देश्य
- संरचना
- सामाजिक प्रणाली
- मूल्यांकन प्रणाली या समर्पित प्रणाली

1. उद्देश्य

(i) ज्ञानात्मक पक्ष को सबल बनाना
(ii) मानसिक पक्ष, जैसे— स्मृति, संवेग, भाव, अनुभूति, कल्पना इत्यादि को प्रशिक्षित करना।

(iii) तथ्यों, सूचनाओं, सिद्धांतों, को रटने पर बल देना।

(iv) याद रखने पर बल देना।

2. **संरचना**— हरबर्ट ने स्मृति स्तर के शिक्षण प्रतिमान की संरचना पाँच प्रमुख पदों में की है। जो हरबर्ट पंचपदी प्रणाली के नाम से प्रसिद्ध है। ये पाँच पद निम्न प्रकार हैं—

- प्रस्तावना
- प्रस्तुतीकरण
- स्पष्टीकरण तथा तुलना
- सामान्यीकरण
- प्रयोग

3. **सामाजिक प्रणाली**— इस व्यवस्था में शिक्षक अधिक क्रियाशील रहता है। इसमें कक्षा का वातावरण नीरस होता है।

4. **मूल्यांकन प्रणाली अथवा समर्पित प्रणाली**— इसमें केवल ज्ञानात्मक पक्ष की जाँच होती है।

■ **अवबोध स्तर शिक्षण—** इस स्तर को स्मृति और चिंतन स्तर के बीच की कड़ी माना जाता है। इसमें शिक्षक के द्वारा छात्रों को विभिन्न सम्प्रत्तियों के परस्पर सम्बन्धों का अवबोध करने, नियमों को पहचानने, समझने, उनका विभिन्न परिस्थिति में अनुप्रयोग करने, विषय के गूढ़ भावों तथा तथ्यों को भलीभाँति समझने की क्षमता उत्पन्न की जाती है।

अवबोध स्तर शिक्षण प्रतिमान

अवबोध स्तर शिक्षण प्रतिमान के जन्मदाता हेनरी सी मौरीसन हैं। इसलिए इसे मौरीसन का शिक्षण प्रतिमान भी कहा जाता है, इस प्रतिमान के निम्न चार तत्त्व हैं—

- (i) उद्देश्य
- (ii) संरचना
- (iii) सामाजिक प्रणाली
- (iv) मूल्यांकन प्रणाली या समर्पित प्रणाली

1. **उद्देश्य—** इस प्रतिमान का उद्देश्य छात्रों द्वारा प्रत्ययों का अधिकार प्राप्त कर लेना है।

2. **संरचना—** बोध स्तर शिक्षण व्यवस्था को निम्नलिखित सोपानों में विभाजित किया गया है—

- (i) अन्वेषण
- (ii) प्रस्तुतीकरण
- (iii) आत्मीकरण अथवा परिपाक
- (iv) व्यवस्था
- (v) वर्णन अथवा अभिव्यक्तिकरण

3. सामाजिक प्रणाली—

- (i) कक्षा का वातावरण पूर्ण रूप से खुला तथा स्वतंत्र होता है।
- (ii) क्रियाशील शिक्षण व्यवस्था
- (iii) शिक्षक का दृष्टिकोण अधिक लचीला, गतिशील व भावात्मक होता है।

- (iv) शिक्षक एवं छात्र के मध्य प्रशंसात्मक सम्बन्ध होते हैं।

4. **मूल्यांकन प्रणाली—** व्यवस्था कालांश के अंत में लिखित परीक्षा तथा अभिव्यक्तिकरण अथवा वर्णन कालांश में मौखिक परीक्षा होती है।

■ **चिंतन स्तर शिक्षण—** चिंतन स्तर के शिक्षण के दौरान कक्षा में अधिक सजीव, प्रेरणादायी, सक्रिय, आलोचनात्मक तथा संवेदनशील वातावरण उत्पन्न किया जाता है। चिंतन स्तर का शिक्षण मुख्यतः समस्या केन्द्रित होता है।

चिंतन स्तर शिक्षण प्रतिमान

मौरिस पी हण्ट को चिंतन स्तर के शिक्षण प्रतिमान का जन्मदाता माना जाता है इस प्रतिमान के प्रारूप का अध्ययन निम्न सोपानों में किया जा सकता है—

- (1) उद्देश्य
- (2) संरचना
- (3) सामाजिक प्रणाली
- (4) मूल्यांकन प्रणाली
- (1) **उद्देश्य—**
 - (i) समस्या समाधान की क्षमता उत्पन्न करना।
 - (ii) स्वतंत्र मौलिक चिंतन उत्पन्न करना।
 - (iii) क्रियाशील और आलोचनात्मक शक्ति उत्पन्न करना।

(2) **संरचना—** चिंतन स्तर के शिक्षण की संरचना का स्वरूप समस्या की प्रकृति पर निर्भर करता है—

- (i) व्यक्तिगत स्तर की परिस्थिति
 - (ii) सामाजिक स्तर की परिस्थिति
- इन समस्याओं को सुलझाने के दो तरीके हैं—
प्रथम ड्यूवी की समस्यात्मक परिस्थिति
द्वितीय कुर्ट लेविन की समस्यात्मक परिस्थिति
- (i) ड्यूटी की समस्यात्मक परिस्थिति—
⇒ अमार्ग अथवा पथरहित परिस्थिति
⇒ दो मार्गजन्य परिस्थिति

- ⇒ एक उद्देश्य दो मार्ग
- ⇒ दो उद्देश्य एक मार्ग

- (ii) कुर्ट लेविन समस्यात्मक परिस्थिति
⇒ तनाव पथ परिस्थिति

(3) **सामाजिक प्रणाली—** इसमें शिक्षक का स्थान गौण तथा छात्र का स्थान प्रमुख होता है। कक्षा का वातावरण स्वतंत्र होता है। छात्रों में स्वतः प्रेरणा का अधिक महत्त्व होता है।

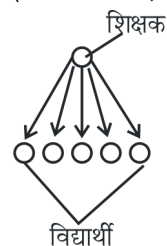
(4) **मूल्यांकन प्रणाली—** छात्रों की अभिवृत्तियों, अधिगम क्रियाओं में छात्रों की तल्लीनता, आलोचनात्मक व सृजनात्मक क्षमताओं के विकास का मूल्यांकन किया जाता है।

शिक्षण वातावरण—

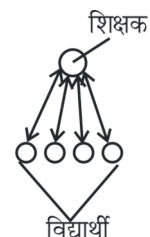
शिक्षण की दृष्टि से कक्षा के शैक्षिक वातावरण को तीन भागों में बाँटा जा सकता है।—

1. सत्तात्मक या एकतंत्रीय वातावरण
2. प्रजातांत्रिक वातावरण
3. हस्तक्षेप रहित वातावरण

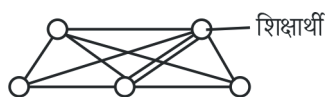
1. **सत्तात्मक या एकतंत्रीय वातावरण—** सत्तात्मक वातावरण में कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षक का सम्पूर्ण कक्षा व क्रियाकलापों पर पूर्ण नियंत्रण रहता है। *शिक्षण का वातावरण स्वेच्छाचारी होने के कारण इसे अच्छा शिक्षण नहीं माना जाता है।



2. **प्रजातांत्रिक वातावरण—** प्रजातांत्रिक वातावरण में शिक्षक तथा शिक्षार्थी सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। शिक्षक का शिक्षार्थियों पर कठोर नियंत्रण नहीं होता है वरन् वह उनकी जरूरतों व समस्याओं को समझकर उनका मार्गदर्शन करते हुए शिक्षण कार्य सम्पादित करता है।



3. हस्तक्षेप रहित वातावरण— इस वातावरण में शिक्षक का नियंत्रण व हस्तक्षेप नगण्य होता है। सभी विद्यार्थी अपने आप में स्वतंत्र रहते हुए सीखते हैं। इसमें शिक्षक बच्चों की इच्छानुसार शिक्षण वातावरण उत्पन्न करता है।



शिक्षण प्रक्रिया में विभिन्न चर—

शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में तीन चर होते हैं—

- (1) शिक्षक (2) विद्यार्थी (3) पाठ्यक्रम

(1) शिक्षक— इसे स्वतंत्र चर कहा जाता है। यह शिक्षण की व्यवस्था, नियोजन तथा उसका परिचालन करता है।

(2) विद्यार्थी— शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थी को आश्रित चर माना गया है। उसे शिक्षण के नियोजन, प्रस्तुतीकरण तथा परिचालन के अनुरूप क्रियाशील रहना पड़ता है।

(3) पाठ्यवस्तु या पाठ्यक्रम— इसको हस्तक्षेप चर माना गया है। इसके द्वारा शिक्षक व छात्र के मध्य अंतःप्रक्रिया होती है। शिक्षण-सामग्री का स्वरूप, शिक्षण विधियाँ आदि शिक्षक तथा छात्र की अनुक्रियाएँ हस्तक्षेप करती हैं।

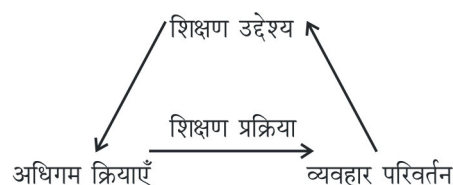
अच्छे शिक्षण की विशेषताएँ—

- अच्छा शिक्षण सुनियोजित होता है।
- अच्छा शिक्षण तैयारी का एक साधन होता है।
- अच्छे शिक्षण के लिए शिक्षक का विषयवस्तु पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए।
- अच्छे शिक्षण में छात्र व शिक्षक के मध्य सम्बन्ध मधुर व स्नेहपूर्ण होने चाहिए।
- शिक्षक को बाल-विकास का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए।
- अच्छे शिक्षण में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग आवश्यक है।
- अच्छा शिक्षण सहयोगी एवं प्रजातांत्रिक होता है।
- अच्छा शिक्षण प्रेरणादायक होता है।
- अच्छा शिक्षण प्रगतिपूर्ण होता है।
- अच्छा शिक्षण सीखने का संगठन करता है।
- अच्छा शिक्षण क्रियाशील, गतिशील तथा संघर्षपूर्ण होता है।

शिक्षण का संगठन

मूल्यांकन शिक्षण उपागम— वर्तमान समय में शिक्षण व्यवस्था के लिए प्रायः मूल्यांकन उपागम का अनुसरण किया जाता है। इस उपागम में शिक्षण को त्रिध्रुवीय प्रक्रिया माना जाता है, जिसके तीन ध्रुव क्रमशः 'शिक्षण उद्देश्य', 'अधिगम अनुभव' तथा 'व्यवहार परिवर्तन' होते हैं।

इस उपागम के अनुसार शिक्षण का आयोजन छात्रों को ऐसे अधिगम अनुभव प्रदान करने के लिए किया जाता है, जिनसे वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति तथा छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन आ सके।



मूल्यांकन उपागम में शिक्षण सोपान— मूल्यांकन प्रक्रिया के तीन मुख्य सोपान क्रमशः (i) उद्देश्यों का निर्धारण (ii) अधिगम क्रियाओं का आयोजन (iii) मूल्यांकन करना है। परन्तु स्पष्टता व सरलता के लिए इनको कई अन्य सोपानों में बाँटा जा सकता है—

(i) उद्देश्यों का निर्धारण— मूल्यांकन प्रक्रिया का पहला कदम यह ज्ञात करना है कि किसका मूल्यांकन करना है। अर्थात् वे कौन से शैक्षिक उद्देश्य हैं जिनकी प्राप्ति वांछनीय है। इसके लिए उद्देश्यों का निर्धारण करना आवश्यक होता है। उद्देश्यों का निर्धारण दो स्तर पर किया जाता है—

(A) सामान्य उद्देश्य— शिक्षण के सामान्य उद्देश्य वास्तव में एक ऐसे व्यापक तथा अंतिम लक्ष्य हैं जिनकी प्राप्ति किसी अध्यापक का एक सामान्य तथा दूरगामी लक्ष्य होता है। इनकी प्राप्ति किसी विशेष कक्षा शिक्षण से सम्भव नहीं हो पाता है।

(B) विशिष्ट उद्देश्य— विशिष्ट उद्देश्य छात्र में होने वाले सम्भावित व्यवहार परिवर्तन के रूप में लिखे जाते हैं। सामान्य उद्देश्य की अपेक्षा ये संकीर्ण प्रत्यक्ष तथा कार्यपरक होते हैं। इस उद्देश्य की प्राप्ति किसी विशेष कक्षा शिक्षण के उपरान्त की जा सकती है।

(C) शिक्षण बिन्दु— इसके अंतर्गत उन शिक्षण बिन्दुओं को निर्धारित किया जाता है, जिनके द्वारा विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है। प्रत्येक शिक्षण बिन्दु अपने आप में शिक्षण की एक संक्षिप्त परन्तु पूर्ण इकाई होती है।

(ii) अधिगम क्रियाओं का आयोजन— अधिगम क्रियाएँ अनेक प्रकार से छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत की जा सकती हैं। कक्षा शिक्षण, पुस्तकालय, पाठ्य-पुस्तकों, जनसंचार साधनों, रेडियो, टेलीविजन, चल चित्र, प्रयोगशालाओं, भ्रमण आदि की सहायता से छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाया जा सकता है।

(iii) व्यवहार परिवर्तन— अधिगम क्रियाओं के प्रस्तुतीकरण के बाद छात्रों के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों को ज्ञात करना होता है। विभिन्न प्रकार के व्यवहार परिवर्तनों को मापने के लिए विभिन्न प्रकार की युक्तियों का उपयोग किया जाता है। बुद्धि, परीक्षण, व्यक्तित्व परीक्षण, सम्प्राप्ति परीक्षण, निदानात्मक परीक्षण, समाजमिति, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रयोगात्मक परीक्षा आदि विभिन्न युक्तियों का प्रयोग करके छात्रों के व्यवहार में आये परिवर्तनों को ज्ञात किया जाता है।

(iv) मूल्यांकन— छात्रों के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों को ज्ञात करने के उपरान्त इन व्यवहार परिवर्तनों की वांछनीयता के सापेक्ष व्याख्या की जाती है। यदि आये हुए व्यवहार परिवर्तन, अपेक्षित व्यवहार परिवर्तनों के काफी निकट होते हैं तो शिक्षण कार्य को संतोषप्रद कहा जा सकता है।

(v) प्रतिपुष्टि— मूल्यांकन प्रक्रिया का अंतिम सोपान परिणामों को प्रतिपुष्टि के रूप में प्रयोग करना है। यदि मूल्यांकन से ज्ञात होता है कि शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हुई है तो वह प्राप्त परिणामों के आधार पर अपने शिक्षण में सुधार करता है। वह नये

सिरे से उद्देश्यों को निर्धारित करता है, शिक्षण बिन्दुओं का चयन करता है, अधिगम क्रियाएँ आयोजित करता है, व्यवहार परिवर्तनों का मापन करता है और मूल्यांकन करता है। इस प्रकार वह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक अपेक्षित उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो जाती।

शिक्षण का नियोजन

शिक्षण में मूल्यांकन उपागम का प्रयोग करते समय शिक्षण के नियोजन पर विशेष बल दिया जाता है। किसी कक्षा में सत्र पर्यंत जिस विषय-वस्तु का ज्ञान, बोध व कौशल छात्रों को कराना होता है, उसका शैक्षणिक दृष्टि से विश्लेषण किया जाता है। इसके लिए शिक्षण के नियोजन को वार्षिक योजना, इकाई योजना तथा पाठ योजना नामक तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

शिक्षण नीतियाँ

शैक्षिक प्रक्रिया के तीन महत्पूर्ण बिन्दु होते हैं— शिक्षक, छात्र तथा पाठ्यक्रम। शिक्षण इनके मध्य होने वाली प्रक्रिया का नाम है। शिक्षण एक सामाजिक तथा सुनियोजित प्रक्रिया है। पाठ्यक्रम को प्रस्तुत करने के लिए शिक्षक को कुछ प्रमुख विधियों, प्रविधियों सहायक सामग्री आदि का प्रयोग करना पड़ता है। इसके लिए उसे एक सुव्यवस्थित नीति बनानी पड़ती है। इसी को शिक्षण नीति कहा जाता है।

शिक्षण नीतियों का वर्गीकरण—

शिक्षक के दृष्टिकोण, कक्षा की परिस्थितियों तथा कक्षा के वातावरण के आधार पर शिक्षण नीतियाँ अथवा शिक्षण व्यूह रचनाओं को प्रमुख रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

1. प्रभुत्ववादी शिक्षण नीतियाँ
2. जनतांत्रिक शिक्षण नीतियाँ

1. प्रभुत्ववादी शिक्षण नीतियाँ— यह शिक्षण की परम्परागत नीति है। ये शिक्षक प्रधान होती हैं, छात्र का स्थान गौण होता है। इन नीतियों में शिक्षक सक्रिय रहता है छात्र निष्क्रिय बैठे रहते हैं। ये नीतियाँ बालक के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का पालन नहीं करती है। प्रभुत्ववादी शिक्षण नीतियाँ हैं—

- (i) व्याख्या नीति
- (ii) प्रदर्शन नीति
- (iii) व्यक्तिगत निदेशन अनुवर्ग नीति
- (iv) अभिक्रमित अनुदेशन नीति

2. जनतांत्रिक अथवा प्रजातांत्रिक शिक्षण नीतियाँ— ये नीतियाँ बाल-केन्द्रित होती हैं। छात्र स्वयं पाठ्यक्रम का निर्धारण करते हैं। शिक्षक का स्थान गौण होता है। ये नीतियाँ बालक के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का पालन करती हैं। ये नीतियाँ हैं—

- (i) प्रश्नोत्तर
- (ii) सामूहिक वाद-विवाद
- (iii) अन्वेषण
- (iv) ऐतिहासिक खोज
- (v) समीक्षा, अभ्यास एवं कार्य तथा पुनरावृत्तियाँ नीतियाँ
- (vi) दत्त कार्य

- (vii) योजना पद्धति
 - (viii) अनुकरणीय नीति या पात्र अभिनय
 - (ix) मस्तिष्क उद्वेलन नीति
 - (x) स्वतंत्र अध्ययन नीति
 - (xi) पथ प्रदर्शक विहीन समूह नीति
 - (xii) संवेदनशील प्रशिक्षण नीति
 - (xiii) कम्प्यूटर द्वारा अनुदेशन नीति
- यहाँ हम कुछ महत्वपूर्ण नीतियों की विस्तृत चर्चा करेंगे

1. व्याख्या नीति—

व्याख्यान का तात्पर्य किसी भी पाठ को भाषण के रूप में पढ़ाने से है। शिक्षक किसी विषय विशेष पर कक्षा में व्याख्यान देते हैं और छात्र निष्क्रिय होकर सुनते रहते हैं। यह नीति मुख्यतया शिक्षक की '3PS' पर निर्भर करती है, ये 'PS' है

- (i) Preparation (तैयारी)
- (ii) Presentation (प्रस्तुतीकरण)
- (iii) Personality (व्यक्तित्व)

व्याख्या नीति हेतु सुझाव—

- (i) पाठ्यवस्तु का संगठन व्यवस्थित रूप में करना चाहिए
- (ii) भाषा सरल, सुबोध, सरस तथा मुहावरेदार होनी चाहिए
- (iii) व्याख्यान एक निश्चित सीमा के अंदर होनी चाहिए
- (iv) व्याख्यान के मध्य अंतःप्रक्रिया अवश्य होनी चाहिए

2. व्यक्तिगत अनुवर्ग नीति—

सामूहिक शिक्षण के दोषों को दूर करने के लिए कक्षा के छात्रों को छोटे-छोटे समूहों अथवा अनुवर्गों में बाँट दिया जाता है, जिससे शिक्षक व्यक्तिगत शिक्षण द्वारा शिक्षण को सफल एवं सरल बना सके।

डॉ. आर.ए. शर्मा के अनुसार— “अनुवर्गों का गठन सुधारात्मक दृष्टिकोण हेतु किया जाता है, जिससे कि सीखने वाला बालक अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सके।”

3. अभिक्रमित अनुदेशन—

अभिक्रमित अनुदेशन का विकास अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री प्रो. बी.एफ. स्किनर एवं नारमन ए. क्राउडर ने किया था। अभिक्रमित अनुदेशन शिक्षण की एक ऐसी विधि है, जिसमें छात्र अपनी व्यक्तिगत गति से अधिगम करता है तथा अपने अधिगम के साथ ही परिणामों का ज्ञान भी प्राप्त करता है। अभिक्रमित अनुदेशन तीन प्रकार का होता है—

- (i) रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन
- (ii) शाखीय अभिक्रमित अनुदेशन
- (iii) मैथटिक्स या अवरोही शृंखला अभिक्रमित अनुदेशन

4. प्रश्नोत्तर नीति—

प्रश्नोत्तर नीति प्राचीन शिक्षण विधि है। इसके जन्मदाता सुकरात माने जाते हैं। रूसो के अनुसार— “बालक प्रश्न पूछने के बजाय प्रश्न पूछे जाने से अधिक सीखता है।”

प्रश्न के प्रकार—

- (i) प्रस्तावना प्रश्न

- (ii) विकासात्मक प्रश्न
- (iii) विचारात्मक प्रश्न
- (iv) तुलनात्मक प्रश्न
- (v) बोध प्रश्न
- (vi) पुनरावृत्ति प्रश्न

प्रश्न पूछने के लिए सुझाव—

- प्रश्न सरल, संक्षिप्त व स्पष्ट भाषा में सम्पूर्ण कक्षा से पूछने चाहिए
- प्रश्नों का वितरण कक्षा में समान रूप से किया जाना चाहिए
- गलत उत्तर आने पर शिक्षक को झुंझलाना नहीं चाहिए उसका समाधान करना चाहिए
- प्रश्नों का स्तर कक्षानुकूल होना चाहिए।

5. अन्वेषण नीति—

इस विधि का सबसे पहले प्रयोग प्रो. आर्मस्ट्रॉंग ने किया। उन्होंने विज्ञान के विषयों में शिक्षण देने के लिए ह्यूरिस्टिक पद्धति का प्रयोग किया। इनके अनुसार— “बालक को जितना कम-से-कम सम्भव हो उतना बताया जाय और जितना अधिक से अधिक सम्भव हो उतना खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाय। 'Heuristic' शब्द यूनानी भाषा के 'Heurisko' शब्द से बना है। जिसका अर्थ है— "I find out for possible" अन्वेषण नीति में छात्र शारीरिक तथा मानसिक रूप से सक्रिय रहते हुए ज्ञान की खोज करते हैं।

6. ऐतिहासिक खोज नीति—

इस नीति के जन्मदाता जे.एस. ब्रूनर हैं। इस नीति में छात्रों को ऐतिहासिक तथ्यों का अवलोकन कराकर तथा वर्णन करके उनसे लिखने को कहा जाता है। शिक्षक कुछ मौलिक तथ्यों पर प्रकाश डालता है। इस प्रकार छात्रों को नये तथ्यों की खोज मौलिक रूप से करनी पड़ती है। इस प्रकार छात्र स्वयं खोज के आधार पर तथ्यों का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

7. दत्त कार्य नीति—

दत्त कार्य पाठ-योजना का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसके द्वारा कक्षा की क्रियाएँ संगठित एवं निर्देशित होती हैं। 'दत्त कार्य शिक्षण की क्रिया में वह समय है जब शिक्षक बालकों की क्रियाओं के विषय में चिंतन करता है तथा क्रियाओं की योजना अध्ययन की तैयारी के लिए बनाता है।'।

8. योजना या प्रायोजना नीति—

अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री डब्ल्यू.एच. किलपैट्रिक इस विधि के जन्मदाता माने जाते हैं। ये प्रसिद्ध दार्शनिक एवं शिक्षाशास्त्री जॉन डिवी के शिष्य थे।

किलपैट्रिक के अनुसार— “प्रायोजना सामाजिक वातावरण में पूर्ण संलग्नता से किया जाने वाला उद्देश्यपूर्ण कार्य है।”

प्रायोजना नीति के चरण—

1. योजना का चुनाव
2. परिस्थिति को उत्पन्न करना
3. योजना का कार्यक्रम बनाना
4. योजना को क्रियान्वित करना
5. योजना का मूल्यांकन
6. कार्य लेखा

9. मस्तिष्क उद्वेलन नीति (ब्रेन स्टॉर्मिंग नीति) —

इसमें छात्रों को एक समस्या दी जाती है और उनसे कहा जाता है कि वे विचार विमर्श करें और जो विचार उनके मस्तिष्क में आये उसको प्रस्तुत करें। इस प्रकार तर्क-वितर्क, वाद-विवाद, विचार-विमर्श के द्वारा छात्रों के मस्तिष्क में एक हलचल मच जाती है। इसमें वे अपने विचारों को निर्भिकता एवं स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करते हैं। यह नीति छात्र एवं शिक्षक के मध्य अंतः प्रक्रिया पर विशेष बल देती है। इस प्रकार विचारों व सुझावों का विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन किया जाता है। ये नीति उच्च कक्षाओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी है।

10. पथ प्रदर्शक विहीन समूह नीति—

इस शिक्षण नीति का उद्देश्य छात्रों की समस्याओं को परस्पर सहयोग से विचार-विमर्श, वाद-विवाद, सुधार तथा आलोचना के द्वारा सुलझाने के लिए प्रोत्साहित करना है। इसमें शिक्षक की भूमिका नगण्य होती है। शिक्षक का कार्य केवल योजना बनाना, निर्देश देना व सहायक के रूप में होता है।

11. संवेदनशील प्रशिक्षण नीति—

इस नीति में छात्रों के आपसी सम्बन्ध विकसित करके उन्हें किसी समस्या के प्रति संवेदनशील किया जाता है। इस नीति का आधार संवेदनाओं की जागृत है। इससे उनमें अहम् जागृत होता है और वे पूरी शक्ति से उस कार्य को करने में लग जाते हैं। इसका प्रयोग छोटे समूह के प्रशिक्षण के लिए किया जाता है।

12. कम्प्यूटर द्वारा अनुदेशन—

कम्प्यूटर द्वारा अनुदेशन का उपयोग अमेरिका में प्रारम्भ हुआ तथा ब्रिटेन में विकसित हुआ।

कम्प्यूटर के आधारभूत तत्व— आई.के. डेवीज ने अपनी पुस्तक 'सीखने की व्यवस्था' में लुम्सडेन द्वारा बताये गये शैक्षिक तकनीकी के तीन रूपों का वर्णन किया है, यही तनों रूप कम्प्यूटर के आधारभूत तत्व हैं—

- (i) शैक्षिक तकनीकी प्रथम या कठोर शिल्प उपागम
- (ii) शैक्षिक तकनीकी द्वितीय या मृदुल शिल्प उपागम
- (iii) शैक्षिक तकनीकी तृतीय या प्रणाली विश्लेषण उपागम

(i) शैक्षिक तकनीकी प्रथम या कठोर शिल्प उपागम—

यह उपागम इंजीनियरिंग के सिद्धांत पर आधारित है। इसका प्रारम्भ भौतिक विज्ञान तथा अभियंत्रण तकनीकी का शिक्षा तथा प्रशिक्षण प्रणाली में प्रयोग से हुआ है।

(ii) शैक्षिक तकनीकी द्वितीय या मृदुल शिल्प उपागम—

इस तकनीकी का आधार मनोविज्ञान है इसलिए इसे व्यवहार प्रणाली या व्यवहार तकनीकी के नाम से भी जाना जाता है। इसमें मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है, जिससे विद्यार्थियों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सके।

(iii) शैक्षिक तकनीकी तृतीय या प्रणाली विश्लेषण उपागम—

इसमें प्रशासन प्रबन्ध, व्यापार तथा सेना आदि से सम्बन्धित समस्याओं के विषय में निर्णय लेने के लिए वैज्ञानिक आधार समाहित रहता है।

कम्प्यूटर द्वारा अनुदेशन में उपर्युक्त दो उपागमों का प्रयोग किया जाता है। कम्प्यूटर के तीन प्रमुख भाग— अदा, प्रक्रिया तथा प्रदा होते हैं।

शिक्षक व्यवहार में सुधार

कक्षा अंतःप्रक्रिया विश्लेषण—

■ शिक्षण, शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के मध्य होने वाली अंतःक्रिया है।

■ डॉ. एन.ए. फ्लैण्डर ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर मिनसोटा विश्वविद्यालय में 1955 से 1960 तक कक्षा व्यवहार मूल्यांकन की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किया जो कि 'फ्लैण्डर्स अंतःक्रिया विश्लेषण' के नाम से जाना जाता है।

■ फ्लैण्डर के अनुसार कक्षा में शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य अधिकतर व्यवहार शाब्दिक होता है जिसमें या तो शिक्षक या फिर शिक्षार्थी बोलता है।

■ इस प्रकार शिक्षण में दो प्रक्रियाएँ होती हैं—

(i) स्वोपक्रम (Initiation)

(ii) अनुक्रिया (Response)

■ फ्लैण्डर के अनुसार कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षक अधिकतर स्वोपक्रमकर्ता (Initiators) एवं शिक्षार्थी अधिकतर अनुक्रियाकर्ता (Responder) होता है। लेकिन किन्हीं विशेष परिस्थितियों में जैसे— जब विद्यार्थी स्वयं ही प्रश्न पूछता है या कुछ कहने को उत्सुक होता है, तो शिक्षार्थी स्वोपक्रमकर्ता हो जाता है और शिक्षक स्वयं ही अनुक्रियाकर्ता हो जाता है।

फ्लैण्डर वर्ग— फ्लैण्डर ने कक्षा व्यवहार के अध्ययन एवं मूल्यांकन के लिए इसको कई वर्गों में विभाजित करने का प्रयास किया है—

फ्लैण्डर दस वर्ग प्रविधि (Flanders Ten Category Technique)

फ्लैण्डर ने कक्षा के अंतर्गत शिक्षक-छात्र, छात्र-छात्र के मध्य होने वाली सभी क्रियाओं व व्यवहारों को तीन भागों में विभाजित किया है—

- शिक्षक कथन
- छात्र कथन
- मौन या विभ्रान्ति

शिक्षक-अप्रत्यक्ष कथन प्रभाव	(i)	विचार स्वीकृति— सहज रूप से छात्रों की अनुभूतियों एवं भावनाओं को महत्व देना, स्वीकारना। ये विचार नकारात्मक, स्वीकारात्मक, स्मरण तथा भविष्य कथन के रूप में सहायक हो सकते हैं।
	(ii)	प्रशंसा या प्रोत्साहन— छात्रों के व्यवहार तथा कार्य की प्रशंसा करना, तनाव दूर करने वाले परिहास करना, सिर हिलाना, हँसना आदि।
	(iii)	छात्रों के विचारों को स्वीकार करना— छात्रों द्वारा प्रकट विचारों का स्पष्टीकरण विकसित करना, पुनः दोहराना।

	(iv)	प्रश्न पूछना— विषय सम्बन्धी पाठ्यवस्तु अथवा प्रक्रिया पर इस आशा से प्रश्न पूछना कि छात्र उत्तर दें।
	(v)	भाषण— विषय संबंधी सामग्री, प्रक्रिया, स्वयं के विचार एवं तथ्यों को प्रकट करने के लिए।
शिक्षक प्रत्यक्ष कथन प्रभाव	(vi)	निर्देश देना
	(vii)	आलोचना
छात्र कथन या क्रिया	(viii)	छात्र क्रिया-अनुक्रिया— शिक्षक के प्रश्न तथा निर्देश के लिए प्रतिक्रिया करना।
	(ix)	छात्र कथन स्वोपक्रम या प्रारम्भिक कथन— छात्र कथन प्रश्न पूछता या स्पष्टीकरण चाहता है।
मौन विभ्रान्ति	(x)	मौन विभ्रान्ति— छात्रों का रुकना, थोड़े समय के लिए मौन रहना जिसमें पर्यवेक्षक संप्रेषण को समझ नहीं पाता है।

शिक्षण के प्रतिमान—

शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों में व्यवहारगत परिवर्तन लाना है। इन्हीं उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु विभिन्न विधियों, प्रविधियों, योजनाओं तथा स्वरूपों को प्रयोग में लाया जाता है, जिन्हें शिक्षण का प्रतिमान कहते हैं।

शिक्षण प्रतिमान की परिभाषा—

■ डीसीको एवं क्रोफोर्ड के अनुसार— “शिक्षण प्रतिमान शिक्षण सिद्धांत का सर्वोच्च प्रतिस्थापन है। शिक्षण प्रतिमान बताते हैं कि किस प्रकार अधिगम शिक्षण परिस्थितियाँ परस्पर संबंधित हैं।”

■ बी.आर. जॉयस के अनुसार— “शिक्षण प्रतिमान अनुदेशन की रूपरेखा माने जाते हैं इसके अंतर्गत विशेष लक्ष्य प्राप्ति हेतु विशिष्ट परिस्थिति का उल्लेख किया जाता है, जिसमें शिक्षक व छात्र की अंतःप्रक्रिया इस प्रकार हो कि छात्र के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाया जा सके।”

शिक्षण प्रतिमान की रूपरेखा— शिक्षण प्रतिमान में शिक्षण की विशिष्ट रूपरेखा का विवरण होता है। इसमें विशेष रूप से छः क्रियाएँ सम्मिलित रहती हैं—

- निष्पत्ति को व्यवहारिक रूप देना।
- उद्दीपन का चयन
- परिस्थितियों का विशिष्टीकरण
- मानदण्ड व्यवहारों को निर्धारित करना
- अंतःप्रक्रिया विश्लेषण
- व्यवहार संशोधन

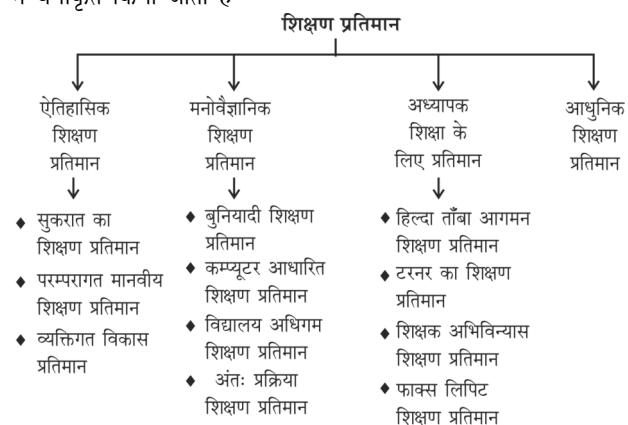
शिक्षण प्रतिमान के तत्त्व—

- उद्देश्य
- संरचना
- सामाजिक प्रणाली
- मूल्यांकन प्रणाली या समर्पित प्रणाली

शिक्षण प्रतिमानों का महत्त्व—

- शिक्षण प्रतिमान कुछ विशिष्ट प्रकार के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होते हैं।
- ये शिक्षण व निर्देशन के ढाँचे का निर्माण करते हैं।
- इसके द्वारा शिक्षक के व्यक्तित्व की गुणात्मक उन्नति होती है।
- प्रतिमान के द्वारा शिक्षण में सुधार तथा परिवर्तन लाया जा सकता है।
- प्रतिमान में अनेक विधियों, प्रविधियों तथा युक्तियों को प्रयुक्त किया जाता है।
- यह मूल्यांकन की विशिष्ट कसौटी प्रस्तुत करता है और व्यवहार का मूल्यांकन करता है।

शिक्षण प्रतिमानों के प्रकार— शिक्षण प्रतिमानों को चार भागों में वर्गीकृत किया जाता है—



■ ब्रूस आर. जोयस तथा माशविल ने अपनी पुस्तक 'Models of Teaching' में सभी शिक्षण प्रतिमानों की समीक्षा करके उन्हें चार भागों में बाँटा है—

(1) अंतःप्रक्रिया स्रोत

- (i) सामूहिक अन्वेषण प्रतिमान
- (ii) ज्यूरिसप्रुडेन्सियल प्रतिमान
- (iii) सामाजिक पृच्छा प्रतिमान
- (iv) प्रयोगशाला विधि प्रतिमान

(2) सूचना प्रक्रिया स्रोत

- (i) निष्पत्ति संप्रत्यय प्रतिमान
- (ii) आगमन प्रतिमान
- (iii) पृच्छा प्रशिक्षण प्रतिमान
- (iv) जैविक विज्ञान पृच्छा प्रतिमान
- **(v) अग्रिम व्यवस्थापक प्रतिमान**
- (vi) विकासात्मक या प्रभावी अधिगम प्रतिमान

(3) व्यक्तिगत स्रोत प्रतिमान

- (i) दिशा विहीन शिक्षण प्रतिमान
- (ii) कक्षा सभा प्रतिमान
- (iii) सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान
- (iv) जागरूकता अथवा अभिज्ञान प्रशिक्षण प्रतिमान

(4) व्यवहार परिवर्तन स्रोत प्रतिमान

- (i) संक्रिय अनुकूलन शिक्षण प्रतिमान

(5) चार पदीय शिक्षण प्रतिमान

- (i) पोफम एवं बेकर प्रतिमान
- (ii) सामान्य शिक्षण प्रतिमान
- (iii) तार्किक शिक्षण प्रतिमान

शिक्षण अधिगम सामग्री

ऐसे उपकरण, साधन या सामग्री जो शिक्षण को सरल, सहज तथा बोधगम्य बनाते हैं उन्हें शिक्षाविद् शिक्षण अधिगम सामग्री का नाम देते हैं।

आवश्यकता एवं महत्त्व—

- शिक्षण प्रक्रिया में क्रियाशीलता बनी रहती है।
- सीखने में अपेक्षाकृत कम समय लगता है।
- प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है।
- कक्षा में नियमित उपस्थिति बढ़ जाती है।
- बच्चों में एक दूसरे का सहयोग करने की भावना बढ़ती है।
- कक्षा नियोजन की प्रक्रिया सरल हो जाती है।
- सीखने की उपलब्धि ज्यादा होती है।
- कक्षा-कक्ष का ध्यानाकर्षित करने में सहायक होती है।
- अधिकतम ज्ञानेन्द्रियों की सक्रियता बढ़ जाती है।

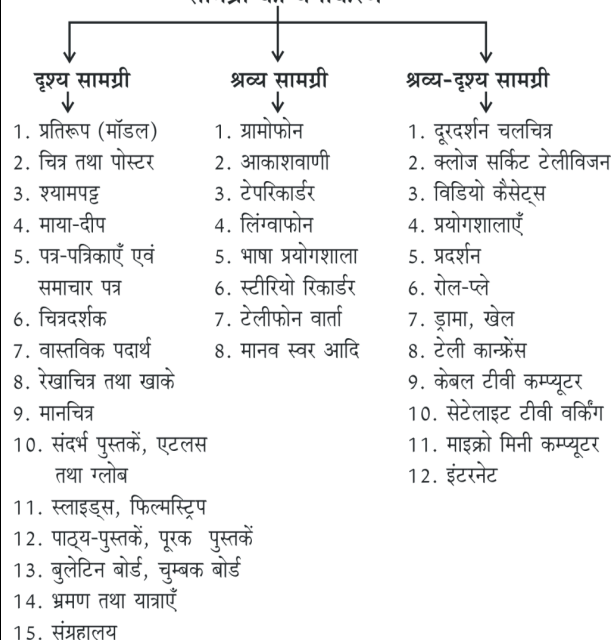
शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रकार— स्वरूप के आधार पर

शिक्षण अधिगम सामग्री के तीन प्रकार

- दृश्य सामग्री
- श्रव्य सामग्री
- दृश्य-श्रव्य सामग्री

स्वरूप के आधार पर शिक्षण अधिगम

सामग्री का वर्गीकरण



अधिगम

व्यक्ति जिस समय से जन्म लेता है उसी समय से सीखने की प्रक्रिया का आरम्भ होता है और वह जीवन पर्यंत सीखता रहता है। व्यक्ति के सीखने का कोई निश्चित समय और स्थान नहीं होता है। वह हर पल कुछ न कुछ सीखता रहता है। इस प्रकार वह आजीवन सीखता हुआ और इसके फलस्वरूप अपने व्यवहार में परिवर्तन करता हुआ जीवन में आगे बढ़ता चला जाता है। इसलिए वुडवर्थ ने कहा है— “सीखना विकास की प्रक्रिया है।”

अधिगम की विशेषताएँ—

- सीखना सम्पूर्ण जीवन काल तक चलता है।
- *सीखना व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है।
- सीखना सार्वभौमिक है।
- *सीखना विकास/अभिवृद्धि है।
- सीखना अनुकूलन है।
- सीखना नया कार्य है।
- सीखना अनुभवों का संगठन है।
- *सीखना उद्देश्यपूर्ण/लक्ष्योन्मुखी प्रक्रिया है।
- सीखना विवेकपूर्ण है।
- सीखना वातावरण की उपज है।
- सीखना सक्रिय है।
- सीखना खोज करना है।
- सीखना व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों है।

अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ—

1. करके सीखना
2. निरीक्षण करके सीखना
3. परीक्षण करके सीखना
4. सामूहिक विधियों द्वारा सीखना
5. मिश्रित विधियों द्वारा सीखना
6. सीखने की स्थिति का संगठन करना
7. वाद विवाद द्वारा सीखना
8. सम्मेलन व विचार गोष्ठियों द्वारा सीखना
9. कार्यशाला में सीखना
10. खेल द्वारा सीखना

सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम—

सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम के सिद्धांत को मानने वाले मनोवैज्ञानिक में अलबर्ट बण्डूरा और वाइगोत्सकी का नाम प्रमुख है। अतः यहाँ हम इन्हीं मनोवैज्ञानिकों के अधिगम सिद्धांतों की चर्चा करेंगे।

बण्डूरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत

अमेरिका के अल्बर्ट बण्डूरा एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक के रूप में जाने जाते हैं। इन्होंने सीखने की प्रक्रिया में अन्यो के व्यवहारों का अवलोकन करने तथा उनकी नकल करके सीखने के महत्त्व पर बल दिया। इसलिए बण्डूरा के अधिगम सिद्धांत को बण्डूरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत के नाम से जाना जाता है।

सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित अधिगम के स्थान पर अप्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित अधिगम अर्थात् अवलोकनात्मक अधिगम का सीखने की प्रक्रिया में अधिक सार्थक स्थान है।

सामाजिक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बालक दूसरों के व्यवहारों को देखकर, सुनकर व समझकर सीखता है। जन्म से ही बालक अपने माता-पिता, भाई-बहन आदि आस-पास के लोगों के व्यवहारों का अवलोकन करने लगता है एवं कालान्तर में उनमें से कुछ के व्यवहारों का अनुकरण अपने व्यवहार में करने लगता है।

जिन व्यक्तियों के व्यवहारों का वह अवलोकन करता है उसे निदर्श (Models) तथा इस प्रकार से निदर्श के व्यवहारों का अनुकरण करके किये गये अवलोकनात्मक अधिगम को निदर्शन कहा जाता है।

बण्डूरा ने इस प्रकार के अधिगम प्रक्रिया में चार सोपान बताये हैं—

1. व्यवहार को जानना तथा उसका प्रत्यक्षण करना
2. व्यवहार का स्मरण करना
3. स्मृति को क्रिया में बदलना
4. अनुकरणित व्यवहार का पुनर्बलन

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है बालक सामाजिक क्रिया-कलाप के रूप में अवलोकन के द्वारा अधिकांश व्यवहार सीखता है। जैसे- साइकिल चलना, तैरना, कपड़े पहनना, खाने-पीने की आदतें आदि।

वाइगोत्सकी का सीखने का सिद्धांत

वाइगोत्सकी के अनुसार अधिगम और विकास की पारस्परिक प्रक्रिया में बालक की सक्रिय भागीदारी होती है, जिमसे भाषा का संज्ञान पर सीधा प्रभाव पड़ता है। इनके अनुसार अधिगम और विकास अंतर्सम्बन्धित प्रक्रियाएँ हैं जो छात्र के पहले दिन से प्रारम्भ होती जाती हैं।

वाइगोत्सकी के अनुसार विभिन्न बालकों के अलग-अलग विकास स्तर पर अधिगम की व्यवस्था समरूप तो हो सकती है किन्तु एक रूप नहीं क्योंकि सभी बच्चों का सामाजिक अनुभव अलग-अलग होता है।

वाइगोत्सकी अपने सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत के लिए जाने जाते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार सामाजिक अंतःक्रिया ही बालक की सोच व व्यवहार में निरंतर बदलाव लाता है जो एक संस्कृति से दूसरे में भिन्न हो सकता है।

वाइगोत्सकी ने अपने सिद्धांत में संज्ञान और सामाजिक वातावरण का सम्मिश्रण किया। बालक अपने से बड़े और ज्ञानी व्यक्तियों के सम्पर्क में आकर चिंतन और व्यवहार के संस्कृति अनुरूप तरीके सीखते हैं।

वाइगोत्सकी के अनुसार बालक अपने वास्तविक विकास स्तर से आगे जाकर समस्याओं का समाधान कर सकते हैं यदि उन्हें थोड़ा निर्देश मिल जाये। इस स्तर को वाइगोत्सकी ने **सम्भावित विकास** कहा है।

बालक के वास्तविक विकास और सम्भावित विकास स्तर के बीच के अंतर क्षेत्र को वाइगोत्सकी ने **निकटतम विकास का क्षेत्र** कहा है।

अधिगम के सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ

बच्चों के लिए अधिगम का सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि जो कुछ भी वह सीखता है वह एक विशेष सामाजिक संदर्भ में ही सीखता है। बालक दो प्रक्रियाओं के माध्यम से सामाजिक परिवेश में सीखता है— (i) संस्कृतिकरण (ii) संस्कृति संक्रमण

(i) **संस्कृतिकरण**— संस्कृतीकरण को समाजीकरण की प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। बालक प्रारम्भ से ही अपने माता-पिता, भाई-बहन, समकक्ष समूह, समुदाय और फिर विद्यालय और अध्यापकों से अन्योन्यक्रिया द्वारा अपनी संस्कृति या समाज के आधारभूत सिद्धांत सीखता है। इसे ही संस्कृतिकरण के रूप में जाना जाता है। हम संस्कृतिकरण की परिभाषा निम्न प्रकार ऐसी प्रक्रिया जिसमें व्यक्ति अपनी संस्कृति के मूल्यों, मान्यताओं, परम्पराओं, विश्वासों आदि को मान्यता देता है व उनका अनुसरण कर अपने आपको संस्कृति का सक्रिय सदस्य बनाता है, संस्कृतिकरण कहा जा सकता है।

विद्यालय औपचारिक रूप से समाज विशेष के मान्यताओं, मूल्यों, परम्पराओं, विश्वासों के अनुसार बच्चे को ढालने का सक्रिय प्रयास करता है। बच्चे सहयोग, मित्रता, सामाजिक न्याय और समानता, सहानुभूति और सहनशीलता के मूल्य परिवार और विद्यालय में समकक्ष समूहों, प्रौढ़ों और अध्यापक के माध्यम से सीखता है। बच्चे अपने संवेगों पर नियंत्रण करना, राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज के प्रति सम्मान प्रदर्शित करना, दूसरों का सहयोग करना आदि विद्यालय में ही सीखते हैं। यह सब संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के कारण होता है।

(ii) **संस्कृति संक्रमण**— जहाँ एक ओर, संस्कृतिकरण किसी व्यक्ति द्वारा अपनी ही संस्कृति के उपयुक्त व्यवहारों का अंगीकरण करना होता है वहीं दूसरी ओर संस्कृति संक्रमण किसी दूसरी संस्कृति का अधिगम होता है। यह अपने सांस्कृतिक मूल्यों और मानदण्डों से कोई समझौता किये बिना अन्य संस्कृति के मानदण्डों और परम्पराओं के प्रति अनुकूलन की प्रक्रिया है।

समाजीकरण— समाजीकरण में संस्कृतिकरण और संस्कृति-संक्रमण दोनों प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं। यह ऐसी अधिगम प्रक्रिया है, जो जन्म के कुछ देर बाद से ही प्रारम्भ हो जाती है। यह उस प्रक्रिया को घोषित करता है जिसके माध्यम से व्यक्ति वर्तमान सामाजिक मानदण्ड और संरचनाएँ अर्जित करता है, और इस प्रकार उस समाज का अंग बन जाता है जिससे वह सम्बद्ध है और साथ ही साथ भिन्न-भिन्न संस्कृतियों और परम्पराओं से समायोजन करना भी सीख जाता है।

सामाजिक संदर्भ में शिक्षण—

- अध्यापक को सामाजिक अन्योन्यक्रियाओं को बढ़ावा देना चाहिए ताकि छात्र सामाजिक कौशल सीख सकें।
- अध्यापक को विद्यार्थियों की सांस्कृतिक विविधता की जानकारी होनी चाहिए।
- अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में सांस्कृतिक संदर्भों और उदाहरणों का समावेशन करना चाहिए।
- स्थानीय इतिहास के उदाहरणों का प्रयोग कर उसे क्षेत्रीय व राष्ट्रीय इतिहास से जोड़ना चाहिए।
- सामूहिक क्रिया कलापों को प्रोत्साहन देना चाहिए।
- विद्यार्थियों को वर्तमान सामाजिक मुद्दों से अवगत करना चाहिए।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जिस प्रक्रिया में व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को देख कर सीखता है न कि प्रत्यक्ष अनुभव के, को कहा जाता है
(a) सामाजिक अधिगम
(b) अनुबन्धन
(c) प्रायोगिक अधिगम
(d) आकस्मिक अधिगम
2. निम्न में से कौन-सा उदाहरण बान्डुरा के अवलोकन पर आधारित अधिगम का नहीं है?
(a) विद्यार्थियों द्वारा केंचुये के विच्छेदन को सीखना
(b) क्रिकेट का उत्साह
(c) सामाजिक अध्ययन के प्रति नापसंदगी
(d) स्कूल की घंटी बजने पर अपने बस्ते बंद कर लेना।
3. एक विद्यार्थी अपने अध्यापक से समय की पाबन्दी सीखता है, यह एक उदाहरण है—
(a) वाचिक अधिगम का
(b) प्रेक्षण अधिगम का
(c) कौशल अधिकम का
(d) अधिगम अन्तरण का
4. बान्डुरा का कथन है कि बच्चे प्रतिक्रियाएँ प्रतिमानीकरण द्वारा सीखते हैं, जिसको..... भी कहा जाता है।

- (a) अभ्यास द्वारा सीखना
(b) अन्तर्दृष्टि द्वारा सीखना
(c) निरीक्षणात्मक अधिगम
(d) पुरस्कार द्वारा सीखना
5. एल्बर्ट बैन्ड्यूरा के सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार निम्न में से कौन-सा सही है?
(a) बच्चों के सीखने के लिए प्रतिरूपण (मॉडलिंग) एक मुख्य तरीका है।
(b) अनसुलझा संकट बच्चे को नुकसान पहुँचा सकता है।
(c) संज्ञानात्मक विकास सामाजिक विकास से स्वतंत्र है।
(d) खेल अनिवार्य है और उसे विद्यालय में प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
6. सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त निम्नलिखित में से किस घटक पर बल देता है?
(a) प्रकृति
(b) प्रतिरूपण
(c) अनुकूलन
(d) पाठ-संशोधन
7. बैन्ड्यूरा के सामाजिक अवलोकन पर आधारित अधिगम सिद्धान्त में निम्नलिखित में से कौन-सी प्रक्रिया होती है?
(a) स्वचिंतन
(b) प्रतिधारण
(c) पुनरावृत्ति
(d) सार को दोहराना

8. 'बच्चे फिल्मों में दिखाए गए हिंसात्मक व्यवहार को सीख सकते हैं।' यह निष्कर्ष निम्नलिखित में से किस मनोवैज्ञानिक द्वारा किए गए कार्य पर आधारित हो सकता है?
 (a) जे. बी. वाटसन
 (b) एल्बर्ट बन्दूरा
 (c) जीन पियाजे
 (d) एडवर्ड एल. थार्नडाइक
9. शिक्षार्थी फैशन शो को देखकर मॉडल्स का अनुकरण करने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार के अनुकरण को - - - कहा जा सकता है।
 (a) गौण अनुकरण
 (b) सामाजिक अधिगम
 (c) सामान्यीकरण
 (d) प्राथमिक अनुकरण
10. सीखने का वह सिद्धान्त जो पूर्ण रूप से और केवल 'अवलोकनीय व्यवहार' पर आधारित है, सीखने के सिद्धान्त से सम्बद्ध है।
 (a) व्यवहारवादी
 (b) रचनावादी
 (c) संज्ञानवादी
 (d) विकासवादी
11. अल्बर्ट बण्डूरा निम्न में से किस सिद्धान्त से सम्बन्धित हैं-
 (a) सामाजिक अधिगम सिद्धान्त
 (b) व्यवहारात्मक सिद्धान्त
 (c) विकास का संज्ञानात्मक सिद्धान्त
 (d) विकास का मनो-सामाजिक सिद्धान्त
12. एल्बर्ट बण्डूरा निम्न में से किससे सम्बन्धित है?
 (a) सामाजिक अधिगम सिद्धान्त
 (b) व्यवहारवादी सिद्धान्त
 (c) संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त
 (d) मनोवैज्ञानिक विकास
13. बण्डूरा के अनुसार अधिगम आधारित है-
 (a) निरंतर प्रयासों पर
 (b) अंतर्दृष्टि पर
 (c) अनुकरण पर
 (d) परिपक्वता पर
14. एक शिक्षक को कक्षा में कार्य करना चाहिए-
 (a) प्रगतिशील भूमिका में
 (b) प्रभुत्ववादी भूमिका में
 (c) प्रजातांत्रिक भूमिका में
 (d) प्रभावशाली भूमिका में
15. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए :
 A. स्लाइड प्रोजेक्टर (i) दृश्य साधन
 B. टी वी (ii) श्रव्य साधन
 C. चार्ट (iii) दृश्य-श्रव्य साधन
 D. आवाज रिकॉर्डर (iv) साधन
- | | | | | | | | |
|-----|-------|-------|------|------|-----|-------|------|
| A | B | C | D | A | B | C | D |
| (a) | (iv) | (iii) | (i) | (ii) | (b) | (iv) | (ii) |
| (c) | (iii) | (iv) | (ii) | (i) | (d) | (i) | (ii) |
| | | | | | | (iii) | (iv) |
16. निम्नलिखित में से कौन-सा शिक्षण का एक नवाचारी स्रोत है?
 (a) टेलीस्कोप
 (b) इन्टरनेट
 (c) फेसबुक
 (d) ब्लैक बोर्ड
17. विद्यार्थियों की शिक्षण में अधिक से अधिक भागीदारी निम्नलिखित विधि के द्वारा सम्भव है
 (a) व्याख्यान विधि
 (b) पाठ्यपुस्तक विधि
 (c) श्रव्य-दृश्य सामग्री
 (d) वार्तालाप विधि
18. निम्नलिखित में से कौन-सा स्तर शिक्षण का है?
 (a) परावर्तक
 (b) अन्तःक्रियात्मक
 (c) प्रक्षेपण
 (d) संकलित
19. भारतवर्ष में प्राइमरी शिक्षा निम्नलिखित पर बल देती है
 (a) बोध का विकास करना
 (b) आध्यात्मिक पक्ष पर बल देना
 (c) विवेचनात्मक चिन्तन का विकास करना
 (d) रटने को प्रेरित करना
20. कौशल को सीखने में पहली अवस्था होती है
 (a) यथार्थता
 (b) चालाकी
 (c) समन्वयन
 (d) अनुकरण
21. पाठ्यक्रम निम्नलिखित में से शिक्षण के कौन-से चर में आता है?
 (a) आश्रित चर
 (b) मध्यस्थ चर
 (c) स्वतन्त्र चर
 (d) इनमें से कोई नहीं
22. सिमथ ने शिक्षण की त्रिधुवी प्रक्रिया में कार्यवाहक माना है
 (a) अभिभावक को
 (b) शिक्षक को
 (c) शिक्षार्थी को
 (d) पाठ्यक्रम को
23. सीखने की प्रोजेक्ट विधि किस अवस्था के लिए उपयोगी है?
 (a) बाल्यावस्था
 (b) पूर्व बाल्यावस्था
 (c) किशोरावस्था
 (d) उपरोक्त सभी
24. शिक्षा में फ्रोबेल का महत्वपूर्ण योगदान था.....का विकास।
 (a) व्यावसायिक स्कूल
 (b) पब्लिक स्कूल
 (c) किण्डर गार्टन
 (d) लेटिन स्कूल
25. शिक्षा की प्रक्रिया के अंग होते हैं
 (a) शिक्षक
 (b) शिक्षार्थी
 (c) पाठ्यक्रम
 (d) ये सभी
26. एक अच्छा अध्यापक विद्यार्थियों के मध्य बढ़ावा देता है
 (a) प्रतियोगिता की भावना को
 (b) सहयोग की भावना को
 (c) प्रतिद्वन्द्विता की भावना को
 (d) तटस्थता की भावना को
27. संज्ञानात्मक प्रशिक्षुता तथा शैक्षिक संवाद
 (a) पाठ्य सामग्री के सुव्यवस्थित संगठन पर बल देते हैं।

- (b) कुशलता की प्राप्ति हेतु व्यवहारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल देते हैं।
- (c) अधिगम को एक सामाजिक गतिविधि के रूप में ग्रहण करते हैं।
- (d) आगमनात्मक तार्किकता के अनुप्रयोग पर आधारित है।
28. निम्न में से कौन श्रव्य-दृश्य सामग्री का उद्देश्य है?
- (1) शिक्षण को प्रभावशाली बनाना
(2) सकारात्मक सृजनात्मकता उत्पन्न करना
(3) छात्रों को क्रियाशील बनाना
(4) विषय-वस्तु में अरुचि उत्पन्न करना
- (a) 1, 2 एवं 3 (b) 1 एवं 4
(c) 1 एवं 3 एवं 4 (d) 2, 3 एवं 4
29. 'खेल शिक्षण विधि' के प्रतिपादक कौन हैं?
- (a) सुकरात (b) फ्रोबेल
(c) किलपैट्रिक (d) अरस्तू
30. 'प्रयोजना विधि' के प्रतिपादक हैं—
- (a) दुर्खीम (b) प्लेटो
(c) किलपैट्रिक (d) सुकरात
31. दूसरे व्यक्ति के बाह्य व्यवहार की नकल है -
- (a) सीखना (b) अनुकरण
(c) कल्पना (d) चिन्तन
32. उदाहरण, निरीक्षण विश्लेषण, वर्गीकरण, नियमीकरण निम्नलिखित में से किस विधि के सोपान हैं?
- (a) निगमन विधि (b) आगमन विधि
(c) अन्तर्दर्शन विधि (d) बहिर्दर्शन विधि
33. श्यामपट्ट को शिक्षण सामग्री के किस समूह के अन्तर्गत किया जा सकता है?
- (a) श्रव्य साधन (b) दृश्य साधन
(c) दृश्य-श्रव्य साधन (d) इनमें से कोई नहीं
34. प्रधानाध्यापक या वरिष्ठ शिक्षक के लिए विद्यालय में कौन-सी नेतृत्व शैली बेहतर है?
- (a) सत्ताधारी नेतृत्व (b) प्रजातान्त्रिक नेतृत्व
(c) अहस्तक्षेपी नेतृत्व (d) उपरोक्त में से कोई नहीं
35. शिक्षण का सत्तावादी स्तर है
- (a) शिक्षक केन्द्रित (b) छात्र केन्द्रित
(c) प्रधानाध्यापक केन्द्रित (d) अनुभव केन्द्रित
36. निम्न में से कौन-सा शिक्षण-अधिगम का स्तर नहीं है?
- (a) विभेदीकरण स्तर (b) स्मृति स्तर
(c) चिन्तनशील स्तर (d) समझ स्तर
37. सी.बी.एस.ई. द्वारा प्रस्तावित समूह-परियोजना गतिविधि का एक सशक्त साधन है।
- (a) रोजमर्रा के शिक्षण से होने वाले तनाव को दूर करने
(b) अनेकता में एकता की संकल्पना का प्रचार-प्रसार करने
(c) सामाजिक भागीदारी को सुगम बनाने
(d) शिक्षकों के भार को हल्का करने
38. एक शिक्षक अपने लोकतांत्रिक स्वभाव के कारण विद्यार्थियों को पूरी कक्षा में कहीं भी बैठने की अनुमति देता है। कुछ शिक्षार्थी एक-साथ बैठते हैं और चर्चा करते हैं या सामूहिक पठन करते हैं। कुछ चुपचाप बैठकर अपने-आप पढ़ते हैं। एक अभिभावक को यह पसंद नहीं आता। इस स्थिति से निबटने का निम्न में से कौन सा तरीका सबसे बेहतर हो सकता है?
- (a) अभिभावकों को प्रधानाचार्य से अनुरोध करना चाहिए कि वे उनके बच्चे का अनुभाग बदल दें
(b) अभिभावकों को शिक्षक पर विश्वास व्यक्त करना चाहिए और शिक्षक के साथ समस्या पर चर्चा करनी चाहिए
(c) अभिभावकों को उस विद्यालय से अपने बच्चे को निकाल लेना चाहिए
(d) अभिभावकों को प्रधानाचार्य से शिक्षक की शिकायत करनी चाहिए।
39. एक शिक्षिका अपने शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्रियों और शारीरिक गतिविधियों का प्रयोग करती है क्योंकि -
- (a) वे शिक्षक को आराम देते हैं
(b) के प्रभावी आकलन को सुगम बनाते हैं
(c) वे शिक्षार्थियों को वैविध्य उपलब्ध कराते हैं
(d) इनमें अधिकतम इंद्रियों का उपयोग सीखने को संवर्द्धित करता है
40. एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों के अनेक तरह की सामूहिक गतिविधियों में व्यस्त रखती है, जैसे - समूह-चर्चा, समूह-परियोजनाएँ, भूमिका निर्वाह आदि। यह सीखने के किस आयाम को उजागर करता है?
- (a) सामाजिक गतिविधि के रूप में अधिगम
(b) मनोरंजन द्वारा अधिगम
(c) भाषा-निर्देशित अधिगम
(d) प्रतियोगिता-आधारित अधिगम
41. मूल्यांकन प्रक्रिया के तीन महत्वपूर्ण बिन्दु हैं
- (a) उद्देश्य, अधिगम अनुभव व मूल्यांकन के उपकरण
(b) छात्र, अध्यापक व उद्देश्य
(c) छात्र, समाज व अधिगम के अनुभव
(d) छात्र, परीक्षा व परिणाम
42. अधिगम का शिक्षा में योगदान है-
- (a) व्यवहार परिवर्तन में
(b) नवीन अनुभव प्राप्त करने में
(c) समायोजन में
(d) उपर्युक्त सभी
43. मूल्यांकन का उद्देश्य है—
- (a) बालकों को धीमी गति से सीखने वाले एवं प्रतिभाशाली बालकों के रूप में लेबल करना
(b) जिन बालकों को उपचारात्मक शिक्षा की आवश्यकता है, उनकी पहचान करना

- (c) अधिगम की कठिनाइयों व समस्या वाले क्षेत्रों का पता लगाना
(d) उत्पादक जीवन जीने के लिए शिक्षा किस सीमा तक तैयार कर पाई है, का पुष्टिपोषण प्रदान करना।
44. मूल्यांकन से अभिप्राय है—
(a) छात्रों की आवश्यकता का पता लगाना
(b) छात्रों की बुद्धि का पता लगाना
(c) छात्रों के अधिगम की सफलता व असफलता का अध्ययन करना
(d) स्वास्थ्य परीक्षण करना।
45. अधिगम में आकलन किस लिए आवश्यक होता है?
(a) ग्रेड एवं अंकों के लिए
(b) जाँच परीक्षण के लिए
(c) प्रेरणा के लिए
(d) पृथक्करण और श्रेणीकरण के उद्देश्य को प्रोत्साहन देने के लिए
46. निम्नलिखित में से कौन-सा आकलन करने का सर्वाधिक उपयुक्त तरीका है?
(a) आकलन शिक्षण-अधिगम में अन्तर्निहित प्रक्रिया है
(b) आकलन एक शैक्षणिक सत्र में दो बार करना चाहिए—शुरु में और अन्त में
(c) आकलन शिक्षक के द्वारा नहीं बल्कि किसी बाह्य एजेन्सी के द्वारा करना चाहिए
(d) आकलन सत्र की समाप्ति पर करना चाहिए
47. आकलन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है क्योंकि:
(a) आकलन से अध्यापक बच्चों के अधिगम को समझता है और उससे अपने शिक्षण की प्रतिपुष्टि भी करता है।
(b) आकलन ही एकमात्र तरीका है जो आश्वस्त करता है कि शिक्षकों ने पढ़ाया और बच्चों ने सीखा।
(c) आज के समय में केवल अंक ही शिक्षा में महत्वपूर्ण हैं।
(d) बच्चों को अंक दिए जाने चाहिए ताकि वे समझ सकें कि अपने सहपाठियों की तुलना में कहाँ पर हैं।
48. अध्यापक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसकी कक्षा के सभी शिक्षार्थी अपने आपको स्वीकृत और सम्मानित समझें। इसके लिए शिक्षक को चाहिए कि वह
(a) वंचित पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों का तिरस्कार करे ताकि वे अनुभव करें कि उन्हें अधिक कठोर परिश्रम करना है
(b) उन शिक्षार्थियों का पता लगाए जो अच्छी अंग्रेजी बोल सकते हों और सम्पन्न घरों से हों तथा उन्हें आदर के रूप में प्रस्तुत करें
(c) अपने शिक्षार्थियों की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त करे और कक्षा में विविध मतों को प्रोत्साहित करे
(d) कड़े नियम बनाए और जो बच्चे उनके पालन न करें उन्हें दण्ड दें
49. एक बहु-सांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में एक अध्यापिका सुनिश्चित करेगी कि आकलन में निम्नलिखित में से सम्मिलित हो—
(a) अपने आकलन उपकरण की विश्वसनीयता तथा वैधता
(b) अधिगम के न्यूनतम स्तरों के लिए अनुपालन करते हुए विद्यालय प्रशासन की अपेक्षाओं को पूरा
(c) आकलन उपकरण के मानकीकरण
(d) अपने विद्यार्थियों को सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
50. 'पाठ्यक्रम' निम्नलिखित में से शिक्षण के कौन-से चर में आता है?
(a) आश्रित चर (b) मध्यस्थ चर
(c) स्वतंत्र चर (d) उपरोक्त में से कोई नहीं
51. स्मिथ ने शिक्षण की त्रिधुवी प्रक्रिया में कार्यवाहक माना है—
(a) अभिभावक को (b) शिक्षक को
(c) शिक्षार्थी को (d) पाठ्यक्रम को
52. शिक्षण के आधार पर उसके कितने चर हैं?
(a) 1 (b) 2
(c) 3 (d) 4
53. प्रगतिशील शिक्षा में अपरिहार्य है कि कक्षा-कक्ष
(a) लोकतांत्रिक होता है और समझने के लिए बच्चों को पर्याप्त स्थान दिया गया होता है
(b) शिक्षक के पूर्ण नियंत्रण में होता है जिसमें वह अधिनायकतावादी होता है
(c) सत्तावादी होता है, जहाँ शिक्षक आदेश देता है और शिक्षार्थी चुपचाप अनुसरण करते हैं
(d) सबके लिए मुक्त होता है जिसमें शिक्षक अनुपस्थित होता है
54. यह तथ्य कि बच्चों को सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। निम्नलिखित में से किस व्यक्ति से सम्बन्धित है?
(a) चार्ल्स डार्विन (b) बी एफ स्किनर
(c) यूरी ब्रोनफैनब्रैनर (d) लिव वाइगोत्सकी
55. निम्नलिखित में से कौन-सा वाइगोत्सकी के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त पर आधारित है।
(a) सक्रिय अनुकूलन
(b) पारस्परिक शिक्षण
(c) संस्कृति-निरपेक्ष संज्ञानात्मक विकास
(d) अन्तर्दृष्टिपूर्ण अधिगम
56. वाइगोत्सकी बच्चों के सीखने में निम्नलिखित में से किस कारक की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल देते हैं?
(a) आनुवंशिक (b) नैतिक
(c) शारीरिक (d) सामाजिक

57. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा वाङ्मोत्की के द्वारा प्रस्तावित विकास तथा अधिगम के बीच सम्बन्ध का सर्वश्रेष्ठ रूप में सार प्रस्तुत करता है?
- (a) विकास अधिगम से स्वाधीन है।
 (b) विकास-प्रक्रिया अधिगम-प्रक्रिया से पीछे रह जाती है।
 (c) विकास अधिगम का समानार्थक है।
 (d) अधिगम एवं विकास समानान्तर प्रक्रियाएँ हैं।
58. सामाजिक अधिगम आरम्भ होता है
- (a) अलगाव से (b) भीड़ से
 (c) सम्पर्क से (d) दृश्य श्रव्य सामग्री से
59. समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसे बच्चे व वयस्क सीखते हैं
- (a) परिवार से (b) विद्यालय से
 (c) श्रेष्ठ जनों से (d) इन सभी से
60. सामाजीकरण में सम्मिलित हैं— सांस्कृतिक संचरण और।
- (a) विद्रोहियों को निरुत्साहित करना
 (b) वैयक्तिक व्यक्तित्व विकास
 (c) बच्चों को लेबलों में समायोजित करना
 (d) संवेगात्मक समर्थन उपलब्ध करना
61. एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों को अनेक तरह की सामूहिक गतिविधियों, में व्यस्त रखती है, जैसे—समूह चर्चा, समूह—परियोजनाएँ, भूमिका निर्वाह आदि। यह सीखने के किस आयाम को उजागर करता है?
- (a) सामाजिक गतिविधि के रूप में अधिगम
 (b) मनोरंजन द्वारा अधिगम
 (c) भाषा—निर्देशित अधिगम
 (d) प्रतियोगिता—आधारित अधिगम
62. समाजीकरण के सन्दर्भ में विद्यालयों के पास प्रायः एक प्रच्छन्न पाठ्यचर्या विद्यमान रहती है, जिसमें निहित हैं
- (a) परिवारों के माध्यम से विद्यार्थियों का समझौतापूर्ण (negotiating) व प्रतिरोधक समाजीकरण
 (b) मूल्यों व अभिवृत्तियों का शिक्षण एवं आकलन
 (c) बलात्मक अधिगम, चिन्तन व समक्षीय साथी एवं अध्यापक की अनुकृति द्वारा विशेष रूप से अपनाया जाने वाला व्यवहार
 (d) अन्तःक्रिया व सामग्री द्वारा विद्यालयों में प्रस्तुत किए जाने वाले सामाजिक भूमिकाओं से सम्बद्ध अनौपचारिक संकेत
63. समाजीकरण की प्रक्रिया में शामिल नहीं है
- (a) मूल्यों और विश्वासों का अर्जन
 (b) आनुवांशिक संचरण
- (c) एक संस्कृति की रीतियों और मानदण्डों को सीखना
 (d) कौशलों का अर्जन
64. शिक्षकों को यह सलाह दी जाती है कि वे अपने शिक्षार्थियों को सामूहिक गतिविधियों में शामिल करें क्योंकि सीखने को सुगम बनाने के अतिरिक्त ये में भी सहायता करती है।
- (a) दुश्चिन्ता (b) समाजीकरण
 (c) मूल्य द्वंद्व (d) आक्रामकता
65. एक अच्छा अध्यापक विद्यार्थियों के मध्य बढ़ावा देता है—
- (a) प्रतियोगिता की भावना को
 (b) सहयोग की भावना को
 (c) प्रतिद्वन्द्विता की भावना को
 (d) तटस्थता की भावना से
66. शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य संबंध होना चाहिए—
- (a) स्नेह का (b) विश्वास का
 (c) सम्मान का (d) उपर्युक्त सभी का
67. विद्यालय का कार्य होता है—
- (a) संस्कृति का संरक्षण
 (b) संस्कृति का परिष्करण
 (c) संस्कृति के नये प्रतिरूपों का निर्माण
 (d) उपरोक्त सभी
68. विद्यार्थियों को विद्यालय में खेलना क्यों उचित है?
- (a) यह उन्हें शारीरिक रूप से सशक्त बनाएगा
 (b) यह शिक्षकों के लिए काम आसान करेगा
 (c) यह समय बिताने में सहायक होगा
 (d) यह सहयोग एवं सन्तुलन का विकास करेगा
69. विद्यालय और समाजीकरण के बारे में निम्नलिखित में से क्या सत्य है?
- (a) विद्यालय समाजीकरण का पहला मुख्य कारक है।
 (b) विद्यालय समाजीकरण का एक महत्वपूर्ण कारक है।
 (c) समाजीकरण में विद्यालय की कोई भूमिका नहीं होती।
 (d) समाजीकरण में विद्यालय की बहुत थोड़ी भूमिका होती है।
70. एक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से मानव शिशु समाज के सक्रिय सदस्य के रूप में निष्पादन करने के लिए आवश्यक कौशलों का अर्जन करना प्रारंभ करता है।
- (a) समाजीकरण (b) विकास
 (c) सीखना (d) परिपक्वता
71. निम्नलिखित में से कौन-सा समाजीकरण का एक प्रमुख कारक है?
- (a) परिवार (b) कम्प्यूटर
 (c) आनुवंशिकता (d) राजनीतिक दल

72. समाजीकरण एक प्रक्रिया है –

- (a) मूल्यों, विश्वासों तथा अपेक्षाओं को अर्जित करने की।
- (b) घुलने-मिलने तथा समायोजन की।
- (c) एक समाज की संस्कृति की आलोचना करना सीखने की।
- (d) मित्रों के साथ सामाजिक बनने की।

73. निम्नलिखित में कौन-सा बच्चों के समाजीकरण को प्रगतिशील मॉडल के संदर्भ में सही नहीं है?

- (a) समूह कार्य में सक्रिय सहभागिता तथा सामाजिक कौशलों का सीखना।
- (b) बच्चे विद्यालय में बताई गई बातों को स्वीकार करते हैं चाहे उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो
- (c) कक्षा में प्रजातंत्र के लिए स्थान होना चाहिए।
- (d) समाजीकरण सामाजिक नियमों का अधिग्रहण है।

74. छोटे शिक्षार्थियों को कक्षा-कक्ष में समयवस्कों के साथ अन्तःक्रिया करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे—

- (a) वे एक-दूसरे से प्रश्नों के उत्तर सीख सकें
- (b) पाठ्यक्रम को बहुत जल्दी पूरा किया जा सके
- (c) वे पढ़ने के दौरान सामाजिक कौशल सीख सकें
- (d) शिक्षक कक्षा-कक्ष को बेहतर तरीके से नियंत्रित कर सकें

75. शिक्षा के संदर्भ में, समाजीकरण से तात्पर्य है—

- (a) अपने सामाजिक मानदंड बनाना
- (b) समाज में बड़ों का सम्मान करना
- (c) सामाजिक वातावरण में अनुकूलन और समायोजन
- (d) सामाजिक मानदंडों का सदैव अनुपालन करना

76. समाजीकरण है :

- (a) सामाजिक मानदंडों में परिवर्तन
- (b) शिक्षक एवं पढ़ाए गए के बीच संबंध
- (c) समाज के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया
- (d) समाज के मानदंडों के साथ अनुकूलन

77. के.मा.शि.बो. (CBSE) द्वारा अपनाए गए प्रगतिशील शिक्षा के प्रतिमान में बच्चों का समाजीकरण जिस प्रकार से किया जाता है, उससे अपेक्षा की जा सकती है कि

- (a) वे समय नष्ट करने वाली सामाजिक आदतों/प्रकृति का त्याग करें तथा सीखें कि किस प्रकार अच्छी श्रेणियाँ पाई जा सकती हैं (Score good grades)
- (b) वे सामूहिक कार्य में सक्रिय भागीदारी का निर्वाह करें तथा सामाजिक कौशल सीखें
- (c) वे बिना प्रश्न उठाए समाज के नियमों-विनियमों का अनुपालन करने के लिए तैयार हो सकें
- (d) किसी भी प्रकार की सामाजिक पृष्ठभूमि होते हुए भी वे वह सब स्वीकार करें जो उन्हें विद्यालय द्वारा प्रदान किया जाता है

78. विकास के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा एक उचित है?

- (a) विकास जन्म के साथ प्रारम्भ होता है और समाप्त होता है
- (b) 'सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ' विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करता है
- (c) विकास एकल आयामी है
- (d) विकास पृथक् होता है

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (a) | 2. (d) | 3. (b) | 4. (c) | 5. (a) | 6. (b) | 7. (b) | 8. (b) | 9. (b) |
| 10. (c) | 11. (a) | 12. (a) | 13. (c) | 14. (c) | 15. (a) | 16. (b) | 17. (d) | 18. (b) |
| 19. (a) | 20. (d) | 21. (b) | 22. (b) | 23. (d) | 24. (c) | 25. (d) | 26. (b) | 27. (c) |
| 28. (a) | 29. (b) | 30. (c) | 31. (b) | 32. (b) | 33. (b) | 34. (b) | 35. (a) | 36. (a) |
| 37. (c) | 38. (b) | 39. (d) | 40. (a) | 41. (a) | 42. (d) | 43. (d) | 44. (c) | 45. (c) |
| 46. (a) | 47. (a) | 48. (c) | 49. (d) | 50. (b) | 51. (b) | 52. (c) | 53. (a) | 54. (d) |
| 55. (b) | 56. (d) | 57. (b) | 58. (c) | 59. (d) | 60. (b) | 61. (a) | 62. (d) | 63. (b) |
| 64. (b) | 65. (b) | 66. (d) | 67. (d) | 68. (d) | 69. (b) | 70. (a) | 71. (a) | 72. (a) |
| 73. (b) | 74. (c) | 75. (c) | 76. (d) | 77. (b) | 78. (b) | | | |

एक समस्या समाधानकर्ता और एक वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में बालक

एक समस्या-समाधानकर्ता के रूप में बालक

शिक्षा का रचनावादी सिद्धांत बालक को एक अन्वेषक के रूप में देखता है। इस सिद्धांत के अनुसार बालक अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। वे अपनी समस्या का समाधान करने के लिए चिंतन करते हैं और चिंतन के द्वारा समस्या का समाधान करते हैं। इस सम्प्रत्यय को समझने के लिए समस्या समाधान के सम्प्रत्यय को समझ लेना आवश्यक है।

समस्या समाधान

समस्या समाधान का अर्थ एवं परिभाषा- समस्या समाधान से तात्पर्य मार्ग में आने वाली कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके लक्ष्यों को प्राप्त कर लेने से है। वस्तुतः समस्या समाधान चिंतन का ही एक विशिष्ट रूप है। समस्या उस परिस्थिति को कहते हैं जिसके लिए व्यक्ति के पास पहले से तैयार कोई समाधान नहीं होता है। ऐसे परिस्थिति का सामना करने के लिए एवं उसका समाधान खोजने के लिए व्यक्ति को चिंतन व तर्क का सहारा लेना पड़ता है।

➤ **स्किनर के अनुसार-** “समस्या समाधान लक्ष्य की प्राप्ति में बाधक प्रतीत होने वाली कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने की प्रक्रिया है।”

➤ **वुडवर्थ तथा माकिव्स के अनुसार-** “समस्या-समाधान व्यवहार ऐसी नवीन या कठिन परिस्थितियों में होता है, जिनमें काफी समान परिस्थितियों में पूर्व अनुभवों के आधार पर प्रतिपादित प्रत्ययों तथा सिद्धांतों को प्रयुक्त करने के लिए आदतन विधियों से समाधान नहीं होत पाता है।”

समस्या-समाधान के सोपान-

जॉन ब्रान्सफोर्ड तथा वेरी स्टीन ने समस्या समाधान व्यवहार के पाँच सोपानों को 'IDEAL' के कूटनाम से निम्नवत् प्रस्तुत किया है-

1. समस्या को पहचानना
2. समस्या को परिभाषित तथा प्रस्तुत करना
3. सम्भावित व्यवहारचरणाओं का अन्वेषण करना
4. व्यवहार रचनाओं पर कार्य करना
5. किये गये कार्य को देखना तथा क्रियाकलापों के प्रभावों का मूल्यांकन करना।

समस्या-समाधान की विधि-

1. **अनसीखी विधि-** इस विधि का प्रयोग निम्न कोटि के प्राणियों द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए किया जाता है। यह जन्मजात प्रवृत्तियों पर आधारित है।
2. **प्रयास एवं त्रुटि विधि-** इस विधि में प्राणी अपनी समस्या का समाधान प्रयास एवं त्रुटि द्वारा करता है। प्राणी तब तक प्रयास करता रहता है जब तक कि उसके समस्या का समाधान नहीं हो जाता है। इस विधि का प्रयोग निम्न कोटि व उच्च कोटि दोनों प्रकार के प्राणियों द्वारा किया जाता है।
3. **अंतर्दृष्टि विधि-** इस विधि में प्राणी अपने सम्मुख उपस्थित समस्यात्मक परिस्थिति पर पूर्ण रूपेण विचार करके अथवा उसे अच्छी तरह से समझकर अंतर्दृष्टि या सूझ के द्वारा समस्या का

समाधान खोजता है। इस विधि का प्रयोग उच्च कोटि के प्राणी करते हैं।

4. **वैज्ञानिक विधि-** वैज्ञानिक विधि में तर्क पूर्ण चिंतन के द्वारा समस्या का समाधान किया जाता है। जॉन डीवी ने अपनी पुस्तक 'How we think' में वैज्ञानिक विधि के निम्नलिखित पाँच सोपानों की चर्चा की है-

1. समस्या को समझना
2. परिकल्पना का निर्माण करना
3. तथ्यों का संकलन, व्यवस्थापन तथा विश्लेषण करना
4. निष्कर्ष प्राप्त करना
5. परिकल्पना का विशिष्ट परिस्थिति में परीक्षण करना।

एक समस्या समाधानकर्ता के रूप में बालक

स्कूली जीवन में एक बच्चों के समक्ष अनेक समस्याएँ आती हैं तथा उनका समाधान भी उन्हें ही ढूँढ़ना होता है। बच्चों को इस योग्य बनाने के लिए आवश्यक है कि उनका व्यक्तिगत विकास किया जाय जिससे कि वे सभी प्रकार की परिस्थितियों का सही ढंग से सामना कर सकें।

बालक को समस्या समाधानकर्ता के रूप में बनाने के लिए निम्नलिखित गुणों का विकास किया जा सकता है-

- बच्चे में आत्म पहचान का गुण विकसित करके
- अपनी कमियों को स्वीकार करना तथा दूर करना सिखाकर
- बच्चे को स्वावलम्बी बनाने के लिए प्रोत्साहित करके
- बच्चे में भाषा का विकास करके
- बच्चे में अंतर्दृष्टि को विकसित करके
- बच्चे को प्रयास करने के लिए प्रेरित करके

वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में बालक

जब बालक अपने ज्ञान और अनुभव के माध्यम से किसी समस्या के प्रत्येक पहलू को जानने लगता है तथा स्वयं ही समस्या का समाधान खोज लेता है तब उसमें में एक वैज्ञानिक अन्वेषक के गुण आने लगते हैं तथा वह अपनी समस्याओं का स्वयं समाधान करने लगता है।

बच्चों को वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में विकसित करने के लिए निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं-

■ **बच्चों के समक्ष छोटी-छोटी समस्याएँ रखकर-** बच्चों में एक वैज्ञानिक अन्वेषक के गुण विकसित करने के लिए आवश्यक है कि उसे यह जानकारी हो कि समस्या क्या है? इसके लिए बच्चों के समक्ष छोटी-छोटी समस्याओं को रखकर उनसे समस्या के विषय में पूछा जा सकता है।

■ **बच्चों को समस्या समाधान के लिए प्रेरित करके-** बच्चों को समस्या देकर उसका समाधान ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि वे स्वयं चिंतन एवं तर्क की सहायता से समस्या का समाधान कर सकें।

■ **समस्या-समाधान से प्राप्त परिणामों का परीक्षण करके-** बच्चों द्वारा बताये गये समाधान का विभिन्न परिस्थितियों में परीक्षण किया जाना चाहिए तथा उसके गुणों और दोषों को स्पष्ट करके छात्रों को अवगत कराना चाहिए।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बच्चों के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन-से सही हैं?
 (a) बच्चे जानकारी के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता हैं।
 (b) बच्चे समस्या समाधानकर्ता हैं।
 (c) बच्चे वैज्ञानिक शोधकर्ता हैं।
 (d) बच्चे पर्यावरण के सक्रिय अन्वेषक हैं।
 (a) B, C और D (b) A, B, C और D
 (c) A, B, और C (d) A, B और D
2. किस प्रकार से एक अध्यापिका बच्चों को बेहतर समस्या समाधानकर्ता बनने में सहायता कर सकती है?
 (a) बच्चों को विविध प्रकार की समस्याओं का समाधान करने के मौके देना तथा उनका हल करते समय सहयोग देना
 (b) समस्याओं का समाधान करने के लिए वस्तु रूप में पुरस्कार देना
 (c) बच्चों की पाठ्य-पुस्तक में समस्याओं का उत्तर देखने के लिए प्रोत्साहित करना
 (d) विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत सभी समस्याओं के सही समाधान उपलब्ध कराना
3. के अतिरिक्त निम्नलिखित समस्या समाधान की प्रक्रिया के चरण हैं
 (a) परिणामों की आशा करना
 (b) समस्या की पहचान
 (c) समस्या का छोटे हिस्सों में बाँटना
 (d) संभावित युक्तियों को खोजना
4. समस्या-समाधान प्रायः उन विद्यालयों में सफल है, जहाँ
 (a) केवल उच्चस्तरीय शैक्षिक उपलब्धि पर ही बल दिया जाता है
 (b) अध्यापक केन्द्रित शिक्षापात्र प्रभावी है
 (c) परिवर्तनीशील/लचीली पाठ्यचर्या है
 (d) कक्षाओं में छात्रों का सम-समूहीकरण उपलब्ध है
5. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता समस्या-समाधान उपागम का विशेष चिह्न है?
 (a) सही उत्तर प्राप्त करने का सामान्यतः एक उपागम होता है
 (b) समस्या केवल एक सिद्धांत/प्रकरण पर आधारित होती है
 (c) समस्या कथन में संकेत अन्तर्निहित रूप से दिया होता है
 (d) समस्या मौलिक होती है
6. शिक्षार्थियों से यह अपेक्षा करना है कि वे ज्ञान को उसी रूप में पुनः प्रस्तुत कर देंगे जिस रूप में उन्होंने उसे ग्रहण किया है।
 (a) अच्छा है, क्योंकि यह शिक्षक के लिये आकलन में सरल है
 (b) एक प्रभावी आकलन युक्ति है
 (c) समस्यात्मक है, क्योंकि व्यक्ति अनुभवों की व्याख्या करते हैं और ज्ञान को ज्यों-का-त्यों पुनः उत्पादित नहीं करते
 (d) अच्छा है, क्योंकि जो भी हमारे मन में हैं हम उसे रिकार्ड करने लगते हैं
7. यदि कोई शिक्षिका चाहे कि उसके विद्यार्थी समस्या-समाधान कौशल प्राप्त कर ले, तो विद्यार्थियों को ऐसे क्रिया-कलापों में लगाना चाहिए जिनमें हो –
 (a) पृष्ठना, तर्क करना और निर्णय लेना
 (b) बहुविकल्पी प्रश्नों वाले स्तरीकृत कार्यपत्रक
 (c) प्रत्यास्मरण, रटना और समझना
 (d) ड़िल और अभ्यास
8. निम्नलिखित में से समस्या-समाधान को क्या बाधित नहीं करता?
 (a) अन्तर्दृष्टि (Insight)
 (b) मानसिक प्रारूपता (Mental sets)
 (c) मोर्चाबंदी (Entrenchment)
 (d) निर्धारण (Fixation)
9. अभ्यास के नियम द्वारा छात्रों में विकसित होती है–
 (a) परिश्रम की आदत (b) बुद्धि
 (c) अंतर्दृष्टि (d) समस्या-समाधान क्षमता
10. निम्नलिखित में से कौन-सा 'आधारभूत सहायता' का एक अच्छा उदाहरण है (जिसका आशय है समस्या समाधान को तब तक सिखना जब तक शिक्षार्थी स्वयं न कर सके)?
 (a) उसे यह बताना कि वह बार-बार प्रयास द्वारा कर सकती है
 (b) समस्या का समाधान जल्दी देने के लिए पुरस्कार देना
 (c) उसे आधा समाधान (हल) किया उदाहरण उपलब्ध करवाना
 (d) उसे कहना कि जब तक वह समस्या का समाधान नहीं कर लेती, तब तक घर नहीं जा सकती
11. निम्नलिखित में से कौन-सी समस्या-समाधान की वैज्ञानिक पद्धति का पहला चरण है?
 (a) प्राक्कल्पना का परीक्षण करना
 (b) समस्या के प्रति जागरूकता
 (c) प्रासंगिक जानकारी को एकत्र करना
 (d) प्राक्कल्पना का निर्माण करना
12. शिक्षक ____ के अलावा निम्नलिखित सभी को करते हुए समस्या-समाधान को विद्यार्थियों के लिए मजेदार बना सकता है।
 (a) सृजनात्मक चिंतन के लिए असीमित अवसर उपलब्ध कराने
 (b) जब विद्यार्थी स्वयं से कोई कार्य करने की कोशिश कर रहे हो तो उनसे परिपूर्णता की अपेक्षा करने
 (c) मुक्त अंत वाली सामग्री उपलब्ध कराने
 (d) मुक्त खेल के लिए समय देने।

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|
| 1. (a) | 2. (a) | 3. (a) | 4. (c) | 5. (c) | 6. (c) | 7. (a) | 8. (a) | 9. (d) |
| 10. (a) | 11. (b) | 12. (b) | | | | | | |

12.

बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना; अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की त्रुटियों को समझना

अधिगम की संकल्पना

बाल्यावस्था के दौरान बच्चा चलना, बोलना, सामाजिक समूहों में अन्योन्यक्रिया करना सीखता है और विशेष समुदाय या समाज के रीति रिवाज सीखता है। इनमें अधिकांश व्यवहार या तो स्वभाविक रूप से या फिर प्रेक्षण या अनुकरण से अर्जित किये जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप बच्चे परिवेश की अपेक्षाओं के अनुकूल अपने आपको ढालना सीख पाते हैं।

इन्हीं गुणों के आधार पर अधिगम की संकल्पना को चार प्रमुख भागों में बाँटा जा सकता है—

1.	व्यवहारवादी संकल्पना	—	दृष्टव्य व्यवहार पर ध्यान केन्द्रित करना
2.	संज्ञानात्मक संकल्पना	—	मानसिक या तंत्रिका विज्ञानी प्रक्रिया के रूप में अधिगम
3.	रचनावादी संकल्पना	—	व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया के रूप में अधिगम
4.	सामाजिक संकल्पना	—	मानव सामाजिक कार्यकलाप से बेहतर सीखता है।

■ अधिगम की इन चारों संकल्पनाओं में व्यवहारवादी संकल्पना तथा संज्ञानात्मक संकल्पना अधिगम की परम्परागत संकल्पनाएँ हैं जबकि रचनावादी संकल्पना तथा सामाजिक संकल्पना आधुनिक व वैकल्पिक संकल्पनाएँ हैं। अतः हम यहाँ केवल वैकल्पिक संकल्पनाओं की ही चर्चा करेंगे।

1. अधिगम की रचनावादी संकल्पना— रचनावादी या निर्मितवाद या रचनात्मकवाद संकल्पना वह सिद्धांत है जो अधिगम को सक्रिय प्रक्रिया के रूप में मानता है, जिसमें विद्यार्थी नयी संकल्पनाओं, विचारों और ज्ञान का विगत ज्ञान और अनुभवों के आधार पर निर्माण करते हैं और उनका अंतरीकरण करते हैं।

यह सिद्धांत दावा करता है कि व्यक्ति जो कुछ पहले से ही जानते हैं और मानते हैं और वे विचार, घटनाएँ तथा क्रियाकलाप जिनके वे सम्पर्क में आते हैं, के साथ अन्योन्य क्रिया के माध्यम से अपनी समझ और ज्ञान का निर्माण या रचना करते हैं।

रचनावादी परिप्रेक्ष्य के अनुसार अधिगम ज्ञान अर्जित करने की बजाय ज्ञान निर्माण की सक्रिय प्रक्रिया है। इस संकल्पना में व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य से भिन्न अनुकरण या पुनरावृत्ति की बजाय ज्ञान विद्यार्थी की सक्रिय सहभागिता और विषयवस्तु के परिचालन के माध्यम से अर्जित किया जाता है। इसके अनुसार अध्यापन ज्ञान सम्प्रेषण की बजाय ज्ञान निर्माण में सहायता देने की प्रक्रिया है।

रचनात्मकवाद के प्रकार—

रचनात्मकवाद के तीन प्रमुख प्रकार हैं—

- आभासी रचनात्मकवाद
- प्रजातांत्रिक रचनात्मकवाद
- सामाजिक रचनात्मकवाद

(i) आभासी रचनात्मकवाद— इस सिद्धांत के अनुसार विद्यार्थी सक्रिय रूप से ज्ञान की रचना करता है न कि उसे परिवेश से निष्क्रिय रूप से प्राप्त करता है। इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार विद्यार्थी का पूर्व ज्ञान नये ज्ञान की रचना को सुसाध्य बनाने के लिए आवश्यक है और इसका बल ज्ञान की वस्तुपरकता पर है।

(ii) प्रजातांत्रिक रचनात्मकवाद— प्रजातांत्रिक रचनात्मकवाद वस्तुनिष्ठ ज्ञान की सम्भावना को अस्वीकार करते हैं और उनका मानना है कि सभी प्रकार के ज्ञान ज्ञाता के संज्ञानात्मक संरचना पर निर्भर करता है। इनके अनुसार ज्ञान व्यक्तिनिष्ठ होता है क्योंकि प्रत्येक अध्येता अपने अनुसार ज्ञान का निर्माण करता है।

(iii) सामाजिक रचनात्मकवाद— यह सिद्धांत मुख्यतः पियाजे, वाइगोत्सकी ब्रुनर और वण्डुरा के कार्य से विकसित हुआ है। रूसी मनोवैज्ञानिक वाइगोत्सकी ने सामाजिक रचनात्मकवाद की नींव रखी जिसमें सामाजिक विकास के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक उपागम को महत्वपूर्ण माना। यह उपागम इस मान्यता पर आधारित था कि कोई भी कार्य उस सामाजिक वातावरण से अलग नहीं किया जा सकता है जिसमें वह घटित होता है। सामाजिक रचनात्मक मॉडल व्यक्तिगत विकास के मुख्य निर्धारक के रूप में संस्कृति पर बल देता है।

2. अधिगम की सामाजिक संकल्पना— बालक का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ महत्वपूर्ण है क्योंकि बालक जो कुछ भी सीखता है वह एक विशेष सामाजिक संदर्भ में सीखता है। सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में एक विशेष जन समूह, मूल्य, मान्यताएँ, आस्थाएँ, रीति-रिवाज, वेश-भूषा, रहन-सहन जैसे व्यवहार शामिल

होते हैं। बालक इन सामाजिक-सांस्कृतिक गुणों को स्वीकार करता है। और सीखता है। यह सीखना दो प्रकार से होता है—

- (i) संस्कृतिकरण
- (ii) संस्कृति-संक्रमण

नोट— इसके बारे में चर्चा पूर्ववत् कर दी गयी है।

अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना एवं शिक्षा (शिक्षण विधि, अधिगमार्ता, शिक्षक, पाठ्यक्रम तथा मूल्यांकन)

वैकल्पिक शिक्षण में ध्यान देने वाली मुख्य बातें—अधिगम की सक्रिय विधियों का चयन, निर्णय निर्माण में विद्यार्थियों की सहभागिता, छात्र एवं शिक्षक के मध्य अनौपचारिक सम्बन्ध हस्तकौशल का विकास करना, सृजनात्मकता के विकास पर बल, वैयक्तिक अध्ययन पर बल, उदाहरणों के द्वारा शिक्षण, रटने की अपेक्षा तर्क एवं समझ पर बल, विद्यार्थियों में उत्साह प्यार एवं स्नेह को बढ़ावा देना, विद्यार्थियों में वैज्ञानिक चिंतन एवं तर्क का विकास करना, मानवता के सम्मान की शिक्षा, स्व अधिगम को बढ़ावा देना, विद्यार्थियों को अवसर देना कि वे स्व अधिगम के मार्ग का चुनाव करें, स्व अनुशासन को उत्पन्न करना इत्यादि बातें वैकल्पिक अधिगम में प्रमुख हैं।

वैकल्पिक अधिगम में शिक्षक की भूमिका—

वैकल्पिक अधिगम में शिक्षक पाठ प्रस्तुतकर्ता नहीं बल्कि मित्र, सलाहकार एवं सुलभकर्ता या सुगमकर्ता की भूमिका का निर्वहन करता है।

वैकल्पिक विद्यालय—

वैकल्पिक विद्यालय इस बात में विश्वास करते हैं कि बच्चे एवं किशोर तभी किसी विषय एवं परियोजना को प्रभावकारी तरीके से सीख सकते हैं जब इसमें उनकी रुचि एवं उसके लिए प्रोत्साहित हों। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विद्यालय सदैव तत्पर रहते हैं।

मूल्यांकन या आकलन—

वैकल्पिक अधिगम में निर्माणात्मक आकलन पर जोर दिया जाता है। यहाँ प्रत्येक छात्र की वैयक्तिकता को महत्व दिया जात है। निष्पक्ष संदर्भित आकलन पर जोर दिया जाता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में आंतरिक अभिप्रेरणा को बढ़ावा देना है। इसमें आकलन का आधार प्रत्येक छात्र की रुचियाँ अधिगम शैली एवं अधिगम गति है। यहाँ विद्यार्थियों की रिपोर्ट कार्ड, पोर्टफोलियो आदि का निर्माण किया जाता है।

अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की त्रुटियों को समझना

प्रत्येक कक्षा-कक्ष में कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो मंद गति से अध्ययन करते हैं या अध्ययन में विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों का

अनुभव करते हैं। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए शिक्षक शिक्षण की दो नवीन विधियों का प्रयोग करते हैं—

1. निदानात्मक
2. उपचारात्मक

शिक्षक पहले निदानात्मक शिक्षण द्वारा छात्रों की कठिनाइयों या त्रुटियों का निदान या पहचान करते हैं। तदुपरान्त वे उनको अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयों से मुक्त करने के लिए उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करते हैं।

निदानात्मक शिक्षण का अर्थ एवं परिभाषा

जिस प्रकार डॉक्टर रोगी के लक्षणों को देखकर उसके रोग की पहचान या निदान करता है उसी प्रकार शिक्षक छात्र की विषयगत मन्दता या उसकी अधिगम सम्बन्धी त्रुटियों को देखकर उसकी कठिनाइयों का निदान करता है।

➤ **गुड के अनुसार—** “निदान का अर्थ है— अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयों और कमियों के स्वरूप का निर्धारण।”

➤ **योकम व सिम्पसन के अनुसार—** “निदान किसी कठिनाई का उसके चिन्हों या लक्षणों से ज्ञान प्राप्त करने की कला या कार्य है। यह तथ्यों के परीक्षण पर आधारित कठिनाई का स्पष्टीकरण है।”

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि निदान द्वारा छात्रों की अधिगम सम्बन्धी त्रुटियों, कमियों, कठिनाइयों आदि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

➤ **मरसेल के अनुसार—** जिस शिक्षण में छात्रों की विशिष्ट त्रुटियों का निदान करने का विशेष प्रयास किया जाता है, उसको बहुधा निदानात्मक शिक्षण कहा जाता है।

निदानात्मक शिक्षण के उद्देश्य—

(i) छात्र की पाठ्य-विषय से सम्बन्धित जन्मजात अथवा स्वभाविक कठिनाई ज्ञात करना

(ii) छात्र की पाठ्य विषय से सम्बन्धित कठिनाई ज्ञात करना

निदानात्मक शिक्षण के क्षेत्र—

निदानात्मक शिक्षण का प्रयोग साधारणतः आधारभूत विषयों जैसे वाचन, लेखन, उच्चारण, व्याकरण और अंकगणित तक सीमित है।

■ छात्र की अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयों को समझने के लिए शिक्षक कभी-कभी प्रमापीकृत निदानात्मक परीक्षण का प्रयोग करता है।

■ **कुप्पूस्वामी के अनुसार—** “निदानात्मक परीक्षणों को हमें यह बताना चाहिए कि बालक क्या कर सकता है और क्या नहीं कर सकता है। क्योंकि जब हमको इस बात का ज्ञान हो जायेगा कि उसकी जो रुचियाँ एवं अभिरुचियाँ हैं, वे किन बातों में हैं, तभी हम उसके प्रति कर्तव्यों को पूर्ण कर सकेंगे।”

उपचारात्मक शिक्षण का अर्थ एवं परिभाषा

उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा छात्रों को अधिगम सम्बन्धी दोषों से मुक्त करके उनको ज्ञानार्जन की उचित दिशा की ओर मोड़ने का प्रयास किया जाता है।

- **योकम व सिम्पसन के अनुसार**—“उपचारात्मक शिक्षण उस विधि को खोजने का प्रयत्न करता है, जो छात्रों को अपनी कुशलता या विचार की त्रुटियों को दूर करने में सफलता प्रदान करे।”
- **ब्लेयर जोन्स व सिम्पसन के अनुसार**— “उपचारात्मक शिक्षण, वास्तव में उत्तम शिक्षण है जो छात्र को अपनी वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्रदान करता है और जो सुप्रेरित क्रियाओं द्वारा उसको अपनी कमजोरियों के क्षेत्रों में अधिक योग्यता की दिशा में अग्रसर करता है।”

उपचारात्मक शिक्षण के उद्देश्य—

- विद्यार्थियों के ज्ञान सम्बन्धी त्रुटियों को दूर करना
- विद्यार्थियों के अधिगम सम्बन्धी दोषों को दूर करना
- सब प्रकार की अधिगम सम्बन्धी त्रुटियों को शुद्ध करने के लिए प्रभावशाली विधियों का विकास करना

उपचारात्मक शिक्षण के विषय क्षेत्र—

निदानात्मक शिक्षण की तरह उपचारात्मक शिक्षण के विषय क्षेत्र भी वही हैं क्योंकि आधारभूत विषयों में सफलता प्राप्त न कर सकने के कारण छात्रों के समक्ष अनेक कठिनायाँ उपस्थिति हो सकती हैं। इसलिए आधारभूत विषयों में उपचारात्मक शिक्षण देना अनिवार्य है। ये आधारभूत विषय हैं— वाचन, लेखन, उच्चारण, भाषा और अंकगणित।

उपचारात्मक शिक्षण की विधि—

- छात्रों की त्रुटियों को यदा-कदा शुद्ध करना
- छात्रों को उनके व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर समूहों में बाँटकर शिक्षण प्रदान करना
- छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार समूहों में बाँटकर शिक्षण करना
- व्यक्तिगत रूप से छात्रों के अधिगम-सम्बन्धी दोषों को दूर करना

निर्माणात्मक या रचनात्मक आकलन

बच्चे सीखने के दौरान त्रुटियाँ करते हैं इन त्रुटियों को समझना शिक्षक के लिए आवश्यक होता है क्योंकि बच्चों की त्रुटियाँ एक खिड़की के समान होती है, जिसको देखकर, समझकर उनको दूर करने का प्रयास करता है। इन त्रुटियों को समझने के लिए तथा

त्रुटियों को सुधारने के लिए शिक्षक द्वारा निर्माणात्मक या रचनात्मक आकलन किया जाता है।

निर्माणात्मक आकलन को कई लोग ‘सीखने के लिए आकलन’ भी कहते हैं। इस प्रकार के आकलन का मुख्य प्रयोजन छात्रों को वह रचनात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त करने में सक्षम बनाना है जो उन्हें बेहतर सीखने और प्रभावी प्रगति करने में उनकी मदद करेगी।

योगात्मक आकलन— योगात्मक आकलन को ‘सीखने का आकलन’ के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार के आकलन का प्रयोजन शिक्षक को छात्रों की उपलब्धि और कार्य प्रदर्शन की पहचान करने में सक्षम करना है, जिसमें सीखने की अवधि एक सत्र या अवधि हो सकती है।

निर्माणात्मक आकलन द्वारा निम्नलिखित का पहचान किया जाता है—

- छात्र क्या कर सकता है और क्या नहीं?
- छात्रों को कठिन क्या लगता है?
- छात्रों को हो सकने वाली गलतफहमियाँ

इसमें शामिल होता है—

- सीखने के स्पष्ट लक्ष्यों की चर्चा करते हुए, छात्र के साथ संवाद
- छात्र को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सक्रिय होना
- स्वतः और समकक्षीय समीक्षा सहित प्रगति की निगरानी

निर्माणात्मक आकलन की मुख्य विशेषताएँ— CBSE—

2009 के अनुसार निर्माणात्मक आकलन की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं—

- निर्माणात्मक आकलन नैदानिक और सुधारात्मक है।
- यह प्रभावी प्रतिक्रिया के लिए प्रावधान करता है।
- यह छात्रों के स्वयं सीखने में उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए मंच प्रदान करता है।
- यह शिक्षकों को आकलन के नतीजों को ध्यान में रखते हुए अध्यापन को समायोजित करने में सक्षम करता है।
- यह छात्रों की स्वयं का आकलन करने और सुधार करने के तरीके को समझने में सक्षम होने की जरूरत की पहचान करता है।
- यह छात्रों की प्रतिक्रिया के बाद उनके काम को सुधारने का अवसर प्रदान करता है।

निर्माणात्मक आकलन शिक्षक को वहाँ से आगे बढ़ने का अवसर देता है, जहाँ छात्र होता है और छात्र को यह समझने का मौका देता है कि सफल होने के लिए क्या करना है। इसलिए निर्माणात्मक आकलन विद्यार्थी को शामिल करता है और छात्र को उसके सीखने का स्वामित्व प्रदान करता है।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उपचारात्मक विधि का प्रयोग जिनके लिए किया जाता है, वे हैं
 - (a) सामान्य बच्चे
 - (b) समस्यात्मक बच्चे
 - (c) सामान्य तथा समस्यात्मक बच्चे
 - (d) प्रतिभाशाली बच्चे
2. नैदानिक परीक्षा (Diagnostic Test) का मुख्य उद्देश्य है
 - (a) कक्षा में प्रदर्शन के दौरान सामान्यतया कमजोर क्षेत्र में चिह्नित करना
 - (b) उपचारात्मक कार्यक्रम की विशेष प्रकृति की आवश्यकता
 - (c) अकादमिक कठिनाइयों के कारणों का पता लगाना
 - (d) छात्र की कठिनाइयों की विशेष प्रकृति को जानना
3. व्यक्तिगत निदान विधि का उपयोग है, विशेषतः-
 - (a) बुद्धिमान बालकों का अध्ययन
 - (b) असामान्य एवं संतुलित बालकों का अध्ययन
 - (c) दुर्बल बालकों का अध्ययन
 - (d) सामान्य बालकों का अध्ययन
4. बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में प्रगति तब हो सकती है जब हम-
 - (a) उसकी प्रगति की नियमित रूप से जाँच करें
 - (b) बच्चों की प्रगति को नियमित रूप से जाँचने के साथ-साथ सुधारात्मक कदम उठाएँ
 - (c) बच्चों को नियमित रूप से गृहकार्य दें
 - (d) बच्चों के लिए नियमित रूप से गतिविधियाँ आयोजित कराएँ
5. शिक्षार्थियों द्वारा की गई गलतियाँ और त्रुटियाँ-
 - (a) बच्चों को 'कमजोर' अथवा 'उत्कृष्ट' चिह्नित करने के अच्छे अवसर हैं
 - (b) शिक्षक और शिक्षार्थियों की असफलता के सूचक हैं
 - (c) उनके चिन्तन को समझने के अवसर के रूप में देखी जानी चाहिए
 - (d) कठोरता से निपटाई जानी चाहिए
6. बच्चों की त्रुटियों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?
 - (a) बच्चों की त्रुटियाँ उनके सीखने की प्रक्रिया का अंग है
 - (b) बच्चे तब त्रुटियाँ करते हैं जब शिक्षक सौम्य हो और उन्हें त्रुटियाँ करने पर दण्ड न देता हो
 - (c) बच्चों की त्रुटियाँ शिक्षक के लिए महत्वहीन है और उसे चाहिए कि उन्हें काट दे और उन पर ध्यान न दें
 - (d) असावधानी के कारण बच्चे त्रुटियाँ करते हैं
7. एक शिक्षक के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है?
 - (a) कक्षा में अनुशासन बनाए रखना
 - (b) कक्षा में समयानुवर्ती होना
 - (c) विद्यार्थियों की कठिनाइयों को दूर करना
 - (d) एक सुवक्ता होना
8. निम्नलिखित में से कौन सा कथन बच्चों की त्रुटियों के सम्बन्ध में सबसे उपयुक्त है?
 - (a) गलतियों से बचने के लिए बच्चों को शिक्षक का अनुकरण करना चाहिए।
 - (b) बच्चों की गलतियों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए और उन्हें कठोर दंड दिया जाना चाहिए ताकि वे गलतियाँ न दुहराएँ।
 - (c) बच्चे गलतियाँ करते हैं क्योंकि उनमें विचार करने की क्षमता नहीं होती।
 - (d) बच्चों की गलतियाँ एक खिड़की के समान होती हैं, यह जानने के लिए कि वे किस प्रकार सोचते हैं।
9. जो अध्यापक/अध्यापिका अपने विद्यार्थियों की त्रुटियों में सुधार करना चाहता/चाहती है, उसके लिए निम्नलिखित में से कौन-सा समुचित मार्ग है?
 - (a) उसे अपने विद्यार्थियों की प्रत्येक त्रुटि का संशोधन करना चाहिए, इसके लिए चाहे उसे विद्यालय में देर तक बैठना पड़े
 - (b) उसे बार-बार की जाने वाली तथा सामान्य त्रुटियों की अपेक्षा कम बार होने वाली त्रुटियों का अधिक संशोधन करना चाहिए
 - (c) उसे उन त्रुटियों का संशोधन करना चाहिए जो सामान्य अर्थ व अवबोधनात्मकता में हस्तक्षेप करती हैं
 - (d) अगर त्रुटि-संशोधन प्रक्रिया बच्चों को क्षुब्ध करती है, तो उसे उनका संशोधन नहीं करना चाहिए
10. शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों की त्रुटियों का अध्ययन करना चाहिए क्योंकि वे प्रायः की ओर संकेत करती हैं।
 - (a) योग्यताओं के अनुसार समूह बनाने हेतु दिशा-निर्देश
 - (b) भिन्न प्रकार की पाठ्यचर्या की आवश्यकता
 - (c) उनके ज्ञान की सीमा
 - (d) आवश्यक उपचारात्मक युक्तियाँ
11. एक सिद्धान्त के रूप में निर्मितवाद-
 - (a) अनुकरण की भूमिका पर केन्द्रित करता है
 - (b) अधिगमकर्ता की स्वयं के शब्दों का निर्माण करने की भूमिका पर जोर देता है।

- (c) सूचनाओं को रटने तथा प्रत्यास्मरण द्वारा परीक्षण पर जोर देता है
- (d) शिक्षक की प्रधान भूमिका पर जोर देता है
12. निम्न में से कौन-सा 'वाद' बच्चों को अपना ज्ञान स्वयं निर्माण करने का अवसर प्रदान करता है?
- (a) व्यवहारवा (b) संज्ञावाद
- (c) रचनावाद (d) ज्ञानवाद
13. "सीखने का वह मॉडल" जो बच्चों की सृजनात्मकता को उत्प्रेरित करता है:
- (a) बैंकिंग मॉडल (b) रचनावादी मॉडल
- (c) प्रोग्रामिंग मॉडल (d) उपरोक्त में कोई नहीं
14. यदि आपकी कक्षा का कोई बच्चा प्रायः चुप रहता है, तो आप क्या करेंगे?
- (a) उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देंगे
- (b) उसकी किसी मनोवैज्ञानिक के पास ले जाएँगे
- (c) उसके चुप रहने के कारण को जानने का प्रयास करेंगे
- (d) उसके माता-पिता के बात करेंगे
15. वर्तमान समय में शिक्षक की भूमिका है
- (a) ज्ञान देने वाले की (b) सुगमकर्ता की
- (c) मित्र की (d) प्रबन्धक की
16. शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य सम्बन्ध होना चाहिए
- (a) स्नेह का (b) विश्वास का
- (c) सम्मान का (d) ये सभी
17. किसी कक्षा में शिक्षक की भूमिका है
- (a) समय-सारणी का कठोरता से पालन करना और पाठ्यक्रम से बँधे रहना
- (b) सीखने की विश्वसनीय स्थितियाँ जुटाना और शिक्षार्थियों को स्वतंत्र चिन्तन की सुविधा देना
- (c) अपने ज्ञान से शिक्षार्थियों को परिपूर्ण करना और उन्हें परीक्षा के लिए तैयार करना
- (d) सीधे तरीके से ज्ञान पहुँचाना और शिक्षार्थियों को सही उत्तरों के लिए तैयार करना
18. बच्चों में ज्ञान की रचना करने और अर्थ का निर्माण करने की क्षमता होती है। इस परिप्रेक्ष्य में एक शिक्षक की भूमिका है
- (a) सम्प्रेषक और व्याख्याता की
- (b) सुगमकर्ता की
- (c) निर्देशक की
- (d) तालमेल बैठाने वाले की
19. उच्च प्राथमिक विद्यालय की गणित अध्यापिका के रूप में आप विश्वास करती हैं कि
- (a) विद्यार्थियों की गलतियाँ उनके चिन्तन में अन्तर्दृष्टि उपलब्ध कराती हैं
- (b) विद्यार्थियों के कार्यविधिक ज्ञान को जानने की आवश्यकता होती है, चाहे वे संकल्पनात्मक आधार नहीं समझते हों
- (c) उच्च प्राथमिक विद्यालय के सभी बच्चों में गणित पढ़ने की योग्यता नहीं होती है
- (d) लड़के गणित को बिना प्रयास किए सीख जाएँगे क्योंकि यह उनकी 'जन्मजात' विशेषता है तथा आपको लड़कियों के ऊपर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है
20. विद्यार्थी में अवांछित व्यवहार को किंचित परिवर्तन करने में सबसे प्रभावी पद्धति है
- (a) विद्यार्थी को दण्ड देना
- (b) अभिभावकों को ध्यान में इसे लाना
- (c) अवांछित व्यवहार के कारणों को ढूँढना एवं उपचार का प्रबन्धन करना
- (d) इसकी उपेक्षा करना
21. किसी कक्षा में शिक्षक की भूमिका है :
- (a) समय-सारणी का कठोरता से पालन करना और पाठ्यक्रम से बँधे रहना।
- (b) सीखने की विश्वसनीय स्थितियाँ जुटाना और शिक्षार्थियों को स्वतंत्र चिन्तन की सुविधा देना।
- (c) अपने ज्ञान से शिक्षार्थियों को परिपूर्ण करना और उन्हें परीक्षा के लिए तैयार करना।
- (d) सीधे तरीके से ज्ञान पहुँचाना और शिक्षार्थियों को सही उत्तरों के लिए तैयार करना।
22. सिद्धान्त के रूप में रचनावाद –
- (a) सूचनाओं को याद करने और पुनःस्मरण द्वारा जाँच करने पर बल देता है
- (b) शिक्षक की प्रभुत्वशाली भूमिका पर बल देता है
- (c) अनुकरण की भूमिका पर केंद्रित है
- (d) दुनिया के बारे में अपना दृष्टिकोण निर्मित करने में शिक्षार्थी की भूमिका पर बल देता है
23. अधिगम से सम्बन्धित किसी विद्यार्थी की समस्याओं का सबसे अच्छा उपचार है
- (a) कठोर परिश्रम का सुझाव
- (b) ग्रन्थालय में निरीक्षित अध्ययन
- (c) निजी शिक्षण का सुझाव
- (d) निदानात्मक शिक्षण
24. निर्माणात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य है
- (a) प्रगति पर गौर करना एवं उपचारात्मक अनुदेशन की योजना बनाना
- (b) विद्यार्थियों की समझ का पता लगाना
- (c) अध्यापक के उद्देश्यों की पूर्ति का पता लगाना
- (d) ग्रेड्स प्रदान कराना।

25. “वे सभी क्रियाकलाप जो शिक्षक व शिक्षार्थी द्वारा स्वयं को आकलित करने के लिये किये जाते हैं, जो एक प्रतिपुष्टि के रूप में शिक्षण व अधिगम क्रियाकलापों को सुधारने हेतु सूचना प्रदान करते हैं।” उसे क्या कहा जाता है?
 (a) उपलब्धि परीक्षण (b) आकलन
 (c) परीक्षा (d) अधिगम
26. आकलन
 (a) बच्चों को लेवल (नाम देने) और वर्गीकृत करने की अच्छी रणनीति है
 (b) बच्चों में प्रतियोगितात्मक भावना को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना है
 (c) सीखने को सुनिश्चित करने के लिए तनाव और दबाव को उत्पन्न करता है
 (d) सीखने में सुधार का एक तरीका है
27. आकलन के बारे में निम्नलिखित कथनों में कौन-से कथन सही हैं?
 (1) आकलन से विद्यार्थियों को यह सहायता मिलनी चाहिए कि वे अपनी शक्तियों और रक्तियों को देख सकें और शिक्षक तदनुसार उन्हें ठीक कर सकें।
 (2) आकलन तभी सार्थक होता है जब विद्यार्थियों का तुलनात्मक मूल्यांकन भी हो।
 (3) आकलन केवल स्मरण शक्ति का ही नहीं, बोधन और अनुप्रयोग का भी होना चाहिए।
 (4) आकलन तब तक उद्देश्यपूर्ण नहीं हो सकता जब तक उससे भय और चिंता का संचार न हो।
 (a) 1 और 2 (b) 2 और 3
 (c) 2 और 4 (d) 1 और 3
28. आकलन उद्देश्यपूर्ण होता है यदि—
 (a) इससे विद्यार्थियों और शिक्षकों को प्रतिपुष्टि (फीडबैक) प्राप्त हो।
 (b) यह केवल एक बार वर्ष के अंत में हो।
 (c) विद्यार्थियों की उपलब्धियों में अंतर करने के लिए तुलनात्मक मूल्यांकन किया जाए।
 (d) इससे विद्यार्थियों में भय और तनाव का संचार हो।
29. जब एक बावर्ची खाना पकाते समय खाने को चखता है तो वह के समान है।
 (a) सीखने का आकलन
 (b) सीखने के लिए आकलन
 (c) सीखने के रूप में आकलन
 (d) आकलन और सीखना
30. सीखने के लिए आकलन
 (a) अभिप्रेरणा को बढ़ावा देता है
 (b) अलग करने और रैंक देने के प्रयोजन के लिए किया जाता है
 (c) ग्रेड्स को पूरी तरह से महत्व देने पर बल देता है
 (d) विशिष्ट होता है और अपने आप में की गई आकलन गतिविधि है
31. निम्नलिखित में से कौन-सा एक उपयुक्त रचनात्मक आकलन कार्य नहीं है?
 (a) खुले अन्त वाले प्रश्न
 (b) परियोजना
 (c) अवलोकन
 (d) विद्यार्थियों का योग्यता क्रम निर्धारित करना
32. एक उच्च प्राथमिक विद्यालय के संरचनात्मक कक्षा-कक्ष में अपने स्वयं के आकलन में विद्यार्थियों की भूमिका में निम्नलिखित में से क्या देखा जाएगा?
 (a) एक विस्तृत दिशा-निर्देश बनाना कि किस प्रकार से विद्यार्थियों की उपलब्धि तथा कक्षा में प्रतिष्ठा को अंको के साथ सह-सम्बद्ध किया जाएगा
 (b) शिक्षण अधिगम में आकलन की भूमिका को नकारना
 (c) विद्यार्थी अपने आकलन के एकमात्र निर्धारक होंगे
 (d) विद्यार्थी अध्यापक के साथ आकलन के लिए योजना बनाएंगे
33. शिक्षण में अध्यापकों के द्वारा विद्यार्थियों का आकलन इस अन्तर्दृष्टि को विकसित करने के लिए किया जा सकता है :
 (a) उन विद्यार्थियों की पहचान करना जिन्हें उच्चतर कक्षा में प्रोत्त करना है
 (b) उन विद्यार्थियों को प्रोत्त न करना जो विद्यालय के स्तर के अनुकूल नहीं है
 (c) शिक्षार्थियों की आवश्यकता के अनुसार शिक्षण उपागम में परिवर्तन करना
 (d) कक्षा में ‘प्रतिभाशाली’ तथा ‘कमजोर’ विद्यार्थियों के समूह बनाना
34. एक अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को किसी विषय की अपनी अवबोधनात्मकता को प्रतिबिम्बित करते हुए संकल्पनात्मक मानचित्र (concept map) का निर्माण करने को कहना/कहता है। वह —
 (a) विद्यार्थियों की स्मृतियों को मंथर गति से जागृत कर रहा/रही है
 (b) रचनात्मक आकलन कर रहा/रही है
 (c) छात्रों की मुख्य बिन्दुओं का सार लेखन की क्षमता का परीक्षण कर रहा/रही है
 (d) छात्रों की उपलब्धि के मूल्यांकन हेतु शीर्षकों (rubrics) के विकास का प्रयास कर रहा/रही है
35. सीखने आकलन, आकलन और अनुदेशन के बीच के दृढ़ीकरण द्वारा सीखने को प्रभावित करता है।
 (a) का; अंतर (b) का; भिन्नता
 (c) के लिए; सम्बन्धों (d) के लिए; अंतर
36. सीखने के लिए आकलन निम्नलिखित का ध्यान रखता है सिवाय
 (a) विद्यार्थियों की क्षमताएँ (b) विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ
 (c) विद्यार्थियों की त्रुटियाँ (d) विद्यार्थियों की अधिगम-शैलियाँ

37. निम्नलिखित में से कौन-सा रचनात्मक आकलन (Formative Assessment) के लिए उचित उपकरण नहीं है?
- (a) सत्र परीक्षा (b) प्रश्नोत्तरी और खेल
(c) दत्त कार्य (d) मौखिक प्रश्न
38. विद्यार्थियों के सीखने में जो रिक्तियाँ रह जाती हैं उनके निदान के बाद होना चाहिए।
- (a) सभी पाठों को व्यवस्थित रूप से दोहराना
(b) शिक्षार्थियों और अभिभावकों को उपलब्धि के बारे में बताना
(c) समुचित उपचारात्मक कार्य
(d) सघन अभ्यास कार्य
39. मूल्यांकन (assessment) का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए –
- (a) यह निर्णय लेना कि क्या विद्यार्थी को अगली कक्षा में प्रोन्नत किया जाना चाहिए
(b) सीखने में होने वाली कमियों का निदान और उपचार करना
(c) शिक्षार्थियों की त्रुटियाँ निकालना
(d) शिक्षार्थियों की उपलब्धि को मापना
40. गणित में अधिगम नियोग्यता का आकलन निम्न में से किस परीक्षण द्वारा सर्वाधिक उचित तरीके से किया जा सकता है?
- (a) अभिक्षमता परीक्षण (b) निदानात्मक परीक्षण
(c) स्क्रीनिंग परीक्षण (d) उपलब्धि परीक्षण
41. कृतिका अक्सर घर में ज्यादा बात नहीं करती, लेकिन विद्यालय में वह काफी बात करती है। यह दर्शाता है कि
- (a) शिक्षकों की माँग होती है कि बच्चे विद्यालय में खूब बात करें
(b) कृतिका को अपना घर बिल्कुल पसंद नहीं है
(c) उसके विचारों को विद्यालय में मान्यता मिलती है
(d) विद्यालय हर समय बच्चों को खूब बात करने का अवसर देता है
42. सृजनवाद में—
- (a) बच्चे सीखने की प्रक्रिया में निष्क्रिय रूप से प्रतिभाग करते हैं।
(b) शिक्षा शिक्षक केन्द्रित होती है।
(c) शिक्षा बाल केन्द्रित होती है।
(d) शिक्षा व्यवहारवादी होती है।
43. प्रगतिशील शिक्षा निम्नलिखित में से किस कथन से सम्बन्धित है?
- (a) शिक्षक सूचना और प्राधिकार से प्रवर्तक होते हैं
(b) ज्ञान प्रत्यक्ष अनुभव और सहयोग से उत्पन्न होता है
(c) अधिगम तथ्यों के एकत्रीकरण और कौशल में प्रवीणता के साथ सीधे मार्ग पर चलता है
(d) परीक्षा मानदण्ड सन्दर्भित और बाह्य है
44. वर्तमान समय में शिक्षक की भूमिका है—
- (a) ज्ञान देने वाले की (b) सुगमकर्ता की
(c) मित्र की (d) प्रबंधक की
45. कृतिका जो अपने घर में ज्यादा बात नहीं करती है, जबकि विद्यालय में ज्यादा करती है, यह प्रदर्शित करता है?
- (a) विद्यालय बच्चों को ऐसा अवसर प्रदान करता है कि वो ज्यादा बात करें।
(b) अध्यापकों की माँग होती है कि छात्र विद्यालय पर अधिक बात करें।
(c) वह किसी भी स्तर पर अपने घर को पसंद नहीं करती है।
(d) उसके विचारों को विद्यालय में सम्मानित किया जाता है।
46. शिक्षण- प्रक्रिया में निम्नलिखित में किसका भली प्रकार ध्यान रखना चाहिए?
- (a) विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता
(b) अनुशासन और नियमित उपस्थिति
(c) गृहकार्य की जाँच में लगन
(d) विषय-वस्तु का कठिनाई स्तर
47. पियाजे तथा वाइगोत्स्की के अनुसार, एक रचनात्मक कक्षा-कक्ष में अधिगम
- (a) शिक्षार्थियों द्वारा स्वयं सृजित किया जाता है, जो एक सक्रिय भूमिका निभाते हैं
(b) शिक्षक द्वारा पुनर्बलन किया जाना
(c) शिक्षक द्वारा लिखवाया जाता है तथा शिक्षार्थी निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होते हैं
(d) उद्दीपक तथा अनुक्रिया के जोड़ से होता है
48. कक्षा में वास्तविक सांसारिक समस्याओं से सम्बद्ध जटिल परियोजनाओं पर कार्य करते हुए अध्यापक व छात्र एक-दूसरे के अनुभवों से परस्पर ग्रहण करते रहते हैं।
- (a) पारम्परिक (b) रचनात्मक (Constructive)
(c) अध्यापक-केन्द्रित (d) सामाजिक-रचनात्मक
49. प्रगतिशील शिक्षा निम्नलिखित में से किस कथन से सम्बन्धित है?
- (a) शिक्षक सूचना और प्राधिकार के प्रवर्तक होते हैं।
(b) ज्ञान प्रत्यक्ष अनुभव और सहयोग से उत्पन्न होता है।
(c) अधिगम तथ्यों के एकत्रीकरण और कौशल में प्रवीणता के साथ सीधे मार्ग पर चलता है।
(d) परीक्षा मानदंड-संदर्भित और बाह्य है।
50. शिक्षार्थियों के ज्ञान अर्जन में सहायता करने के क्रम में अध्यापकों को किस पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए?
- (a) सुनिश्चित करना कि शिक्षार्थी सब कुछ याद करते हैं
(b) शिक्षार्थी के द्वारा प्राप्त किए गए अंकों/ग्रेडों पर
(c) शिक्षार्थी को सक्रिय सहभागिता के लिए शामिल करना
(d) शिक्षार्थी के द्वारा अधिगम की अवधारणाओं में कुशलता प्राप्त करना

51. बच्चों के अधिगम को सुगम बनाने के लिए अध्यापकों को एक अच्छे कक्षायी परिवेश का सृजन करने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के अधिगम परिवेश का सृजन करने के लिए नीचे दिए गए कथनों में से कौन-सा सही नहीं है?
- (a) बच्चे के प्रयासों को स्वीकृति
(b) अध्यापकों के अनुसार कार्य करना
(c) बच्चे को स्वीकार करना
(d) अध्यापक का सकारात्मक रुख
52. एक प्रभावी कक्षा में :
- (a) बच्चे अपने अधिगम को सुगम बनाने के लिए मार्गदर्शन एवं सहयोग हेतु शिक्षक से सहायता लेते हैं।
(b) बच्चे हमेशा उत्सुक और तैयार रहते हैं, क्योंकि शिक्षक उनकी प्रत्यास्मरण योग्यता का आकलन करने के लिए नियमित रूप से परीक्षा लेता रहता है।
(c) बच्चे शिक्षक से डरते हैं, क्योंकि वह मौखिक और शारीरिक दंड का प्रयोग करता है।
(d) बच्चे शिक्षक का सम्मान नहीं करते हैं और जैसा उन्हें अच्छा लगता है वैसा ही करते हैं।
53. पियाजे तथा वाइगोत्स्की के अनुसार, एक रचनात्मक कक्षा-कक्ष में अधिगम
- (a) शिक्षक द्वारा लिखवाया जाता है तथा विद्यार्थी निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होते हैं
(b) उद्दीपक तथा अनुक्रिया के जोड़ से होता है
(c) शिक्षक द्वारा पुनर्बलन किया जाना है
(d) शिक्षार्थियों द्वारा स्वयं सृजित किया जाता है, जो एक सक्रिय भूमिका निभाते हैं
54. बच्चों के बारे में निम्नलिखित कथनों में से किस कथन से वाइगोत्स्की सहमत होते?
- (a) बच्चे तब सीखते हैं जब उनके लिए आकर्षक पुरस्कार निर्धारित किए जाएँ
(b) बच्चों के चिन्तन को तब समझा जा सकता है जब प्रयोगशाला में पशुओं पर प्रयोग किए जाएँ
- (c) बच्चे जन्म से शैतान हैं और उन्हें दण्ड देकर नियंत्रित किया जाना चाहिए
(d) बच्चे समवयस्कों और वयस्कों के साथ सामाजिक अन्तः क्रियाओं के माध्यम से सीखते हैं
55. लेव वाइगोत्स्की के अनुसार संज्ञानात्मक विकास का मूल कारण है—
- (a) संतुलन
(b) सामाजिक अन्योन्यक्रिया
(c) मानसिक प्रारूपों (स्कीमाज़) का समायोजन
(d) उद्दीपक-अनुक्रिया युग्मन
56. लेव वाइगोत्स्की के समाज संरचना सिद्धान्त में दृढ़ विश्वास रखने वाले शिक्षक के नाते आप अपने बच्चों के आकलन के लिए निम्नलिखित में से किस विधि को वरीयता देंगे?
- (a) सहयोगी प्रोजेक्ट
(b) मानकीकृत परीक्षण
(c) तथ्यों पर आधारित प्रत्यास्मरण के प्रश्न
(d) वस्तुपरक बहुविकल्पी प्रकार के प्रश्न
57. वाइगोत्स्की के अनुसार, सीखने को पृथक् नहीं किया जा सकता
- (a) उसके सामाजिक संदर्भ से
(b) अवबोधन और अवधानात्मक प्रक्रियाओं से
(c) पुनर्बलन से
(d) व्यवहार में मापने योग्य परिवर्तन से
58. कक्षा में वास्तविक सांसारिक समस्याओं से जटिल परियोजनाओं पर कार्य करते हुए अध्यापक व छात्र एक-दूसरे के अनुभवों से परस्पर ग्रहण करते रहते हैं।
- (a) अध्यापक केन्द्रित (b) सामाजिक-रचनात्मक
(c) पारम्परिक (d) रचनात्मक

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (b) | 2. (c) | 3. (c) | 4. (b) | 5. (c) | 6. (a) | 7. (c) | 8. (d) | 9. (c) |
| 10. (d) | 11. (b) | 12. (c) | 13. (b) | 14. (c) | 15. (b) | 16. (d) | 17. (b) | 18. (b) |
| 19. (a) | 20. (c) | 21. (b) | 22. (d) | 23. (d) | 24. (a) | 25. (b) | 26. (d) | 27. (d) |
| 28. (a) | 29. (b) | 30. (a) | 31. (d) | 32. (d) | 33. (c) | 34. (b) | 35. (c) | 36. (b) |
| 37. (a) | 38. (c) | 39. (b) | 40. (b) | 41. (c) | 42. (c) | 43. (b) | 44. (b) | 45. (d) |
| 46. (a) | 47. (a) | 48. (d) | 49. (b) | 50. (c) | 51. (b) | 52. (a) | 53. (d) | 54. (d) |
| 55. (b) | 56. (a) | 57. (a) | 58. (b) | | | | | |

बोध

बोध का अर्थ— बोध या समझ को स्मृति तथा चिंतन के बीच की कड़ी कहा जा सकता है। इसे स्मृति के विचारहीन व रटन्त स्मरण पर आधारित संज्ञानात्मक क्रिया एवं चिंतन के विचारयुक्त व सृजनात्मकता पर आधारित संज्ञानात्मक क्रिया के मध्य का संज्ञानात्मक क्रिया कहा जाता है।

इसमें शिक्षक के द्वारा छात्रों को विभिन्न सम्प्रत्ययों के परस्पर सम्बन्धों का अवबोध करने, नियमों को पहचानने, समझने, उनका विभिन्न परिस्थितियों में अनुप्रयोग करने, विषय के गूढ़ भावों तथा तथ्यों को भली भाँति समझने की क्षमता उत्पन्न की जाती है।

बोध को अर्थ ग्रहण करना, विचार को ग्रहण करना, समझना, किसी वस्तु से पूर्ण परिचित होना, किसी वस्तु की विशेषता अथवा प्रकृति से परिचित होना, भाषा में किसी शब्द के अर्थ, प्रस्तुत सन्दर्भ में समझना, किसी तथ्य को स्पष्ट रूप से जानना तथा ग्रहण करना आदि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

बोध तथा शिक्षण— बोध स्तर के शिक्षण में शिक्षक का प्रयास होता है कि वह छात्रों के बौद्धिक व्यवहार व तार्किक स्वरूप को विकसित करने के लिए अधिक से अधिक अवसर प्रदान करे। इसमें शिक्षक तथा छात्र दोनों सक्रिय होते हैं तथा शिक्षक छात्रों के सामने तथ्यों व सिद्धांतों के परस्पर सम्बन्ध तथा सामान्य सिद्धांतों के वर्जन से अवबोध को ग्रहण कराता है।

स्पष्ट है कि “बोध स्तर का शिक्षण वह शिक्षा है जो कि छात्रों में सामान्य एवं विशेष अर्थात् सिद्धांतों एवं तथ्यों के बीच के सम्बन्धों का ज्ञान कराने का प्रयास करता है और उन अनुप्रयोगों को विकसित करता है जिनमें उन सिद्धांतों का प्रयोग किया जा सकता है।

संवेदना

संवेदना का अर्थ एवं परिभाषा—

संवेदना को ‘ज्ञान का द्वार’ कहा जाता है। संवेदना मस्तिष्क की एक सामान्य तथा सरलतम् प्रतिक्रिया है। जब बालक का जन्म होता है, तब वह अपने वातावरण के बारे में कुछ नहीं जानता है। धीरे-धीरे उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ कार्य करना प्रारम्भ कर देती हैं तथा वह अपनी ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा अपने वातावरण का ज्ञान प्राप्त करने लगता है। **ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा व्यक्ति पर होने वाले प्रभाव को संवेदना कहते हैं।** संवेदना का पूर्व ज्ञान अथवा अनुभव से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

हमें बाह्य संसार का सब ज्ञान, ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त होता है। इसलिए इनको ‘ज्ञान का द्वार’ कहा जाता है। संवेदना सबसे साधारण मानसिक प्रक्रिया है। यह ज्ञान-प्राप्ति की पहली सीढ़ी है।

➤ **डगलस व हालैण्ड के अनुसार—** “संवेदना शब्द का प्रयोग सब-चेतना अनुभवों में सबसे सरलतम का वर्णन करने के लिए किया जाता है।”

➤ **जलोटा के अनुसार—** “संवेदना एक साधारण ज्ञानात्मक अनुभव है।”

➤ **जेम्स के अनुसार—** “संवेदनाएँ ज्ञान के मार्ग में पहली वस्तुएँ हैं।”

संवेदना के लिए निम्नलिखित बातों का होना आवश्यक है—

- उद्दीपक की उपस्थिति
- ज्ञानेन्द्रिय क्रियाशीलता
- बोध-स्नायु द्वारा उद्दीपक का समाचार मस्तिष्क तक पहुँचना
- मस्तिष्क द्वारा उद्दीपक की उपस्थिति का अनुभव
- मस्तिष्क द्वारा संवेदना के अर्थ का अज्ञात होना।

संवेदना के प्रकार—

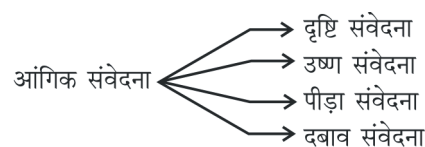
1. ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर संवेदना के प्रकार हैं—



2. मांसपेशीय या स्नायविक आधार पर—



3. आंगिक संवेदनशीलता के आधार पर—



संवेदना की विशेषताएँ—

(i) **गुण—** संवेदना के प्रकार उसके गुण पर ही निर्भर करते हैं। वस्तुतः प्रत्येक संवेदना में एक विशेष गुण पाया जाता है। गुणों के आधार पर संवेदनाओं को सात भाँगों में बाँटा गया है— दृष्टि, श्रवण, घ्राण, स्वाद, स्पर्श, दिशा तथा संतुलन। इसी कारण सभी संवेदनाएँ एक दूसरे से भिन्न होती हैं।

(ii) **तीव्रता—** भिन्न-भिन्न संवेदनाओं की तीव्रता भी भिन्न-भिन्न होती है। कोई संवेदना कितनी तीव्र है यह उसके उद्दीपन पर निर्भर करता है।

(iii) **व्यापकता—** संवेदना में व्यापकता पायी जाती है। जिस उत्तेजना या उद्दीपन से ज्ञानेन्द्रियों का जितना क्षेत्र उत्तेजित होता है, संवेदना की व्याप्ति उतनी ही अधिक होती है।

(iv) अवधि— संवेदनाओं में अवधि का गुण पाया जाता है। कुछ संवेदनाएँ क्षणिक होती हैं, कुछ स्थिर होती हैं। जितनी देर तक कोई उत्तेजना ज्ञानेन्द्रिय को प्रभावित करती है उतनी ही देर तक संवेदना रहती है।

(v) स्पष्टता— संवेदना की पाँचवी विशेषता उसकी स्पष्टता है। कुछ संवेदनाएँ ज्यादा स्पष्ट होती हैं कुछ कम। किसी संवेदना की स्पष्टता उसकी ओर दिये गये ध्यान पर निर्भर करती हैं।

(vi) स्थानीय चिन्ह— प्रकृति द्वारा विभिन्न प्रकार की संवेदनाओं के लिए विभिन्न ज्ञानेन्द्रियाँ निश्चित कर दी गयी हैं। इसलिए प्रत्येक संवेदना में अपने स्थानीय संवेदना चिन्ह की विशेषता पायी जाती है।

संवेदना का शिक्षा में महत्त्व—

- प्रारम्भिक ज्ञान के उपरान्त वस्तु के गुण समझना।
- वस्तु की सत्ता का ज्ञान होना।
- अर्थज्ञान के लिए पृष्ठभूमि तैयार करना।
- माण्टेसरी एवं किण्डरगार्टन जैसी शिक्षण पद्धतियों का ज्ञान।
- ज्ञानेन्द्रियों का उचित प्रयोग।

संवेदना के लिए ज्ञानेन्द्रियों की शिक्षा—

- ज्ञानेन्द्रिय शिक्षा का मूल उद्देश्य निःसन्देह ज्ञानेन्द्रियों को इस प्रकार से प्रशिक्षित करना है कि बालकों को सही ढंग से अनुभव तथा निरीक्षण करना आ जाये, जिससे बालक अपनी ज्ञानेन्द्रियों का सही उपयोग करना सीख जाये।
- दोषयुक्त ज्ञानेन्द्रियों वाले बालकों जैसे— अंधे, बहरे, गूंगे बालकों को विशेष प्रशिक्षण द्वारा अन्य ज्ञानेन्द्रिय से संवेदनाएँ प्राप्त करने के योग्य बनाया जा सकता है।
- मैडम मारिया माण्टेसरी ने छोटे-छोटे बालकों को शिक्षा प्रदान करने में ज्ञानेन्द्रिय शिक्षा पर विशेष जोर दिया है।
- बालकों की ज्ञानेन्द्रियों के विकास के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें उचित क्रियाशील वातावरण उपलब्ध कराया जाय।
- ज्ञानेन्द्रियों के दोषों को दूर करने के लिए चिकित्सीय परामर्श लिया जाना चाहिए।

संवेग

संवेग का अर्थ एवं परिभाषा— ‘संवेग’ शब्द अंग्रेजी के शब्द ‘इमोशन’ (Emotion) का समानार्थी है। ‘इमोशन’ शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के ‘इमोवेयर’ (Emovere) से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है ‘उत्तेजित होना’। इस प्रकार संवेग को व्यक्ति की उत्तेजित दशा कहा जा सकता है।

- **बुडवर्थ के अनुसार—** “संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।”
- **किम्बल यंग के अनुसार—** “संवेग प्राणी की उत्तेजित मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दशा है, जिसमें शारीरिक क्रियाएँ और शक्तिशाली भावनाएँ किसी निश्चित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए स्पष्ट रूप से बढ़ जाती हैं।”
- **जरसील्ड के अनुसार—** “किसी भी प्रकार के आवेश आने पर भड़क उठने तथा उत्तेजित हो जाने की अवस्था को संवेग कहते हैं।”

इस प्रकार संवेग की उत्पत्ति से व्यक्ति की आन्तरिक तथा बाह्य क्रियाओं में परिवर्तन आ जाता है।

संवेग के प्रकार—

मैक्डगुल महोदय ने मूल प्रवृत्तियों के आधार पर संवेग को 14 प्रकारों में विभक्त किया है—

- | | | |
|--------------|-----------------|------------------|
| 1. भय | 2. क्रोध | 3. घृणा |
| 4. वात्सल्य | 5. करुणा व दुःख | 6. कामुकता |
| 7. आश्चर्य | 8. आत्महीनता | 9. आत्माभिमान |
| 10. एकाकीपन | 11. भूख | 12. अधिकार भावना |
| 13. कृति भाव | 14. आमोद | |

संवेग की विशेषताएँ— संवेग की निम्नलिखित विशेषताएँ हो सकती हैं—

1. **तीव्रता—** संवेग में तीव्रता पायी जाती है। यह संवेग की तीव्रता व्यक्ति की परिपक्वता से प्रभावित होती है।
2. **व्यापकता—** संवेग सभी प्राणियों में समान रूप से पायी जाती है।
3. **वैयक्तिकता—** संवेग में वैयक्तिकता होती है। अर्थात् एक ही संवेग के प्रति भिन्न-भिन्न प्राणी भिन्न-भिन्न प्रतिक्रिया करते हैं।
4. **संवेगात्मक मनोदशा—** स्टाउट के अनुसार— “एक निश्चित संवेग उसके समरूप संवेगात्मक मनोदशा का निर्माण करता है।”
5. **सुख या दुःख की भावना—** संवेग में अपने विशिष्ट भावना के अलावा सुख या दुःख की भावना होती है।
6. **व्यवहार में परिवर्तन—** संवेग के उत्पन्न होने से व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है।
7. **मानसिक दशा में परिवर्तन—** संवेग के कारण व्यक्ति के मानसिक दशा में निम्नलिखित परिवर्तन होत हैं— (i) किसी वस्तु या स्थिति का ज्ञान, स्मरण या कल्पना (ii) ज्ञान के कारण सुख या दुःख की अनुभूति (iii) अनुभूति के कारण उत्तेजना (iv) उत्तेजना के कारण कार्य करने की प्रवृत्ति।
8. **आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन—** भय या क्रोध के कारण कई आन्तरिक ग्रन्थियाँ स्रावित होने लगती हैं जिससे जी मिचलाना, पसीना छूटना, पेट से सम्बन्धित समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं, इसके अतिरिक्त रक्त संचार का बढ़ना भी संवेग के उत्पन्न होने का परिणाम होता है।
9. **बाह्य शारीरिक परिवर्तन—** भय के समय काँपना, रोंगटे खड़े होना, मुख सूख जाना, इसी प्रकार क्रोध व प्रसन्नता के समय भी कई बाह्य शारीरिक परिवर्तन देखने में आते हैं।

संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि का अर्थ एवं परिभाषा— संवेगात्मक बुद्धि को विकसित करने का श्रेय डेनियल गोलमैन को दिया जाता है। इन्होंने वर्ष 1995 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'Emotional Intelligence- Why it can matter more than IQ' में संवेगात्मक बुद्धि के सम्प्रत्यय का प्रतिपादन किया।

संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य संवेगों से सही ढंग से निबटने की संज्ञानात्मक क्षमता से होता है। इसमें व्यक्ति के स्वयं के संवेगों तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने व प्रबन्धन करने की समग्र योग्यता समाहित रहती है।

- **पीटर सेलवे तथा जॉन मेयर के अनुसार**—“संवेगात्मक बुद्धि संवेग का प्रत्यक्षीकरण करने, संवेग का एकीकरण करके विचार को सुलभ बनाने, संवेगों को समझने तथा संवेगों को नियंत्रित करके वैयक्तिक प्रगति को बढ़ाने वाली योग्यता है।”

संवेगात्मक बुद्धि की योग्यताएँ— संवेगात्मक बुद्धि की चार प्रमुख योग्यताएँ हैं—

- संवेगों का प्रत्यक्षीकरण करने की योग्यता
- संवेगों का उपयोग करने की योग्यता
- संवेगों का अवबोधन करने की योग्यता
- संवेगों का प्रबन्धन करने की योग्यता

संवेगात्मक बुद्धि के घटक—

1. स्व सतर्कता— इसके अंतर्गत व्यक्ति अपनी आंतरिक स्थितियों, पसन्दों, संसाधनों, अपने संवेगों की पहचान, अपनी सीमाओं को समझना, अपनी क्षमताओं व महत्त्व को समझना, अंतः प्रेरणाओं आदि को शामिल किया जाता है।

2. स्वनियमितीकरण— इसके अंतर्गत व्यक्ति अपनी आंतरिक स्थितियों तथा संसाधनों का प्रबन्धन करता है। जैसे— आत्मनियंत्रण, ईमानदारी तथा सत्यनिष्ठा, चेतनानुभूति, अनुकूलन तथा नवीन विचारों को स्वीकार करना आदि।

3. अभिप्रेरणा— अभिप्रेरणा के अंतर्गत व्यक्ति लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक संवेगात्मक प्रवृत्तियों की पहचान करता है।

4. अननुभूति— अननुभूति के अंतर्गत व्यक्ति अन्यों की भावनाओं, जरूरतों तथा परिप्रेक्ष्यों के प्रति जागरूकता लाता है। जैसे— अन्यों को समझना, अन्यों का विकास करना, सेवा अनुस्थापना, राजनैतिक जागरूकता आदि।

5. सामाजिक कौशल— सामाजिक कौशल के अंतर्गत व्यक्ति दूसरों के वांछनीय प्रतिक्रियाओं को समाहित करता है। जैसे प्रभाव, सम्प्रेषण, द्वन्द्व प्रबन्धन, नेतृत्व, उत्प्रेरक अनुबन्ध निर्माण,

सहभागिता व सहयोग, दल समर्थन आदि गुण समाहित करने का प्रयास करता है।

संवेगात्मक बुद्धि का महत्त्व—

- संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को उसके कार्य निष्पादन में सकारात्मक ढंग से सहायता करती है।
- व्यक्ति को तनाव मुक्ति के लिए संवेगात्मक बुद्धि की महती आवश्यकता होती है।
- संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को मानसिक रूप से स्वस्थ रखने में सहायक होती है।
- व्यक्ति संवेगात्मक बुद्धि के द्वारा अपने सामाजिक सम्बन्धों को बेहतर बना सकता है।

संवेगों का शिक्षा में महत्त्व—

- विद्यार्थियों के संवेगों को सही दिशा देकर उनके व्यवहार को सकारात्मक ढंग से प्रभावित किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों के संवेगों को जागृत करके उनकी पाठ में रुचि को जागृत किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों को संवेगों पर नियंत्रण करने की विधियों के द्वारा शिष्ट बनाया जा सकता है।
- शिक्षक बालकों के भय, क्रोध आदि अवांछित संवेगों को मार्गान्तरिकरण करके उनको अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित कर सकता है।
- बच्चों के संवेगों का वांछनीय विकास करके उनमें कला, संगीत, साहित्य और अन्य सुन्दर वस्तुओं के प्रति प्रेम उत्पन्न किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों के संवेगों का उचित विकास करके उनमें उत्तम विचारों, आदर्शों, गुणों और रुचियों का निर्माण किया जा सकता है।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

- संज्ञानात्मक विकास का अर्थ है।**
 - अभियोग्यता का विकास
 - बच्चे का विकास
 - शारीरिक कौशल का विकास
 - व्यक्तिगत विकास
- व्यवहार का 'संवेगात्मक' पहलू निम्नलिखित से सम्बन्धित होता है—**
 - सीखने के संज्ञानात्मक पक्ष से
 - सीखने के भावात्मक पक्ष से
 - सीखने के क्रियात्मक पक्ष से
 - सीखने के मनोवैज्ञानिक पक्ष से
- संज्ञान और संवेग के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही है?**
 - संज्ञान और संवेग एक-दूसरे से स्वतंत्र प्रक्रियाएँ हैं।
 - संज्ञान और संवेग परस्पर जुड़े हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।
 - संज्ञान संवेगों को प्रभावित करता है, किंतु संवेग संज्ञान को प्रभावित नहीं करता।
 - संवेग संज्ञान को प्रभावित करते हैं किंतु संज्ञान संवेगों को प्रभावित नहीं करता।
- एक शिक्षिका का भावनात्मक बुद्धिलब्धांक ऊँचा है। इसका तात्पर्य है कि**
 - वह उच्च बुद्धि वाली है
 - वह उच्च अनुशासनप्रिय है
 - वह हास-परिहास वाली है
 - वह सन्तुलित व्यवहार रखती है
- एक विद्यार्थी अपने समकक्ष व्यक्तियों के समूह के प्रति आक्रामक व्यवहार करता है और विद्यालय के मानदण्डों को नहीं मानता। इस विद्यार्थी को में सहायता की आवश्यकता है।**
 - भावनात्मक क्षेत्र
 - उच्चस्तरीय चिंतन कौशल
 - संज्ञानात्मक क्षेत्र
 - मनोगत्यात्मक क्षेत्र
- के अतिरिक्त निम्नलिखित सभी तथ्य संकेत करते हैं कि बच्चा कक्षा में संवेगात्मक और सामाजिक**
 - हम उम्र साथियों के साथ मधुर संबंधों का विकास
 - चुनौतीपूर्ण कार्यों पर ध्यान केन्द्रित करना और उन्हें दृढ़तापूर्वक करते रहना
 - क्रोध तथा हर्ष दोनों को प्रभावी रूप से प्रबंधित करना

- (d) हमउम्र साथियों के साथ प्रतियोगिता पर दृढ़तापूर्वक ध्यान केंद्रित करना
7. 'संवेग' क्या है?
 (a) प्यार व स्नेह (b) क्रोध व भय
 (c) उत्तेजना या भावों में परिवर्तन (d) इनमें से कोई नहीं
8. आकलन प्रक्रिया के दौरान देविका की उत्तेजना ऊर्जापूर्ण होती है जबकि राजेश की उत्तेजना अनुत्साही। उन दोनों के भावात्मक अनुभवों का अन्तर किससे सम्बद्ध है?
 (a) अनुकूलन का स्तर (b) विचारों का घनत्व
 (c) समयान्तराल (d) भावनाओं की पराकाष्ठा
9. निम्न में से संवेगात्मक विशेषताएं किस अवस्था की है?
 (a) बचपन (b) किशोवस्था
 (c) शिशुकाल (d) प्रौढ़ावस्था
10. "कोई भी नाराज हो सकता है— यह आसान है, परन्तु एक सही व्यक्ति के ऊपर, सही मात्रा में, सही समय पर सही उद्देश्य के लिए तथा सही तरीके से नाराज होना आसान नहीं है।" यह सम्बन्धित है
 (a) संवेगात्मक विकास से (b) सामाजिक विकास से
 (c) संज्ञानात्मक विकास से (d) शारीरिक विकास से
11. निम्नलिखित में से कौन-सा बच्चों के संवेगात्मक विकास के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?
 (a) कक्षा-कक्ष का प्रजातान्त्रिक परिवेश
 (b) अध्यापकों की कोई भी सहभागिता नहीं क्योंकि यह माता-पिता का कार्य है
 (c) कक्षा-कक्ष का नियंत्रित परिवेश
 (d) कक्षा-कक्ष का अधिकारवादी परिवेश
12. संज्ञानात्मक सम्प्राप्ति का न्यूनतम स्तर है
 (a) ज्ञान (b) बोध
 (c) अनुप्रयोग (d) विश्लेषण
13. गोलमैन निम्न में से किससे सम्बन्धित हैं?
 (a) सामाजिक बुद्धि (b) संवेगात्मक बुद्धि
 (c) आध्यात्मिक बुद्धि (d) सामान्य बुद्धि
14. संवेग की उत्पत्ति.....से होती है।
 (a) आदतों (b) मूल प्रवृत्तियों
 (c) शारीरिक विकास (d) सम्प्रत्ययों के निर्माण
15. संवेग शब्द का शाब्दिक अर्थ है—
 (a) क्रोध और भय
 (b) स्नेह तथा प्रेम
 (c) उत्तेजना या भावों में उथल-पुथल
 (d) उपरोक्त में से कोई नहीं
16. निम्नलिखित में से कौन-सा कौशल भावात्मक बुद्धि से सम्बद्ध नहीं है?
 (a) भावनाओं की आलोचना
 (b) कक्षा सहपाठियों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार
 (c) भावनाओं के प्रति जागरूकता
 (d) भावनाओं का प्रबन्धन
17. एक शिक्षिका का भावानात्मक बुद्धिलब्धांक ऊंचा है। इसका तात्पर्य है कि—
 (a) वह उच्च बुद्धि वाली है।
 (b) वह उच्च अनुशासनप्रिय है।
 (c) वह हास-परिहास वाली है।
 (d) वह संतुलित व्यवहार वाली है।
18. निम्न में से कौन-सा कौशल संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित है?
 (a) गतिक प्रक्रमण (b) विचार करना
 (c) समानुभूति देना (d) याद करना
19. भावनाओं, अधिगम और अभिप्रेरणा के संदर्भ में निम्नलिखित में से किस कथन से आप सहमत हैं?
 (a) सीखने के लिए भावनाओं को अलग रख देना चाहिए।
 (b) प्रेरणा और सीखने के साथ भावनाएँ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हैं।
 (c) सीखने के लिए अभिप्रेरित करने भावनाओं की कोई भूमिका नहीं होती।
 (d) कुछ नया सीखना इस पर निर्भर करता है कि उसमें हम कितने निपुण हैं।
20. प्राथमिक विद्यालय के बच्चे उस वातावरण में सबसे प्रभावी ढंग से सीखेंगे—
 (a) जहाँ उनकी संवेगात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है और वे अनुभव करते हैं कि वे महत्वपूर्ण हैं
 (b) जहाँ शिक्षक एकाधिकारवादी है और स्पष्ट आदेश देता है कि क्या किया जाना चाहिए
 (c) जहाँ मूलरूप से पढ़ने, लिखने और गणित की संज्ञानात्मक कुशलताओं पर ही ध्यान का केन्द्र होता है और बल दिया जाता है
 (d) जहाँ शिक्षक सारे अधिगमों में आगे होता है और विद्यार्थियों से निष्क्रिय रहने की अपेक्षा करता है
21. बच्चों में संवेगात्मक समायोजन प्रभावी होता है
 (a) व्यक्तित्व निर्माण में (b) कक्षा शिक्षण में
 (c) अनुशासन में (d) उपरोक्त सभी
22. एक शिक्षक बच्चे द्वारा की गई छोटी-छोटी गलतियों पर क्रोध प्रकट करता है, यह इंगित करता है—
 (a) वह बच्चे का शुभचिंतक है
 (b) उसमें ज्ञान की कमी है
 (c) वह कुंठित है
 (d) वह संवेदनात्मक रूप से संतुलित नहीं है
23. एक अध्यापक कुछ निर्देशन लिखता है ताकि छात्र लोकतंत्र का अर्थ समझने में सक्षम हो। यह उद्देश्य किस संकल्पना के अन्तर्गत आएगा।
 (a) कौशल (b) संश्लेषण
 (c) बोध (d) विश्लेषण
24. पूर्व अनुभव के आधार पर संवेदना को अर्थ प्रदान करना कहलाता है
 (a) संवेदना (b) प्रत्यक्षज्ञान
 (c) अभिप्रेरणा (d) कल्पना

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (a) | 2. (d) | 3. (b) | 4. (d) | 5. (a) | 6. (d) | 7. (c) | 8. (a) | 9. (b) |
| 10. (a) | 11. (a) | 12. (a) | 13. (b) | 14. (b) | 15. (c) | 16. (a) | 17. (d) | 18. (c) |
| 19. (b) | 20. (a) | 21. (d) | 22. (d) | 23. (c) | 24. (b) | | | |

प्रेरणा का अर्थ एवं परिभाषा

‘प्रेरणा’ अंग्रेजी के ‘मोटिवेशन’ (Motivation) शब्द का समानार्थी है। मोटिवेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के ‘मोटम’ (Motum) से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है ‘मूव मोटर’ और ‘मोशन’

- **गुड के अनुसार**— “अभिप्रेरणा किसी कार्य को प्रारम्भ करने, जारी रखने अथवा नियंत्रित करने की प्रक्रिया है।”
- **ब्लेयर, जोन्स तथा सिम्पसन के अनुसार**— “अभिप्रेरणा वह प्रक्रिया है जिसमें सीखने वाले व्यक्ति की आंतरिक ऊर्जाएँ अथवा आवश्यकताएँ उसके वातावरण के विभिन्न लक्ष्यों की ओर निर्देशित होती हैं।”
- **लावेल के अनुसार**— “अभिप्रेरणा एक मनोवैज्ञानिक या आंतरिक प्रेरणा है जो किसी आवश्यकता की उपस्थिति में उत्पन्न होती है। यह ऐसी क्रिया की ओर गतिशील होती है जो उस आवश्यकता को संतुष्ट करेगी।

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि अभिप्रेरणा वास्तव में प्राणी की आंतरिक स्थिति अथवा तत्परता की स्थिति होती है जो उसे किसी विशेष प्रकार के व्यवहार को प्रारम्भ करने, उसे कोई निश्चित दिशा देने तथा बनाये रखने के लिए प्रवृत्त करती है।

अभिप्रेरणा के प्रकार—

अभिप्रेरणा मुख्यतः चार प्रकार की होती हैं—

1. सकारात्मक अभिप्रेरणा
2. नकारात्मक अभिप्रेरणा
3. प्राकृतिक अभिप्रेरणा
4. कृत्रिम अभिप्रेरणा

1. सकारात्मक प्रेरणा— इस प्रेरणा में बालक किसी कार्य को अपनी स्वयं की इच्छा से करता है। इस कार्य को करने से उसे सुख और संतोष प्राप्त होता है। शिक्षक विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन और स्थितियों का निर्माण करके बालक को सकारात्मक प्रेरणा प्रदान कर सकता है। इस प्रेरणा को आंतरिक प्रेरणा भी कहते हैं।

2. नकारात्मक प्रेरणा— इस प्रेरणा में बालक किसी कार्य को अपनी स्वयं की इच्छा से न करके, किसी दूसरे की इच्छा या बाह्य प्रभाव के कारण करता है। इसे बाह्य प्रेरणा भी कहते हैं।

प्रेसी के अनुसार— “अधिगम विधि के रूप में बाह्य प्रेरणा आंतरिक प्रेरणा से निम्नतर है।”

3. प्राकृतिक अभिप्रेरणा— प्राकृतिक अभिप्रेरणाएँ निम्नलिखित प्रकार की होती हैं—

- (i) **मनोदैहिक प्रेरणाएँ**— ये प्रेरणाएँ मनुष्य के शरीर व मस्तिष्क से सम्बन्धित होती हैं। इस प्रकार की प्रेरणा मनुष्य के जीवित रहने के लिए आवश्यक है, जैसे— भूख, प्यास, काम, चेतना, आदत भाव एवं संवेगात्मक प्रेरणा आदि।
- (ii) **सामाजिक प्रेरणाएँ**— सामाजिक प्रेरणाएँ सामाजिक मान्यताओं, सम्बन्धों, परिस्थितियों, आदर्शों आदि के कारण उत्पन्न होते हैं। जैसे— स्नेह, प्रेम, सम्मान, ज्ञान, पद, नेतृत्व आदि।
- (iii) **व्यक्तिगत प्रेरणाएँ**— व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर ही व्यक्तिगत प्रेरणाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। इसके अंतर्गत रुचियाँ, दृष्टिकोण, स्वधर्म तथा नैतिक मूल्य आदि आते हैं।

4. कृत्रिम प्रेरणा— कृत्रिम प्रेरणाएँ निम्नलिखित प्रकार की होती हैं—

- (i) **दण्ड एवं पुरस्कार**— विद्यालय के कार्यों में विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए इसका विशेष महत्व है—
 - दण्ड एक सकारात्मक प्रेरणा होती है। इससे विद्यार्थियों का हित होता है।
 - पुरस्कार एक सकारात्मक प्रेरणा है। यह भौतिक, सामाजिक और नैतिक भी हो सकता है।
- (ii) **सहयोग**— यह तीव्र अभिप्रेरक है। अतः इसी के माध्यम से शिक्षा देनी चाहिए।

(iii) **लक्ष्य, आदर्श और सोद्देश्य प्रयत्न**— प्रत्येक कार्य में अभिप्रेरणा उत्पन्न करने के लिए उसका लक्ष्य निर्धारित होना चाहिए। यह स्पष्ट, आकर्षक, सजीव, विस्तृत एवं आदर्श होना चाहिए।

(iv) **अभिप्रेरणा में परिपक्वता**— किसी कार्य के प्रति अभिप्रेरित करने के लिए आवश्यक है कि वे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से परिपक्व हों।

(v) **अभिप्रेरणा और फल का ज्ञान**— विद्यार्थियों को समय-समय पर प्रगति ज्ञान कराने से वे अधिक उत्साह के साथ कार्य करते हैं।

(vi) **पूरे व्यक्तित्व को लगा देना**— समग्र व्यक्तित्व को किसी कार्य में लगाना प्रेरणा उत्पन्न करने का बड़ा अच्छा साधन है।

(viii) **भाग लेने का अवसर देना**— विद्यार्थियों को विभिन्न क्रियाकलापों में भाग लेने के समुचित अवसर प्रदान करना चाहिए।

(viii) **व्यक्तिगत कार्य प्रेरणा एवं सामूहिक कार्य प्रेरणा**— प्रारम्भिक स्तर पर व्यक्तिगत और फिर उसे सामूहिक प्रेरणा में परिवर्तित करना चाहिए क्योंकि व्यक्तिगत प्रगति ही अंत में सामूहिक प्रगति होती है।

(ix) **प्रभाव के नियम**— मनुष्य का मुख्य उद्देश्य आनन्दानुभूति है। अतः मनोविज्ञान के प्रभाव के नियम को प्रेरणा हेतु अधिकता में प्रयोग किया जाना चाहिए।

अभिप्रेरक

अभिप्रेरणा उत्पन्न करने वाले कारकों को अभिप्रेरक कहते हैं। अभिप्रेरकों को सामान्यतः दो वर्गों में विभाजित किया जाता है—

(i) आंतरिक अभिप्रेरक

(ii) बाह्य अभिप्रेरक

(i) **आंतरिक अभिप्रेरक**— आंतरिक अभिप्रेरकों से तात्पर्य मनुष्य के शारीरिक अथवा जैविक अभिप्रेरकों से होता है। जैसे आत्मरक्षा, भूख, प्यास एवं काम आदि।

(ii) **बाह्य अभिप्रेरक**— बाह्य अभिप्रेरक से तात्पर्य मनुष्य के पर्यावरणीय अथवा मनोसामाजिक अभिप्रेरकों से होता है; जैसे— आत्म सम्मान, सामाजिक स्तर एवं इंजिनियर, डॉक्टर, वकील, जज व नेता आदि बनने की इच्छा।

अभिप्रेरणा के स्रोत—

अभिप्रेरणा के निम्न स्रोत हैं—

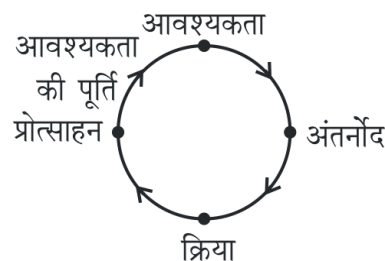
(i) **आवश्यकताएँ**— आवश्यकताएँ प्राणी में किसी चीज की कमी को इंगित करती हैं। आवश्यकताएँ दो प्रकार की होती हैं— (i) शारीरिक या जैविक (ii) मनोसामाजिक। शारीरिक या जैविक आवश्यकताओं में भोजन, जल, मल-मूत्र विसर्जन आदि और मनो सामाजिक आवश्यकताओं आत्मसम्मान, सामाजिक प्रतिष्ठा आदि आती हैं।

ये आवश्यकताएँ मनुष्य में तनाव उत्पन्न करती हैं और वह इनकी पूर्ति के लिए क्रियाशील हो जाता है और तब तक क्रियाशील रहता है जब तक कि उसकी आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो जाती।

(ii) **अंतर्नोद या चालक**— आवश्यकता प्राणी के अंदर तनाव पैदा करती है, यह तनाव जिस रूप में अनुभव किया जाता है उसे अंतर्नोद अथवा चालक कहते हैं।

(iii) **प्रोत्साहन**— प्रोत्साहन को उद्दीपक भी कहते हैं। प्रोत्साहन बाह्य वातावरण से प्राप्त होने वाली वह वस्तु है जो प्राणी की आवश्यकता की पूर्ति कर आवश्यकता के कारण उत्पन्न अंतर्नोद को शांत करती है।

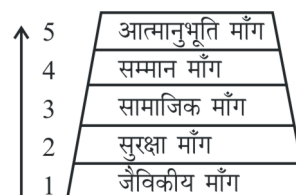
(iv) **प्रेरक**— इसके अंतर्गत उद्दीपक, प्रोत्साहन, चालक, तनाव व आवश्यकता सभी आ जाते हैं। प्रेरक व्यक्ति को विशेष प्रकार की क्रियाओं या व्यवहार करने के लिए उत्तेजित करते हैं।



अभिप्रेरणा के सिद्धांत—

1. **अभिप्रेरणा का मूल प्रवृत्ति सिद्धांत**— अभिप्रेरणा के मूल प्रवृत्ति सिद्धांत का प्रतिपादन सन् 1908 में मैक्डूगल ने किया था। मैक्डूगल के अनुसार मानव मस्तिष्क में कुछ जन्मजात प्रवृत्तियाँ होती हैं जो मानव के सभी विचारों तथा क्रियाओं के लिए प्रेरक शक्ति का कार्य करती हैं। उसके अनुसार मूल प्रवृत्तियाँ 'उछाल पटों' (Spring Boards) का कार्य करती हैं। मैक्डूगल के अनुसार 14 प्रकार की मूल प्रवृत्तियाँ होती हैं।

2. **अभिप्रेरणा का माँग सिद्धांत**— अभिप्रेरणा के माँग या आवश्यकता सिद्धांत का प्रतिपादन वर्ष 1954 में अब्राहम मैस्लो ने किया था। इस सिद्धांत के अनुसार जब प्राणी अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक किसी वस्तु की कमी या माँग महसूस करता है तो उसे वह प्राप्त करने के लिए क्रियाशील या अभिप्रेरित हो जाता है। मैस्लो ने पाँच प्रमुख माँगों को उनकी प्रबलता के आधार पर पदानुक्रमिक रूप में व्यवस्थित किया है—



इस पदानुक्रम में अस्तित्व के लिए आवश्यक जैविकीय माँग सर्वप्रथम है जबकि पूर्ण रूपेण मनोवैज्ञानिक आत्मानुभूति की माँग सबसे बाद में स्थित है। एक माँग की पूर्ति हो जाने पर अन्य माँगें ही क्रियाशील होकर व्यक्ति को अभिप्रेरणा प्रदान करती हैं।

3. **अभिप्रेरणा का प्रणोद-न्यूनता सिद्धांत**— इस सिद्धांत का प्रतिपादन वर्ष 1943 में क्लार्क लियोनार्ड हल ने किया था। इस सिद्धांत के अनुसार अनुक्रिया प्रारम्भ करने तथा बनाये रखने में भूख,

प्यास, यौन क्रिया जैसे जैविकीय प्रणोदों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इस प्रकार अनुक्रिया में जैविकीय प्रणोद आंतरिक तनाव उत्पन्न करते हैं जिसे दूर करने के लिए व्यक्ति क्रियाशील हो जाता है।

4. अभिप्रेरणा का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत—

मनोविश्लेषणवाद के जन्मदाता सिगमण्ड फ्रायड ने अभिप्रेरणा के लिए दो मुख्य उत्तरदायी कारकों की पहचान की है—

1. मूल प्रवृत्ति

2. अचेतन

1. मूल प्रवृत्ति को इन्होंने दो भागों में विभाजित किया—

(i) **जीवन मूल प्रवृत्ति—** सकारात्मक कार्यों के निर्धारण के लिए उत्तरदायी होते हैं।

(ii) **मृत्यु मूल प्रवृत्ति—** विध्वंसात्मक कार्यों के निर्धारण के लिए उत्तरदायी होते हैं।

2. **अचेतन—** अचेतन व्यक्ति की अतृप्त इच्छाओं का द्योतक होता है जो व्यक्ति को अप्रत्यक्ष रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

अभिप्रेरणा के सिद्धांत एवं उनके प्रतिपादक		
क्र.सं.	सिद्धांत	प्रतिपादक
1.	अभिप्रेरणा का मूल प्रवृत्ति सिद्धांत	मैकडूगल
2.	अभिप्रेरणा का माँग सिद्धांत	अब्राहम मैस्लो
3.	अभिप्रेरणा का प्रणोद-न्यूनता सिद्धांत	क्लार्क लियोनार्ड हल
4.	अभिप्रेरणा का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत	सिगमण्ड फ्रायड
5.	अभिप्रेरणा का क्षेत्र सिद्धांत	कुर्ट लेविन
6.	अभिप्रेरणा का आत्म-संकल्प का सिद्धांत	एडवर्ड डेसी और रिचर्ड रेयान
7.	अभिप्रेरणा का प्रोत्साहन सिद्धांत	स्टीवन केर्ने
8.	अभिप्रेरणा का संज्ञानात्मक विचार वैषम्य सिद्धांत	लियोन फेस्टिंगर
9.	अभिप्रेरणा का दोहरा/द्विकारक सिद्धांत	फेडरिक हर्जबर्ग
10.	अभिप्रेरणा का ERG सिद्धांत (अस्तित्व, संबद्धता और विकास सिद्धांत)	क्लेटन एल्डरफर
11.	*अभिप्रेरणा का प्रत्याशा सिद्धांत	विक्टर ब्रूम

शिक्षा में अभिप्रेरणा का महत्त्व—

1. **सीखना—** सीखने का प्रमुख आधार प्रेरणा है। सीखने में परिणाम का ज्ञान अभिप्रेरणा के लिए महत्वपूर्ण होता है। अतः शिक्षक

और अभिभावक को बच्चों को उनके कार्यों के परिणाम से अवगत कराते रहना चाहिए।

2. **लक्ष्य प्राप्ति—** लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रेरणा आवश्यक उपकरण है।

3. **चरित्र निर्माण—** अच्छे चरित्र निर्माण में प्रेरणा का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

4. **अवधान—** प्रेरणा अवधान केन्द्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

5. **अध्यापन विधियाँ—** विविध प्रकार की शिक्षण विधियाँ विविधतापूर्ण कक्षा-कक्ष को अभिप्रेरित करती हैं तथा ये शिक्षण विधियाँ बच्चों को अधिगम के लिए प्रेरित करती हैं।

6. **पाठ्यक्रम—** पाठ्यक्रम का निर्माण बच्चों के रुचियों, आवश्यकताओं और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुरूप होने से छात्र अधिगम के लिए प्रेरित होते हैं।

7. **अनुशासन—** यदि उचित प्रेरकों का प्रयोग किया जाय तो कक्षा में अनुशासन बना रहता है।

अभिप्रेरित करने की विधियाँ—

1. **खेल—** शिक्षा में खेल का महत्वपूर्ण स्थान है। बच्चों को सिखाने की उत्तम विधि खेल विधि मानी जाती है क्योंकि खेल के प्रति बच्चे ज्यादा रुचि प्रदर्शित करते हैं। इसलिए खेल अधिगम के लिए प्रेरित करने की उत्तम विधि मानी जाती है।

2. **रुचियाँ—** विद्यार्थी जिस कार्य में अधिक रुचि लेता है उसके प्रति वह अधिक प्रेरित होता है, अतः विधियाँ, पाठ्यक्रम आदि उसके रुचियों के अनुसार होनी चाहिए।

3. **सफलता—** सफल होना प्रत्येक व्यक्ति चाहता है। शिक्षक को छात्रों को सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

4. **प्रतिद्वन्दिता—** प्रतिद्वन्दिता या प्रतियोगिता प्रेरणा का महत्वपूर्ण कारण हो सकता है।

5. **प्रशंसा को सुदृढ़ करना—** विद्यार्थियों द्वारा अच्छा कार्य करने पर शिक्षक को उनकी प्रशंसा करनी चाहिए ताकि वे और बेहतर करने के लिए प्रेरित हो सकें।

6. **पुरस्कार द्वारा उत्साहवर्धन—** शिक्षक को विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करने के लिए पुरस्कार देना चाहिए। पुरस्कार विद्यार्थियों को अधिगम के लिए प्रेरित करते हैं।

7. **ध्यान—** ध्यान या एकाग्रता भी प्रेरणा में सहायक होते हैं।

8. **सामाजिक कार्यों में सहभागिता तथा सहयोग—** बच्चों में उम्र बढ़ने के साथ-साथ सामाजिक स्वीकृति की चाह तथा सामाजिक कार्यों में रुचि भी बढ़ती है। इसको सही दिशा देने के लिए शिक्षक को विद्यार्थियों की रुचि को ध्यान में रखते हुए उन्हें सामाजिक कार्यों में सहभागिता तथा सहयोग के लिए प्रेरित करना चाहिए।

9. **कक्षा का वातावरण**— कक्षा का वातावरण प्रेरणा को बहुत हद तक प्रभावित करता है। अतः कक्षा का वातावरण ऐसा होना चाहिए जिससे छात्र स्वयं अधिगम के लिए प्रेरित हो सकें।

सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा की भूमिका—

- शिक्षक को विद्यार्थियों के सामने स्पष्ट उद्देश्य निर्धारित करने चाहिए। इससे अधिगम प्रभावशाली होगा।
- छात्रों की रुचि तथा जिज्ञासा अधिगम के लिए प्रेरणा का कारण बनती है। अतः शिक्षक को छात्रों में रुचि व जिज्ञासा उत्पन्न करनी चाहिए।

■ शिक्षक छात्रों की आयु व मानसिक परिपक्वता के अनुसार शिक्षण कार्य करके छात्रों में अधिगम के प्रति रुचि उत्पन्न कर सकता है।

■ सीखने के लिए प्रतियोगिताएँ बहुत प्रभावशाली माध्यम हैं। प्रतियोगिता और सहयोग लोकतांत्रिक प्रवृत्तियों के विकास के लिए अभिप्रेरणा का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

इस प्रकार सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारत सरकार ने प्राथमिक विद्यालयों के लिए मध्याह्न-भोजन योजना प्रारम्भ की है। निम्नलिखित में से कौन-सा अभिप्रेरणात्मक सिद्धान्त इस योजना का समर्थन करता है?
 - (a) व्यवहारवादी
 - (b) समाज-सांस्कृतिक
 - (c) संज्ञानात्मक
 - (d) मानवीय
2. निम्न में से कौन-सी शब्दावली प्रायः “अभिप्रेरणा” के साथ अंतः बदलाव के साथ इस्तेमाल की जाती है?
 - (a) संवेग
 - (b) आवश्यकता
 - (c) उत्प्रेरणा
 - (d) पुरस्कार (प्रेरक)
3. विद्यार्थियों को स्वच्छता के लिए प्रेरित करने हेतु उन्हें स्वच्छता समिति का सदस्य बनाना, प्रतिबिम्बित करता है
 - (a) प्रेरणा की सामाजिक-सांस्कृतिक संकल्पनाएँ
 - (b) प्रेरणा का व्यवहारवादी उपागम
 - (c) प्रेरणा का मानवतावादी उपागम
 - (d) प्रेरणा का संज्ञानात्मक उपागम
4. जब बच्चे एक विशेष संख्या में पुस्तकें पढ़ते हैं तो उन्हें एक प्रमाणपत्र दिया जाता है। यह रणनीति शायद अधिक समय तक काम न करे, क्योंकि:
 - (a) यह संभवतः बच्चों को केवल प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए पुस्तकों को पढ़ने की तरफ ले जा सकता है।
 - (b) पुस्तकालय में बहुत अधिक पुस्तकों को खरीदने की आवश्यकता होगी।
 - (c) जब अधिक संख्या में बच्चे पढ़ना शुरू कर देंगे तो बड़ी मात्रा में प्रमाणपत्र देने होंगे।
 - (d) पुस्तकों को पढ़ना बच्चों को उनके गृहकार्य को पूरा करने में बाधा डालेगा।
5. अभिप्रेरणा और अधिगम के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन सही है?
 - (a) अधिगम केवल तभी प्रभावी होता है जब शिक्षार्थियों में भीतरी प्रेरणा हो— सीखने की अन्तर्निहित इच्छा हो
 - (b) अधिगम केवल तभी प्रभावी होता है जब शिक्षार्थी बाहरी रूप से प्रेरित हों— बाहरी कारणों से प्रेरित हों
 - (c) अधिगम में प्रेरणा की कोई भूमिका नहीं होती
 - (d) अधिगम केवल तभी प्रभावी होता है जब शिक्षार्थी बाहरी पुरस्कारों का उपयोग करने से प्रेरित हो
6. पुरस्कार एवं दंड है—
 - (a) सकारात्मक प्रेरक
 - (b) स्वाभाविक प्रेरक
 - (c) कृत्रिम प्रेरक
 - (d) अर्जित प्रेरक
7. प्रभावी और स्थायी शिक्षा ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी के पास होना चाहिए—
 - (a) केवल शिक्षा प्राप्त करने के अवसर
 - (b) योग्यता और अभिप्रेरणा का वांछित स्तर
 - (c) केवल उपयुक्त बौद्धिक स्तर
 - (d) केवल सीखने की योग्यता
8. राजेश गणित की समस्या को हल करने के लिए पूरी तरह से संघर्ष कर रहा है। उसका आन्तरिक बल जो उसे उस समस्या को पूरी तरह से हल करने के लिए विवश करता है, के रूप में जाना जाता है।
 - (a) प्रेरक
 - (b) व्यक्तित्व विशेषक
 - (c) संवेग
 - (d) प्रत्यक्षण
9. अभिप्रेरणा—चक्र के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा सही क्रम है?
 - (a) उत्तेजना, प्रबल प्रेरणा, आवश्यकता, उपलब्धि, लक्ष्य—उन्मुखी, व्यवहार, उत्तेजना में कमी

- (b) प्रबल प्रेरणा, आवश्यकता, उत्तेजना, लक्ष्य-उन्मुखी, व्यवहार, उपलब्धि, उत्तेजना में कमी
- (c) आवश्यकता, लक्ष्य-उन्मुखी व्यवहार, प्रबल प्रेरणा, उत्तेजना, उपलब्धि, उत्तेजना में कमी
- (d) आवश्यकता, प्रबल प्रेरणा, उत्तेजना, लक्ष्य-उन्मुखी, व्यवहार, उपलब्धि, उत्तेजना में कमी
10. एक आन्तरिक बल जो प्रोत्साहित करता है और व्यवहारपरक प्रतिक्रिया के लिए बाध्य करता है एवं उस प्रतिक्रिया को विशिष्ट दिशा उपलब्ध कराता है, हैं
- (a) अभिप्रेरण (b) अध्यवसाय
- (c) संवेग (d) वचनबद्धता
11. एक विद्यार्थी उच्चस्तरीय सृजनशील रंगमंचीय कलाकार बनना चाहता है। उसके लिए निम्नलिखित में से कौन-सा उपाय सबसे कम प्रेरक होगा?
- (a) राज्यस्तरीय प्रतियोगिताओं को जीतने का प्रयास करना ताकि छात्रवृत्ति पाई जा सके
- (b) अपने रंगमंचीय कलाकार साथियों के साथ सहानुभूतिपूर्ण, स्नेही तथा सहयोगी सम्बन्ध विकसित करना
- (c) उन रंगमंचीय कौशलों को अधिक समय देना जिनसे वह प्रफुल्लित होता है
- (d) संसार के श्रेष्ठ रंगमंचीय कलाकारों की निष्पत्ति से सम्बद्ध साहित्य पढ़ने के लिए था उससे सीखने के प्रयास के लिए कहना
12. बच्चों को अपनी अध्ययन में प्रयास करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षकों को की आवश्यकता होती है।
- (a) बच्चे को नियंत्रण में रखने
- (b) अन्य बच्चों के साथ तुलना करने
- (c) बच्चे को प्रेरित करने
- (d) बच्चे को डाँटने
13. निम्न में से कौन-सा जन्मजात प्रेरक नहीं है?
- (a) भूख (b) प्यास
- (c) आदत (d) नींद
14. निम्नलिखित में से जन्मजात अभिप्रेरक कौन है
- (a) निद्रा (b) खेलना
- (c) प्रशंसा (d) क्रोध
15. सीखने की प्रक्रिया में, अभिप्रेरण
- (a) शिक्षार्थियों की स्मरण शक्ति को पैना बनाती है
- (b) पिछले सीखे हुए को नए अधिगम से अलग करती है
- (c) शिक्षार्थियों को एक दिशा में सोचने के योग्य बनाती है
- (d) शिक्षार्थियों में सीखने के प्रति रुचि का विकास करती है
16. आंतरिक रूप से अभिप्रेरित विद्यार्थी
- (a) के लिए औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता नहीं है
- (b) के लिए पुरस्कार की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है
- (c) के लिए बाह्य पुरस्कार उसकी अभिप्रेरण को बनाए रखने के लिए पर्याप्त नहीं है
- (d) को बाह्य रूप से अभिप्रेरित विद्यार्थी की तुलना में अभिप्रेरण-स्तर कम होता है
17. एक महिला ने भोजन प्राप्त करने के लिए अपने बच्चे को बेच दिया। इस खबर को को आधार पर अच्छी तरह समझा जा सकता है।
- (a) पुनर्बलित अकस्मिकताओं का सिद्धांत
- (b) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत
- (c) पदानुक्रमिक आवश्यकताओं का सिद्धांत
- (d) मनोसामाजिक सिद्धांत
18. निम्नलिखित में से कौन-सी सीखने के लिए अधिकतम रूप से अभिप्रेरित करता है?
- (a) बहुत सरल या कठिन लक्ष्यों का चयन करने की प्रवृत्ति
- (b) लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यक्तिगत सन्तुष्टि
- (c) बाह्य कारक
- (d) असफलता से बचने के लिए अभिप्रेरण
19. किसी जिज्ञासु छात्र को प्रेरित करने में निम्न में से कौन एक का कारगर उपाय है?
- (a) सजा द्वारा (b) प्रशंसा द्वारा
- (c) आलोचना द्वारा (d) इनमें कोई नहीं
20. बालक में क्रियाओं को नियमित करने तथा रुचि उत्पन्न करने के लिए कौन सा कारक उत्तरदायी है?
- (a) प्रेरणा (b) समझ
- (c) ज्ञान (d) स्वअध्ययन
21. “अभिप्रेरण की व्याख्या जन्मजात मूल प्रवृत्तियों के आधार पर की जा सकती है” किसने कहा है?
- (a) मैकडूगल ने (b) कर्ट लेविन ने
- (c) फ्रायड ने (d) स्किनर ने

22. छात्रों को प्रेरित करने की सही विधि है -
 (a) दण्ड (b) फटकारना
 (c) प्रशंसा (d) मारना-पीटना।
23. किसी उद्दीपन के निरन्तर दिये जाने से व्यवहार में होने वाला अस्थायी परिवर्तन कहलाता है
 (a) अभ्यस्तता (b) अधिगम
 (c) अस्थायी अधिगम (d) अभिप्रेरणा
24. बाह्य अभिप्रेरणा में समावेशित किया जायेगा
 I. प्रशंसा एवं दोषारोपण II. प्रतिद्वन्द्विता
 III. पुरस्कार एवं दण्ड IV. परिणाम का ज्ञान।
 इनमें से
 (a) I और III (b) I, II और III
 (c) केवल II (d) इनमें से सभी।
25. निम्न में से कौन-सा कथन सही नहीं है?
 (a) आवश्यकता वंचना की शारीरिक अवस्था नहीं है
 (b) अन्तर्नोद आवश्यकता का मनोवैज्ञानिक परिणाम है
 (c) आवश्यकता एवं अन्तर्नोद समान नहीं है, बल्कि समानान्तर हैं
 (d) मूलप्रवृत्तियाँ आन्तरिक जैविक बल हैं।
26. निम्न में से कौन-सा उदाहरण अभिप्रेरणा का परिणाम नहीं है?
 (a) कृष्ण ने नृत्य का समय एक घंटे से बढ़ा कर दो घंटे कर दिया है।
 (b) जॉन स्टुअर्ट मिल ने 12 वर्ष की उम्र में दर्शन का अध्ययन आरम्भ कर दिया था
 (c) जगन ने 'श्वास लेने की प्रक्रिया' में रुचि दिखानी प्रारम्भ कर दी है
 (d) राम ने तेजी से आधुनिक एवं प्राचीन ऐतिहासिक प्रवृत्तियों में सहसम्बन्ध स्थापित करने में प्रगति की है।
27. एक अध्यापक को निम्न में से किस कथन से सहमत होना चाहिये?
 (a) आन्तरिक अभिप्रेरणा तब होती है, जब अधिगमकर्ता बाह्य सन्तोषजनक परिणाम का अनुभव करने के लिये कार्य करते हैं।
 (b) बाह्य अभिप्रेरणा तब होती है, जब अधिगमकर्ता बाह्य पुरस्कार प्राप्त करने के लिये कार्य करते हैं।
 (c) बाह्य पुरस्कार से स्थायी व्यवहार परिवर्तन होता है।
 (d) बाह्य पुरस्कार आन्तरिक अभिप्रेरणा प्रदान करते हैं।
28. हम सभी में आवश्यकता के अनुसार अभिप्रेरणा की शुरुआत होती है, छात्र की वह आवश्यकता जिसे उसको सर्वप्रथम पूरा करना चाहिए, सम्बन्धित है
 (a) सम्मान
 (b) शारीरिक
 (c) सामाजिक
 (d) आत्म-अनुभूतिकरण
29. एक अभिप्रेरित बालक निम्न में से कौन-सा गुण प्रदर्शित नहीं करता?
 (a) सीखने की इच्छा
 (b) सीखने में आवेष्टन
 (c) आकांक्षा स्तर
 (d) समूह से अलगाव
30. मानव आवश्यकताओं का पदानुक्रम किसने दिया?
 (a) थॉर्नडाइक (b) मास्लो
 (c) गिल्फोर्ड (d) कॉपका
31. एक व्यक्ति की 'जीवन में नाम व प्रशंसा कमाने की इच्छा' किस प्रकार का अभिप्रेरक है?
 (a) आन्तरिक अभिप्रेरक
 (b) बाह्य अभिप्रेरक
 (c) दैहिक अभिप्रेरक
 (d) मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरक
32. कक्षा में विद्यार्थियों को अधिगम के लिए प्रेरित करने हेतु किस युक्ति का अनुप्रयोग आप नहीं करते है?
 (a) छात्रों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा स्थापित करना
 (b) उन्हें आत्म गौरव की अनुभूति कराना
 (c) उनकी अत्यधिक प्रशंसा करना
 (d) गतिविधि आधारित शिक्षण-अधिगम विधियों का अनु-प्रयोग करना
33. अधिगम के प्रक्रम में अभिप्रेरण
 (a) सीखने वालों की स्मृति को तेज बनाता है
 (b) पुराने अधिगम से नए अधिगम को विभेदित करता है
 (c) एकदिशीय रूप से सोचने में सीखने वालों को प्रस्तुत करता है
 (d) नये सीखने वालों में अधिगम के लिए रुचि का सृजन करता है

34. विद्यालय में विद्यार्थियों को कैसे अभिप्रेरित करना उचित है?
- (a) चुने गए अध्ययन द्वारा
(b) प्रासंगिक अध्ययन द्वारा
(c) गहन अध्ययन द्वारा
(d) सस्वर अधिगम द्वारा
35. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता आंतरिक रूप से अभिप्रेरित बच्चों के लिए सही नहीं है?
- (a) वे कार्य करते समय उच्च स्तर की ऊर्जा प्रदर्शित करते हैं
(b) वे चुनौती भरे कार्यों को पसंद करते हैं
(c) ये हमेशा सफल होते हैं।
(d) उन्हें कार्य करने में आनंद आता है।
36. निम्न में से कौन-सा बच्चे की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के साथ संबद्ध नहीं है?
- (a) संवेगात्मक सुरक्षा की आवश्यकता
(b) शरीर में अपशिष्ट पदार्थों का नियमित रूप से बाहर निकलना
(c) सान्निध्य (संगति) की आवश्यकता
(d) सामाजिक अनुमोदन अथवा सराहना की आवश्यकता
37. एक विद्यार्थी मेडिकल कॉलेज में दाखिला लेने के लिए कठिन परिश्रम करता है ताकि वह प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हो सके। यह विद्यार्थी रूप से अभिप्रेरित है।
- (a) वैयक्तिक (b) आनुभविक
(c) आंतरिक (d) बाह्य
38. हालांकि यह स्पष्ट रूप से उनकी सुरक्षा आवश्यकताओं के उल्लंघन में था, कैप्टन विक्रम बतरा अपने देश को बचाने के दौरान कारगिल युद्ध में मारे गए। संभवतः उन्हें - - - - था/थी।
- (a) आत्म-सिद्धि की प्राप्ति
(b) अपने अपनत्व संबंधी आवश्यकताओं की उपेक्षा
(c) अपने परिवार के नाम की ख्याति-प्राप्ति
(d) नवीन अनुभव की प्राप्ति की इच्छा
39. राजेश अति लोलुप पाठक हैं। वह अपने कोर्स की पुस्तकें पढ़ने के अतिरिक्त प्रायः पुस्तकालय जाता है और भिन्न प्रकरणों पर पुस्तकें पढ़ता है। इतना ही नहीं, राजेश भोजन-अवकाश में अपने परियोजना कार्य करता है। उसे परीक्षाओं के लिए पढ़ने के लिए अपने शिक्षकों अथवा अभिभावकों द्वारा कभी भी कहने की जरूरत नहीं है और वह वास्तव में सीखने का आनंद लेता नजर आता है। उसे ---- के रूप में सर्वाधिक बेहतर रूप से वर्णित किया जा सकता है।
- (a) आंतरिक रूप से अभिप्रेरित शिक्षार्थी
(b) तथ्य-आधारित शिक्षार्थी
(c) शिक्षक-अभिप्रेरित शिक्षार्थी
(d) आकलन-आधारित शिक्षार्थी
40. कार्य को आरम्भ करने, जारी रखने और नियमित करने की प्रक्रिया है -
- (a) प्रेरणा (b) संवेदना
(c) सीखना (d) प्रत्यक्षीकरण

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (d) | 2. (b) | 3. (a) | 4. (a) | 5. (a) | 6. (c) | 7. (b) | 8. (a) | 9. (d) |
| 10. (a) | 11. (a) | 12. (c) | 13. (c) | 14. (a) | 15. (d) | 16. (c) | 17. (c) | 18. (b) |
| 19. (b) | 20. (a) | 21. (a) | 22. (c) | 23. (d) | 24. (d) | 25. (a) | 26. (c) | 27. (b) |
| 28. (b) | 29. (d) | 30. (b) | 31. (a) | 32. (c) | 33. (d) | 34. (d) | 35. (c) | 36. (b) |
| 37. (b) | 38. (a) | 39. (a) | 40. (a) | | | | | |

अधिगम एक प्रक्रिया है इस प्रक्रिया की सफलता केवल प्रभावशाली शिक्षण पर ही नहीं वरन् अनेक सामूहिक कारकों पर निर्भर करती है। शिक्षार्थी, शिक्षक, पाठ्यवस्तु, अधिगम व्यवस्था, वातावरण इत्यादि से सम्बन्धित अनेक कारक अधिगम की मात्रा स्वरूप एवं गति के निर्धारक के रूप में उत्तरदायी होते हैं। ये कारक मुख्य रूप से पाँच हैं।

1. शिक्षक से सम्बन्धित कारक
2. शिक्षार्थी से सम्बन्धित कारक
3. पाठ्य-वस्तु से सम्बन्धित कारक
4. अधिगम व्यवस्था से सम्बन्धित कारक
5. वातावरण से सम्बन्धित कारक

1. शिक्षक से सम्बन्धित कारक-

I. विषय का ज्ञान- अध्यापक को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान है तो वह आत्मविश्वास के साथ छात्रों को नवीन ज्ञान देने में सक्षम होगा तथा उसका शिक्षण प्रभावी होगा।

II. शिक्षक का व्यवहार- अध्यापक के व्यवहार में सहानुभूति सहयोग, समानता शिक्षण कला में निपुणता, मृदुभाषी, संयत आदि गुण हैं तो छात्र कक्षा वातावरण में सहज रूप से सब कुछ सीख सकेगा।

III. मनोविज्ञान का ज्ञान- अध्यापक को बाल विकास प्रक्रिया, वंशानुक्रम, व्यक्तिगत विभेद, प्रेरणा, सीखने के सिद्धांत आदि का ज्ञान अतिआवश्यक है आधुनिक शिक्षा में मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

IV. शिक्षण विधि- प्रत्येक अध्यापक द्वारा पढ़ाने का तरीका भिन्न होता है शिक्षण विधि जितनी अधिक वैज्ञानिक एवं प्रभावशाली होगी उतनी सीखने की प्रक्रिया सरल एवं लाभप्रद होगी।

V. व्यक्तिगत भेदों का ज्ञान- अध्यापक को तीन प्रकार के छात्रों का सामना करना पड़ता है- मेधावी, सामान्य तथा पिछड़े हुए बालक इन्हीं के अनुरूप शिक्षण व्यवस्था करनी होती है, व्यक्तिगत भेद का ज्ञान छात्र को समझने में अध्यापक का सहयोग करते हैं।

VI. वैयक्तिक- छात्र जाने अनजाने शिक्षक के व्यवहार से प्रभावित हो बहुत सी बातें सीख लेते हैं इस दृष्टि से एक अध्यापक को आत्मविश्वासी, दृढ़इच्छा शक्ति, कर्तव्यनिष्ठ, निरोगी, श्रेष्ठ रुचियों तथा क्षमताओं एवं स्तर के अनुकूल होना चाहिए।

VII. बाल केन्द्रित शिक्षा- आधुनिक युग में शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह जो भी ज्ञान छात्रों को प्रदान करे वह उनकी रुचियों, क्षमताओं एवं स्तर के अनुकूल होना चाहिए।

VIII. समय-सारणी- समय सारणी बनाते समय मौसम, बालकों की योग्यता, रुचि एवं व्यक्तिगत विभेदों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

IX. पाठ्य सहभागी क्रियायें- शिक्षा में मनोविज्ञान के योगदान के रूप में आज पाठ्यक्रम में अनेक महत्वपूर्ण सहभागी क्रियाओं को स्थान दिया जाता है, जैसे वाद-विवाद, निबन्ध, लेख

कहानी, कविता, अन्ताक्षरी, भ्रमण, छात्रसंघ, खेलकूल, अभिनय, संगीत आदि।

X. अनुशासन- मनोवैज्ञानिक परीक्षण यह सिद्ध करते हैं छात्र अपराध करने पर दण्ड से डरता नहीं इसका यह अर्थ नहीं कि छात्र को मनमानी करने दी जाए उसे अपराध के अनुकूल दण्ड दिया जाए।

2. शिक्षार्थी से सम्बन्धित कारक-

I. बालक- बालक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का आधार है इसलिए उसके आभाव में अधिगम की कल्पना नहीं की जा सकती।

II. *सीखने की इच्छा- बालकों में सीखने के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न की जाए जिससे बालक कठिन तथ्यों को भी आसानी से समझ सके।

III. शैक्षिक पृष्ठभूमि- छात्र की एक विषय में शैक्षिक योग्यता सामान्य से अधिक है तो छात्र उस विषय में नया ज्ञान सुगमता से सीख लेगा।

IV. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य- सीखने से पहले बालक का स्वस्थ रहना जरूरी है, क्योंकि किसी भी प्रकार की मानसिक विकृति, शारीरिक रुग्णता तथा मानसिक तनाव का प्रत्यक्ष प्रभाव बालकों के अधिगम पर प्रतिकूल पड़ता है। अस्वस्थ बालक शीघ्र थक जाते हैं।

V. परिपक्वता- बहुत सी चीजें बालक तभी सीख पाता है। जब उसमें परिपक्वता आ जाती है चाहे हम उसे कितना भी प्रशिक्षण दें।

VI. *अभिप्रेरणा- अभिप्रेरणा उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि बालक को उसका लक्ष्य स्पष्ट कर दिया जाये, किसी नये कार्य को सीखने के लिए यदि प्रेरित नहीं किया जायेगा तो वह उस क्रिया में रुचि नहीं लेगा।

VII. सीखने वाले की अभिवृत्ति- सीखने वाले की किसी कार्य की नकारात्मक या सकारात्मक अभिवृत्ति उस कार्य की प्रगति पर निर्भर करती है।

VIII. सीखने का समय तथा अवधि- छात्र किसी कार्य को देर तक करता है तो उसमें थकान उत्पन्न हो जाती है। थकान होने से अधिगम प्रक्रिया में शिथिलता आ जाती है।

IX. बुद्धि- बालक की तीव्र या मन्द बुद्धि किसी कार्य को सीखने में सरलता या बाधा उत्पन्न करता है।

X. अधिगम प्रक्रिया- यह सच है कि बालक किसी भी कार्य को अपने ढंग से सीखता है चाहे प्रक्रिया किसी भी ढंग से क्यों न सम्पादित की जाये।

3. पाठ्य वस्तु से सम्बन्धित कारक-

I. *विषय का स्वरूप- वस्तु की प्रकृति निर्भर करता है कि सिखायी जाने वाली वस्तु सरल है या कठिन। यह बालक को सीखने में सरलता या कठिनाई उत्पन्न करता है।

II. विषय वस्तु का आकार— विस्तृत विषय वस्तु से वह शीघ्र ही ऊब जाता है व छोटे पाठों को वह जल्दी ही ग्रहण कर लेता है।

III. विषय वस्तु का क्रम— विषय वस्तु को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करने का क्रम सीखने की प्रक्रिया को पर्याप्त रूप से प्रभावित करता है। अर्थात् क्रम 'सरल से कठिन की ओर होना चाहिए'।

IV. उदाहरण प्रस्तुतीकरण— पढ़ाते समय शिक्षकों को बालक के दैनिक जीवन से सम्बन्धित उदाहरणों का प्रयोग करने से प्रत्ययों का स्पष्टीकरण आसानी से हो जाता है।

V. भाषा—शैली— विषय वस्तु को सरल भाषा में बालकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाए तो वह सरलता से उसे सीख लेता है।

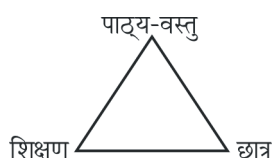
VI. दृश्य—श्रव्य सामग्री— कठिन से कठिन पाठ्यवस्तु को भी दृश्य श्रव्य सामग्री के उपयोग से सरल व सुगम बनाया जा सकता है।

VII. रुचिकर विषय वस्तु— शिक्षक को अपनी सूझ-बूझ से विषय वस्तु को रोचक बनाने के प्रयास करना चाहिए जिससे बालक खूब मन लगाकर सीखते हैं।

VIII. विषय वस्तु की उद्देश्यपूर्णता— विषयवस्तु बालकों को पढ़ाने से पूर्व अध्यापक को उससे जुड़े उद्देश्यों एवं उपयोगिता को स्पष्ट करना चाहिए क्योंकि उपयोगी वस्तु बालक जल्दी सीखता है।

IX. विभिन्न विषयों का कठिनाई स्तर— प्रत्येक विषय की प्रकृति अनूठी होती है, उसी आधार पर बालक उसमें रुचि व अरुचि दिखाता है व उसी आधार पर सीखता है।

4. अधिगम—व्यवस्था से सम्बन्धित कारक—



I. सम्पूर्ण बनाम खण्ड विधि— इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इससे विद्यार्थी अपनी स्मरण शक्ति बढ़ा सकता है।

II. उप—विषय बनाम सकेन्द्रीय विधि— बालक का मानसिक स्तर और आयु के अनुसार उपविषय पढ़ाये जाते हैं व उसी कक्षा में पूर्ण कर दिए जाते हैं। सकेन्द्रीय विधि में उपविषय को उसी कक्षा में समाप्त नहीं किए जाते बल्कि आयु व स्तर बढ़ने के अनुसार उस विषय को पुनः पढ़ाया जाता है।

III. संकलित बनाम वितरित विधि— संकलित विधि में सम्पूर्ण विषय वस्तु को एक ही सत्र में समाप्त कर दिया जाता है। जबकि वितरित विधि में विषय वस्तु अंतराल देकर समाप्त की जाती है।

IV. आयोजित बनाम प्रासंगिक विधि— इस विधि का सिद्धांत यह है कि ज्ञान एक ईकाई है, इसके भिन्न-भिन्न अंग नहीं है ज्ञान ईकाई के रूप में दिया जाना चाहिए। अतः विद्यार्थी ज्ञान के सभी अंगों से परिचित हो सकेगा।

V. सक्रिय बनाम निष्क्रिय विधि— सक्रिय विधि के अंतर्गत विद्यार्थी पाठ को जोर-जोर से या धीरे-धीरे बोल कर याद करता है जबकि निष्क्रिय विधि के अंतर्गत विद्यार्थी पाठ को मन ही मन पढ़कर याद करता है, दोनों विधि अपने आप में महत्वपूर्ण हैं विद्यार्थी अपनी

अभिवृत्ति के अनुरूप नवीन ज्ञान को सीखने में इनमें से किसी एक का चयन करता है।

5. वातावरण से सम्बन्धित कारक—

I. वंशानुक्रम— बालक में अस्सी प्रतिशत योग्याएँ एवं क्षमतायें उसके वंशानुक्रम की ही देन हैं। रॉस “बालक जो कुछ भी है और जिस रूप में विकसित होता है, वह वंशक्रम की ही देन है। व्यक्ति का जीवन सुखमय या दुःखमय होना भी उसके वंशक्रम से प्राप्त गुणों पर निर्भर करता है।

II. सामाजिक वंशक्रम का ज्ञान— बालक पूर्वजों के आदर्शों से बहुत कुछ सीखता है तथा उनके चरित्र को अपना आदर्श मानकर तदनुसार कार्य करके महान बनने का प्रयास करता है।

III. वातावरण का प्रभाव— बालक के लिए वातावरण का उचित होना वंशानुक्रम के विकास के लिए एक अनिवार्य शर्त है। अतः व्यक्ति वंशानुक्रम की आधारभूत मान्यताओं को विकसित करने के लिए वातावरण को उपयोगी बनाने में विश्वास करता है।

IV. व्यक्तित्व का विकास— वंशानुक्रम तथा वातावरण के ज्ञान से व्यक्ति मानवीय मूल्यों के विकास में रुचि लेने लगता है। वंशानुक्रम के प्रति आस्था व्यक्ति के सांवेगिक तथा सामाजिक विकास में विशेष योग देती है तथा सामाजिक व्यक्तित्व समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होता है।

V. शिक्षा के अनौपचारिक साधन— बालक दो प्रकार के साधनों द्वारा शिक्षा प्राप्त करता है, औपचारिक तथा अनौपचारिक। दोनों ही प्रकार के साधनों का बालकों के अधिगम पर गहन प्रभाव पड़ता है।

VI. परिवार का वातावरण— परिवार के वातावरण का प्रभाव बच्चों की अधिगम प्रक्रिया पर पड़ता है यदि परिवार में कलह होती है तो बालक के मस्तिष्क पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है वो उदास खिन्न रहने लगते हैं।

VII. कक्षा का भौतिक वातावरण— कक्षा में छात्रों को भौतिक वातावरण जैसे— प्रकाश, वायु, कोलाहल आदि की समुचित व्यवस्था नहीं मिलती तो ऐसी स्थिति में छात्रों का मन अधिगम से उचाट हो जाता है।

VIII. मनोवैज्ञानिक वातावरण— छात्रों में एक दूसरे के प्रति सहयोग और सहानुभूति की भावना होती है उनमें आपस में मधुर सम्बन्ध होता है तो सीखने की प्रक्रिया सुचारु रूप से आगे बढ़ती है।

IX. सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण— सांस्कृतिक वातावरण वह है जो व्यक्ति द्वारा निर्मित या प्रभावित उन समस्त नियमों, विचारों, विश्वासों एवं भौतिक वस्तुओं की पूर्णता से है जो जीवन को चारों ओर से घेरे रहते हैं। सामाजिक वातावरण वह है जो रीतिरिवाज, मान्यताएँ, आदर्श मूल्य एवं स्वयं व्यक्ति की समाज में स्थिति आती है। ये सभी व्यक्ति के अधिगम को प्रभावित करते हैं।

X. सम्पूर्ण परिस्थिति— विद्यालय का सम्पूर्ण व्यवहार परिवेश इस प्रकार से निर्मित किया जाता है, जो विद्यार्थी को पूर्ण संतुष्टि प्रदान करे व शैक्षिक उपलब्धि स्तर को ऊँचा उठाने के साथ-साथ उसके मनोबल को बनाये रखे। सम्पूर्ण परिस्थिति का संतोषप्रद होना अधिगम की अनिवार्य शर्त है।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्न आर्थिक स्तर का प्रभाव निम्न में से किस पर नहीं पड़ता है?
(a) आत्मसम्मान पर (b) सीखने की दक्षता पर
(c) उच्च संस्थान में प्रवेश पर (d) जीवन यापन पर
2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'सीखने' के बारे में सही है?
(a) सीखने के किसी भी चरण पर सीखना संवेगात्मक कारकों से प्रभावित नहीं होता।
(b) सीखना मूल रूप से मानसिक क्रिया है।
(c) बच्चों द्वारा की गई त्रुटियाँ यह संकेत करती हैं कि किसी तरह का सीखना नहीं हुआ।
(d) सीखना उस वातावरण में प्रभावी होता है जो संवेगात्मक रूप से सकारात्मक हो और शिक्षार्थियों को संतुष्ट करने वाला हो।
3. दो विद्यार्थी एक ही अवतरण को पढ़ते हैं, फिर भी इसके बिलकुल भिन्न अर्थ लगाते हैं। उनके बारे में निम्नलिखित में से क्या सत्य है?
(a) संभव नहीं है, क्योंकि अधिगम का आशय अर्थ लगाना नहीं है।
(b) संभव नहीं है और विद्यार्थियों को उसे दुबारा पढ़ना चाहिए।
(c) संभव है, क्योंकि शिक्षक ने अवतरण को समझाया नहीं है।
(d) संभव है, क्योंकि व्यक्ति के अधिगम को विविध कारण विभिन्न विधियों से प्रभावित करते हैं।
4. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक अधिगम को सकारात्मक प्रकार से प्रभावित करता है?
(a) अनुत्तीर्ण हो जाने का भय
(b) से प्रतियोगिता
(c) अर्थपूर्ण सम्बन्ध
(d) माता-पिता की ओर से दबाव
5. निम्न में से कौन-सा कथन बच्चे के विकास में परिवेश की भूमिका का समर्थन करता है?
(a) कुछ शिक्षार्थी सूचनाओं का जल्दी प्रक्रमण करते हैं जबकि उसी कक्षा में अन्य विद्यार्थी ऐसा नहीं कर पाते
(b) पिछली कुछ दशाब्दियों में बुद्धि लब्धांश परीक्षा में शिक्षार्थियों के औसत प्रदर्शन में लगातार वृद्धि हुई है
(c) एकसमान जुड़वाँ बच्चे जिनका लालन-पालन भिन्न घरों में हुआ है, उनकी बुद्धिलब्धि 0.75 के समान उच्च है
(d) शारीरिक रूप से स्वस्थ बच्चे अक्सर नैतिक रूप से अच्छे पाए जाते हैं
6. सीखना
(a) सीखने वाले के संवेगों से प्रभावित नहीं होता है
(b) संवेगों से क्षीण सम्बन्ध रखता है
(c) सीखने वाले के संवेगों से स्वतंत्र है
(d) सीखने वाले के संवेगों से प्रभावित है
7. निम्नलिखित में से कौन-से तत्त्व अधिगम को प्रभावित करते हैं?
(1) शिक्षार्थी का उत्प्रेरण
(2) शिक्षार्थी की परिपक्वता
(3) शिक्षण युक्तियाँ
(4) शिक्षार्थी का शारीरिक और संवेगात्मक स्वास्थ्य
(a) 1 और 2 (b) 1, 2, 3 और 4
(c) 1 और 3 (d) 1, 2 और 3
8. अधिगम को प्रभावित करने वाला व्यक्तिगत कारक है
(a) संचार के साधन (b) समवयस्क समूह
(c) अध्यापक (d) परिपक्वता एवं आयु
9. सीखने के वे कौन-से कारक हैं जो सीखने को प्रभावित करते हैं?
(a) शिक्षणार्थी का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य
(b) प्रेरणा और उपलब्धि का अभिप्रेरण स्तर
(c) उत्सुकता और इच्छाशक्ति
(d) उपरोक्त सभी
10. निम्नलिखित में से किस कारक का सीखने पर सबसे कम प्रभाव पड़ता है?
(a) थकान (b) आयु
(c) रोग (d) लिंगभेद
11. सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक है
(a) अनुकरण (b) प्रशंसा एवं निन्दा
(c) प्रतियोगिता (d) ये सभी
12. शिक्षण को प्रभावित करने वाला निम्नलिखित में से कौन-सा घटक शिक्षक से संबंधित नहीं है?
(a) विषय का ज्ञान (b) संप्रेषण कौशल
(c) विद्यार्थियों से जुड़ाव (d) संसाधनों की उपलब्धता
13. मीडिया का एक उदाहरण जो अधिगमकर्ता को प्रत्यक्ष प्रस्तुतीकरण के द्वारा अधिगम में सहायक होता है
(a) शैक्षिक टेलीविजन (b) शैक्षिक प्रसारण
(c) ओवर हेड प्रोजेक्टर (d) टेलीफोन
14. सीखना
(a) सीखने वाले के संवेगों से प्रभावित नहीं होता है
(b) संवेगों से क्षीण संबंध रखता है
(c) सीखने वाले के संवेगों से स्वतंत्र है
(d) सीखने वाले के संवेगों से प्रभावित होता है
15. निम्नलिखित में से कौन-सा शिक्षक से सम्बन्धित अधिगम को प्रभावित करने वाला कारक है?
(a) बैठने की उचित व्यवस्था
(b) शिक्षण-अधिगम संसाधनों की उपलब्धता
(c) विषय-वस्तु या अधिगम-अनुभवों की प्रकृति
(d) विषय-वस्तु में प्रवीणता

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|--------|--------|--------|
| 1. (b) | 2. (d) | 3. (d) | 4. (c) | 5. (b) | 6. (d) | 7. (b) | 8. (d) | 9. (d) |
| 10. (d) | 11. (d) | 12. (d) | 13. (c) | 14. (d) | 15. (d) | | | |

पुस्तकें व उनके लेखक		केस स्टडी विधि	टाइडमैन
पुस्तकें	लेखक	प्रश्नावली विधि	वुडवर्थ
■ प्रिसिपल ऑफ साइकोलॉजी	विलियम जेम्स	■ प्रयोगात्मक विधि	विलियम वुन्ट
■ आऊट लाइन ऑफ साइकोलॉजी	मैकडूगल	■ समस्या समाधान विधि	जॉन डीवी
■ साइकोलॉजी इज ए बिहेवियरियट	जे.बी. वाटसन	■ आगमन विधि	बेकन व पेस्टोलॉली
■ स्कूल और समाज	जॉन डीवी	■ निगमन विधि	अरस्तू
■ प्ले वे	H.C. कुक	■ खेल विधि	H.C. कुक
■ शिक्षा मनोविज्ञान	थार्नडाइक	(खेल विधि के जनक H.C. कुक हैं यदि ऑप्शन में फ़ोबेल व कुक दोनों हैं तो कुक सही उत्तर होगा। यदि कुक नहीं है तो उत्तर फ़ोबेल होगा।	
■ एडोलसेन्स	स्टेनले हॉल	■ खेल विधि	F.A. फ़ोबेल
■ हाऊ वी थिंक	जान डीवी	■ किंडर गार्टन विधि	F.A. फ़ोबेल
■ चाइल्ड हुड एण्ड सोसायटी	इरिक इरिक्सन	■ मांटेसरी पद्धति	मारिया मांटेसरी
■ जनरल साइकोलॉजी	गिलफोर्ड	■ विनेटिका योजना	कार्लटन वाशबर्न
■ माइण्ड ऑफ चाइल्ड	प्रेयर	■ ब्रेल पद्धति	लुई ब्रेल
■ थ्योरीज ऑफ लर्निंग	हिलगार्ड	■ बेसिक शिक्षा	महात्मा गाँधी
■ द साइकोलॉजी ऑफ इंटेलिजेंस	जीन पियाजे	■ सूक्ष्म शिक्षण	ऐलन एचीसन व राबर्ट बुश
■ एनिमिल इंटेलिजेंस	थार्नडाइक	■ कम्प्यूटर सह अनुदेशन (CAI)	स्टोलुरो व डेविस
■ प्राइमरी मेटल ऐबेलिटीज	थर्स्टन	■ शास्त्रीय अभिक्रमित अनुदेशन	N.A. क्राउडर
■ क्रॉस रोड्स इन द माइंड ऑफ मैन	कैली	■ रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन	स्कीनर
■ मोटिवेशन एण्ड पर्सनैलिटी	मैस्तो	■ मेथमेटिक्स अभिक्रमित अनुदेशन	T.F. गिलबर्ट
■ बिहेवियरिज्म	जे.बी. वाटसन	■ इकाई योजना	H.C. मारीसन
■ दी इन्ट्रॉडक्शन ऑफ ड्रीम्स	सिगमंड फ्राइड	■ पंचपदी पाठ योजना	हरबर्ट
■ टाइप्स ऑफ मैन	स्प्रेंगर	■ मनोविश्लेषणात्मक विधि	सिगमंड फ्रायड
■ पैटर्न एण्ड ग्रोथ ऑफ पर्सनैलिटी	आलपोर्ट	■ रेटिंग स्केल	इंडियाना
■ प्रोसेस ऑफ एजुकेशन	ब्रूनर	■ ब्रेन स्टोर्मिंग	A.F. ओसबोर्न
■ दी एजुकेशन ऑफ मैन	फ़ोबेल	■ रोल प्ले	क्रूक शैंक
■ दी चाइल्ड्स कॉन्सेप्शन ऑफ द वर्ल्ड	जीन पियाजे	■ टोली शिक्षण	हावर्ड विश्वविद्यालय (अमेरिका)
■ दी कंडिशन ऑफ लर्निंग	गैग्ने	■ संरचनात्मक सम्प्रदाय	विलियम वुन्ट व टिचनर
■ दी साइकोलॉजी ऑफ चाइल्ड	जीन पियाजे	■ कार्यात्मकवादी सम्प्रदाय (प्रकार्यवाद)	जॉन डीवी व विलियम जेम्स
■ करेक्टर एण्ड पर्सनैलिटी	पोलेन्स्की	■ गेस्टाल्टवाद सम्प्रदाय	लेविन, वर्दीमर, कोहलर, कोफ्का
विधियाँ, सिद्धांत, अनुच्छेद व संस्थाएँ		■ व्यवहारवाद सम्प्रदाय	J.B. वाटसन
विधि/अवधारणा/सिद्धांत/अनुच्छेद / संस्था	जनक/प्रतिपादक/ अर्थ/वर्ष	■ मनोविश्लेषणवाद सम्प्रदाय	सिगमंड फ्रायड
■ अनुसंधान विधि या हयूरिस्टिक विधि	H.E. आर्मस्ट्रांग	■ हारमिकवाद सम्प्रदाय	मैकडूगल
■ प्रोजेक्ट विधि या प्रायोजना विधि	V.H. किलपैट्रिक	■ समूह मस्तिष्क सम्प्रदाय	मैकडूगल
■ डाल्टन विधि	H. पार्कहर्स्ट	■ डाल्टन विधि का अन्य नाम	ठेका विधि
■ भ्रमण (पर्यटन) विधि	पेस्टोलॉजी	■ खोज विधि	J.S. ब्रूनर
■ समाजमिति विधि	J.L. मोरनो	■ अध्यापक प्रशिक्षण व्यवस्था का सूत्रपात किया	पेस्टोलॉजी ने
■ ड्रेक्रोली विधि	ड्रेक्रोली	■ आधुनिक शिक्षा का पिता	पेस्टोलॉजी
■ प्रश्नोत्तर विधि	सुकरात		
■ अन्तर्दर्शन विधि	विलियम वुन्ट		
■ बहिर्दर्शन विधि	J.B. वाटसन		

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- | | |
|---|---|
| <ul style="list-style-type: none"> ■ अस्पृश्यता का अन्त —अनुच्छेद 17 ■ 'निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा' का मौलिक अधिकार —अनुच्छेद 21A ■ राज्य की दृष्टि में शिक्षा की दृष्टि से सब समान —अनुच्छेद 29(2) ■ अल्पसंख्यकों को शिक्षा संस्था स्थापित करने का अधिकार —अनुच्छेद 30(1) ■ निर्बल वर्ग जैसे SC, ST का शैक्षिक व आर्थिक अधिकारों की रक्षा —अनुच्छेद 46 ■ संघ की राजभाषा हिन्दी व लिपि देवनागरी होगी —अनुच्छेद 343(1) ■ माता-पिता का मूल कर्तव्य कि वह अपने 6 से 14 वर्ष के बच्चे को स्कूल भेजेंगे —अनुच्छेद 51A(K) ■ MDM की शुरुआत —15 अगस्त 1995 ■ स्काउटिंग के संस्थापक —बेडेन पावेल ■ कोठारी कमीशन का कार्यक्षेत्र —प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च शिक्षा ■ प्रौढ़ शिक्षा किसका हिस्सा है —प्राथमिक शिक्षा का ■ प्रौढ़ शिक्षा के लिए आयु —15 से 35 वर्ष ■ 10 + 2 + 3 शिक्षा संरचना प्रस्तावित की —कोठारी कमीशन ■ 10 + 2 + 3 शिक्षा संरचना घोषित की —राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 ने ■ शुरुआत में ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना किस कक्षा के लिए थी —कक्षा 1 से 5 तक ■ खुले विश्वविद्यालय की सबसे पहले शुरुआत —ब्रिटेन ■ ज्ञान दर्शन चैनल की शुरुआत —26 जनवरी 2000 ■ भारत का पहला खुला विश्वविद्यालय —आंध्र खुला विश्वविद्यालय ■ वुड डिस्पैच (शिक्षा का मैग्नाकार्टा) —1854 ■ हंटर कमीशन —1882 | <ul style="list-style-type: none"> ■ हार्टोग कमेटी —1928 ■ सार्जेंट प्लान —1944 ■ All India Council For Technical Education (AICTE) —नवम्बर, 1945 ■ राधाकृष्णन आयोग (विश्वविद्यालय आयोग) —1948-49 ■ मुदालियर आयोग (माध्यमिक शिक्षा आयोग) —1952-53 ■ बहुउद्देशीय स्कूल खोलने का सुझाव —मुदालियर आयोग ■ MCQ परीक्षा का सुझाव था —मुदालियर आयोग का ■ U.G.C. की स्थापना हुई —1956 में ■ महिला शिक्षा के सुधार के हेतु समिति —दुर्गा बाई देशमुख समिति (1958) ■ दूरदर्शन की स्थापना —15 सितम्बर, 1959 ■ N.C.E.R.T. की स्थापना हुई —1961 में ■ C.B.S.E. की स्थापना हुई —1962 में ■ महिला शिक्षा के विकास हेतु गठित समिति —हंसा मेहता समिति (1962) ■ NUEPA की स्थापना हुई —1962 में ■ KVS की स्थापना हुई —1963 में ■ कोठारी कमीशन (भारतीय शिक्षा आयोग) —1964-66 ■ पड़ोस विद्यालय खोलने का सुझाव —कोठारी कमीशन ■ ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड देन है —राष्ट्रीय नीति 1986 की ■ कोठारी कमीशन की रिपोर्ट का शीर्षक —शिक्षा की चुनौती एक नीतिगत आयाम ■ राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE) —1968 ■ भारतीय वन्य जीवन अधिनियम —1972 ■ IGNOU की स्थापना हुई —1985 में ■ मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) बना —26 सितम्बर, 1985 ■ राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE) —1986 ■ NVS की स्थापना हुई —1986 में ■ NVS की स्थापना देन है —राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE) 1986 ■ ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड की शुरुआत हुई —1987 में ■ AICTE को संवैधानिक दर्जा मिला —1987 ■ राष्ट्रीय साक्षरता मिशन (NLM) की शुरुआत हुई —1988 में ■ NIOS की शुरुआत हुई —1989 में ■ राममूर्ति पुनर्विचार कमेटी —1990 ■ NPE 1986 की समीक्षा के लिए गठित कमेटी —राममूर्ति पुनर्विचार समिति ■ राममूर्ति कमेटी की रिपोर्ट का शीर्षक —एक प्रबुद्ध तथा मानवीय समाज की ओर ■ सेमेस्टर प्रणाली का सुझाव था —राममूर्ति कमेटी का |
|---|---|

■ यशपाल कमेटी –1992-93 ■ 'शिक्षा बिना बोझ के' के नाम से किस कमेटी की रिपोर्ट प्रकाशित हुई –यशपाल कमेटी 1993 में ■ N.C.T.E. की स्थापना हुई –1995 में ■ सर्व शिक्षा अभियान की शुरुआत हुई –1 अप्रैल 2001 ■ सर्वशिक्षा अभियान –6-14 वर्ष के छात्रों के लिए ■ R.T.E. 2009 लागू हुआ –01 अप्रैल 2010 ■ N.C.T.E. –National Council for Teacher Education ■ N.P.E. –National Policy on Education ■ N.C.F. 2005 के अध्यक्ष –प्रो. यशपाल ■ N.C.F. 2005 की थीम –शिक्षा बिना बोझ के ■ N.C.F 2005 लागू किया –N.C.E.R.T. ने ■ N.C.F आधारित है –रचनावाद पर ■ N.C.F में शिक्षक की भूमिका –प्रशिक्षक या उत्प्रेरक की ■ शिक्षण सूत्र –हरबर्ट स्पैन्सर ■ पाठ्यक्रम अर्थात केरीकुलम का शाब्दिक अर्थ –दौड़ का मैदान ■ केरीकुलम शब्द की उत्पत्ति –लैटिन भाषा से ■ उत्तम मूल्यांकन की विशेषता –वैधता ■ मूल्यांकन प्रक्रिया –त्रिभुजाकार होती है ■ उन विशेषताओं व गुणों का मापन करें जिनके लिए वह परीक्षण बना –वैध परीक्षण ■ वह परीक्षण जो एक समूह पर अलग-अलग समय के परीक्षण पर समान अंक दे –विश्वसनीय परीक्षण ■ सबसे विश्वसनीय व वैध परीक्षण –वस्तुनिष्ठ परीक्षण ■ प्रत्येक शिक्षक द्वारा जाँचने पर समान अंक देना –वस्तुनिष्ठ परीक्षण ■ उच्चारण शुद्धता के लिए प्रयोग होता है –लिंग्वाफोन ■ अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस –3 दिसम्बर (1981 विकलांग वर्ष) ■ विश्व साक्षरता दिवस –8 सितम्बर ■ विश्व महिला दिवस –8 मार्च ■ RTE 2009 कितनी आयु के बच्चों के लिए –6 से 14 वर्ष ■ RTE 2009 किस राज्य पर लागू नहीं –जम्मू व कश्मीर	■ RTE 2009 के अनुसार प्राथमिक स्तर पर शिक्षक : छात्र अनुपात – 1 : 30 ■ RTE 2009 के अनुसार उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षक : छात्र अनुपात – 1 : 35 ■ राष्ट्रीय शिक्षा दिवस – 11 नवम्बर ■ राष्ट्रीय शिक्षा दिवस किसकी याद में मनाते हैं –मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ■ सूचना व सम्प्रेषण तकनीक को कहते हैं –ICT ■ ICT कब शुरू हुआ –दिसम्बर 2004 में ■ ICT किसके तहत शुरू हुआ –RMSA के ■ National Talent Search Exam कौन लेता है –N.C.E.R.T.
---	---

मत/सिद्धांत/टेस्ट	जनक/प्रतिपादक / अर्थ
■ मनोविज्ञान का शाब्दिक अर्थ	मन या आत्मा का विज्ञान
■ साइकोलॉजी शब्द की उत्पत्ति हुई	ग्रीक भाषा से
■ मनोविज्ञान के जनक	अरस्तू
■ आधुनिक मनोविज्ञान के जनक	विलियम्स जेम्स
■ मनोविज्ञान के उपागम (Approaches of Psychlogy)	संरचनावाद, प्रकायवाद, व्यवहारवाद, गेस्टाल्टवाद, मनोविश्लेषणवाद
■ शिक्षा मनोविज्ञान के जनक	थार्नडाइक
■ भारत में प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला सेन गुप्ता ने कहाँ स्थापित की	कलकत्ता विश्वविद्यालय
■ प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला विलियम वुन्ट ने जर्मनी के किस नगर में स्थापित की	लिपजिंग
■ गेस्टाल्ट शब्द का अर्थ	समग्र या पूर्ण
■ प्रयास व त्रुटि का सिद्धांत	थार्नडाइक
■ प्रथम बुद्धि परीक्षण हुआ	1905 में

■	भारत में प्रथम बुद्धि परीक्षण हुआ	1922 में
■	बुद्धि परीक्षणों का जन्मदाता	अल्फ्रेड बिने व साइमन
■	प्रथम बुद्धि परीक्षण किस भाषा में बना	फ्रेंच में
■	IQ का सूत्र दिया	विलियम स्टर्न
■	थार्नडाइक के अनुसार बुद्धि के प्रकार	तीन- सामाजिक, मूर्त व अमूर्त बुद्धि
■	बुद्धि का एक कारक सिद्धांत या निरंकुशवादी सिद्धांत	अल्फ्रेड बिने
■	बुद्धि का द्वि-कारक या राजतंत्रीय सिद्धांत	स्पीयर मैन
■	बुद्धि के G और S कारक	स्पीयर मैन
■	बुद्धि का त्रिकारक सिद्धांत	स्पीयर मैन
■	बुद्धि का बहुकारक सिद्धांत या बालू (रेत) का सिद्धांत	थॉर्नडाइक
■	बुद्धि का समूहकारक सिद्धांत या प्राथमिक मानसिक योग्यता का सिद्धांत	थर्स्टन
■	बुद्धि का पदानुक्रमिक सिद्धांत	बर्ट व वर्नन
■	बुद्धि का त्रिआयामी (Three Dimensional) सिद्धांत	J.P. गिलफोर्ड
■	बुद्धि का 'क' तथा 'ख' सिद्धांत	हैब
■	बुद्धि का तरल ठोस सिद्धांत	कैटल
■	बुद्धि का बहुबुद्धि सिद्धांत	गार्डनर
■	प्रथम बुद्धि परीक्षण में प्रश्नों की संख्या	30
■	प्रयत्न व भूल का सिद्धांत दिया	थार्नडाइक
■	भाषा का विकास सिद्धांत	नोआम चौमस्की
■	बाल अपराध विज्ञान का जनक	सीजर लोम्व्रसो
■	सामाजिक अधिगम का सिद्धांत	अल्बर्ट बण्डूरा
■	भाषीय सापेक्षता का सिद्धांत	व्हार्फ

■	मनोसामाजिक सिद्धांत	ई. एरिक्सन
■	संरचनात्मक अधिगम का सिद्धांत	अल्बर्ट बण्डूरा
■	आवश्यकता पदानुक्रम या माँग-पूर्ति का सिद्धांत	मैस्लो
■	चिन्ह का सिद्धांत	टालमैन
■	भूल-भूलैया टेस्ट	पोरटियस
■	सम्भावना का सिद्धांत	टालमैन
■	युंग के व्यक्तित्व को बांटा	अंतर्मुखी, बहिर्मुखी, मध्यमुखी/उभयमुखी
■	व्यक्तित्व का शीलगुण सिद्धांत	आलपोर्ट
■	व्यक्तित्व का टाइप ए व टाइप बी सिद्धांत	फ्रीडमैन व रोजेन मैन
■	व्यक्तित्व का कारक सिद्धांत	आर.बी. कैटल
■	व्यक्तित्व का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत	सिगमंड फ्रायड
■	ID, Ego, Super Ego व्यक्तित्व के घटक बताएं	सिगमंड फ्रायड
■	I.B.T. परीक्षण	हरमन रोर्शा
■	16 P.F. परीक्षण	कैटल
■	T.A.T. परीक्षण	मार्गन व मुरे
■	आर्मी अल्फा व बीटा परीक्षण	ओटिस ए.एस.
■	स्वतंत्र शब्द साहचर्य परीक्षण	फ्रांसिस गाल्टन
■	शेल्डन के अनुसार व्यक्तित्व	गोलाकार, आयताकार लम्बाकार
■	अभिप्रेरणा की मूल प्रवृत्ति का सिद्धांत	मैक्डूगल
■	अभिप्रेरणा को प्रणोद न्यूनता का सिद्धांत	हल
■	अभिप्रेरणा का पदानुक्रमिक या आत्मसिद्धि का सिद्धांत	मैस्लो

उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा-2018

(Class I-V) भाग-I

बाल-विकास एवं शिक्षण विधि

(Child Development and Pedagogy)

व्याख्या सहित प्रथम प्रश्न-पत्र का हल (परीक्षा तिथि : 18 नवम्बर, 2018)

1. कोह्लर यह सिद्ध करना चाहता था कि सीखना—

- (a) एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति, पशु से श्रेष्ठ है
- (b) स्वायत्त यादृच्छिक क्रिया है
- (c) संज्ञानात्मक संकार्य है
- (d) पारिस्थिति के विभिन्न अंगों का प्रत्यक्षीकरण है

Ans : (c) कोह्लर यह सिद्ध करना चाहता था कि सीखना एक संज्ञानात्मक संकार्य है। कोह्लर ने अंतर्दृष्टि या सूझ को अधिगम में महत्वपूर्ण माना। निःसंदेह सूझ की प्रक्रिया एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जो समस्या का संज्ञानात्मक समाधान प्रस्तुत करके सीखने की प्रक्रिया को अत्यधिक सरल, सहज तथा उद्देश्यपूर्ण बनाती है।

2. किसी भी नयी भाषा को सीखने के लिए कहाँ से प्रारम्भ किया जाना चाहिए?

- (a) अक्षरों व शब्दों के मध्य साहचर्य से
- (b) वाक्यों के निर्माण से
- (c) शब्दों के निर्माण से
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (a) किसी नयी भाषा को सीखने के लिए अक्षरों व शब्दों के मध्य साहचर्य से प्रारम्भ किया जाना चाहिए। क्योंकि भाषा सीखने की प्रक्रिया क्रमिक रूप से होती है। बालक पहले अक्षरों फिर शब्दों और अंत में वाक्यों को सीखता है। अतः इनके मध्य साहचर्य होना अति आवश्यक होता है।

3. समावेशी कक्षा में किस प्रकार का/के छात्र शामिल होता /होते हैं/हैं?

- (a) केवल विशिष्ट छात्र
- (b) सामान्य और विशिष्ट छात्र
- (c) केवल सामान्य छात्र
- (d) बहुभाषी और प्रतिभाशाली छात्र

Ans : (b) समावेशी कक्षा में सामान्य और विशिष्ट दोनों प्रकार के छात्र अध्ययन करते हैं। समावेशी विद्यालय ऐसे संसाधन कक्षा-कक्ष का निर्माण करते हैं, जिसमें सामान्य बच्चों के साथ-साथ विशिष्ट बच्चे भी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। ऐसे कक्षा-कक्ष संसाधन युक्त, शिक्षण सहायक सामग्री युक्त तथा संसाधन शिक्षक युक्त होते हैं जहाँ विशिष्ट बालक अपने आपको समायोजित कर पाते हैं।

4. अधोलिखित में गणित-सम्बन्धी अधिगम अक्षमता को कौन-सा पद परिभाषित करता है?

- (a) नीरसता सम्बन्धी दोष
- (b) पठन दोष
- (c) गणना दोष
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (c) गणनादोष, गणित-सम्बन्धी अधिगम अक्षमता को परिभाषित करता है। गणना दोष से सम्बन्धित अधिगम अक्षमता को डिस्कैलकुलिया कहा जाता है। इस प्रकार के अक्षमता वाले बच्चों में अंकगणितीय संक्रियाओं के चिन्हों को समझने में कठिनाई, दिशा ज्ञान का अभाव या अल्प समझ नकद अंतरण या भुगतान सम्बन्धी समस्याएँ होती हैं।

5. समावेशीकरण की सफलता के लिए आवश्यक है—

- (a) क्षमता निर्माण का अभाव
- (b) अभिभावकों की भागीदारी का न होना
- (c) अलगाव
- (d) संवेदनशीलता

Ans : (d) समावेशीकरण की सफलता के लिए संवेदनशीलता अत्यन्त आवश्यक है। यह संवेदनशीलता समाज, समुदाय, परिवार, विद्यालय, शिक्षक तथा अन्य समकक्षी स्तर तक होना चाहिए ताकि विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे अपने आपको समाज के अन्य सदस्यों से अलग न समझे तथा समाज में अपने-आपको समायोजित कर सकें।

6. निम्न में से कौन-सा संवेग का तत्त्व नहीं है?

- (a) व्यवहारात्मक
- (b) दैहिक
- (c) संज्ञानात्मक
- (d) संवेदी

Ans : (d) संवेदी संवेग का तत्त्व नहीं है क्योंकि संवेग उत्पन्न होने पर प्राणी में दो स्तर पर परिवर्तन दिखाई देते हैं— पहला शारीरिक स्तर पर दूसरा मानसिक स्तर पर। शारीरिक स्तर पर जल्दी-जल्दी श्वास लेना, रक्तचाप बढ़ जाना, आवाज में परिवर्तन आ जाना, अंग संचालन की गति में परिवर्तन जैसी क्रियाएँ होती हैं, जबकि मानसिक स्तर पर विचार प्रक्रिया या तो शिथिल हो जाती है अथवा लुप्तप्राय हो जाती है। दूसरी ओर संवेदी क्रियाओं पर संवेग का कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ता है।

7. संज्ञानात्मक क्षेत्र का सही क्रम है—

- (a) ज्ञान-अनुप्रयोग-अवबोध-विश्लेषण-संश्लेषण-मूल्यांकन
- (b) मूल्यांकन-अनुप्रयोग-विश्लेषण-संश्लेषण-अवबोध-ज्ञान
- (c) मूल्यांकन-संश्लेषण-विश्लेषण-अनुप्रयोग-अवबोध-ज्ञान
- (d) ज्ञान-अवबोध-अनुप्रयोग-विश्लेषण-संश्लेषण-मूल्यांकन

Ans : (d) बेंजामिन एस ब्लूम ने शिक्षण के उद्देश्यों को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया—

- संज्ञानात्मक क्षेत्र के उद्देश्य
- भावात्मक क्षेत्र के उद्देश्य
- मनोगात्यात्मक क्षेत्र के उद्देश्य

ब्लूम ने वर्ष 1956 में संज्ञानात्मक क्षेत्र के उद्देश्यों को पुनः क्रमशः 6 भागों में विभाजित किया, जो इस प्रकार हैं—

- ज्ञान (2) अवबोध (3) अनुप्रयोग (4) विश्लेषण (5) संश्लेषण (6) मूल्यांकन।

8. निम्न में से कौन-सा अच्छे शिक्षण की विशेषता नहीं है?

- स्वेच्छाचारी
- जनतांत्रिक
- सहानुभूतिपूर्ण
- वांछनीय सूचनाएँ देने वाला

Ans : (a) स्वेच्छाचरितापूर्ण शिक्षण वातावरण अच्छे शिक्षण की विशेषता नहीं होती है। प्रभावशाली व आनन्ददायक वातावरण में किये गये शिक्षण का प्रतिफल अधिगम के रूप में परिलक्षित हो जाता है। इसलिए शिक्षण का वातावरण जनतांत्रिक, सहानुभूतिपूर्ण, सहयोगात्मक तथा वांछनीय सूचनाएँ देने वाला होना चाहिए।

9. अभिप्रेरणा का प्रत्याशा सिद्धांत किसके द्वारा दिया गया है?

- विक्टर ब्रूम
- मास्लो
- हर्जबर्ग
- स्किनर

Ans : (a) अभिप्रेरणा के सम्बन्ध में वर्ष 1964 में विक्टर ब्रूम ने प्रत्याशा सिद्धांत का प्रतिपादन किया। यह सिद्धांत अभिप्रेरणा, निष्पादन तथा कार्य संतुष्टि के कारणों को विभिन्न प्रकार से परिभाषित करता है। इस सिद्धांत के अंतर्गत व्यक्ति अपने कार्य का चयन स्वयं करता है। सभी व्यक्ति अपने उद्देश्यों, आवश्यकताओं, मूल्यों, कुशलताओं, योग्यताओं तथा भूमिकाओं के सम्बन्ध में सतर्क रहते हैं।

10. अग्रिम व्यवस्थापक प्रतिमान किस परिवार से सम्बन्धित है?

- वैयक्तिक
- सामाजिक अन्तःक्रिया
- सूचना प्रक्रियाकरण
- व्यवहार परिमार्जन

Ans : (c) ब्रूस आर. जोयस तथा मार्शवेल ने अपनी पुस्तक 'मॉडल्स ऑफ टीचिंग' में शिक्षण प्रतिमानों को चार भागों में बाँटा है—

- अंतः प्रक्रिया स्रोत
- सूचना प्रक्रिया करण
- व्यक्तिगत स्रोत प्रतिमान
- व्यवहार परिवर्तन स्रोत प्रतिमान

इन चार प्रकार के प्रतिमानों को पुनः कई विभागों में विभाजित किया गया है। जैसे— सूचना प्रक्रियाकरण को निम्न प्रकार से विभाजित किया गया है—

- निष्पत्ति सम्प्रत्यय प्रतिमान
- अग्रिम व्यवस्थापक प्रतिमान
- आगमन प्रतिमान
- जैविक विज्ञान पृच्छा प्रतिमान आदि।

11. कौशल के स्थानान्तरण के लिए कौन-सा उपयोगी है?

- कौशल अन्तरण एक गति है न कि उद्देश्य
- रेखीय अभिक्रम
- शाखीय अभिक्रम
- तैयारी और अर्जन

Ans : (a) कौशल को किसी जटिल कार्य को आसानी से और दक्षता से करने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया गया है। कार चलाना, आशुलिपि में लिखना आदि कौशल के उदाहरण हैं। कौशल अधिगम गुणात्मक रूप से कई भिन्न चरणों से होकर गुजरता है। एक चरण से दूसरे चरण में संक्रमण कौशल अंतरण कहलाता है। यह कौशल अंतरण उद्देश्यपूर्ण न होकर स्वतः होता है अर्थात् कौशल अंतरण एक प्रकार की यात्रा है न कि लक्ष्य या उद्देश्य।

12. निम्न में से कौन-सा शिक्षण का सूत्र नहीं है?

- सरल से कठिन की ओर
- अनिश्चित से निश्चित की ओर
- दृश्य से अदृश्य की ओर
- निगमन से आगमन की ओर

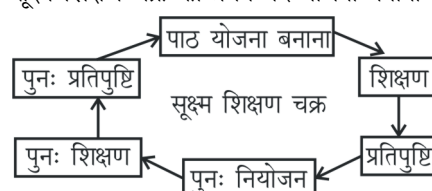
Ans : (d) हरबर्ट स्पेन्सर तथा कामेनियस ने निम्न प्रकार के शिक्षण सूत्रों का उल्लेख किया है—

- सरल से कठिन की ओर
- ज्ञात से अज्ञात की ओर
- स्थूल से सूक्ष्म की ओर
- पूर्ण से अंश की ओर
- अनिश्चित से निश्चित की ओर
- दृश्य से अदृश्य की ओर
- विशिष्ट से सामान्य की ओर
- विश्लेषण से संश्लेषण की ओर
- मनोवैज्ञानिक क्रम से तर्कसंगत की ओर
- अनुभव से युक्तियुक्त की ओर
- प्रकृति का अनुसरण

13. सूक्ष्म-शिक्षण चक्र का प्रथम पद होता है—

- प्रतिपुष्टि
- शिक्षण
- योजना बनाना
- प्रस्तावना

Ans : (c) ए. डब्ल्यू एलन को सूक्ष्म शिक्षण का जन्मदाता माना जाता है। सूक्ष्म शिक्षण चक्र का प्रथम पद योजना बनाना होता है।



14. निम्न में से कौन-सा अवबोध स्तर के शिक्षण में शामिल है?

- पृथक्करण
- अनुप्रयोग
- तुलना
- अन्वेषण

Ans : (d) बोध स्तर शिक्षण व्यवस्था को निम्नलिखित सोपानों में विभाजित किया गया है—

- अन्वेषण
- प्रस्तुतीकरण
- आत्मीकरण अथवा परिपाक
- वर्णन अथवा अभिव्यक्तिकरण

15. शैक्षिक सुधारों में प्रभावी विकेन्द्रीकरण तभी संभव होगा—

- (A) जब खंड व संकुल संदर्भ केन्द्रों की भागीदारी बढ़े
(B) स्थानीय संदर्भ व्यक्ति उपलब्ध हो
(C) अध्यापकों के पास संसाधन और प्रासंगिक सामग्री भी मौजूद हो

सही उत्तर चुनें—

- (a) A और C
(b) A और B
(c) B और C
(d) A, B और C

Ans : (d) शैक्षिक सुधारों में प्रभावी विकेन्द्रीकरण तभी सम्भव होगा—

- जब खंड व संकुल संदर्भ केन्द्रों की भागीदारी बढ़े
- स्थानीय संदर्भ व्यक्ति उपलब्ध हो
- अध्यापकों के पास संसाधन और प्रासंगिक सामग्री भी मौजूद हो
- स्थानीय स्तर पर ग्राम शिक्षा समिति, महिला संगठन, गैर सरकारी संगठन या अन्य संगठनों, समितियों की सक्रिय सहभागिता बढ़े।

16. एक छात्र पढ़ रहा है, उसका नाम लेकर किसी ने बुलाया। निम्न में से किस संवेदना द्वारा वह (छात्र) अपनी अनुक्रिया प्रकट करेगा?

- (a) दृष्टि संवेदना (b) स्पर्श संवेदना
(c) ध्वनि संवेदना (d) प्रत्यक्षणा संवेदना

Ans : (c) ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा व्यक्ति पर होने वाले प्रभाव को संवेदना कहते हैं। यदि कोई छात्र पढ़ रहा है और उसका नाम लेकर कोई व्यक्ति बुलाता है तो सर्वप्रथम वह 'हॉ' में जवाब देगा अर्थात् वह अपनी अनुक्रिया ध्वनि संवेदना के माध्यम से प्रकट करेगा।

17. पियाजे के सिद्धांत के अनुसार प्राक्संक्रियात्मक अवस्था की अवधि क्या है?

- (a) चार से आठ साल
(b) जन्म से दो साल
(c) दो से सात साल
(d) पाँच से आठ साल

Ans : (c) पियाजे के अनुसार बालक का संज्ञानात्मक विकास चार अवस्थाओं से होकर गुजरता है—

- (i) संवेगात्मक गामक अवस्था (जन्म से 2 वर्ष तक)
(ii) प्राक संक्रियात्मक अवस्था (2 वर्ष से 7 वर्ष तक)
(iii) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7 वर्ष से 11 वर्ष तक)
(iv) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11 वर्ष से 15 वर्ष तक)
इस प्रकार प्राक संक्रियात्मक अवस्था 2 वर्ष से 7 वर्ष तक होती है।

18. निम्न में से कौन-सी बाद की बाल्यावस्था के बौद्धिक विकास की विशेषता नहीं है?

- (a) भविष्य की योजना की सूझ-बूझ
(b) विज्ञान की काल्पनिक कथाओं में अधिक रुचि
(c) बढ़ती हुई तार्किक शक्ति
(d) काल्पनिक भयों का अन्त

Ans : (a) भविष्य की योजना की सूझ-बूझ बाल्यावस्था के बाद की अवस्था अर्थात् किशोरावस्था की बौद्धिक विशेषता नहीं है क्योंकि किशोरावस्था में बालक अपने भविष्य की योजनाओं के प्रति चिंतित रहता है, जिसके कारण वह तनाव में रहता है न कि वह अपने भविष्य की योजनाओं के प्रति सूझ-बूझ प्रदर्शित करता है। यह विशेषता सामान्यतः प्रौढ़ावस्था की हो सकती है।

19. इनमें से कौन मनोवैज्ञानिक 'भाषा विकास' से संबंधित है?

- (a) पैवलव (b) बिने
(c) चोमस्की (d) मास्लो

Ans : (c) नोआम चामस्की भाषा विकास से सम्बन्धित मनोवैज्ञानिक हैं। इन्होंने माना कि प्रत्येक मानव शिशु में व्याकरण की संरचनाओं का एक अंतर्निहित एवं जन्मजात खाका होता है, जिसे सार्वभौम व्याकरण की संज्ञा दी गयी।

20. थार्नडाइक ने अपने सिद्धांत को किस शीर्षक से सिद्ध किया?

- (a) संज्ञानात्मक अधिगम
(b) अधिगम के प्रयास एवं भूल
(c) संकेत अधिगम
(d) स्थान अधिगम

Ans : (b) थार्नडाइक ने अपने सिद्धांत को 'अधिगम के प्रयास एवं भूल का सिद्धांत' शीर्षक से सिद्ध किया। इस सिद्धांत को सम्बन्धवाद या उद्दीपक-अनुक्रिया सिद्धांत भी कहते हैं। इनके अनुसार सीखने के लिए पुनर्बलन केन्द्रित तत्त्व है तथा अनुक्रिया का संतोषजनक परिणाम ही उद्दीपक-अनुक्रिया बन्धन को सुदृढ़ कर सकता है।

21. गिरोह अवस्था किस आयु-वर्ग एवं विलम्ब-विकास से संबंधित है?

- (a) 16-19 वर्ष एवं नैतिकता
(b) 3-6 वर्ष एवं भाषा
(c) 8-10 वर्ष एवं सामाजीकरण
(d) 16-19 वर्ष एवं संज्ञानात्मक

Ans : (c) गिरोह अवस्था 8-10 वर्ष एवं विलम्ब विकास समाजीकरण से सम्बन्धित है। 8-10 वर्ष की आयु में बालक अपने समूह का सक्रिय सदस्य बन जाता है जो किशोरावस्था में चरम पर पहुँच जाता है। गिरोह अवस्था समाजीकरण से सम्बन्धित होता है।

22. पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की तृतीय अवस्था निम्न में से कौन-सा है?

- (a) औपचारिक संक्रिया अवस्था
(b) पूर्व-संक्रिया अवस्था
(c) मूर्त संक्रिया अवस्था
(d) संवेदनात्मक गामक अवस्था

Ans : (c) पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की तृतीय अवस्था मूर्त संक्रिया अवस्था है। यह अवस्था 7-11 वर्ष तक होती है। इस अवस्था में बालक मूर्त वस्तुओं के सम्बन्ध में चिंतन प्रारम्भ कर देता है। अब वह वस्तुओं में अंतर व तुलना कर सकता है।

23. निम्न में से अधिगम में योगदान देने वाले मनोवैज्ञानिक कारकों में कौन-सा शामिल नहीं है?

- (a) अधिगम की इच्छा
- (b) प्रेरणा
- (c) रुचि
- (d) विषयवस्तु का स्वरूप

Ans : (d) विषय-वस्तु का स्वरूप अधिगम में योगदान देने वाले मनोवैज्ञानिक कारकों में शामिल नहीं है। अधिगम की इच्छा, प्रेरणा, रुचि, बुद्धि अभिवृत्ति, परिपक्वता, वैयक्तिकता आदि अधिगम में योगदान देने वाले मनोवैज्ञानिक कारक हैं।

24. निम्न में से सामाजिक मूल्य कौन-सा है?

- (a) सहायतापरक व्यवहार
- (b) प्राथमिक लक्ष्य
- (c) मूल प्रवृत्ति
- (d) आक्रामकता की आवश्यकता

Ans : (a) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद की पुस्तक "Document of Social, moral and Spiritual Values in Education" में कुल 83 नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की चर्चा की गयी है।

प्रमुख सामाजिक मूल्य इस प्रकार हैं-

मैत्रीभाव, समाजवाद, भाईचारा, टीम भावना, कर्तव्य भावना, सहानुभूति, सहयोग, समाजसेवा, सामाजिक उत्तरदायित्व आदि।

25. पश्च अन्वेषण तथा साधन-साक्ष्य विश्लेषण निम्न में से किसके उदाहरण है?

- (a) स्वतःशोध
- (b) एल्गोरिदम
- (c) मानसिक वृत्ति
- (d) प्रकार्यात्मक स्थिरता

Ans : (a) स्वतः शोध विधि में व्यक्ति समस्या का समाधान करने के लिए सभी विकल्पों को नहीं ढूँढ़ता है बल्कि सिर्फ उन्हीं विकल्पों का चयन करके समस्या समाधान करने की कोशिश करता है, जो उन्हें संगत प्रतीत होते हैं। पश्च अन्वेषण तथा साधन साक्ष्य विश्लेषण इसकी दो प्रमुख प्रविधियाँ हैं।

26. "सीखने के वक्र अभ्यास द्वारा सीखने की मात्रा, गति और प्रगति की सीमा को ग्राफ पर प्रदर्शित करते हैं।" यह किसने कहा है?

- (a) स्कनर
- (b) रॉस
- (c) एबिंगहास
- (d) एम.एल. बिग्ली

Ans : (*) "सीखने के वक्र अभ्यास द्वारा सीखने की मात्रा, गति और प्रगति की सीमा को ग्राफ पर प्रदर्शित करते हैं।" यह कथन गेट्स व अन्य के हैं। अतः कोई विकल्प सही नहीं है।

27. निम्न में से कौन-सा थॉर्नडाइक के अधिगम के प्राथमिक नियमों में शामिल नहीं है?

- (a) साहचर्यात्मक स्थानान्तरण का नियम
- (b) अभ्यास का नियम
- (c) प्रभाव का नियम
- (d) तत्परता का नियम

Ans : (a) ई.एल. थॉर्नडाइक ने अधिगम के तीन मुख्य नियम तथा पाँच गौण नियम दिये हैं जो निम्न हैं-

मुख्य नियम-

- (i) अभ्यास का नियम
- (ii) प्रभाव का नियम
- (iii) तत्परता का नियम

गौण नियम-

- (i) बहुअनुक्रिया का नियम
- (ii) मनोवृत्ति का नियम
- (iii) आंशिक क्रिया का नियम
- (iv) सादृश्यता का नियम
- (v) साहचर्यात्मक रूपान्तरण का नियम

28. अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत किसके अनुकूलन पर बल देता है?

- (a) तर्क
- (b) व्यवहार
- (c) चिन्तन
- (d) अभिप्रेरणा

Ans : (b) अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत व्यवहार के अनुकूलन पर बल देता है। इस सिद्धांत के अनुसार अस्वाभाविक उद्दीपक को स्वाभाविक उद्दीपक के साथ बार-बार प्रस्तुत करने पर प्राणी अस्वाभाविक उद्दीपक के प्रति भी स्वाभाविक उद्दीपक जैसी अनुक्रियाएँ करने लगता है। अर्थात् उसकी अनुक्रियाएँ या व्यवहार अस्वाभाविक उद्दीपक के साथ अनुकूलित हो जाती हैं।

29. क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन का दूसरा नाम है-

- (a) समीपस्थ अनुबन्धन
- (b) नैमित्तिक अनुबन्धन
- (c) प्राचीन अनुबन्धन
- (d) चिन्ह अनुबन्धन

Ans : (b) क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन का दूसरा नाम नैमित्तिक अनुबन्धन भी है। अधिगमकर्ता की अनुक्रियाओं का पुनर्बलन के लिए अनुबन्धन का एक निमित्त होने के कारण इस सिद्धांत को नैमित्तिक या यांत्रिक या साधानात्मक अनुबन्धन सिद्धांत के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

30. निम्न में से कौन-सी अधिगम की एक विशेषता नहीं है?

- (a) अधिगम का अवलोकन प्रत्यक्ष रूप से किया जा सकता है
- (b) अधिगम व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है
- (c) अधिगम प्राणी की अभिवृद्धि है
- (d) अधिगम एक लक्ष्योन्मुख प्रक्रिया है

Ans : (a) योकम एवं सिम्पसन के अनुसार सीखने की सामान्य विशेषताएँ निम्नांकित हैं-

- (i) अधिगम अभिवृद्धि (Growth) है
- (ii) अधिगम समायोजन है
- (iii) अधिगम लक्ष्योन्मुखी प्रक्रिया है
- (iv) अधिगम व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है
- (v) अधिगम विवेकपूर्ण व सृजनशील है
- (vi) अधिगम व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों है
- (vii) अधिगम अनुभवों का संगठन है
- (viii) अधिगम क्रियाशील है।

अतः अधिगम का अवलोकन प्रत्यक्ष रूप से किया जा सकता है, यह कथन सही नहीं है।

उत्तर प्रदेश सहायक अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2019

बाल विकास एवं शिक्षण

व्याख्या सहित हल प्रश्न

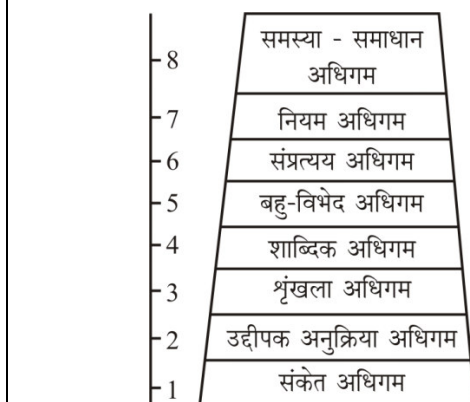
(परीक्षा तिथि : 6 जनवरी, 2019)

1. The correct order of Gagne's learning hierarchy is :

गैने के अधिगम सोपान का सही क्रम है—

- rule learning, concept learning, problem solving/नियम अधिगम, सम्प्रत्यय अधिगम, समस्या समाधान
- concept learning, problem solving, rule learning/सम्प्रत्यय अधिगम, समस्या समाधान, नियम अधिगम
- concept learning, rule learning, problem solving/सम्प्रत्यय अधिगम, नियम अधिगम, समस्या समाधान
- rule learning, problem solving, concept learning/नियम अधिगम, समस्या समाधान, सम्प्रत्यय अधिगम

Ans : (c) गैने ने सीखने को आठ वर्गों में वर्गीकृत करते हुए उन्हें एक अधिगम सोपानिकी के रूप में प्रस्तुत किया। इस अधिगम सोपानिकी के आठ वर्गों में एक स्वस्पष्ट अंतर्निहित क्रम निहित है तथा अगला क्रम पिछले क्रम से उच्चतर अथवा जटिलतर होता जाता है।



2. The stage of creative problem solving in which the individuals do not give attention to the problem is :/सृजनात्मक समस्या समाधान की वह अवस्था, जिसमें व्यक्ति समस्या पर ध्यान नहीं देता है, है—

- translation/अनुवादन
- illumination/प्रदीप्ति
- incubation/उद्भवन
- preparation/आयोजन

Ans : (c) सृजनात्मक समस्या समाधान की वह अवस्था, जिसमें व्यक्ति समस्या पर ध्यान नहीं देता है, वह अवस्था उद्भवन कहलाती है। इस अवस्था में व्यक्ति सूचना के बारे में चेतन रूप से चिंतन करना छोड़ देता है परन्तु अचेतन रूप से समस्या के बारे में सोचता रहता है। उद्भवन काल में कोई नई सूचना, नया ज्ञान अथवा अनुभव भण्डार में जमा नहीं होता है।

3. 'National Institute of Orthopaedically Handicapped' is situated in :

'राष्ट्रीय अस्थि विकलांग संस्थान' स्थित है—

- Dehradun/देहरादून में
- Mumbai/मुम्बई में
- Kolkata/कोलकाता में
- Secunderabad/सिकंदराबाद में

Ans : (c) 'राष्ट्रीय अस्थि विकलांग संस्थान' कोलकाता में स्थित है। राष्ट्रीय दृष्टि बाधितार्थ संस्थान देहरादून में, राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान सिकन्दराबाद में तथा राष्ट्रीय श्रवण विकलांगता संस्थान मुम्बई में स्थित है।

32. The empirical relationship among the three measures of central tendencies is :

केन्द्रीय प्रवृत्ति के तीनों मापों में आनुभविक संबंध है—

- 2 Median = Mode + Mean
2 माध्यिका = बहुलक + माध्य
- 3 Median = Mode + 2 Mean
3 माध्यिका = बहुलक + 2 माध्य
- Median = Mode + Mean
माध्यिका = बहुलक + माध्य
- Median = 2 Mode + 3 Mean
माध्यिका = 2 बहुलक + 3 माध्य

Ans : (b) ∵ माध्य-बहुलक = 3 (माध्य - माध्यिका)

⇒ माध्य - बहुलक = 3 × माध्य - 3 × माध्यिका

⇒ 3 माध्यिका = 3 माध्य - माध्य + बहुलक

⇒ 3 माध्यिका = बहुलक + 2 माध्य

64. The main aim of life skill is :

जीवन कौशल का मुख्य उद्देश्य है—

- to develop capabilities/क्षमताएँ विकसित करना
- to develop ability according to demands and challenges/चुनौतियों एवं माँगों के अनुसार योग्यता
- to receive the answer of every question/प्रत्येक प्रश्न का उत्तर प्राप्त करना
- to become good teacher/एक अच्छा शिक्षक बनना

Ans : (b) जीवन कौशल का मुख्य उद्देश्य है, चुनौतियों एवं माँगों के अनुसार योग्यता विकसित करना। जीवन कौशल, अनुकूली तथा सकारात्मक व्यवहार की वे योग्यताएँ हैं जो व्यक्तियों को दैनिक जीवन की माँगों और चुनौतियों से प्रभावी तरीके से निपटने के लिए सक्षम बनाती हैं। ये जीवन कौशल सीखे जा सकते हैं तथा उनमें सुधार भी किया जा सकता है।

65. The instinct theory of motivation was given by :
अभिप्रेरणा के मूल प्रवृत्ति सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं—

- (a) Freud/फ्रायड
- (b) Clark L. Hull/क्लार्क एल. हल
- (c) McDougall/मैकडूगल
- (d) Morgan/मॉर्गन

Ans : (c) अभिप्रेरणा के मूल प्रवृत्ति सिद्धान्त के प्रतिपादक मैकडूगल हैं। मैकडूगल ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन सन् 1908 में किया था। सिंगमण्ड फ्रायड ने अभिप्रेरणा के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था। क्लार्क एल. हल ने अभिप्रेरणा के प्रणोद न्यूनता सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था जबकि मॉर्गन का संबन्ध प्रासंगिक अंतर्बोध परीक्षण (T.A.T.) से है।

66. In sympathy, a person :
सहानुभूति कौशल में व्यक्ति—

- (a) understands the problems of others
दूसरों की परेशानियों को समझता है
- (b) likes others/दूसरों को पसंद करता है
- (c) works according to wish of others
दूसरों की इच्छानुसार कार्य करता है
- (d) lives always in confusion/हमेशा भ्रम में रहता है

Ans : (a) सहानुभूति कौशल में व्यक्ति दूसरों की परेशानियों को समझता है। किसी व्यक्ति की ऐसी संवेगात्मक प्रतिक्रियाएँ जो दूसरे लोगों पर केन्द्रित होती हैं या जिसका रुझान दूसरे की तरफ होता है और जिससे करुणा की अनुभूति, हमदर्दी और चिंताएँ शामिल होती हैं उसे सहानुभूति कहते हैं।

67. Reward is what kind of motivation ?
पुरस्कार किस प्रकार की अभिप्रेरणा है?

- (a) Positive and direct/धनात्मक एवं प्रत्यक्ष
- (b) Positive and indirect/धनात्मक एवं अप्रत्यक्ष
- (c) Negative and direct/ऋणात्मक एवं प्रत्यक्ष
- (d) Negative and indirect/ऋणात्मक एवं अप्रत्यक्ष

Ans : (a) पुरस्कार धनात्मक एवं प्रत्यक्ष अभिप्रेरणा है। पुरस्कार प्राप्त करना एक आनन्ददायक तथा सुखद अनुभूति है जिसके द्वारा वांछित कार्यों को आनन्ददायक, आकर्षक तथा पुनरावृत्ति योग्य बनाया जाता है साथ ही पुरस्कार किसी व्यक्ति को तत्काल और प्रत्यक्ष रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। पुरस्कार दो प्रकार के, भौतिक पुरस्कार तथा सामाजिक पुरस्कार हो सकते हैं।

68. From which year, the Right to Education Act (RTE Act) came into effect ?
शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE Act) किस वर्ष से प्रभावी हुआ ?

- (a) 2009
- (b) 2010
- (c) 2005
- (d) 2001

Ans : (b) शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE Act) 1 अप्रैल 2010 को लागू हुआ। शिक्षा का अधिकार अधिनियम के शीर्षक में 'निःशुल्क और अनिवार्य' शब्द सम्मिलित है जिसका अर्थ है उचित

सरकार और स्थानीय प्राधिकारियों पर 6-14 आयु समूह के सभी बच्चों को प्रवेश, उपस्थिति और प्रारम्भिक शिक्षा को पूरा करने का प्रावधान करने और सुनिश्चित करने की बाध्यता रखी है।

69. "Value is that which satisfies human desires."
This statement is given by :/"मूल्य वह है जो मानव इच्छाओं की तुष्टि करे।" यह विचार दिया गया—

- (a) Aristotle/अरस्तू द्वारा
- (b) Hume/ह्यूम द्वारा
- (c) Urban/अर्बन द्वारा
- (d) Hoffding/हॉफडिंग द्वारा

Ans : (c) अर्बन महोदय ने मूल्य को परिभाषित करते हुए कहा है "मूल्य वह है जो मानव इच्छाओं की तुष्टि करें।" मूल्य के लिए इंग्लिश में 'Value' शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Vallere' शब्द से मानी गयी है जो किसी वस्तु की कीमत, गुण या उपयोगिता को व्यक्त करता है।

70. Which of the following is a social motive ?
निम्नलिखित में से कौन-सा एक सामाजिक प्रेरक है?

- (a) Self-pride/आत्मगौरव
- (b) Love/प्रेम
- (c) Hunger/भूख
- (d) Thirst/प्यास

Ans : (a) सामाजिक अभिप्रेरक सामाजिक मान्यताओं, सम्बन्धों, परिस्थितियों, आदर्शों आदि के कारण उत्पन्न होते हैं। जैसे- प्रतिष्ठा, सुरक्षा, संग्रह, आत्मगौरव आदि। भूख, प्यास जन्मजात अभिप्रेरक हैं जबकि प्रेम जैविक अभिप्रेरक है।

71. The ability to do things differently and use new techniques is called :/अलग ढंग से कार्य करने तथा नये तरीकों का इस्तेमाल करने की योग्यता कहलाती है—

- (a) creativity/सृजनात्मकता
- (b) personality development/व्यक्तित्व विकास
- (c) newness/नवीनता
- (d) awareness/जागरूकता

Ans : (a) अलग ढंग से कार्य करने तथा नये तरीकों का इस्तेमाल करने की योग्यता सृजनात्मकता कहलाती है। ड्रेवहल ने सृजनात्मकता को परिभाषित करते हुए लिखा है "सृजनात्मकता वह मानवीय योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नवीन रचना या विचारों को प्रस्तुत करता है।"

72. Who first used the vocational guidance ?
व्यावसायिक निर्देशन का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया?

- (a) Mayer/मायर
- (b) Parsons/पारसन्स
- (c) Halk/हॉक
- (d) Brewer/ब्रेवर

Ans : (b) अमेरिका में व्यावसायिक निर्देशन का सूत्रपात बोस्टन के फ्रैंक पारसन्स ने किया, जिन्होंने सन् 1905 तथा 1906 में ब्रेंड विनर्स इंस्टीट्यूट की स्थापना करके योजनाबद्ध तरीके से व्यवसाय सम्बन्धी निर्देशन का कार्य प्रारम्भ किया। सन् 1908 में पारसन्स ने लोगों के सहयोग से बोस्टन में वोकेशन ब्यूरो की स्थापना की तथा मई 1908 में ब्यूरो के डायरेक्टरों के समक्ष अपनी प्रथम और अंतिम रिपोर्ट में व्यावसायिक निर्देशन शब्द का प्रयोग करते हुए स्वयं को डायरेक्टर तथा व्यावसायिक परामर्शदाता के रूप में उल्लेख किया।

73. Which of the following values has been accepted by NCERT in relation to education ?
एन.सी.ई.आर. टी. ने शैक्षिक संदर्भ में निम्नलिखित मूल्यों में से किसको स्वीकार किया है?

- (a) Cleanliness and truthfulness/सफाई एवं सच्चाई
- (b) Labour/श्रम
- (c) Equality and cooperation/समानता एवं सहयोग
- (d) All of the above/उपर्युक्त सभी

Ans : (d) एन.सी.ई.आर.टी.ने शैक्षिक संदर्भ में समानता एवं सहयोग को स्वीकार किया है। यहाँ समानता से तात्पर्य सामान्य तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को समान शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराने से है तथा सहयोग से तात्पर्य सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के बीच सामाजिक अंतः प्रक्रियात्मक व्यवहार को सुदृढ़ करने एवं सहयोगात्मक व्यवहार को विकसित करने से है। इसके अतिरिक्त एन.सी.ई.आर.टी. ने शैक्षिक संदर्भ में सफाई एवं सच्चाई तथा श्रम जैसे मूल्यों को भी स्वीकार किया है।

81. The objective of ICT is :
आई.सी.टी. का उद्देश्य है—

- (a) the establishment of smart schools
स्मार्ट स्कूलों की स्थापना करना
- (b) to increase the capacity of teachers
शिक्षकों की क्षमता बढ़ाना
- (c) Both (a) and (b)/(a) और (b) दोनों
- (d) None of the above/उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (c) स्कूलों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) योजना दिसम्बर, 2004 में माध्यमिक स्तर के छात्रों को मुख्यतः अपनी आई.सी.टी. कौशल क्षमता बढ़ाने और कम्प्यूटर सहायक शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान करने हेतु किया गया था। इसके मुख्यतः चार उद्देश्य थे—

1. माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों को कम्प्यूटर सहायक शिक्षा प्रदान करने के लिए राज्य सरकार और संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों के साथ भागीदारी करना।
2. स्मार्ट स्कूलों की स्थापना करना।
3. शिक्षक संबंधित हस्तक्षेप जैसे— विशिष्ट शिक्षक की नियुक्ति, आईसीटी में सभी शिक्षकों की क्षमता-बढ़ाना और प्रेरणा के रूप में राष्ट्रीय आईसीटी पुरस्कार हेतु योजना बनाना।
4. ई-विषयवस्तु का विकास करने से है।

134. Which one of the following statements about teaching is not correct?/निम्नलिखित में से कौन—सा कथन शिक्षण के संदर्भ में सही नहीं है?

- (a) Teaching is an interactive process.
शिक्षण एक अन्तः क्रियात्मक प्रक्रिया है
- (b) Teaching is a tripolar process
शिक्षण एक त्रिमुखी प्रक्रिया है
- (c) Teaching is an effect-directed process
शिक्षण एक प्रभाव-निर्देशित प्रक्रिया है

(d) Teaching is a process confined only to the classrooms./शिक्षण केवल कक्षा तक सीमित रहने वाली प्रक्रिया है

Ans : (d) शिक्षण केवल कक्षा तक सीमित रहने वाली प्रक्रिया नहीं है बल्कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो खेल के मैदानों, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं, वाचनालयों, संगोष्ठियों या अन्य वास्तविक परिस्थितियों में सम्पन्न होती है।

135. The main reason to initiate mid-day meal programme for primary schools is :
प्राथमिक विद्यालयों में मिड-डे मील कार्यक्रम प्रारंभ करने का प्रमुख कारण है—

- (a) to expand society/समाज विस्तार करना
- (b) to increase employment/रोजगार वृद्धि करना
- (c) to increase enrollment/नामांकन संख्या बढ़ाना
- (d) teachers' development/अध्यापकों का विकास करना

Ans : (c) प्राथमिक विद्यालयों में मिड-डे मील कार्यक्रमों का प्रारम्भ 15 अगस्त सन् 1955 को हुआ, जिसके मुख्य उद्देश्य निम्न हैं—
* बच्चों के पोषण स्तर में सुधार करना।
* विद्यालयों में नामांकन संख्या बढ़ाना।
* ग्रीष्मावकाश के दौरान अकाल पीड़ित क्षेत्रों में प्रारम्भिक स्तर के बच्चों को पोषण सम्बन्धी सहायता प्रदान करना।

136. Who propounded the stimulus-response theory?
उद्दीपन-अनुक्रिया सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया?

- (a) Pavlov/पावलोव
- (b) Thorndike/थॉर्नडाइक
- (c) Skinner/स्कनर
- (d) Kohler/कोह्लर

Ans : (b) उद्दीपन-अनुक्रिया सिद्धान्त का प्रतिपादन एडवर्ड एल.थॉर्नडाइक ने किया था। इवान पी. पावलोव ने क्लासिकल अनुबंधन सिद्धान्त का, बी.एफ.स्कीनर ने क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त का तथा कोहलर ने अंतर्दृष्टि के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था।

137. Disability to read and write is :
पढ़ने और लिखने की अक्षमता है—

- (a) autism/ऑटिज्म
- (b) dyslexia/डिस्लेक्सिया
- (c) dyspraxia/डिस्प्रेक्सिया
- (d) apraxia/एप्रक्सिया

Ans : (b) डिस्लेक्सिया पढ़ने लिखने से जुड़ी एक खास विकलांगता है जिसका असर पढ़ने और भाषा को समझने पर पड़ता है। डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों को पढ़ने, लिखने स्पेलिंग लिखने या बोलने में कठिनाई होती है।

138. "An innovation is an idea perceived as new by the individual." Who said this ?
किसने कहा, "नवाचार एक ऐसा विचार है जिसमें व्यक्ति नवीनता का अनुभव करता है"?

- (a) H.G. Burnett/एच.जी.बर्नेट
- (b) E.M. Rogers/ई.एम. रोजर्स
- (c) M.B. Miles/एम.बी.माइल्स
- (d) Allen/एलेन

Ans : (b) इ.एम. रोजर्स ने नवाचार को परिभाषित करते हुए लिखा है - “नवाचार एक ऐसा विचार है जिसमें व्यक्ति नवीनता का अनुभव करता है।” नवाचार पाठ्यक्रमों में गुणात्मक परिवर्तन/सुधार से लेकर शिक्षण पद्धति एवं शाला प्रबन्धन तथा जनसमुदाय की शाला में सहभागिता के तरीकों से सम्बन्धित हो सकता है।

139. Which Committee in the history of Indian education discussed 'wastage and stagnation' first of all?/भारतीय शिक्षा के इतिहास में सर्वप्रथम किस समिति ने 'अपव्यय एवं अवरोधन' पर विचार किया?

- (a) Hartog Committee/हार्टोग समिति
- (b) Yashpal Committee/यशपाल समिति
- (c) Mehta Committee/मेहता समिति
- (d) Zakir Hussain Committee/जाकिर हुसैन समिति

Ans : (a) ब्रिटिश कालीन शिक्षा में प्राथमिक शिक्षा के सम्बन्ध में हण्टर कमीशन -1882, लार्ड कर्जन (1898-1905) तथा हार्टोग समिति (1927-29) ने प्राथमिक शिक्षा की समस्या पर विचार कर उनकी समस्याओं के समाधान की रूपरेखा तैयार किया। हार्टोग समिति ने प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या पर प्रकाश डाला और कहा कि भारत में एक बड़ी संख्या में छात्र प्राथमिक शिक्षा पूर्ण किये बिना प्राथमिक शिक्षा से हट जाते हैं। इसलिए उन्हीं बच्चों को शिक्षा प्रदान किया जाये जो उसके योग्य हो।

140. Absolute zero exists in : परम शून्य स्थित होती है—

- (a) nominal scale/नामित स्केल में
- (b) interval scale/अंतरित स्केल में
- (c) ordinal scale/क्रमित स्केल में
- (d) ratio scale/आनुपातिक स्केल में

Ans : (d) आनुपातिक स्केल में अंतरित स्केल के सभी गुणों के साथ-साथ परम शून्य या वास्तविक शून्य की संकल्पना निहित रहती है। परम शून्य वह स्थिति है जिस पर कोई गुण पूर्णरूपेण अस्तित्वविहीन हो जाता है। जैसे लम्बाई, भार या दूरी का मापन आनुपातिक मापन हैं।

141. What is the main component of introduction skill?/पाठ प्रस्तावना कौशल का मुख्य संघटक क्या है?

- (a) Previous knowledge/पूर्वज्ञान
- (b) Lecturing/व्याख्यान
- (c) Blackboard writing/श्यामपट्ट लेखन
- (d) Homework/गृहकार्य

Ans : (a) पाठ प्रस्तावना कौशल के मुख्य संघटक निम्न हैं—

- (1) पूर्वज्ञान से सम्बन्ध
- (2) प्रेरणा हेतु उपयुक्त युक्ति व शैक्षिक साधनों का चयन
- (3) आन्त ज्ञान से तुलना
- (4) प्रश्नों में तारतम्यता
- (5) उद्दीपन प्रभाव

142. When was National Curriculum Framework introduced by NCERT ?

एन. सी. ई. आर.टी. द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा कब प्रस्तुत की गई ?

- (a) 1986
- (b) 1992
- (c) 2005
- (d) 2009

Ans : (c) एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा सन् 2005 में प्रस्तुत की गयी। इसके मार्गदर्शी सिद्धान्त निम्न हैं—

- (1) ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ा जाये।
- (2) पढ़ाई को रटन्त प्रणाली से मुक्त किया जाये।
- (3) पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तक केन्द्रित न होकर बाल केन्द्रित हो।
- (4) कक्षा-कक्ष को गतिविधियों से जोड़ा जाये।
- (5) राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति आस्थावान विद्यार्थी तैयार हों।

143. "Educational administration provides appropriate education to appropriate student by appropriate teacher by which they can able to become the best by using available maximum resources." This definition is given by :/“शैक्षिक प्रशासन उपयुक्त विद्यार्थियों को उपयुक्त शिक्षकों द्वारा समुचित शिक्षा प्राप्त करने योग्य बनाता है जिससे वे उपलब्ध अधिक साधनों का उपयोग करके अपने प्रशिक्षण से सर्वोत्तम को प्राप्त करने में समर्थ हो सकें।” यह परिभाषा दी गई है?

- (a) S.N. Mukherjee/एम.एन. मुखर्जी द्वारा
- (b) Cambell/कैम्बेल द्वारा
- (c) Welfare Grahya/वेलफेयर ग्राह्य द्वारा
- (d) Dr. Atmanand Mishra/डॉ. आत्मानंद मिश्रा द्वारा

Ans : (c) वेलफेयर ग्राह्य ने शैक्षिक प्रशासन को परिभाषित करते हुए लिखा है कि “शैक्षिक प्रशासन उपयुक्त विद्यार्थियों को उपयुक्त शिक्षकों द्वारा समुचित शिक्षा प्राप्त करने योग्य बनाता है। जिससे वे उपलब्ध अधिक साधनों का उपयोग करके अपने प्रशिक्षण से सर्वोत्तम को प्राप्त करने में समर्थ हो सकें।

144. 'Rehabilitation Council of India' is established for which purpose ?/भारतीय पुनर्वास परिषद् की स्थापना किस उद्देश्य के लिए हुई है?

- (a) Distance education/दूरस्थ शिक्षा
- (b) Environmental education/पर्यावरण शिक्षा
- (c) Education of person with disability (PWD) दिव्यांगजन की शिक्षा
- (d) None of the above/उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (c) भारतीय पुनर्वास परिषद् (रीहैबिलिटेशन काउन्सिल ऑफ इण्डिया) को एक पंजीकृत सोसायटी के रूप में 1986 में स्थापित किया गया था। सितम्बर 1992 को भारतीय पुनर्वास परिषद् अधिनियम संसद द्वारा पारित किया गया, जिसके द्वारा यह एक

सांविधिक निकाय के रूप में 22 जून सन् 1993 को अस्तित्व में आयी। इसके मुख्य उद्देश्य निम्न हैं—

- * देशभर में सभी प्रशिक्षण संस्थानों में विभिन्न स्तरों पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का मानकीकरण एवं नियमन करना।
- * दिव्यांगों के पुनर्वास के संदर्भ में देश में और देश के बाहर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाने वाले प्रशिक्षण संस्थानों/विश्वविद्यालयों को मान्यता देना आदि।

**145. The law of developmental direction includes :
विकासात्मक दिशा का नियम सम्मिलित करता है—**

- (a) cephalocaudal law/मस्तकाधोमुखी नियम
- (b) proximodistal law/निकट से दूर का नियम
- (c) Both (a) and (b)/(a) और (b) दोनों
- (d) Neither (a) nor (b)/न तो (a) न ही (b)

Ans : (c) विकास दिशा के नियम को विकास क्रम का नियम भी कहा जाता है। इस नियम के अंतर्गत मस्तकाधोमुखी नियम तथा निकट से दूर का नियम, दोनों सम्मिलित होता है। मस्तकाधोमुखी विकास क्रम का अर्थ है कि सबसे पहले मस्तिष्क क्षेत्र फिर धड़ क्षेत्र तथा सबसे अंत में पैर क्षेत्र में शरीर के विभिन्न अंगों का विकास होता है। इसी प्रकार निकट से दूर के विकास क्रम के अनुसार पहले केन्द्र में स्थित अंगों की रचना व नियंत्रण होता है फिर केन्द्र से दूर स्थित अंगों की रचना व नियंत्रण होता है।

**146. According to Markgaret Mead, the most important factor for individual difference is :
मार्गेट मीड के अनुसार वैयक्तिक भिन्नताओं के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है—**

- (a) biological/जैविक
- (b) psychological/मनोवैज्ञानिक
- (c) homologous/सजातीय
- (d) cultural/सांस्कृतिक

Ans : (d) मार्गेट मीड के अनुसार वैयक्तिक भिन्नताओं के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक सांस्कृतिक कारक है। मार्गेट मीड अमेरिका की सांस्कृतिक नृवैज्ञानिक थी। सैद्धान्तिक रूप से मीड का विमर्श अपनी सहयोगी विद्वान और मित्र रूथ बेनेडिक्ट की ही तरह मनोवैज्ञानिक मानवशास्त्र की श्रेणी में आता है। मानवशास्त्र की इस प्रवृत्ति को कल्चर एण्ड पर्सनॉलिटी के नाम से भी जाना जाता है। मीड की दिलचस्पी व्यक्ति पर पड़ने वाले सांस्कृतिक प्रभावों के अध्ययन पर थी।

**147. The propounder of "Braille Script" is :
'ब्रेल लिपि' के जनक हैं—**

- (a) Charles Braille/चार्ल्स ब्रेल
- (b) Louis Braille/लुई ब्रेल

- (c) Barbier Braille/बारबियर ब्रेल
- (d) None of them/इनमें से कोई नहीं

Ans : (b) ब्रेल लिपि विश्व भर में नेत्रहीनों के द्वारा पढ़ने और लिखने में छूकर व्यवहार में लाया जाता है। इस लिपि का आविष्कार वर्ष 1821 में एक नेत्रहीन फ्रांसीसी लेखक लुई ब्रेल ने किया था। ये अलग-अलग अक्षरों, संख्याओं और विराम चिन्हों को दर्शाते हैं।

**148. Who proposed the theory of classical conditioning ?
प्राचीन अनुबंधन का सिद्धान्त किसने दिया ?**

- (a) Skinner/स्किनर
- (b) Spinovich/स्पिनोविच
- (c) Pavlov/पावलोव
- (d) Binet/बिने

Ans : (c) प्राचीन अनुबंधन सिद्धान्त का प्रतिपादन इवान पी. पावलोव ने किया था। इन्होंने अपना प्रयोग कुत्ते पर किया। पावलोव वास्तव में रूस के एक शरीर वैज्ञानिक थे जिन्होंने पाचन क्रिया की दैहिकी का गहन अध्ययन किया।

**149. The book, Hereditary Genius is written by whom?
हेरेडिटरी जीनियस नामक पुस्तक किसके द्वारा लिखी गई है?**

- (a) Cattell/कैटेल
- (b) Galton/गाल्टन
- (c) Terman/टरमैन
- (d) Pearson/पीयर्सन

Ans : (b) हेरेडिटरी जीनियस नामक पुस्तक फ्रांसिस गॉल्टन द्वारा लिखी गयी है। फ्रांसिस गाल्टन जीव सांख्यिकी के संस्थापक माने जाते हैं। फ्रांसिस गाल्टन यह जानना चाहते थे कि पिता से पुत्र में और फिर पौत्र में, इसी भांति पीढ़ी दर पीढ़ी किसी गुण विशेष का संचरण किस प्रकार होता है। उन्होंने दो नियमों का प्रतिपादन किया—
(1) पैतृक वंशानुक्रमण का नियम
(2) वंश अवनति का नियम

**150. Which one of the following factors affects the development of child ?/निम्नलिखित में से कौन—
सा कारक बालक के विकास को प्रभावित करता है?**

- (a) Endocrinal glands/अंतः स्रावी ग्रंथियाँ
- (b) Nutritious diet/पौष्टिक भोजन
- (c) Diseases and injuries/रोग तथा चोट
- (d) All of the above/उपर्युक्त सभी

Ans : (d) बालक के विकास को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख कारक निम्नवत हैं—

- * अंतः स्रावी ग्रंथिया
- * पौष्टिक भोजन
- * रोग तथा चोट
- * वंशानुक्रम
- * शुद्ध हवा तथा प्रकाश
- * यौन विभेद
- * पारिवारिक परिस्थितियाँ
- * संस्कृति
- * बुद्धि आदि।

उत्तर प्रदेश सहायक अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2018

बाल विकास एवं शिक्षण

व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र

(परीक्षा तिथि : 27 मई, 2018)

1. Fill up the blank: "Brain Storming technique emphasizes the importance of...?.... thinking in teaching gifted children"

रिक्त स्थान भरिए: "प्रतिभाशाली बालकों के शिक्षण में मानसिक उद्वेलन तकनीक...?.... चिन्तन के महत्व पर बल देता है।"

उत्तर: सृजनात्मक/अपसारी/रचनात्मक

व्याख्या-प्रतिभाशाली बालकों के शिक्षण में मानसिक उद्वेलन तकनीक सृजनात्मक चिन्तन के महत्व पर बल देता है। मानसिक उद्वेलन तकनीक सृजनात्मकता को बढ़ावा देने हेतु एक विशिष्ट तकनीक है। इस तकनीक में किसी बालक या समूह को किसी समस्या पर विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया जाता है। बालक या समूह द्वारा बिना किसी पूर्वाग्रह के अपने विचार प्रस्तुत किया जाता है जिसकी शिक्षक द्वारा विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन किया जाता है।

2. Who advocated the 'Trial and Error theory of Learning'?

'सीखने के प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त' का प्रतिपादन किसने किया?

उत्तर: ई. एल. थार्नडाइक

व्याख्या-'सीखने के प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त' का प्रतिपादन अमेरिकी मनोवैज्ञानिक एडवर्ड एल. थार्नडाइक द्वारा सन् 1913 में किया गया। इन्होंने अपना प्रयोग बिल्ली पर किया जिसके आधार पर सीखने के तीन मुख्य नियमों- तत्परता का नियम, अभ्यास का नियम तथा प्रभाव का नियम प्रतिपादित किया। प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त को S-R bond (Stimulus-Response bond) सिद्धान्त भी कहा जाता है।

3. The process of Assimilation and Accommodation is related to what?

आत्मसातकरण तथा समायोजन की प्रक्रिया किससे सम्बन्धित है?

उत्तर: पियाजे का संज्ञानात्मक विकास/अनुकूलन

व्याख्या-जीन पियाजे द्वारा प्रतिपादित संज्ञानात्मक विकास की दो मुख्य विशेषताएँ हैं- संगठन तथा अनुकूलन। संगठन से तात्पर्य प्रत्यक्षीकृत तथा बौद्धिक सूचनाओं को सार्थक पैटर्न में व्यवस्थित करने से होता है। अनुकूलन के अंतर्गत व्यक्ति अपने पूर्व ज्ञान तथा नवीन अनुभवों के मध्य संतुलन स्थापित करता है। इसमें 'आत्मसातकरण' तथा 'समायोजन' दो प्रक्रम सन्निहित होते हैं।

4. Programmed Learning is based on whose theory of learning?/अभिक्रमित अधिगम किसके सिद्धान्त पर आधारित है?

उत्तर: बी. एफ. किनर

व्याख्या-अभिक्रमित अधिगम बी.एफ. किनर द्वारा प्रतिपादित अधिगम के क्रिया-प्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त पर आधारित है। अभिक्रमित अधिगम एक ऐसी विधि है जिसमें अधिगमकर्ता सक्रिय रहता है, तत्काल प्रतिपुष्टि प्राप्त करता है तथा अपनी गति से सीखते हुए बढ़ता है। इस विधि को क्रमसिद्ध अधिगम भी कहा जाता है। किनर ने अभिक्रमित अधिगम के पाँच सिद्धान्त बताएँ हैं-

- (1) लघुपदीय सिद्धान्त
- (2) सक्रिय अनुक्रिया सिद्धान्त
- (3) तत्कालीन जाँच या प्रतिपुष्टि का सिद्धान्त
- (4) स्व-गति का सिद्धान्त
- (5) छात्र परीक्षण का सिद्धान्त

5. What is the right order of feeble mindedness based on IQ?/बुद्धिलब्धि (IQ) के आधार पर मन्दबुद्धिता के स्तर पर सही क्रम क्या है?

उत्तर: जड़ बुद्धि, मूढ़, मूर्ख/81-90, 80-89, 90 से कम सभी I.Q. वर्ग/मूर्ख, मूढ़, जड़/मन्द बुद्धि, अल्प जड़ बुद्धि

व्याख्या-बुद्धिलब्धि के आधार पर मन्दबुद्धिता के स्तर का सही क्रम है जड़ बुद्धि (Idiot), अल्प बुद्धि (Dull) तथा मंद बुद्धि (Feeble minded) टरमैन ने सन् 1916 में स्टैनफोर्ड बिये परीक्षण के आधार पर बुद्धि लब्धि के वितरण की तालिका तैयार की जो निम्न है-

बुद्धिलब्धि	वर्ग
130 से अधिक	- प्रतिभाशाली (Genius)
121-130	- प्रखर बुद्धि (Superior)
111-120	- तीव्र बुद्धि (Above Average)
91-110	- सामान्य बुद्धि (Average)
81-90	- मंद बुद्धि (Feeble minded)
71-80	- अल्प बुद्धि (Dull)
71 से कम	- जड़ बुद्धि (Idiot, Imbecile)

6. Fill up the blank: "Originality, Flexibility and Flow are the components of....?....."

रिक्त स्थान भरिए: "मौलिकता, नमनीयता तथा प्रवाह....?..... के घटक हैं।

उत्तर: सृजनात्मकता/रचनात्मकता

व्याख्या-मौलिकता, नमनीयता, प्रवाह, विस्तारण, विविधता आदि सृजनात्मकता के प्रमुख घटक हैं। गिलफोर्ड के अनुसार- "सृजनात्मकता वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कुछ नया निर्मित होता है- विचार, वस्तु जिसमें पुराने तत्वों को नवीन तरीके से व्यवस्थित किया जाता है, नवीन सृजन किसी समस्या का समाधान प्रस्तुत करता हो।"

7. An infant of below 15 months age is at what stage of language development?/एक शिशु जन्म के पश्चात् प्रथम 15 माह में भाषा विकास की किस अवस्था में होता है?

उत्तर: पूर्व-वाक् अवस्था/भाषा विकास अवस्था

व्याख्या-जन्म के उपरान्त के प्रथम पन्द्रह महीने में होने वाले भाषा विकास की अवस्था को पूर्व-वाक् अवस्था (Pre-Speech Stage) कहा जाता है।

8. Fill up the blank: “Kohlberg’s theory explains...?..... development of a child.”

रिक्त स्थान भरिए: “कोहलबर्ग का सिद्धान्त एक बालक के?.....विकास की व्याख्या करता है।”

उत्तर: नैतिक

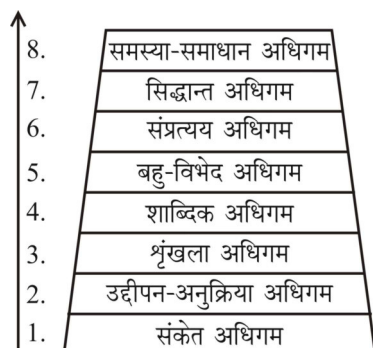
व्याख्या-कोहलबर्ग का सिद्धान्त एक बालक के नैतिक विकास की व्याख्या करता है। कोहलबर्ग ने 10-16 वर्ष तक के बालक के सामने नैतिक दुविधाएँ प्रस्तुत कर साक्षात्कार लिया जिसके आधार पर नैतिक विकास के तीन प्रमुख स्तर तथा सोपान बताएँ हैं जिन्हें निम्न सारणी द्वारा व्यक्त किया गया है-

स्तर	सोपान
(1) पूर्व परम्परागत स्तर	(1) आत्म केन्द्रित निर्णय (2) दण्ड तथा आज्ञापालन अभिमुखता (3) यांत्रिक सापेक्षिक अभिमुखता
(2) परम्परागत स्तर	1. परस्पर एकरूप अभिमुखता 2. अधिकार संरक्षण अभिमुखता
(3) उत्तर परम्परागत स्तर	1. सामाजिक अनुबंध विधि सम्मत अभिमुखता 2. सार्वभौमिक नैतिक सिद्धान्त अभिमुखता

9. Fill up the Blank: “According to Gagne’s Learning Hierarchy highest stage of learning is....?.....”/रिक्त स्थान भरिए: “गैने के अधिगम पदानुक्रम में अधिगम की सर्वोच्च अवस्था है.....?.....”

उत्तर: समस्या-समाधान

व्याख्या- गैने ने सीखने को आठ वर्गों में वर्गीकृत करते हुए उन्हें एक अधिगम सोपानिकी के रूप में प्रस्तुत किया। इस अधिगम सोपानिकी के आठ वर्गों में ऐ सुस्पष्ट अंतर्निहित क्रम व्यवस्थित है तथा अगला क्रम पिछले क्रम से उच्चतर अथवा जटिलतर होता जाता है।



10. The ‘Rehabilitation Council of India (RCI)’ is established for the education of which type of children?/‘भारतीय पुनर्वास परिषद’ की स्थापना किस प्रकार के बच्चों की शिक्षा के लिए की गई है?

उत्तर: दिव्यांग बच्चों हेतु/शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों के लिए

व्याख्या-‘भारतीय पुनर्वास परिषद’ की स्थापना का मुख्य उद्देश्य दिव्यांग व्यक्तियों के पुनर्वास के क्षेत्र में प्रशिक्षण नीतियों और कार्यक्रमों को विनियमित करना है। भारतीय पुनर्वास परिषद को एक पंजीकृत सोसायटी के रूप में सन 1986 में स्थापित किया गया था। सितम्बर 1992 में भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम संसद द्वारा पारित किया गया जिसके द्वारा यह परिषद एक सांविधिक निकाय के रूप में 22 जून सन् 1993 को अस्तित्व में आयी।

11. Which body determines the professional norms for teachers?/शिक्षक के व्यवसायिक आचरण के मानक कौन निर्धारित करता है?

उत्तर: एन.सी.टी.ई. या राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद

व्याख्या-राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद का मूल उद्देश्य समूचे भारत में अध्यापक शिक्षा प्रणाली का नियोजित और समन्वित विकास करना, अध्यापक शिक्षा प्रणाली में मानदण्डों और मानकों का विनियमन तथा उन्हें समुचित रूप से बनाये रखना है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद भारत सरकार की एक संस्था है, जिसकी स्थापना राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद अधिनियम, 1993 के अंतर्गत 17 अगस्त सन् 1995 में की गयी थी।

12. Who was the chairman of Emotional Integration Committee?/भावात्मक एकता समिति के अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर: डा. सम्पूर्णानन्द

व्याख्या-भावात्मक एकता को विकसित करने के लिए शिक्षा परम आवश्यक है। अतः भारत के केन्द्रिय शिक्षा मंत्रालय ने सन् 1961 में एक भावात्मक समिति स्थापित की जिसका उद्देश्य ऐसे सुझावों को देना था जिनसे सभी विघटनकारी प्रवृत्तियों का अंत हो जाये। इस समिति के अध्यक्ष स्वर्गीय डा. सम्पूर्णानन्द को बनाया गया।

13. Which article of the Constitution discusses the fundamental duties of citizens?/संविधान के किस अनुच्छेद में नागरिकों के मूलभूत कर्तव्यों की चर्चा है?

उत्तर: अनुच्छेद 51 ए में

व्याख्या-नागरिकों को मूल कर्तव्य 1976 में सरकार द्वारा गठित स्वर्णसिंह समिति की सिफारिशों पर 42वें संशोधन द्वारा संविधान के अनुच्छेद 51ए में जोड़े गये थे। मूल रूप से संख्या में 10, मूल कर्तव्यों की संख्या 2002 में 86वें संविधान संशोधन द्वारा 11 कर दी गयी। 11वे मूल कर्तव्य के अनुसार ‘यदि आप माता-पिता या संरक्षक हैं तो 6 वर्ष से 14 वर्ष की आयु वाले अपने या प्रतिपाल्य बच्चे को शिक्षा प्राप्त करने के अवसर प्रदान करें।’

14. 1:1 guidance for one’s personal problem is called:-/किसी व्यक्तिगत समस्या हेतु 1:1 निर्देशन कहलाता है:-

उत्तर: व्यक्तिगत निर्देशन/प्रत्यक्ष निर्देशन

व्याख्या-किसी व्यक्तिगत समस्या हेतु 1:1 निर्देशन व्यक्तिगत निर्देशन कहलाता है। इस विधि में एक समय में केवल एक छात्र को ही निर्देशन दिया जाता है। महँगी होने के कारण इस विधि का प्रयोग कम किया जाता है।

15. Punishment is which type of reinforcement? दण्ड किस प्रकार का पुनर्बलन है?

उत्तर: ऋणात्मक पुनर्बलन/नकारात्मक पुनर्बलन

व्याख्या-पुनर्बलन से तात्पर्य है किसी अपेक्षित अनुक्रिया के प्रतिफल के रूप में किसी ऐसे उद्दीपक की प्रस्तुति जो अनुक्रिया को दोहराने की प्रायिकता को बढ़ाता हो। पुनर्बलन दो प्रकार का होता है।

- * धनात्मक पुनर्बलन के उपस्थिति से अनुक्रिया के दोहराये जाने की प्रायिकता बढ़ती है। जैसे-पुरस्कार, भोजन, प्रशंसा आदि।
- * नकारात्मक पुनर्बलन के हटाये जाने से अनुक्रिया के दोहराये जाने की प्रायिकता बढ़ती है। जैसे- निन्दा, शोर आदि।
- * दण्ड और ऋणात्मक पुनर्बलन में मुख्य अंतर यह है कि ऋणात्मक पुनर्बलन किसी अपेक्षित अनुक्रिया को दोहराये जाने की प्रायिकता बढ़ाता है जबकि दण्ड किसी अनुक्रिया के घटित होने की प्रायिकता को कम करता है। इसलिए स्किनर दण्ड को ऋणात्मक पुनर्बलन नहीं मानते हैं।

16. Which record is maintained to verify the ability, interest, aptitude and response of the students?/कौन सा अभिलेख छात्रों की योग्यता, रुचि, क्षमताओं एवं प्रतिक्रियाओं की जाँच करने हेतु रखा जाता है?

उत्तर: संचयी अभिलेख

व्याख्या-विद्यालय में प्रायः छात्रों से सम्बन्धित विभिन्न सूचनाओं के क्रमबद्ध रूप से एकत्रित किया जाता है। छात्रों के अधिगम को निर्देशित व सुलभ बनाने के लिए जो अभिलेख या प्रपत्र तैयार किया जाता है उसे संचयी या उपाख्यानात्मक अभिलेख कहा जाता है। यह अभिलेख छात्रों की योग्यता, रुचि, क्षमताओं एवं प्रतिक्रियाओं की जाँच के लिए रखा जाता है।

17. If teacher helps the student in selecting subjects, then this is his which role?

अगर शिक्षक छात्र को विषय चुनने में मदद करे तो यह उसकी कौन सी भूमिका है?

उत्तर: परामर्शदाता की/ सुविधा प्रदाता की

व्याख्या-अगर शिक्षक छात्रों को विषय चुनने में मदद करे तो यह उसकी परामर्शदाता या सुविधाप्रदाता की भूमिका को दर्शाता है। एक कुशल शिक्षक अपने विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ परामर्श सुविधाएँ भी प्रदान करता है। यह परामर्श सुविधाएँ दो प्रकार की होती हैं- शैक्षिक परामर्श और गैर शैक्षिक परामर्श। शैक्षिक परामर्श के अंतर्गत पाठ्यक्रमों की उपयुक्तता व भावी संभावनाएँ, अध्ययन की तैयारी, प्रवेश के अवसर, उन्नयन के अवसर आदि परामर्श शामिल किये जाते हैं जबकि गैर शैक्षिक परामर्श भावात्मक मुद्दों से सम्बन्धित होता है।

18. Using voting rights during Election is related with which type of value?/चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग करना किस मूल्य से सम्बन्धित है?

उत्तर: प्रजातांत्रिक मूल्य से/संवैधानिक मूल्य से

व्याख्या-चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग करना प्रजातांत्रिक मूल्य से सम्बन्धित है। प्रजातांत्रिक मूल्य से तात्पर्य है, प्रजातंत्र के मूल सिद्धान्तों यथा- स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्वता एवं न्याय आदि में विश्वास और आस्था व्यक्त करना। कोटारी कमीशन ने अपने सुझाव में शिक्षा द्वारा प्रजातंत्र की सुदृढ़ता लाने की बात कही थी।

19. To ensure participation of more students in class, Which method of teaching you would adopt?/यदि आप कक्षा में ज्यादा छात्रों की प्रतिभागिता चाहते हैं तो आप शिक्षण की कौन सी विधि का चुनाव करेंगे?

उत्तर: विचार-विमर्श विधि/सामूहिक-परिचर्चा विधि

व्याख्या-विचार-विमर्श विधि का उपयोग तब किया जाता है जब सभी विद्यार्थियों को विचार-विमर्श में सीधे रूप में सम्मिलित करना सम्भव हो। इस विधि में कुछ छात्र दिये गये विषय या समस्या के विभिन्न पक्षों पर संक्षेप में भाषण तैयार करते हैं तथा शिक्षक की अध्यक्षता में भाषण देते हैं।

20. In which year National Literacy Mission was launched?/राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की शुरुआत कब हुई?

उत्तर: सन् 1988 में

व्याख्या-सन् 1988 ई. में देश में पूर्ण साक्षरता प्राप्ति हेतु 'राष्ट्रीय साक्षरता मिशन' की शुरुआत की गयी और लक्ष्य रखा गया कि सन् 2005 तक निरक्षरता का पूर्णतः उन्मूलन कर दिया जाय। इसका उद्देश्य ऐसे निरक्षरों को साक्षर बनाना है जो औपचारिक शिक्षा के अंतर्गत नहीं आते और जिनकी आयु 15 वर्ष से 35 वर्ष के बीच है। सन् 1989 में अर्नाकुलम, केरल में पूर्ण साक्षरता ने इस मिशन के लिए आदर्श का काम किया।

21. Who proforounded primary laws of learning? अधिगम के प्राथमिक सिद्धान्तों के प्रणेता कौन हैं?

उत्तर: ई. एल. थार्नडाइक

व्याख्या-अधिगम के प्राथमिक सिद्धान्त के प्रणेता इ. एल थार्नडाइक माने जाते हैं। 'पशु व्यवहार' एवं सीखने की प्रक्रिया' पर उनके कार्य के आधार पर ही आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान की वैज्ञानिक नींव पड़ी। ये मनोवैज्ञानिक कार्पोरेशन बोर्ड के सदस्य तथा सन् 1912 में अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ के अध्यक्ष भी रहे।

22. Problem of 'wastage' and 'stagnation' is primarily related to which level of education?

'अपव्यय' एवं 'अवरोधन' की समस्या मुख्यतया किस शिक्षा-स्तर से सम्बंधित है?

उत्तर: प्राथमिक शिक्षा स्तर

व्याख्या-'अपव्यय' एवं 'अवरोधन' की समस्या मुख्यतया प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित है। जब कोई छात्र किसी कारणवश अपनी शिक्षा समाप्त होने से पहले ही बीच में छोड़ देता है तो उसे अपव्यय में सम्मिलित किया जाता है। जबकि जब कोई बालक एक ही कक्षा में एक से अधिक बार अनुत्तीर्ण हो जाता है या एक ही कक्षा में एक वर्ष से अधिक समय तक रहता है तो उसे अवरोधन में सम्मिलित किया जाता है।

23. Which level of education is being provided at 'Maktab'?/'मकतब' में किस स्तर की शिक्षा दी जाती है?

उत्तर: प्राथमिक शिक्षा

व्याख्या-‘मकतब’ में प्राथमिक शिक्षा प्रदान की जाती है। मकतब का अर्थ उस स्थान से है जहाँ बालक को लिखना सिखाया जाता है। मकतब किसी मस्जिद के साथ जुड़े होते हैं। मकतब की शिक्षा समाप्त करके विद्यार्थी मदरसे में प्रवेश लेते हैं। इस प्रकार मदरसों में उच्च शिक्षा की व्यवस्था की जाती है।

24. Who introduced the five steps system in preparation lesson planning?/पाठ योजना निर्माण में पंचपदीय प्रणाली के प्रणेता कौन थे?

उत्तर: हरबर्ट

व्याख्या-पाठ योजना निर्माण में पंचपदीय प्रणाली के प्रणेता हरबर्ट थे। हरबर्ट ने अपने शिक्षा दर्शन तथा शिक्षा मनोविज्ञान के आधार पर अध्यापन की एक सामान्य प्रणाली का प्रतिपादन किया। प्रारम्भ में इसके चार भाग थे- (1) स्पष्टता (2) सम्बन्ध (3) व्यवस्था या प्रणाली (4) विधि

हरबर्ट के अनुयायियों ने कुछ साधारण संशोधन करने के उपरान्त इसे हरबर्ट की पंचपदी प्रणाली का स्वरूप दिया जो निम्न है-

- (1) प्रस्तावना
- (2) प्रस्तुतीकरण
- (3) तुलना व सहयोग
- (4) नियमीकरण
- (5) अनुप्रयोग

25. Who was the propounder of Project Method of Teaching?/प्रयोजना शिक्षण विधि के प्रणेता कौन थे?

उत्तर: विलियम एच. किलपैट्रिक

व्याख्या-प्रयोजना शिक्षण विधि के प्रणेता जॉन ड्यूवी के शिष्य विलियम एच. किलपैट्रिक हैं। किलपैट्रिक के अनुसार- “प्रयोजना वह उद्देश्यपूर्ण कार्य है जिसे लगन के साथ सामाजिक वातावरण में किया जाता है।” अर्थात् प्रोजेक्ट विधि विद्यार्थियों के वास्तविक जीवन से सम्बन्धित किसी समस्या का हल खोज निकालने के लिए अच्छी तरह से चुना हुआ वह कार्य है जिसे पूर्ण स्वभाविक परिस्थितियों में सामाजिक वातावरण में ही पूर्ण किया जाता है।

26. Who was the propounder of Heuristic method? ह्यूरेस्टिक विधि के प्रतिपादक कौन थे?

उत्तर: आर्मस्ट्रांग

व्याख्या-ह्यूरेस्टिक विधि या अन्वेषण विधि के प्रतिपादक आर्मस्ट्रांग माने जाते हैं। “ह्यूरेस्टिक” एक ग्रीक शब्द है। यह ह्यूरेसिको से बना है जिसका अर्थ है “मैं खोज करता हूँ”। इस विधि में छात्रों को उपयुक्त वातावरण में रखकर स्वयं किसी तथ्य को ढूँढने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसमें अध्यापक मात्र पथप्रदर्शन करता है।

27. Which report is called as Magna Carta of India Education?/किस घोषणा पत्र को भारतीय शिक्षा का शिलालेख कहा जाता है?

उत्तर: वुड का घोषणा पत्र

व्याख्या-वुड के घोषणापत्र को भारतीय शिक्षा का शिलालेख कहा जाता है। वुड का घोषणापत्र ‘बोर्ड ऑफ कंट्रोल’ के प्रधान या अध्यक्ष चार्ल्स वुड द्वारा 19 जुलाई 1854 को जारी किया गया। इस घोषणा पत्र में भारतीय शिक्षा पर एक व्यापक योजना प्रस्तुत की गयी थी जिसे ‘वुड डिस्पैच’ कहा गया। 100 अनुच्छेदों वाले इस प्रस्ताव में शिक्षा के उद्देश्य, माध्यम, सुधारों आदि का विचार किया गया था।

28. Which aspect of student's behaviour is related to his interests and attitudes?/बालक के व्यवहार का कौन सा पक्ष उसकी रुचियों तथा मनोवृत्तियों से सम्बंधित होता है?

उत्तर: भावात्मक पक्ष

व्याख्या-बालक के व्यवहार का भावात्मक पक्ष उसकी रुचियों तथा मनोवृत्तियों से सम्बन्धित होता है। बालक के रुचियों, मनोवृत्तियों तथा आवश्यकताओं के आधार पर उसके व्यवहार में भी परिवर्तन होता रहता है अतः व्यवहार का भावात्मक पक्ष परिवर्तनीय होता है। बालक का जैसे-जैसे विकास होता है वैसे-वैसे उसके व्यवहार के भावात्मक पक्ष में स्थायित्व भी आता जाता है।

29. Which test is used to know the learning problems of students after classroom teaching? कक्षा-शिक्षण के उपरान्त छात्रों की अधिगम सम्बन्धी समस्याओं को जानने के लिए कौन सा परीक्षण किया जाता है?

उत्तर: निदानात्मक परीक्षण

व्याख्या-कक्षा शिक्षण के उपरान्त छात्रों की अधिगम सम्बन्धी समस्याओं को जानने के लिए निदानात्मक परीक्षण किया जाता है। क्रो व क्रो के अनुसार “निदानात्मक परीक्षणों का निर्माण, विद्यार्थियों को अधिगम सम्बन्धी विशिष्ट कठिनाइयों का ज्ञान प्राप्त करने या निदान करने के लिए किया जाता है। पूर्ण सावधानी से निर्मित किये गये निदानात्मक परीक्षण में किसी विशेष विषय के अधिगम के किसी विशेष पक्ष पर बल दिया जाता है ताकि छात्र की योग्यताओं और कमजोरियों को ज्ञात किया जा सके और उपचारात्मक शिक्षण का उपयोग किया जा सके।

30. Educational Technology III is also known as- शैक्षिक तकनीकी तृतीय का दूसरा नाम है-

उत्तर: प्रणाली विश्लेषण/प्रणाली उपागम

व्याख्या-शैक्षिक तकनीकी तृतीय का दूसरा नाम प्रणाली विश्लेषण या प्रणाली उपागम है। आई. के. डेविज ने अपनी पुस्तक ‘मैनेजमेंट आफ लर्निंग’ में शैक्षिक तकनीकी के तीन स्वरूपों का वर्णन किया है-

- (1) शैक्षिक तकनीकी प्रथम या कठोर शिल्प उपागम
 - (2) शैक्षिक तकनीकी द्वितीय या मृदुल शिल्प उपागम
 - (3) शैक्षिक तकनीकी तृतीय या प्रणाली विश्लेषण
- शैक्षिक तकनीकी तृतीय या प्रणाली उपागम शैक्षिक प्रशासन के विकास तथा अनुदेशन की रूपरेखा बनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान करती है।